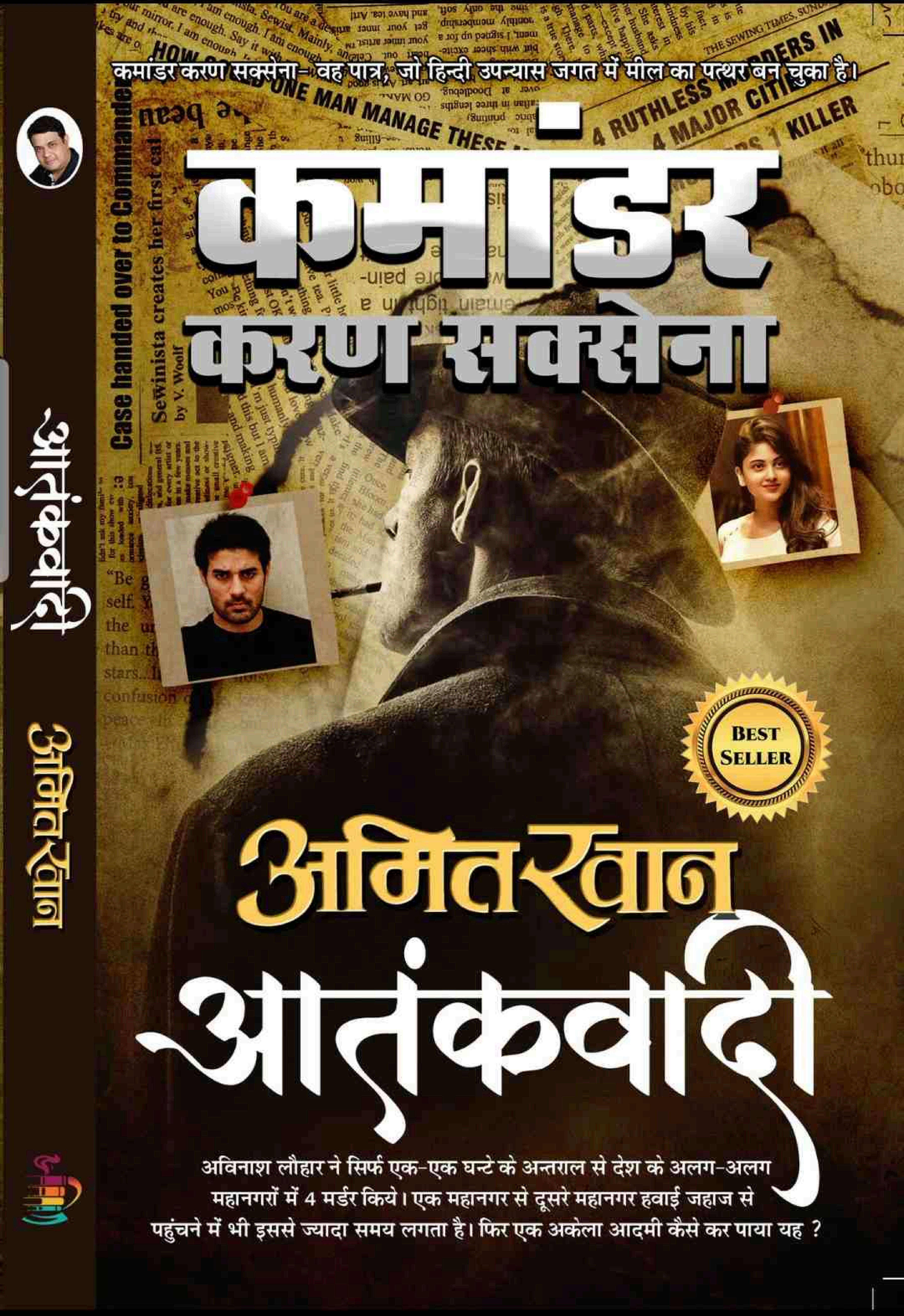


आतंकवादी
अमित खान
कमांडर करण सक्सेना- वह पात्र, जो हिन्दी उपन्यास जगत में मील का पत्थर बन चुका है।
कमांडर
करण सक्सेना
BEST SELLER
अमित खान
आतंकवादी
अविनाश लौहार ने सिर्फ एक-एक घन्टे के अन्तराल से देश के अलग-अलग महानगरों में 4 मर्डर किये। एक महानगर से दूसरे महानगर हवाई जहाज से पहुंचने में भी इससे ज्यादा समय लगता है। फिर एक अकेला आदमी कैसे कर पाया यह ?



करण सक्सेना
की धुंआधार
ज़िन्दगी का
एक धुंआधार
कारनामा

कमांडर
करण सक्सेना

का जबरदस्त एक्शन-
पैक्ड कारनामा

आतंकवादी

कमांडर करण सक्सेना और
आतंकवादी अविनाश लौहार के
बीच ज़बरदस्त दिमागी जंग ।
यह उपन्यास नहीं 'हत्या का एक बेहद
ज़बरदस्त चक्रव्यूह' है, जो आपको
अब हर कदम पर चौंकायेगा ।

पिछले दिनों मेरी एक हॉरर कहानी 'मखीचा महल का चौकीदार' का भी किंडल एडिशन पब्लिश हुआ, यह कहानी भी पाठकों को खूब पसंद आई । जल्द ही ऐसी ही और कहानियों का किंडल एडिशन भी आपको अमेजॉन पर दिखाई देगा ।

कौन जीता कौन हारा

यह 'आतंकवादी' उपन्यास का ही दूसरा पार्ट है, जो 'बुक कैफ़े' के इसी सेट में प्रकाशित हो चुका है । यह भी 'कमांडर करण सक्सेना सीरीज' का ही उपन्यास है और यह भी आपका उतना ही मनोरंजन करेगा, जितना 'आतंकवादी' करने वाला है ।

'आतंकवादी' और 'कौन जीता कौन हारा' आपको कैसा लगा, इस सम्बन्ध में अपनी मूल्यवान राय से मुझे जरुर अवगत करायें । ई-मेल नीचे दी गयी है । धन्यवाद सहित ।

आपका अपना

अमित खान

मुंबई – 400104

सम्पर्क सूत्र : foramitkhan@gmail.com



आतंकवादी

वाकई वह बड़ा दहला देने वाला मामला था ।

दहला देने वाला भी और आश्चर्यजनक भी ।

वह कमाण्डर करण सक्सेना की जिन्दगी का शायद सबसे हंगामें से भरा मिशन था ।

अर्ध्दरात्रि का समय था ।

कमाण्डर उस समय गहरी नींद में था और काफी थका-हारा था । तभी टेलीफोन की लगातार बजती घण्टी की आवाज ने उसे जगाया ।

घण्टी न जाने कितनी देर से बज रही थी ।

इतनी रात गये बजती घण्टी की वह आवाज कमाण्डर करण सक्सेना को ऐसी मालूम हुई, जैसे कोई उसके दिमाग पर ज़बरदस्त चोटें कर रहा हो ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने रिसीवर उठाया ।

"हैलो !"

"कमाण्डर करण सक्सेना ?"

उस आवाज को सुनते ही कमाण्डर करण सक्सेना की नींद एकदम यूं भक्क से गायब हुई, जैसे वो सोया ही नहीं था ।

वो चीफ गंगाधर महन्त की आवाज थी ।

“यस ! आई एम स्पीकिंग चीफ !” कमाण्डर करण सक्सेना बिस्तर पर तुरन्त चाक-चौबन्द होकर बैठ गया ।

“जितनी जल्द-से-जल्द हो सके, फौरन हैडक्वार्टर पहुंचो करण !” चीफ का स्वर आदेशात्मक था ।

“इस वक्त ?”

कमाण्डर करण सक्सेना के दिमाग पर हण्टर-सा पड़ा ।

“हाँ, इस वक्त ।”

“क्या हुआ ?”

“काफी बड़ा हंगामा हो गया है । एक ही रात में दो बहुत प्रसिध्द आदमियों का खून हो चुका है ।”

“किनका ?”

“शशि मुखर्जी और अर्जुन मेहता का ।”

“शशि मुखर्जी ?” कमाण्डर करण सक्सेना का विस्फारित स्वर- “हिन्दी फिल्मों का सुपरस्टार ?”

“वही ।”

“और...और अर्जुन मेहता; कहीं आप उस अर्जुन मेहता की बात तो नहीं कर रहे !” कमाण्डर करण सक्सेना हकलाए स्वर में बोला- “जो मेहता एण्ड मेहता कम्पनी का मालिक है, जिसका मद्रास में काफी बड़ा कारोबार फैला हुआ है ?”

“मैं उसी अर्जुन मेहता की बात कर रहा हूँ ।”

“हे भगवान ! दोनों की हत्या हो गयी ?”

“यस ।”

“एक ही रात में ?”

“हाँ ।”

“लेकिन उनकी हत्या किसने की ?”

"हत्यारे का नाम सुनोगे, तो तुम्हें और भी ज्यादा जबरदस्त हैरानी होगी । तुम्हारे सिर पर पहाड़-सा टूटकर गिरेगा ।"

"कौन ?"

"अविनाश लोहार ।"

कमाण्डर करण सक्सेना के ऊपर सचमुच पहाड़-सा टूटकर गिरा ।

उसे ऐसा लगा, जैसे कमरे में ज्वालामुखी फट पड़ा हो ।

"अ...अविनाश लोहार ।" कमाण्डर करण सक्सेना हकलाए स्वर में बोला- "लेकिन वह तो पुलिस कस्टडी में है । उसका तो ऑल इण्डिया मेडिकल हॉस्पिटल दिल्ली में इलाज चल रहा है ।"

"बिल्कुल ठीक ।"

"फिर उसने यह हत्या कैसे कर दी ?"

"तुम यहाँ पहुंचो । बाकी बात मैं तुम्हें यहाँ पहुँचने पर बताऊंगा । लगता है, अविनाश लोहार की बदौलत देश में कोई बड़ा तूफान बरपा होने वाला है । जल्दी पहुंचो ।"

"ओके चीफ ! मैं अभी दस मिनट में हैडक्वार्टर पहुँचता हूँ ।"

"आई एम वेटिंग !"

कमाण्डर करण सक्सेना ने रिसीवर रख दिया ।

फिर वो फुर्ती के साथ बिस्तर छोड़कर उठा और बेहद आनन-फानन कपड़े पहनने लगा ।

नींद उसकी आंखों से अब पूरी तरह गायब हो चुकी थी । उसे लग रहा था, सचमुच कोई बड़ा भूकम्प आने वाला है । कमाण्डर करण सक्सेना, जिससे आप सब लोग परिचित ही हैं । हर बार मौत के पंजे से पंजा लड़ाना जिसका शौक

बन चुका है । रॉ का वह जांबाज जासूस, जिसके नाममात्र से ही आज दुनिया के बड़े-बड़े अपराधी और दुश्मन देश के जासूस थर्रा उठते हैं ।

छः फुट से भी लम्बा कद ।

खूबसूरत व्यक्तित्व ।

इसके अलावा हमेशा काला लम्बा ओवरकोट और काला गोल क्लेंसी हैट पहनने का शौकीन ।

प्वॉइण्ट 38 कैलीबर की एक कोल्ट रिवॉल्वर वह सदा अपने क्लेंसी हैट की ग्लिप में छिपाकर रखता है । एमरजेन्सी के समय वह हैट की ग्लिप में छिपी रिवॉल्वर कमाण्डर करण सक्सेना के काफी काम आती है । वह अपने दिमाग की मांसपेशियों को जरा भी हरकत देता है, तो ग्लिप में फंसी रिवॉल्वर खुद-ब-खुद हैट में से निकलकर उसके हाथ में पहुँच जाती है । इसके अलावा वह दूसरी रिवॉल्वर अपने ओवरकोट की जेब में रखता है ।

रिवॉल्वर हाथ में आते ही उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमती है । वह 'जगलरी' करता है ।

कमाण्डर करण सक्सेना ।

एक बेहद जांबाज अन्तरराष्ट्रीय स्तर का जासूस ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना जिस समय हैडक्वार्टर में दाखिल हुआ, उस वक्त रात के पौने दो बज रहे थे ।

हैडक्वार्टर में तब भी अच्छी-खासी चहल-पहल थी । रॉ एजेन्ट्स इधर-से-उधर आ-जा रहे थे । कंप्यूटर रूम में भी हलचल थी ।

"कमाण्डर !" कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही एक रॉ एजेन्ट बोला- "तुरन्त फिल्म रूम में पहुंचिये ।"

"चीफ कहाँ हैं ?"

"वो वहीं बड़ी बेसब्री से आपका इन्तजार कर रहे हैं ।"

"ओ.के. ।"

कमाण्डर करण सक्सेना फिल्म रूम में पहुँचा ।

गंगाधर महन्त वहीं थे ।

वो बड़ी बेसब्री के साथ इधर-से-उधर टहल रहे थे । उनके हाथ में एक कार्डलेस फोन था, जिस पर वह बार-बार कोई नम्बर डायल करते और दूसरी तरफ से कोई रेस्पॉन्स मिलने के कारण झुंझला उठते ।

"लगता है, पूरी दिल्ली की लाइन बिजी है । कहीं का कोई नम्बर नहीं मिल रहा है ।"

"क्या हो गया ?" कमाण्डर करण सक्सेना अंदर दाखिल होते हुए बोला ।

"कुछ नहीं । नई-नई उलझनें उभरकर सामने आ रही हैं । अब दिल्ली में ऑल इण्डिया मेडिकल हॉस्पिटल या पुलिस कमिश्नर में से किसी का नम्बर नहीं मिल रहा है । मैं यह कन्फर्म करना चाहता था कि अविनाश लोहार अभी दिल्ली पुलिस की कस्टडी में है या नहीं । अगर यह दोनों खून सचमुच अविनाश लोहार ने किये हैं, तो स्वाभाविक है कि वो पुलिस कस्टडी से फरार हो गया है ।"

'अविनाश लोहार फरार हो गया है ।'

यह विचार भी कमाण्डर करण सक्सेना के लिए अपने आपमें बड़ा दहला देने वाला था ।

अविनाश लोहार !

दुनिया का सबसे खतरनाक आतंकवादी ।

कमाण्डर करण सक्सेना की निगाह खुद-ब-खुद सामने पैंतीस मिलीमीटर के परदे की तरफ उठ गयी, जिस पर अविनाश लोहार की विशालकाय तस्वीर चमक रही थी ।

अविनाश लोहार की उम्र मुश्किल से चौंतीस-पैंतीस साल थी ।

साधारण कद-काठी वाला आदमी । अलबत्ता चेहरा कुछ भारी था । आंखों के पपोटे फूले हुए थे ।

शक्ल-सूरत से भी वह काफी खूबसूरत नजर आता था और उसे देखकर कोई कह नहीं सकता था कि वह एक आतंकवादी हो सकता है ।

यह तो हर्गिज भी कोई नहीं कह सकता था, वह इतना बड़ा आतंकवादी हो सकता है ।

उसके कारनामों से कभी पूरी दुनिया दहल उठी थी ।

खास तौर पर लीबिया, भूटान, इजरायल, हंगरी और स्वीडन जैसे छोटे-बड़े कई देशों में तो मानो जलजला आ गया था । आधे से ज्यादा यूरोप और अफ्रीकन महाद्वीप पर मानो उसका कब्जा था । उसका अपना कोई मिशन नहीं था । वह सीधा भाड़े पर आतंकवादी कार्यवाही अंजाम देता था । उसके ग्राहक हंगरी, स्वीडन और इजरायल जैसे कई देश हैं, जो उसे भारी-भरकम रकमें दे देकर अपने दुश्मन देशों में भारी तोड़-फोड़ कराते थे ।

लीबिया में अमरिकन दूतावास में बम विस्फोट ।

भूटान में रक्षा मंत्री का अपहरण काण्ड । अलजीरिया में अमरीकी राष्ट्रपति का काफिला गुजरने से सिर्फ चंद सेकंड पहले वेलकिंगम रोड पर हेलीकॉप्टरों से जबरदस्त बमबारी, जिसमें पांच-सौ से ज्यादा जानें गयीं ।

ईरान से यूरोप की तरफ जाती तेल की कई पाइप लाइनों में भीषण बम विस्फोट ।

लेबनान के फौजी कैम्पों पर रात के समय रॉकेट लांचरों से खतरनाक हमला, जिसमें कई हजार फौजी मौत की गहरी नींद सो गये ।

ऐसी और ऐसी न जाने कितनी आतंकवादी कार्यवाहियां थीं, जिन्हें अविनाश लोहार ने अपने साथियों के साथ मिलकर अंजाम दिया था ।

और उन आतंकवादी कार्यवाहियों के बदले में मिलते थे, अविनाश लोहार को करोड़ों डॉलर ।

बेपनाह धन ।

□□□

गंगाधर महन्त भी कमाण्डर करण सक्सेना के साथ-साथ परदे पर चमकती अविनाश लोहार की तस्वीर को गौर से देखने लगे ।

“वाकई अविनाश लोहार किसी जलजले से कम नहीं है ।” गंगाधर महन्त हवाना सिगार सुलगाते हुए बोले- “आज से सिर्फ दो महीने पहले तक वह पूरी दुनिया के लिए भयानक सिरदर्दी का वायस बना हुआ था । इण्टरपोल की पुलिस उसके पीछे थी । दुनिया में कई मुल्कों की पुलिस उसके पीछे थी । कई बड़े-बड़े आतंकवादी संगठन उसकी मौत के तमन्नाई थे और उसे पकड़ने या मार गिराने के लिए नयी-नयी स्कीम रात-दिन बनाते थे, पर कामयाबी भारत के रॉ को मिली; हमें मिली, जो कि हमारे लिए बड़े फख्र की बात थी ।”

“वह शायद अपनी जिन्दगी में तब पहली बार ही पकड़ा गया था ।”

"नहीं ।" गंगाधर महन्त की गर्दन इंकार की सूरत में हिली- "वह अपनी जिन्दगी में तब दूसरी बार पकड़ा गया था । यह भी कुछ कम बड़ी हैरानी की बात नहीं कि वह पहली बार भी भारत में पकड़ा गया था । तब उसने एक लड़की का कोल्ड ब्लाडेड मर्डर किया था और उसे फांसी की सजा सुनाई गयी थी । वह उसकी जिंदगी का पहला जुर्म था, मगर तब वह जेल तोड़कर भाग निकला और उसके बाद ही वह दुनिया के नक्शे पर एक दुर्दांत आतंकवादी के तौर पर नमूदार हुआ । फिर उसने ऐसे-ऐसे अपराधिक कार्य किए कि बड़े-बड़े मुल्कों की सरकारें दहल उठीं, मगर उसके बाद वो हाथ किसी के नहीं आया । इंटरपोल पुलिस उसे पकड़ने के लिए बड़े-बड़े जाल फैलाती रही । कई देशों की गवर्नमेंट और उनका इंटेलीजेंस सिस्टम उसे पकड़ने के लिए हाथ-पांव पीटता रहा, मगर नतीजा कुछ नहीं निकला । अविनाश लोहार एकदम छलावा बन चुका था । अभी वह भूटान में था, तो अभी इजरायल में लेबनानियों के खिलाफ षड्यंत्र की आधारशिला रख रहा था या फिर स्वीडन की धरती पर होता । वो उड़ा-उड़ा फिरता । उसके बारे में कुछ भी कहना मुहाल था ।"

"भारत में वो कैसे पकड़ा गया ?" कमाण्डर करण सक्सेना, अविनाश लोहार के बारे में सम्पूर्ण जानकारी इकट्ठी करना चाहता था ।

"बहुत आसानी से ।"

"कैसे ?"

"बस कजा ही आ गयी थी उसकी । दो महीने पहले वह दिल्ली में दाखिल हुआ था । जाली पासपोर्ट था । जाली वीजा था । जाली नाम था । सब कुछ जाली था । जरूर

वो दिल्ली में भी किसी आतंकवादी कार्यवाही को अंजाम देने आया था ।”

“फिर ?”

“फिर वो हमारे रॉ एजेन्टों की निगाह में आ गया । उन्होंने उसे पकड़ने की कोशिश की, तो अविनाश लोहार मैदान छोड़कर भागा; परन्तु वो ज्यादा दूर नहीं भाग सका । रॉ एजेन्टों ने गोली चला दी थी । उसके छः गोलियां लगीं । अविनाश लोहार गिर पड़ा । खून से लथपथ हालत में ही उसे ऑल इण्डिया मेडिकल हॉस्पिटल के इंटेंसिव केअर यूनिट में भर्ती कराया गया । तब से पुलिस की भारी सुरक्षा-व्यवस्था के बीच उसका इलाज चल रहा था, परन्तु अभी-अभी सूचना मिली है कि उसने दो खून कर दिए हैं । मगर इन दो खूनों में एक बड़ी हैरतअंगेज मिस्ट्री और है, जो मुझे अचरज में डाले दे रही है ।”

“कैसी मिस्ट्री ?”

“पहला खून मुम्बई में फिल्म स्टार शशि मुखर्जी का रात के सही बारह बजे हुआ ।” गंगाधर महन्त ‘हवाना सिगार’ का कश लगाते हुए बोले ।

“ठीक ।”

“जबकि दूसरा खून मद्रास में अर्जुन मेहता का हुआ है और बिल्कुल सही एक घण्टे के अंतराल से हुआ है, यानी रात के एक बजे ।”

“और दोनों खून अविनाश लोहार ने ही किये हैं ?”

“अभी तक प्राप्त जानकारी से तो यही साबित हो रहा है, क्योंकि दोनों जगह से खून करने के बाद अविनाश लोहार को निकलते साफ-साफ देखा गया है ।”

"लेकिन यह मुमकिन कैसे है ?" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "अगर कोई मुम्बई शहर से मद्रास हवाई जहाज द्वारा भी जायेगा तब भी उसे यह फासला तय करने में ढाई घण्टे लग जाएंगे। जबकि दूसरा खून ठीक एक घण्टे बाद हो गया है। फिर यह दोनों खून एक ही आदमी कैसे कर सकता है ? नो ! नेवर ! जरूर कहीं कोई दूसरा पेंच है। यह दोनों खून अविनाश लोहार ने नहीं किये हैं।"

"मगर दोनों जगह से खून करने के बाद अविनाश लोहार को साफ-साफ निकलते देखा गया है करण !"

"आपकी बात अपनी जगह दुरुस्त है चीफ ! लेकिन फिर भी कहीं-न-कहीं कोई पेंच जरूर मौजूद है। दिस इज इम्पॉसिबल ! वेरी-वेरी इम्पॉसिबल ! आप खुद अपनी अक्ल पर जोर देकर सोचिए। जब मुम्बई से मद्रास शहर का फासला तय करने में ही कम-से-कम ढाई घण्टे का समय लगता है, तो फिर कोई एक आदमी, मात्र एक घण्टे के अन्तराल से मद्रास जाकर खून कैसे कर सकता है ?"

"तुम अपनी जगह बिल्कुल ठीक कह रहे हो करण, मगर उन रिपोर्टों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, जो प्राप्त हो रही हैं।"

"लगता है... ।" कमाण्डर करण सक्सेना परदे पर चमकती अविनाश लोहार की विशालकाय तस्वीर को देखता हुआ बोला- "हत्या का कोई बहुत सनसनीखेज मामला उभरकर सामने आने वाला है।"

"न सिर्फ सनसनीखेज बल्कि बहुत पेचीदा, बहुत ज्यादा एक्साइटिड कर देने वाला।"

"सही।"

"मैं दिल्ली फिर फोन लगाकर देखता हूँ। सबसे पहले हमें यह तो पता लगना चाहिये कि अविनाश लोहार इस वक्त पुलिस कस्टडी में है भी या नहीं।"

गंगाधर महंत वहीं विशालकाय परदे के सामने खड़े हो गये और उन्होंने कार्डलेस फोन से पुन: दिल्ली ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल का नंबर डायल किया।

मगर नतीजा फिर भी कुछ न निकला।

हमेशा की तरह टेलीफोन लाइन पर एक लड़की की आवाज में रटा-रटाया फिकरा सुनाई पड़ा- 'कृपया थोड़ी देर बाद नंबर डायल कीजिये, फिलहाल इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं।'

गंगाधर महंत ने दिल्ली पुलिस कमिश्नर का नंबर डायल किया।

पुन: उन्हें वही फिकरा सुनाई पड़ा।

"हद है!" गंगाधर महंत झुंझला उठे- "चालीस मिनट! पिछले चालीस मिनट से मैं यही एक बात बार-बार सुन रहा हूँ।"

"चीफ!" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "मैं समझता हूँ, अब इस मामले में ज्यादा देर करनी मुनासिब नहीं है। हमें जल्द-से जल्द यह मालूम होना चाहिये कि अविनाश लोहार वहाँ है या नहीं?"

"मगर कैसे पता चले?"

"आप यह मालूम करने के लिए इंटरनेट का सहारा लीजिए।"

"गुड आइडिया।"

गंगाधर महंत की आँखें चमक उठीं।

□□□

वह रॉ हैडक्वार्टर का कंप्यूटर रूम था, जहाँ इधर-उधर सब जगह कंप्यूटर फिट थे ।

हालांकि अर्ध्दरात्रि का समय था ।

लेकिन फिर भी उस वक्त वहाँ दो लड़कियां मौजूद थीं और कंप्यूटर पर काम कर रही थीं । एक उनमें खुले-खुले बालों वाली, पतली-दुबली सी, आंखों पर नजर का चश्मा चढ़ाए बड़ी एण्टीफ्लोस्टिक किस्म की लड़की थी, जो सूरत से ऐसा मालूम पड़ती थी, जैसे ऑफिस गर्ल बनने के लिए ही पैदा हुई थी ।

जबकि दूसरी बड़ी भारी-भरकम नितम्बों वाली, तीखे नैन-नक्श वाली और संतरे के फांक जैसे पतले-पतले होंठ वाली ऐसी तूफानी लड़की थी, जिसे देखते ही दिल में सैक्स का बड़ा जालिम ख्याल पैदा होता था । जिसे देखते ही लगता था, उसे दबोच लो और उसकी राजधानी एक्सप्रेस बना दो ।

गंगाधर महंत और कमाण्डर करण सक्सेना को देखकर वह दोनों लड़कियां तुरन्त सम्मानपूर्वक अपनी-अपनी सीट छोड़कर खड़ी हो गयीं ।

"इंटरनेट ठीक काम कर रहा है ?" गंगाधर महन्त तूफान की तरह अंदर दाखिल होते हुए बोले ।

"यस चीफ !"

"उसे ऑन करो ।"

"अभी लो चीफ !"

वह खुले-खुले बालों वाली लड़की, जो एण्टीफ्लोस्टिक-सी लड़की थी, अब एक दूसरे कंप्यूटर की तरफ लपकी ।

'जस्ट अ मिनट चीफ ! मैं अभी बात करता हूँ ।'

इंटरनेट पर सन्नाटा छा गया ।

गहरा सन्नाटा

शीघ्र ही इंटरनेट की स्क्रीन पर पुनः कुछ शब्द लिखे हुए नजर आये ।

'यस चीफ मैं असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर बोल रहा हूँ ।'

'अविनाश लोहार के बारे में जानते हो ?'

'उसके बारे में भला कौन नहीं जानता चीफ ?' स्क्रीन पर पुनः कुछ शब्द लिखे हुए नजर आये- 'वह दुनिया का सबसे खतरनाक अपराधी है और इस समय ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल के अंदर पुलिस कस्टडी में है । पच्चीस मार्च को उसे फांसी की सजा भी दी जाने वाली है ।'

'यानी अभी थोड़ी देर पहले जो दो खून हुए हैं, उनके बारे में तुम्हें कोई सूचना नहीं ?'

'दो खून ? किनके दो खून ?'

'फिल्म स्टार शशि मुखर्जी और प्रसिद्ध उद्योगपति अर्जुन मेहता का खून ।'

'क्या कह रहे हैं आप ? उन दोनों के खून हो गये ?'

'यस ! और उससे भी ज्यादा सनसनीखेज बात ये है कि उन दोनों के क़त्ल में अविनाश लोहार का नाम आ रहा है ।'

'लेकिन यह कैसे मुमकिन है ? अविनाश लोहार तो बड़े सख्त पहरे में ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल में मौजूद है ।'

'फिलहाल यही चेक करना है । तुम जल्द-से-जल्द वायरलेस मैसेज सर्कुलेट करके यह पता लगाओ कि अविनाश लोहार अब हॉस्पिटल में मौजूद है भी या नहीं । मुझे शक हो रहा है, अगर यह दोनों खून वास्तव में उसने ही

किये हैं, जैसाकि मुझे मिल रही रिपोर्टों में कहा गया है, तो वह जरूर हॉस्पिटल से भाग निकला है ।'

'यह नहीं हो सकता ।'

'क्यों नहीं हो सकता ?'

'क्योंकि अगर अविनाश लोहार जैसा आतंकवादी, अविनाश लोहार जैसा दुनिया का सबसे बड़ा आतंकवादी पुलिस कस्टडी से फरार हो गया होता चीफ, तो उसकी जानकारी सबसे पहले पुलिस मुख्यालय को दी गयी होती, जबकि यहाँ ऐसी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है । इसी से साबित होता है कि अविनाश लोहार सुरक्षित पुलिस कस्टडी में मौजूद है ।'

'फिर भी चेक कराओ ।'

'लेकिन... ?'

'दिस इज माय ऑर्डर ! दिस इज नॉट अ टॉपिक ऑफ़ डिस्कशन । डोंट डु एनी डिले ।'

'ओ.के. चीफ ! मैं अभी वायरलेस मैसेज सर्कुलेट करता हूँ ।'

'गुड ! और जैसे ही कोई जानकारी मिले, मुझे तुरंत इनफॉरमेशन देना ।'

'अवश्य चीफ !'

गंगाधर महंत ने इंटरनेट बंद कर दिया और 'हवाना सिगार' का कश लगाते हुए कुर्सी छोड़कर उठ खड़े हुए ।

मामला नाजुक था ।

कमाण्डर करण सक्सेना जैसा आदमी भी फिक्रमंद दिखाई पड़ रहा था ।

दोनों लड़कियां अभी भी वहाँ हक्की-बक्की-सी खड़ी थीं । मामला कितना संगीन है, वह समझ चुकी थीं ।

वाकई वो दहला देने वाला सिलसिला था ।

रात्रि के तब सवा दो बज रहे थे ।

□□□

उसी क्षण एक रॉ एजेंट भागा-भागा कंप्यूटर रूम में दाखिल हुआ ।

“चीफ ! चीफ ! !”

“क्या हो गया ?”

“आपके लिए फोन है ।”

“किसका फोन ?”

गंगाधर महंत और कमाण्डर करण सक्सेना दोनों चौंके ।

“कलकत्ता के पुलिस कमिश्नर का फोन है । ऐसा मालूम होता है, वह आपको कोई बुरी सूचना देना चाहते हैं ।”

“बुरी सूचना ?”

गंगाधर महंत के दिल की धड़कन तेज हुई ।

वह लपककर अपने ऑफिस में पहुंचे ।

रिसीवर क्रेडिल से अलग टेबल पर रखा हुआ था । गंगाधर महंत ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया ।

“हैलो !”

“रॉ चीफ ?”

“यस ! आई एम स्पीकिंग ।”

“कलकत्ता का पुलिस कमिश्नर बोल रहा हूँ चीफ ! यहाँ कलकत्ता में एक बहुत बुरी घटना घट गयी है । अभी थोड़ी देर पहले रात के ठीक दो बजे प्रसिद्ध क्रिकेटर खिलाड़ी विजय पटेल का खून हो गया है और उससे

भी ज्यादा खतरनाक बात ये है कि उसका खून अविनाश लोहार ने किया है।"

"अविनाश लोहार ?"

गंगाधर महंत हक्के-बक्के रह गये।

एक और खून।

फिर अविनाश लोहार।

विजय पटेल भी बहुत नामचीन आदमी था। वह फ़ास्ट बॉलर था और भारतीय क्रिकेट टीम की रीढ़ था।

उसकी बदौलत भारत ने कई वन डे और टेस्ट मैच जीते थे।

"लेकिन आप यह कैसे कह सकते हो !" गंगाधर महंत बोले- "कि विजय पटेल का खून अविनाश लोहार ने ही किया है ?"

"क्योंकि जिस फार्म हाउस में विजय पटेल का खून हुआ है, उस फार्म हाउस में कई लोगों ने अविनाश लोहार को खून करने के बाद जाते देखा है।"

"इसका मतलब जिस फार्म हाउस पर विजय पटेल का खून हुआ, वो फार्म हाउस विजय पटेल का अपना था।"

"नहीं चीफ।"

"फिर वो इतनी रात को वहाँ क्या कर रहा था ?"

"दरअसल फार्म हाउस पर 'कोका-कोला' की विज्ञापन फिल्म की शूटिंग चल रही थी, जिसमें विजय पटेल काम कर रहा था। जिस वक्त हत्या हुई, उस समय यूनिट के तमाम लोग; जैसे डायरेक्टर, कैमरामैन, मेकअपमैन, स्टंटमैन, स्पॉट बॉय वगैरह सब वहाँ मौजूद थे।"

गंगाधर महंत भौचक्की-सी मुद्रा में वह खबर सुनते रहे।

"चूंकि अविनाश लोहार का केस रॉ की सुपुर्दगी में है चीफ !" पुलिस कमिश्नर ने आगे कहा- "इसलिये मैंने सोचा कि यह सूचना सबसे पहले आपको दूं।"

"थैंक यू ! थैंक यू फॉर दिस इनफॉरमेशन । खून किस वक्त हुआ बताया तुमने ?"

"रात के दो बजे।"

"ठीक दो बजे ?"

"यस !"

गंगाधर महंत के चेहरे पर संजीदगी पुत गयी ।

"कुछ और पूछना है चीफ ?"

"नहीं ! फिलहाल कुछ नहीं ! जब कोई जानकारी हासिल करनी होगी, तो आपसे संपर्क स्थापित कर लिया जायेगा।"

"ओ.के. चीफ !"

गंगाधर महंत ने रिसीवर रख दिया ।

उनके माथे पर पसीने की नन्हीं-नन्हीं बूंदे चुहचुहा आयीं ।

□□□

हंगामा मच चुका था ।

जबरदस्त हंगामा ।

"इट्स इम्पॉसिबल !" कमाण्डर करण सक्सेना टेबल पर घूँसा मारता हुआ बोला- "यह किसी हालत में नहीं हो सकता कि अविनाश लोहार सिर्फ एक-एक घंटे के अंतराल से देश के तीन बड़े महानगरों में तीन खून कर डाले ।"

गंगाधर महंत और कमाण्डर करण सक्सेना, वह दोनों इस समय ऑफिस में ही बैठे थे।

गंगाधर महंत के माथे पर भी चिंता की ढेर सारी लकीरें खींची हुई थीं।

वह 'हवाना सिगार' के छोटे-छोटे कश लगा रहे थे।

मामला वाकई दहला देने वाला था, हैरानी से भरा।

"आप खुद सोचिये चीफ !" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "पहला खून रात के ठीक बारह बजे मुम्बई में होता है। फिर दूसरा खून रात के ठीक एक बजे मद्रास में होता है, और अब सूचना मिल रही है कि तीसरा खून कलकत्ता में क्रिकेट खिलाड़ी विजय पटेल का हो गया है और उससे भी ज्यादा हंगामाखेज बात ये है कि वो खून भी अविनाश लोहार ने किया है। मगर कैसे ? यह सब कैसे हो सकता है चीफ ? जिस तरह मुंबई से मद्रास पहुँचने में ढाई घंटे का समय लगता है, उसी तरह मद्रास से कलकत्ता पहुँचने में भी दो घंटे से ज्यादा समय लगता है। फिर एक ही आदमी एक-एक घंटे के अंदर यह तीनों खून कैसे कर सकता है ? आई डोंट बिलीव दिस। इट कान्ट हैपन।"

"तुम्हारी बात अपनी जगह बिल्कुल दुरुस्त है करण !" गंगाधर महंत बोले- "मगर इस बात को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि तीनों जगह अविनाश लोहार को घटनास्थल से जाते हुए देखा गया है।"

"जरूर इसके पीछे कोई और रहस्य है।"

"कैसा रहस्य ?"

"इस बारे में अभी स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन इस गुत्थी के पीछे कोई-न-कोई मायाजाल अवश्य निकलेगा।"

"शायद तुम ठीक कह रहे हो ।"

"और फिर अभी तो दिल्ली से भी कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है कि अविनाश लोहार ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल में मौजूद है भी या नहीं ।"

"आओ ! कंप्यूटर रूम में जाकर देखते हैं । शायद वहाँ दिल्ली से इंटरनेट पर कोई मैसेज आ रहा हो ।

वह दोनों कंप्यूटर रूम में पहुंचे ।

उस वक्त भी वहाँ वही दोनों लड़कियां काम कर रही थीं और व्यस्त थीं ।

गंगाधर महंत और कमाण्डर करण सक्सेना को देखकर वे पुनः अपनी-अपनी सीट छोड़कर खड़ी हो गयीं ।

"इंटरनेट पर कोई मैसेज आया ?"

"नो चीफ !"

"कहीं से कैसी भी कोई और सूचना ?"

"नहीं !"

गंगाधर महंत और कमाण्डर करण सक्सेना इंटरनेट के सामने जाकर बैठ गये और प्रतीक्षा करने लगे । तीन बजकर बीस मिनट पर दिल्ली पुलिस मुख्यालय से एक सूचना प्राप्त हुई ।

'चीफ !' कंप्यूटर स्क्रीन पर जल्दी-जल्दी शब्द उभरे- 'ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल से अविनाश लोहार के बारे में जानकारी प्राप्त हो गयी है ।'

'क्या जानकारी है ?' गंगाधर महंत ने स्पीकर पर कहा ।

'अविनाश लोहार वहीं ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल के अंदर ही मौजूद है !'

‘क्या कह रहे हो तुम ?’ गंगाधर महंत के मुँह से आश्चर्यमिश्रित स्वर निकला- ‘अविनाश लोहार हॉस्पिटल में मौजूद है ?’

‘जी हाँ ! वो पहले की तरह हॉस्पिटल के इंटेंसिव के अंदर यूनिट में मौजूद है चीफ !’

कमाण्डर करण सक्सेना भी उस जानकारी पर भौंचक्का रह गया।

चकित।

‘लेकिन यह कैसे हो सकता है ?’ गंगाधर महंत विस्मित लहजे में बोले- ‘अगर अविनाश लोहार हॉस्पिटल में मौजूद है, तो ये खून किसने कर दिये ? अभी थोड़ी देर पहले मुझे कलकत्ता से भी एक बड़ी भयानक खबर प्राप्त हुई है कि वहाँ भी एक खून हो चुका है।’

‘किसका ?’

‘प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी विजय पटेल का।’

‘माय गॉड ! विजय पटेल भी मारा गया ?’

‘यस !’

‘परन्तु उसकी हत्या किसने की ?’

‘उसकी हत्या में भी अविनाश लोहार का ही नाम आ रहा है। खून करने के बाद उसे वहाँ से कई लोगों ने जाते देखा है।’

‘मगर यह कैसे मुमकिन है। अब अविनाश लोहार यहाँ दिल्ली के ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल में मौजूद है, पुलिस कस्टडी में मौजूद है, तो फिर...तो फिर वह मुम्बई, मद्रास या कलकत्ता में जाकर खून कैसे कर सकता है ? हाउ इज इट पॉसिबल ? इट्स क्वाइट इम्पॉसिबल ! ! कलकत्ता में विजय पटेल का किस टाइम खून हुआ ?’

'रात के ठीक दो बजे ।'

'यानी तीनों हत्यायें सिर्फ एक-एक घंटे के अंतराल से हुई हैं ।'

'यस !'

'कुछ समझ नहीं आ रहा । जरूर कोई बड़ा रहस्य-चक्र है । एक बात आप कन्फर्म समझ लें चीफ, अविनाश लोहार शत-प्रतिशत ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल में मौजूद है । हमारे पुलिसकर्मियों ने खुद उसे वहाँ जाकर अपनी आँखों से देखा है ।'

'ओ.के. ! मुझे बस यही जानकारी प्राप्त करनी थी । थैंक्स अ लॉट !'

'एक मिनट चीफ ! एक मिनट !'

'क्या हुआ ?'

'मुझे अभी-अभी एक बड़ी हंगामाखेज सूचना और प्राप्त हुई है । यहाँ दिल्ली में भी एक खून हो चुका है ।'

'खून ? किसका खून ?'

'समाजवादी नेता नागेन्द्र पाल का । जनपद के वी.आई.पी. क्षेत्र में उनकी कोठी थी । वहीं रात के तीन बजे उसकी गोली मारकर हत्या कर दी गयी ।'

'तीन बजे ?'

'जी हाँ ! और सबसे बड़ी हैरतअंगेज बात ये है कि समाजवादी नेता नागेन्द्र पाल की हत्या में भी अविनाश लोहार का ही नाम लिया जा रहा है । उसके बॉडीगार्ड का बयान है कि उसने खुद अविनाश लोहार को हत्या करने के बाद यहाँ से जाते देखा है ।'

'ओह आश्चर्यजनक ।' गंगाधर महंत हैरानी से बोले-'बेहद आश्चर्यजनक ! ! मैं अपने कानों पर विश्वास नहीं कर

"हाँ ! यह विचार करने लायक बात जरूर है । एक दूसरी बात भी मुमकिन है चीफ !"

"क्या ?"

"मुमकिन है, अविनाश लोहार को इन हत्याओं के विषय में कुछ मालूम ही न हो ।" गंगाधर महंत 'हवाना सिगार' का कश लगाते हुए बोले- "हो सकता है यह किसी दूसरे अपराधी का काम हो । उसने अविनाश लोहार के मेकअप में यह सब किया हो, ताकि उन चारों हत्याओं का इल्जाम अविनाश लोहार के ऊपर आ
जाये ।"

"लेकिन आप भूल रहे हैं चीफ !" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "अविनाश लोहार तो इस समय पुलिस कस्टडी में है । कोई अपराधी अगर इस तरह सब-कुछ करेगा भी, तो उसका इल्जाम अविनाश लोहार के ऊपर कैसे आ जायेगा ?"

"यह बात भी दुरुस्त है ।"

"गंगाधर महंत के माथे पर ढेर सारी सिलवटें पड़ गयीं ।

वह उस केस के बारे में जितना सोच रहे थे, उतनी ही उसमें उलझनें बढ़ रही थीं ।

उतने ही उसमें नए-नए पेंच पैदा हो रहे थे ।

"अब इस समस्या का बस एक ही हल है ।" गंगाधर महंत 'हवाना सिगार' का कश लगाते हुए बोले ।

"क्या ?"

"दिल्ली में अविनाश लोहार के पास जाकर उससे मुलाकात की जाये । एक अविनाश लोहार ही वो आदमी है, जो इन तमाम रहस्यों के ऊपर से पर्दा उठा सकता है ।"

“शायद आप ठीक कह रहे हैं । हमें अब अविनाश लोहार से ही मिलना चाहिये ।”

“न सिर्फ मिलना चाहिये, बल्कि फौरन मिलना चाहिये । तुम तुरन्त दिल्ली के लिए रवाना हो जाओ ।”

“मैं ?”

“यस करण ! यह कोई मामूली केस नहीं है । इसे सिर्फ तुम ही हैण्डल कर सकते हो ।”

“ओ.के. चीफ !”

□□□

उन चारों की हत्या का समाचार तुरन्त ही रेडियो और टीवी पर ब्रॉडकॉस्ट कर दिया गया ।

वह चारों चूंकि अपने-अपने क्षेत्र की हस्तियां थे ।

बड़ी हस्तियां ।

इसलिये जिसने भी वह समाचार सुना, वही चौंका ।

उसी के छक्के छूटे ।

फिर उस समाचार का सबसे सनसनीखेज पहलू ये था कि वह चारों हत्या एक ही आदमी ने की थीं ।

पूरे देश में लोगों के बीच दिमागी कसरत सी शुरू हो गयी कि एक ही आदमी वह चारों हत्यायें कैसे कर सकता है ?

क्या ऐसा संभव है ?

बड़े-बड़े बुध्दिमान आदमी आपस में जिरह करने लगे ।

फिल्म जगत, क्रिकेट जगत, औद्योगिक क्षेत्र और राजनैतिक जगत, सब जगह उन हत्याओं के कारण शोक की लहर दौड़ गयी ।

सुबह के तमाम समाचार-पत्र भी उन हत्याओं की खबरों से रंगे पड़े थे ।

□□□

भोर का उजाला अभी चारों तरफ फैलना ही शुरू हुआ था कि कमाण्डर करण सक्सेना इण्डियन एयरलाइन्स की फ्लाइट से दिल्ली पहुँच गया ।

असिस्टेन्ट पुलिस कमिश्नर खुद उसे रिसीव करने एअरपोर्ट आया था ।

उसने पूरी गरमजोशी के साथ कमाण्डर करण सक्सेना का स्वागत किया और फिर उसे लेकर ऑल इण्डिया मेडिकल हॉस्पिटल पहुँचा ।

ऑल इण्डिया मेडिकल हॉस्पिटल में सब कुछ सामान्य था । दैनिक गतिविधियां वहाँ शुरू हो चुकी थीं । डॉक्टर, नर्स, मरीज आते-जाते दिखाई पड़ रहे थे ।

सफाई कर्मचारी वहाँ आकर अपना काम कर चुके थे । मरीजों के रिश्तेदार, जो उनकी सेवा-सुश्रुषा में सारी रात जगे थे, उनके चेहरे अलसाये हुए साफ दिखाई पड़ रहे थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना उस पूरे माहौल का बारीकी से अवलोकन करता हुआ ए.सी.पी. के साथ गलियारे में आगे की तरफ बढ़ा जा रहा था ।

"कमिश्नर !" कमाण्डर करण सक्सेना 'डनहिल' के छोटे-छोटे कश लगाता हुआ बोला- "यहाँ का माहौल देखकर ऐसा बिल्कुल भी नहीं लगता कि इस हॉस्पिटल में अविनाश लोहार जैसा दुनिया का सबसे खतरनाक आतंकवादी भी मौजूद है ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि यहाँ सिक्योरिटा के नाम पर कोई चीज नहीं है ।"

"ऐसी बात नहीं कमाण्डर !" असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर बोला- "इस हॉस्पिटल की सबसे ऊपरी मंजिल पर एक इंटेसिव केअर यूनिट बना हुआ है। वहीं अविनाश लोहार को रखा गया है और वहाँ सिक्योरिटी का भी भरपूर इन्तजाम है। शायद ही पहले कभी किसी के लिए इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी की गयी हो।"

"क्या उस इण्टेसिव केअर यूनिट में अविनाश लोहार के अलावा दूसरा कोई पेशेन्ट नहीं ?"

"नहीं, उसे वहाँ बिल्कुल अकेला रखा गया है।"

"ओह !"

"और सिक्योरिटी इतनी टाइट है कि उस इण्टेसिव केअर यूनिट में कोई परिन्दा भी पर नहीं मार सकता। अभी आप खुद यह अपनी आंखों से देखेंगे कमाण्डर।"

गलियारे में चलते-चलते असिस्टेन्ट पुलिस कमिश्नर एक लिफ्ट के सामने पहुँचकर रुक गया।

कमाण्डर करण सक्सेना भी ठिठका।

शीघ्र ही वह दोनों लिफ्ट में सवार हो गये और लिफ्ट ऊपर की तरफ भागने लगी।

लिफ्ट सीधे ऑल इण्डिया मेडिकल हॉस्पिटल की छठी मंजिल पर पहुँचकर रुकी।

जैसे ही वह दोनों लिफ्ट से बाहर निकले, तुरन्त ब्लैक कैट कमाण्डोज ने उन्हें आकर घेर लिया।

वह मशीनगनों से लैस थे।

और बेहद चौंकन्ने दिखाई दे रहे थे। उनके फुर्तीले और सुडौल हाथ-पांव बताते थे कि वे जुड़ो-कराटे एक्सपर्ट हैं।

ए.सी.पी. को देखते ही उन्होंने पहचान लिया और जोरदार ढंग से सेल्यूट मारा।

“आपका परिचय ?” फिर उनमें से एक ही निगाह कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ उठी ।

“ये कमाण्डर हैं ।” ए.सी.पी. बोला- “कमाण्डर करण सक्सेना !”

कमाण्डर करण सक्सेना !

वह चारों इस तरह चौंके, जैसे उनके आस-पास कोई बम फट पड़ा हो ।

उन्होंने ए.सी.पी. से भी ज्यादा जोरदार ढंग से कमाण्डर करण सक्सेना को सेल्यूट मारा ।

“मैं अविनाश लोहार से मिलने आया हूँ ।” कमाण्डर करण सक्सेना ने कहा- “वह इस वक्त कहाँ है ?”

“वो आई.सी.यू. में है । आइए, आप हमारे साथ आइए ।”

कमाण्डर करण सक्सेना और ए.सी.पी. चारों कमाण्डोज के पीछे-पीछे चले ।

तब कमाण्डर करण सक्सेना ने देखा, वहाँ सचमुच सुरक्षा का बड़ा तगड़ा इंतजाम था । कोई पचास कमाण्डोज थे, जो अविनाश लोहार की सिक्योरिटी के लिए वहाँ नियुक्त किये गये थे । सभी शक्ल-सूरत से बहुत चाक-चौबन्द दृष्टिगोचर हो रहे थे और अत्याधुनिक हथियारों से लैस थे । वहीं एक छोटे-से कमरे में उन्होंने कण्ट्रोल-रूम बनाया हुआ था, जहाँ वायरलेस से लेकर दूसरे कई संचार उपकरण मौजूद थे ।

“क्या हमेशा ही यहाँ अविनाश लोहार की सिक्योरिटी के लिए इतने ही कमाण्डोज मौजूद रहते हैं ?” कमाण्डर करण सक्सेना एक-एक चीज का बारीक अवलोकन करता हुआ बोला ।

"यस कमाण्डर !"

"यानी रात देश के अलग-अलग कोने में जो चार हत्यायें हुई हैं, उन हत्याओं के होने से यहाँ कुछ परिवर्तन नहीं हुआ है ।"

"नहीं कमाण्डर !" कमाण्डो बोला- "वैसे भी यहाँ क्या परिवर्तन हो सकता है? पहले ही हमने अविनाश लोहार की सुरक्षा के बहुत सोच-समझकर इंतजाम किये हैं । कभी किसी बाहरी आदमी को उससे मिलने नहीं दिया जाता है । यहाँ जितने भी कमाण्डोज हैं, वे सब 'स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप' से सम्बन्धित हैं और 'जेड' (Z) क्लास सिक्योरिटी में इस्तेमाल किये जाते हैं । इतना ही नहीं, हर कमाण्डो की ड्यूटी आठ घण्टे बाद बदल जाती है ।"

"यानी यहाँ कमाण्डोज की कुल तीन शिफ्टें चलती हैं ?"

"यस कमाण्डर ! कुल डेढ़ सौ कमाण्डोज अविनाश लोहार की निगरानी के लिए यहाँ तैनात किये गये हैं ।"

डेढ़ सौ !

सचमुच सुरक्षा के अच्छे-खासे इंतजाम वहाँ किये गये थे । किसी एक अपराधी के ऊपर डेढ़ सौ कमाण्डोज तैनात किया जाना वाकई बड़ी बात थी ।

"फिर जब से अविनाश लोहार को यहाँ लाया गया है ।" कमाण्डो बोला- "तब से किसी दूसरे पेशेन्ट को इस मंजिल पर नहीं लाया गया है । कुल मिलाकर यह पूरे-का-पूरा ब्लॉक पिछले दो महिनों से सिर्फ अविनाश लोहार के लिए ही बुक है । इतना ही नहीं, हॉस्पिटल के उन डॉक्टरों को भी इस मंजिल पर आने की परमीशन नहीं दी जाती, जो अविनाश लोहार का इलाज नहीं कर रहे हैं ।"

"यानी एक दुर्दान्त अपराधी की जितनी सिक्योरिटी मुमकिन है ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "वह सब आप कर रहे हैं ।"

"न सिर्फ उतनी सिक्योरिटी कर रहे हैं बल्कि उससे कहीं ज्यादा सिक्योरिटी कर रहे हैं ।"

"फिर रात इतनी बड़ी घटना कैसे घट गयी ?" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "देश के चार बड़े महानगरों में इतने प्रसिध्द चार आदमियों के खून हो गये और उन सब हत्याओं में अविनाश लोहार का नाम आ रहा है ।"

"यह सब हमारी समझ से भी बाहर है कमाण्डर ! वाकई यह बड़ा आश्चर्यजनक मामला है ।"

□□□

अविनाश लोहार जिस इंटेसिव केयर यूनिट में मौजूद था, वह एक काफी बड़ा कमरा था । उस कमरे में पारदर्शी शीशे लगे हुए थे और वहाँ एक ही समय में कम-से-कम दस सीरियस पेशेन्ट रखे जा सकते थे, परन्तु फिलहाल वहाँ अविनाश लोहार ही मौजूद था ।

उसने सफेद कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था और बैड पर बैठा एक पत्रिका के पन्ने पलट रहा था ।

कमाण्डर करण सक्सेना, ए.सी.पी. और कमाण्डो जैसे ही आई.सी.यू. में दाखिल हुए, अविनाश लोहार ने मुस्कुराते हुए पत्रिका एक तरफ रख दी ।

"आओ कमाण्डर, आओ ।"

कमाण्डर करण सक्सेना चौंका ।

चौंका असिस्टेन्ट पुलिस कमिश्नर भी था ।

"तुम मुझे पहचानते हो ?"

"आपको भला इस देश में कौन नहीं जानता कमाण्डर ! फिर मैं तो एक अपराधी हूँ, एक आतंकवादी ।"

कमाण्डर करण सक्सेना, अविनाश लोहार के नजदीक पहुँचा और वहीं पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया ।

"वैसे भी मैं जानता था ।" अविनाश लोहार धमाके-पर-धमाके करता हुआ बोला- "कि आप मुझसे मिलने जरूर आओगे । सच तो ये है, इस वक्त मैं आप ही के आने का इंतजार कर रहा था । हाँ, अगर आप न आते तो मुझे हैरानी जरूर होती ।"

"यानी तुम्हें मालूम था ।" कमाण्डर बोला- "कि मैं आऊँगा ।"

"बिल्कुल मालूम था ।"

"कैसे ?"

"बहुत साधारण-सी बात है कमाण्डर ! रात इस देश की चार हस्तियों का खून हुआ है । चारों अपने-अपने फील्ड के मास्टर थे । और सबसे बड़ी बात ये है कि उन सबकी हत्या में मेरा नाम आ रहा है । जब इतने बड़े-बड़े लोगों की हत्या का मामला हो, तो फिर यह केस हिन्दुस्तान में कमाण्डर करण सक्सेना के अलावा भला किसे सौंपा जा सकता है ? और जिस जासूस को भी यह केस सौंपा जाता, वह सबसे पहले मुझसे ही मिलने आता, राइट ?"

"राइट !"

कमाण्डर करण सक्सेना, अविनाश लोहार की दूरदर्शिता से प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सका ।

ए.सी.पी. और कमाण्डो अभी भी बहुत अलर्ट पोजीशन में उसके पीछे खड़े थे । जबकि कमाण्डर करण सक्सेना ने

"यानी तुम इस बात को साबित कर सकते हो ।" कमाण्डर करण सक्सेना चौंककर बोला- "कि चारों हत्यायें तुमने की हैं ।"

"बिल्कुल !"

घटनायें नए-नए मोड़ ले रही थीं ।

अविनाश लोहार के कारण नए-नए धमाके हो रहे थे ।

"क...कैसे साबित करोगे ?"

"बताता हूँ ।"

अविनाश लोहार के चेहरे पर अब ऐसे भाव थे, जैसे वह कोई जादूगर था और अपना कोई खेल दिखाने जा रहा था ।

□□□

हत्यायें अविनाश लोहार ने ही की हैं, यह साबित करने के लिए उसने सबसे पहले उस कमाण्डो को बुलाया, जो रात की शिफ्ट में वहाँ तैनात था । उस कमाण्डो का घर करीब ही था, इसलिये वो फ़ौरन ही हाजिर हो गया ।

वह तीस-बत्तीस साल का लम्बे-चौड़े कद-काठी वाला आदमी था और शक्ल-सूरत से ही मार्शल आर्ट का योद्धा नजर आता था ।

उसका नाम रंजीत था ।

"जहाँ तक मेरा अनुमान है मिस्टर रंजीत !" अविनाश लोहार उसे देखकर बोला- "कल सारी रात तुम बिल्कुल आई.सी.यू. के बाहर ही चहलकदमी करते रहे थे ?"

"जी हाँ !" रंजीत बोला ।

"यानी रात पूरी तरह तुम्हारी मेरे ऊपर निगाह थी ।"

"बिल्कुल ।"

"क्या तुम कमाण्डर करण सक्सेना को बता सकते हो रंजीत, मैं कल सारी रात कहाँ था ?"

"कहाँ होते, तुम आई.सी.यू. के अंदर थे और सो रहे थे ।"

अविनाश लोहार मुस्कुराया ।

"यह बात तुम पूरे दावे के साथ कह सकते हो कि मैं आई.सी.यू. के अंदर ही था ?"

"बिल्कुल पूरे दावे के साथ कह सकता हूँ ।" रंजीत दृढ़तापूर्वक बोला- "आखिर मेरी निगाह तुम्हारे ऊपर दर्जनों मर्तबा पड़ी थी ।"

"कमाण्डर ! रंजीत की एक-एक बात को अच्छी तरह नोट करो । रंजीत का कहना है कि मैं कल रात हण्ड्रेड परसेंट आई.सी.यू. के अंदर ही मौजूद था और इसने खुद अपनी आँखों से मुझे सोते हुए देखा था ।"

कमाण्डर करण सक्सेना, अविनाश लोहार की एक-एक बात ध्यानपूर्वक सुन रहा था ।

वो नहीं जानता था, अविनाश लोहार अगले ही पल वार्तालाप को क्या मोड़ देने जा रहा है ?

"रंजीत अब मेरे दूसरे सवाल का जवाब दो ।"

"पूछो !"

"कल रात जब तुमने मुझे आई.सी.यू. के अंदर सोते हुए देखा, तो मेरा मुँह खुला हुआ था या फिर मैं मुँह के ऊपर चादर ढककर सो रहा था ?"

"चादर ढककर सो रहे थे ।"

"कमाण्डर !" अविनाश लोहा तत्परतापूर्वक बोला- "इस पॉइंट को ख़ासतौर पर नोट करो । रंजीत का कहना

है, मैं अपने मुँह पर चादर ढककर सो रहा था। रंजीत अब मेरे एक दूसरे सवाल का जवाब दो।"

"क्या ?"

रंजीत के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव दिखाई पड़ने लगे।

उसे भय हुआ, कहीं उसके मुँह से कोई गलत शब्द न निकल जाये।

"रंजीत ! रात तो मैं मुँह ढककर सो रहा था।" अविनाश लोहार बोला- "लेकिन ज़रा सोचकर जवाब दो। कोई पन्द्रह दिन पहले तक भी मैं क्या मुँह ढककर ही सोता था ?"

"पंद्रह दिन पहले ?"

"हाँ !"

रंजीत के चेहरे पर विचारपूर्ण भाव उभर आये और वह अपने दिमाग पर जोर डालकर सोचने लगा।

एकाएक ऐसा लगा, जैसे उसके दिमाग में धमाका हुआ हो।

उसके चेहरे पर चौंकने जैसे भाव उभरे।

"नहीं !" रंजीत तीव्रतापूर्वक बोला- "मुझे अच्छी तरह याद है अविनाश ! तुम पन्द्र दिन पहले तक मुँह ढककर नहीं सोते थे बल्कि मुँह खोलकर सोते थे।"

"करेक्ट !" अविनाश लोहार संतोष की सांस लेता हुआ बोला- "मैं मुँह खोलकर ही सोता था। कमाण्डर, रंजीत द्वारा कहा गया यह दूसरा पॉइंट भी नोट करो। रंजीत का कहना है कि मैं मुँह खोलकर ही सोता था। लेकिन पिछले पंद्रह दिन से, जी हाँ, सिर्फ पंद्रह दिन से मैं मुँह ढककर सो रहा था।"

"मैं समझ नहीं पा रहा हूँ ।" कमाण्डर करण सक्सेना 'डनहिल' का कश लगाता हुआ बोला- "कि आखिर इन सब बातों से तुम क्या साबित करना चाहते हो ?"

"मैं जो साबित करना चाहता था कमाण्डर, वह साबित हो चुका है । बहुत साधारण-सी बात है कि मुझे वास्तव में मुँह खोलकर सोने की आदत थी । वैसे भी सेहत के लिए मुँह खोलकर सोना ही बेहतर रहता है । लेकिन मैं पिछले पंद्रह दिन से जानबूझकर मुँह ढककर सो रहा था और इसलिये मुँह ढककर सो रहा था, क्योंकि कल की रात मैंने बिस्तर से गायब रहना था ।"

"य... यानी तुम ये कहना चाहते हो ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "कि कल रात जब रंजीत ने तुम्हें बिस्तर पर लेटे हुए देखा, तो तुम उस समय बिस्तर पर नहीं थे ।"

"जी हाँ ! मैं उस वक्त बिस्तर पर नहीं था । चादर के नीचे सिर्फ तकिये थे । लेकिन रंजीत को चूंकि यह बात मालूम नहीं थी, इसलिये उसने यही समझा कि मैं वहाँ लेटा हुआ हूँ । पहरा देते सारे कमांडोज भ्रम में रहे और यही मेरा उद्देश्य था । दरअसल पन्द्रह दिन पहले से मैंने चादर द्वारा मुँह ढककर सोने की आदत इसलिये डाली थी, ताकि कल की रात जब मैं बिस्तर से गायब रहूँ तो किसी को शक न हो कि मैं गायब हूँ । वरना अगर मैं मुँह खोलकर ही सोता रहता और कल की रात चादर से मेरा मुँह ढका हुआ होता, तो सभी कमांडोज के मन में तुरंत संदेह उत्पन्न हो जाता और मेरी सारी पोल उसी क्षण खुल जाती ।"

"यानी कल वाला कार्य अंजाम देने के लिए तुमने पंद्रह दिन पहले से मुँह ढक कर सोने की आदत डाली, ताकि किसी को तुम्हारे ऊपर शक न हो ?"

"बिल्कुल।"

कमाण्डर करण सक्सेना सहित आई.सी.यू. में मौजूद सभी व्यक्ति आश्चर्यचकित रह गये।

वाकई !

अविनाश लोहार ने अपनी बुद्धि का खुलकर इस्तेमाल किया था।

□□□

फिर उसने डॉक्टर विश्वकर्मा को बुलाया।

डॉक्टर विश्वकर्मा डॉक्टरों की उस टीम का मेम्बर था, जो टीम पिछले दो महीने से अविनाश लोहार का इलाज कर रही थी।

डॉक्टर विश्वकर्मा पैंतालीसेक साल का पतले-दुबले शरीर का आदमी था। वह ड्यूटी के दौरान हमेशा सफ़ेद ओवरकोट पहने रहता और गले में स्टेथेस्कोप लटकाए रहता। कुल मिलाकर दूर से ही दिखाई देता था कि वह डॉक्टर है। डॉक्टर विश्वकर्मा रोजाना रात को अविनाश लोहार का रूटीन चेकअप करने के लिए आता था।

"आपने मुझे बुलाया ?" डॉक्टर विश्वकर्मा अपना ऐनक दुरुस्त करता हुआ आई.सी.यू. में दाखिल हुआ।

"इन्होने नहीं बल्कि मैंने तुम्हें बुलाया है डॉक्टर !" अविनाश लोहार बोला।

"तुमने ?"

डॉक्टर विश्वकर्मा ने थोड़ा चौंककर अविनाश लोहार की तरफ देखा।

अविनाश लोहार, जिसके चेहरे पर इस समय भरपूर विश्वास दृष्टिगोचर हो रहा था।

"डॉक्टर ! तुमने कमाण्डर करण सक्सेना के सामने मेरे बस एक बहुत छोटे-से सवाल का जवाब देना है । सबसे पहले यह बताओ, रोजाना रात को मेरा रूटीन चेकअप करने के लिए यहाँ कौन आता है ?"

"मैं ही आता हूँ ।"

"किस टाइम आते हो ?"

"लगभग साढ़े तीन बजे ।"

कमाण्डर करण सक्सेना उन दोनों का वार्तालाप बहुत ध्यान से सुन रहा था और 'डनहिल' के छोटे-छोटे कश लगा रहा था ।

"कमाण्डर !" अविनाश लोहार ने कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ देखा- "डॉक्टर विश्वकर्मा का एक-एक पॉइंट नोट करो । रोजाना रात को मेरा रूटीन चेकअप करने के लिए यह खुद आते हैं और लगभग साढ़े तीन बजे आते हैं । डॉक्टर ! रात तुम मेरा रूटीन चेकअप करने के लिए किस वक्त आये थे ?"

"साढ़े तीन बजे के करीब ही आया था ।" डॉक्टर विश्वकर्मा ने पुनः अपना ऐनक दुरुस्त करता हुआ बोला ।

"साढ़े तीन बजे के करीब या फिर बिल्कुल सही साढ़े तीन बजे ?"

"एकदम एक्यूरेट टाइम तो मुझे नहीं मालूम ।" डॉक्टर विश्वकर्मा बोला- "लेकिन साढ़े तीन बजे के आसपास का ही टाइम था । क्योंकि सही सवा तीन बजे मेरी वाइफ का घर से टेलीफोन आया था । उसकी तबियत उस समय थोड़ी खराब थी । इसलिये वो ड्यूटी वर्क जल्द-से जल्द निपटाकर घर लौट आने को कह रही थी । बस उसका फोन सुनने के बाद मैं ऊपर ही आ गया था ।"

“यानी यह बात बिल्कुल कन्फर्म है कि तुम सवा तीन बजे के बाद ही ऊपर आये थे ?”

“हाँ ! यह तो बिल्कुल कन्फर्म है ।”

“ठीक है ! तो अब तुम मेरे एक दूसरे सवाल का जवाब दो डॉक्टर ! जब तुम रोजाना आधी रात को मेरा रुटीन चेकअप करने के लिए आते थे, तो मैं उस समय क्या कर रहा होता था ?”

“तुम उस वक्त बिस्तर पर गहरी नींद सो रहे होते थे ।”

“फिर तुम क्या करते थे ?”

“मैं कुछ नहीं करता था ।” डॉक्टर विश्वकर्मा बोला- “मैं धीरे से तुम्हारे हाथ की नब्ज देखता था कि वो चल रही है या नहीं । फिर मैं पेशेंट चार्ट में सब कुछ ओ.के. लिखता था, सिग्नेचर करता था । उसके बाद चला जाता था ।”

“डॉक्टर ! क्या पिछले दो महीनों के दौरान कभी ऐसा भी हुआ कि तुम आधी रात में रुटीन चेकअप के लिए आये हो और मैं जाग रहा होऊँ ?”

“नहीं ! पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ था ।” डॉक्टर विश्वकर्मा बोला- “अलबत्ता कल रात जरूर ऐसा हुआ ।”

“रात क्या हुआ, यह बात ज़रा ख़ासतौर पर कमाण्डर करण सक्सेना को बताओ ।”

“कमाण्डर !” डॉक्टर विश्वकर्मा, कमाण्डर की तरफ घूमकर बोला- “रात जब मैं रुटीन चेकअप के लिए आया, तो अविनाश लोहार जाग रहा था ।”

“सुना कमाण्डर ! सुना !” अविनाश लोहार ने एकाएक बेहद प्रफुल्लित लहजे में कहा- “यह मेरे हत्यारे होने का दूसरा सबूत है । डॉक्टर का कहना है कि जब यह रोजाना रुटीन चेकअप के लिए आते थे, तो मैं सो रहा होता था

। लेकिन कल रात जब यह आये तो मैं जाग रहा था । आधी रात के समय जाग रहा था कमाण्डर, क्योंकि बस चंद सेकंड्स पहले ही मैं तभी समाजवादी नेता नागेन्द्र पाल की हत्या करके यहाँ आया था । मैंने बड़ी खामोशी से दोनों तकिये चादर के नीचे से हटाये थे और खुद उनकी जगह लेट गया था ।”

“लेकिन तुम हत्या करने के लिए इस इंटेंसिव केअर यूनिट से बाहर कैसे निकले ?” कमाण्डर करण सक्सेना ने बेहद सस्पेंसफुल लहजे में पूछा- “और फिर यहाँ वापस कैसे आये ? क्योंकि यहाँ तो जबरदस्त पहरा है । कदम-कदम पर कमांडोज तैनात हैं ।”

“वो सब भी मैं तुम्हें बताता हूँ ।” अविनाश लोहार बेधड़क एक-एक करके रहस्य के परदे उठाता चला गया- “कि मैं इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी के बावजूद यहाँ से बाहर कैसे निकला और यहाँ वापस कैसे आया ? आओ ! मैं आपको वह जगह दिखाता हूँ, जहाँ से मैं बाहर निकलकर गया और वापस आया ।”

“दिखाओ ।”

□□□

सस्पेंस बढ़ता जा रहा था ।

अविनाश लोहार के जबान से निकला एक-एक शब्द नए-नए रहस्योद्घाटन कर रहा था ।

अविनाश लोहार उन सबको इंटेंसिव केअर यूनिट से ही अटैच उसके टॉयलेट में लेकर पहुँचा । टॉयलेट काफी बड़ा था । वहाँ शावर लगा हुआ था । बिल्कुल आख़िरी कोने में यूरोपियन शैली का कमोड था । उसके काफी आगे वाशवेसन लगा हुआ था और उसके ऊपर शीशा फिट था ।

वाशवेसन के बिल्कुल बराबर में एक काफी बड़ी कांच की खिड़की थी, जिस पर ग्रिल चढ़ी थी। लेकिन उस ग्रिल को अंदर से खोल-बंद किया जा सकता था।

"तुम हमें इस टॉयलेट में क्यों लेकर आये हो ?" ए.सी.पी. ने कौतुहलतापूर्वक पूछा।

"क्योंकि यही वो जगह है।" अविनाश लोहार बोला- "जहाँ से मैं चारों हत्या करने के लिए बाहर निकला और वापस लौटा।"

"टॉयलेट में से ?"

"जी हाँ !"

"किस तरह ?"

अविनाश लोहार ने आगे बढ़कर ग्रिल खोली और उसके जालीदार पल्ले बाहर की तरफ धकेल दिए। फिर वो वहीं अपनी कोहनी टिकाकर खड़ा हो गया और थोड़ा झुककर नीचे की तरफ झांकने लगा।

"यहाँ आइये कमाण्डर !"

कमाण्डर करण सक्सेना उसके नजदीक पहुँचा और उसने भी अविनाश लोहार की तरह नीचे की तरफ झांका।

"यहाँ से बाहर जाना और वापस आना मेरे लिए बहुत आसान था।" अविनाश लोहार बोला- "इतना आसान कि आपमें से कोई भी कल्पना नहीं कर सकता, इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी के बावजूद कोई यहाँ से इतनी सहजता के साथ आ-जा भी सकता है। ग्रिल के बिल्कुल बराबर में से यह जो वाटर पाइप नीचे की तरफ जा रहा है, मैं इसी वाटर पाइप के साथ उतरकर नीचे गया और फिर चारों हत्यायें करने के बाद इसी पाइप के सहारे चढ़कर ऊपर आया।"

पूरा करके वापस मेकअप रूम में आकर बैठा हुआ था और सेल्युलर फोन पर किसी से बात कर रहा था।"

"किससे ?"

"यह मुझे मालूम नहीं। मैंने यह पता करने की जरूरत महसूस नहीं की।"

"क्या उस वक़्त मेकअप रूम में शशि मुखर्जी के अलावा और कोई भी था ?"

"नहीं, कोई नहीं था।"

"टाइम क्या हुआ था ?"

"ठीक बारह बज रहे थे। मैं जैसे ही शशि मुखर्जी के मेकअप रूम में दाखिल हुआ और अंदर पहुँचकर जैसे ही मैंने रिवॉल्वर निकाली, तो सेल्युलर फोन पर बात करते शशि मुखर्जी की दहशत से आँखें फट पड़ीं और उसने चीखने के लिए हलक फाड़ा।"

"फिर ?"

"फिर कुछ नहीं। मैंने उसे चीखने का जरा भी मौका नहीं दिया। उसके मुँह से आवाज निकल पाती, उससे पहले ही मैंने रिवॉल्वर की नाल उसके हलक के अंदर तक ठोक दी। उसकी आवाज मुँह में ही घुटी की घुटी रह गयी और आतंक के वशीभूत उसके हाथ से तुरंत सेल्युलर फोन भी छूटकर नीचे की तरफ गिरा। लेकिन सेल्युलर फोन नीचे गिर पाता, उससे पहले मैंने उसे हवा में ही लपक लिया। फिर मैंने सेल्युलर फोन के अंदर से सिम कार्ड खींचकर बाहर निकाला।"

"सिम कार्ड क्यों निकाला ?"

"बताता हूँ। सिम कार्ड निकालने के बाद मैंने उसके हलक में अंदर तक ठुंसी रिवॉल्वर की नाल निकाली।

रिवॉल्वर की नाल निकलते ही शशि मुखर्जी के हौसले पुनः बहुत बुलन्द हो गये । वह चीते जैसी फुर्ती के साथ मेरे ऊपर झपट पड़ा और उसने चिल्लाने के लिए दोबारा मुँह फाड़ा । लेकिन इस बार मैंने सिम कार्ड उसके हलक में फेंक मारा, जो उसके पेट में पहुँच गया या फिर कण्ठ में ही कहीं फंस गया । बहरहाल उसकी आवाज दोबारा बंद हो गयी थी । फिर मैंने उसे एक सेकेण्ड का भी मौका नहीं दिया और तत्काल उसे प्वाइंट ब्लैंक शूट कर डाला । गोली उसकी खोपड़ी को किसी बताशे की तरह चीरती चली गयी और तत्काल ऑन द स्पॉट उसकी मौत हो गयी । कमाण्डर, अब स्थिति ये है कि शशि मुखर्जी मारा जा चुका है । जहाँ तक मैं समझता हूँ, अभी उसकी लाश का पोस्टमार्टम नहीं हुआ होगा । यानी सिम कार्ड जैसी चीज गोली मारने से पहले उसके पेट में डाली गयी थी, ये बात फिलहाल उसके हत्यारे को ही मालूम हो सकती है । लेकिन पोस्टमार्टम के बाद यह बात कुलजहान को मालूम होगी । और चूंकि सिमकार्ड से सम्बन्धित बात मैं आपको अभी एडवांस में ही बता रहा हूँ, तो इसी से साबित हो जाता है कि हत्यारा मैं हूँ । दरअसल वह सिम कार्ड मैंने शशि मुखर्जी के शरीर में सबूत के तौर पर इसलिये छोड़ा था, ताकि वह बात बताकर मैं डंके की चोट पर साबित कर सकूं कि उसकी हत्या मैंने की है । थोड़ी-बहुत देर में जब उसका पोस्टमार्टम हो जायेगा और उसके जिस्म में से सिम कार्ड बरामद होगा, तो आपको खुद-ब-खुद पता चल जायेगा कमाण्डर, मैं कितना सच बोल रहा हूँ ।"

कमाण्डर करण सक्सेना बहुत आश्चर्यपूर्ण नजरों से अविनाश लोहार को देखता रहा । उसकी जबान से

निकला एक-एक शब्द उसके दिमाग में धमाका कर रहा था।

जबरदस्त धमाका !

यही हालत ए.सी.पी. और कमाण्डोज की भी थी।

"इसके बाद मैंने मद्रास में प्रसिध्द उद्योगपति अर्जुन मेहता का जो मर्डर किया, वहाँ भी मैंने अपने हत्यारे होने का एक बड़ा पुख्ता सबूत छोड़ा।"

"कैसा सबूत ?"

कमाण्डर करण सक्सेना अपलक अविनाश लोहार को ही देख रहा था।

"मैंने अर्जुन मेहता का मर्डर करने के बाद एक बहुत पैने चाकू की नोंक से उसकी पीठ पर अपने हस्ताक्षर किये।"

"यानी अविनाश लोहार लिखा ?"

"बिल्कुल।"

कमाण्डर करण सक्सेना और तमाम लोगों के लिए वह एक और बिल्कुल नई जानकारी थी।

"कमाण्डर, अर्जुन मेहता की पीठ पर मौजूद मेरे हस्ताक्षर भी इस बात की बड़ी मजबूत शहादत हैं।" अविनाश लोहार पुरजोर लहजे में बोला- "कि वह हत्या भी हण्ड्रेड परसेंट मैंने ही की है और वह किसी भी डुप्लीकेट का काम नहीं है।"

"क्या इसी तरह के सबूत तुमने क्रिकेट खिलाड़ी विजय पटेल और समाजवादी नेता नागेन्द्र पाल की हत्या करते समय भी छोड़े ?"

"बिल्कुल छोड़े। जब मैं कलकत्ता में विजय पटेल की हत्या करने पहुँचा, तो उस समय रात्रि के दो बज रहे थे। वह एक फार्म हाउस पर था और 'कोका कोला' की

विज्ञापन फिल्म में काम कर रहा था। उसका अभी मेकअप वगैरह भी नहीं हुआ था और एक रेलवे प्लेटफार्म जितने विशालकाय हॉल कमरे में अभी लाइटिंग का इंतजाम ही चल रहा था और एक ट्राली शॉट था, जिसकी तैयारी हो रही थी। विजय पटेल उस समय दूसरे कमरे में था और शराब पी रहा था। मैंने उसी कमरे में पहुँचकर पहले उसे साइलेंसर युक्त रिवॉल्वर से शूट किया और फिर बड़े इत्मीनान के साथ अपने लिए एक गिलास में शराब पलटी। उसके बाद मैं गटागट एक ही सांस में शराब पीता चला गया। मैंने गिलास पर जानबूझकर अपने फिंगरप्रिंट छोड़े, होठों के निशान छोड़े और फिर वह गिलास वार्डरोब में कपड़ों के पीछे छुपाकर रख आया, जो अभी भी वहाँ रखा होगा।"

"गिलास कपड़ों के पीछे छुपाकर क्यों रखा तुमने ?" ए.सी.पी. ने पूछा।

"ख़ासतौर पर कमाण्डर के लिए रखा।" अविनाश लोहार बोला- "मैं नहीं चाहता था कि मेरे ह़त्या करके जाने के बाद वहाँ जो स्थानीय पुलिस अधिकारी आयेंगे, उनकी निगाह उस गिलास पर पड़े और वो मूर्खों की तरह उस पर मौजूद सारे फिंगरप्रिंट नष्ट कर डालें। मैं चाहता था कि वह गिलास सिर्फ-और-सिर्फ कमाण्डर के हाथ लगे, ताकि सारे सबूत बने रहें। जहाँ तक मैं समझता हूँ, वह गिलास अभी भी वार्डरोब में ही रखा होगा और उस पर मेरे फिंगरप्रिंट भी मौजूद होंगे। उस गिलास पर मौजूद मेरे फिंगरप्रिंट अपने आपमें इस बात की बहुत पुख्ता शहादत हैं कि कलकत्ता में जाकर विजय पटेल की हत्या भी शत-प्रतिशत मैंने ही की है।"

"और समाजवादी नेता नागेन्द्र पाल की हत्या करने के बाद तुमने वहाँ क्या सबूत छोड़ा ?" वह स्वर एक कमाण्डो का था ।

"वहाँ तो मैंने सबसे ज्यादा पुख्ता सबूत छोड़ा ।" अविनाश लोहार बोला- "जो बिल्कुल अकाट्य है ।"

"क्या ?"

"दरअसल जब मैं नागेन्द्र पाल की कोठी पर पहुँचा, तो उस समय वह अगले दिन होने वाली रैली में भाग लेने के लिए एक भाषण की तैयारी कर रहा था । नागेन्द्र पाल लिखकर भाषण तैयार नहीं करता था बल्कि वो एक टेपरिकार्डर पर बोल-बोलकर भाषण की तैयारी करता था । रात भी उसने टेपरिकार्डर खोला हुआ था और पूरे दिलोजान से भाषण की तैयारी में मग्न था । अलबत्ता मुझे एकाएक इस बात का पता नहीं चला कि वहाँ टेपरिकार्डर भी ऑन है और उसका रिकॉर्डिंग वाला स्विच दबा हुआ है । यही वजह रही कि वहाँ पहुँचने के बाद मेरे और नागेन्द्र पाल के बीच जितनी बातें हुईं, वह सब बड़े स्वाभाविक रुप से टेप में रिकार्ड हो गयीं । यहाँ तक कि मेरी जिस गोली से नागेन्द्र पाल की मौत हुई, उस गोली की आवाज भी टेप में रिकार्ड हो गयी ।"

"यानी गोली चलाने तक भी तुम्हें इस बात का पता नहीं था ।" कमाण्डर करण सक्सेना अचरजपूर्वक बोला- "कि वहाँ कोई टेपरिकार्डर चल रहा है ?"

"नहीं ।"

"फिर कैसे पता चला ?" कमाण्डर की कौतुहलता जागी ।

"नागेन्द्र पाल के हत्या करने के बाद जब मैंने कमरे में दृष्टि दौड़ाई ।" अविनाश लोहार बोला- "तब मुझे टेबल पर रखे टेपरिकार्डर का पता चला, जिसके स्पूल उस वक्त भी घूम रहे थे । मैंने फ़ौरन कैसिट रिवाइंड करके सुनी, तो थोड़ी देर पहले मेरे और नागेन्द्र पाल के बीच जो वार्तालाप हुआ था, वह पुनः शुरू हो गया । उस वार्तालाप को सुनकर पहले तो मैं चौंका कमाण्डर, लेकिन फिर मेरे होठों पर मुस्कराहट दौड़ गयी । भला उस कैसिट से ज्यादा इस बात का पक्का सबूत और क्या हो सकता था कि नागेन्द्र पाल की हत्या मैंने की है । वह वार्तालाप सुनकर मैंने टेप के अंदर से ऑडियो कैसिट बाहर निकाली । उस पर अपनी उँगलियों के निशान छोड़े और फिर वह कैसिट बाकायदा एक लिफ़ाफ़े में बंद करके नागेन्द्र पाल के ब्रीफकेस में डाल दी । वह कैसिट अभी भी नागेन्द्र पाल की कोठी पर उसके ब्रीफकेस में पड़ी है और वो ब्रीफकेस उसके सोफे के पीछे की तरफ थोडा आड़ में रखा हुआ है, जिसे मैंने ही वहाँ रखा है । आप जाकर उस ब्रीफकेस में से ऑडियो कैसिट निकाल सकते हैं । इतना ही नहीं, उस ब्रीफकेस के हैंडिल से भी आपको मेरी उँगलियों के निशान बरामद हो जायेंगे ।"

सब बहुत मंत्रमुग्ध-सी अवस्था में अविनाश लोहार की बातें सुन रहे थे ।

□□□

अविनाश लोहार पहले की तरह ही बिस्तर पर बैठा था ।

कमाण्डर करण सक्सेना उसके नजदीक कुर्सी पर बैठा हुआ था, जबकि बाकी सब बेड के इधर-उधर खड़े थे और

उस बेहद चौंका देने वाले वाकये को सुनकर हैरान हो रहे थे ।

"कमाण्डर ! यह केस अपने आपमें बड़ा अद्भुत है ।" अविनाश लोहार बोला- "अद्भुत भी और आश्चर्य पैदा करने वाला भी । आमतौर पर इस तरह के मामले ज्यादा होते हैं कि पहले हत्या होती है और फिर जासूस अपराधी को तलाशकर उसे सजा कराता है । लेकिन यहाँ मामला बिल्कुल उल्टा है ।"

"क्यों ? उल्टा क्यों है ?"

"क्योंकि यहाँ अपराधी पहले ही खुद-ब-खुद आपसे चीखकर कह रहा है कि उसने यह चारों हत्यायें की हैं, वो हत्यारा है । इतना ही नहीं, मैं खुद आपको वो सबूत भी बाकायदा चांदी की तश्तरी में सजाकर पेश कर रहा हूँ, जिनसे डंके की चोट पर साबित होता है कि वास्तव में ही यह चारों हत्यायें मैंने की हैं । लेकिन फिर भी यह केस आपके लिए कुछ आसान नहीं होगा कमाण्डर ।"

"क्यों ? आसान क्यों नहीं होगा ?" कमाण्डर करण सक्सेना चौंककर बोला- "बल्कि इस केस में तो मेरे करने के लिए कुछ है ही नहीं । सब कुछ तो तुमने खुद-ब-खुद साबित कर दिया है ।"

अविनाश लोहार मुस्कुराया ।

उसकी मुस्कान बहुत उपहास से भरी थी ।

"अगर आप ऐसा सोच रहे हैं, तो यह आपकी बहुत भारी भूल है ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि यह सच है कि मैंने चारों हत्याओं से सबंधित तमाम सबूत बाकायदा तश्तरी में सजाकर आपके सामने

तय है । लेकिन फिर भी हत्या का यह केस आपके लिए काफी चैलेंजिंग होगा कमाण्डर और दिलचस्पी से भरा भी ।”

कमाण्डर करण सक्सेना जानता था, अविनाश लोहार ठीक कह रहा है ।

सचमुच वो चैलेंजिंग केस था ।

□□□

उसके बाद कमाण्डर ने एक कार्य और किया ।

वह ए.सी.पी. कमांडोज और अविनाश लोहार सहित ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल की छठी मंजिल से नीचे उतरकर पिछवाड़े में ठीक उस जगह पहुँचा, जहाँ वाटर पाइप लगा हुआ था और जो ऊपर टॉयलेट विंडो तक पहुँचता था ।

कमाण्डर करण सक्सेना नीचे खड़ा होकर इस बात का निरिक्षण करने लगा कि उस पाइप के सहारे ऊपर चढ़ा जा सकता है या नहीं ?

पाइप में कई कमियां दिखाई दे रही थीं । जैसे जिन क्लिपों के सहारे वो पाइप दीवार के साथ चिपका हुआ था और जिन क्लिपों पर पैर टिका-टिकाकर ऊपर चढ़ा जा सकता था, वह क्लिप पाइप में काफी-काफी फासले पर लगे थे और एक क्लिप पर पैर टिकाने के बाद उससे अगले क्लिप पर पैर टिकाने के लिए अच्छी-खासी मशक्कत करनी पड़ सकती थी । फिर वो पाइप खुरदुरा होने की बजाय बहुत चिकना था और ऊपर चढ़ने के दौरान उसके ऊपर से हाथ फिसलने का भी अंदेशा था ।

"मुझे तो नहीं लगता ।" ए.सी.पी. बोला- "कि इस पाइप के सहारे इतनी ऊंचाई पर चढ़ना नामुमकिन है, इम्पॉसिबल !"

"अगर आप लोग ऐसा सोच रहे हैं ।" अविनाश लोहार बोला- "तो यह आपकी गलती है । मैं कल रात इसी पाइप के सहारे नीचे उतरा भी हूँ और ऊपर चढ़ा भी हूँ । सच तो ये है, अगर ये बात कोई साधारण आदमी कहता, तो मुझे कोई हैरानी न होती, लेकिन यह बात चूंकि आप जैसे प्रशिक्षित कमांडोज कह रहे हैं, तो वाकई यह मेरे लिए बहुत बड़ी हैरानी का कारण है । कमांडोज ट्रेनिंग के दौरान इस प्रकार ऊपर चढ़ने और नीचे उतरने की ट्रेनिंग आम दी जाती है ।"

"लेकिन तुम एक आतंकवादी हो मिस्टर अविनाश !" कमाण्डर करण सक्सेना ने तुरंत उसकी बात पकड़ी- "तुम कमांडो नहीं हो और न ही इस तरह के ट्रेनिंगयाफ्ता हो ।"

"आपसे किसने कहा कि एक आतंकवादी ट्रेनिंगयाफ्ता नहीं होता ?" अविनाश लोहार गरमजोशी के साथ बोला- "सच तो ये है, दस कमांडोज को एक जगह मिला दिया जाये, तब एक आतंकवादी जितनी ताकत बनती है ।"

"यानी तुम कहना चाहते हो कि तुम कमांडोज ट्रेनिंगयाफ्ता हो ?" ए.सी.पी. बोला ।

"बिल्कुल ! मैंने न सिर्फ कमांडो ट्रेनिंग ली हुई है बल्कि हंगरी में एक जंगली कबीलाई गिरोह का सामना करने के लिए मुझे जंगल वारफेयर की भी ट्रेनिंग दी गयी थी । खासतौर पर जो आदमी जंगल वारफेयर का बेहद कुशल योद्धा हो, उसके लिए तो इस प्रकार ऊपर चढना तथा नीचे उतरना और भी ज्यादा आसान होता है ।"

उसकी आँखों में अचरज के भाव थे । ए.सी.पी. ने कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ देखा ।

“आपका इस बारे में क्या कहना है कमाण्डर ?”

“हो सकता है मिस्टर अविनाश ठीक कह रहे हों । अगर यह वाकई जंगल वारफेयर का कुशल योद्धा हैं, तो फिर मैं भी कहूँगा कि इनके लिए इस पाइप पर चढ़ना और उतरना काफी आसान है । बल्कि अगर इस पाइप पर जगह-जगह क्लिप भी लगे हुए न होते, तब भी यह ऊपर चढ़ और उतर सकते थे ।”

“ऐसा ?” ए.सी.पी. चौंका ।

“बिल्कुल ऐसा है । मैं एक बार बर्मा में जंगल युद्धकला में महारथियों का सामना कर चुका हूँ । इसलिये मुझे इसका अच्छा-खासा तजुर्बा है ।”

ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल में जिस जगह वह सब इस समय खड़े थे, वो काफी निर्जन जगह थी ।

वहाँ उन लोगों के अलावा कोई नजर नहीं आ रहा था ।

ख़ासतौर पर उधर पेशेंटो और उनके रिश्तेदारों का तो बिल्कुल भी आवागमन न था । अलबत्ता थोड़ी दूर बैठने-उठने के लिए टिन शेड पड़े हुए थे और उनके नीचे पत्थर की बेंचे बनी थीं, लेकिन इस वक्त वहाँ भी कोई न था ।

“मिस्टर अविनाश !” तभी एक कमांडो बोला- “तुम हमारे सामने इस पाइप पर छः मंजिल ऊपर चढ़कर दिखा सकते हो ?”

“यह आइडिया बिल्कुल दुरुस्त है ।” कमाण्डर करण सक्सेना तुरंत बोला- “तुम इस पाइप पर एक बार हमारे सामने चढ़कर दिखा दो, फिर हम कबूल कर लेंगे कि तुम जो कुछ कह रहे हो, वह बिल्कुल ठीक है ।”

"यानी मैंने जो सबूत पेश किये हैं, उन सबूतों पर आप लोगों को शक है ?"

अविनाश लोहार ने उन सबकी तरफ देखा ।

"जब तक हम अच्छी तरह जांच-पड़ताल नहीं कर लेते, तब तक हमें हर बात पर शक रहता है । यही जासूसी का पहला सिद्धांत भी है । जहाँ तक पाइप पर चढ़ने का सवाल है, तो तुम पाइप पर चढ़ने से इनकार भी कर सकते हो, हमें कोई ऐतराज न होगा । लेकिन तुम्हारे इनकार करने पर हमारे मन में शंका जरूर पैदा होगी । अब यह पूरी तरह तुम्हारे ऊपर निर्भर है कि तुम शंका पैदा करना चाहते हो या नहीं ।"

कमाण्डर करण सक्सेना की बात सुनकर अविनाश लोहार के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभर आये ।

कमाण्डर ने उसे उसी के बनाये हुए मायाजाल में कस दिया था ।

"ठीक है ।" अविनाश लोहार बोला- "मैं आपको पाइप पर चढ़कर दिखाता हूँ कमाण्डर !"

"गुड ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी ।"

□□□

फिर अविनाश लोहार ने पाइप पर चढ़ने की तैयारी शुरु की ।

एकाएक वो बहुत चुस्त-चालाक दृष्टिगोचर होने लगा था ।

उसकी आंखों में चीते जैसी चपलता उभर आयी थी ।

इस समय उसे देखकर कोई भी कह सकता था, वो जंगल वारफेयर का कुशल योद्धा है और एक खूंखार लड़ाका है ।

कमाण्डर करण सक्सेना, ए.सी.पी. और सभी कमांडोज अविनाश लोहार से कोई तीन-तीन फुट के फासले पर गोल दायरा-सा बनाकर खड़े हो गये थे । जबकि अविनाश लोहार ने अब अपनी जेब से कुछ रबर-बैंड निकाल लिए, जो पहले ही उसकी जेब में मौजूद थे ।

साफ जाहिर था, उसके पास पहले से ही तमाम तैयारियां थीं ।

फिर देखते-ही-देखते अविनाश लोहार ने अपने पायजामे के दोनों पांयचों में एक-एक रबर-बैंड डाल लिया । तुरंत पायजामे के पांयचे उसकी पिंडलियों से इस तरह कस गये, जैसे उसने चुस्त पायजामा पहना हुआ हो । अब उस पाइप पर चढ़ने और उतरने में कम-से-कम उस पायजामे के कारण उसे कोई दिक्कत नहीं होनी थी । वरना वह पायजामा किसी क्लिप में फंस सकता था और वह ऊपर से नीचे गिर सकता था । इसी तरह अविनाश लोहार ने दोनों रबर-बैंड अपने कुर्ते की बांह में भी डाल लिए और अब कुर्ते की बाहें भी उसकी कलाई के साथ चिपक गयीं ।

“आर यू रेडी ?” कमाण्डर करण सक्सेना बोला ।

“यस, आइ एम रेडी ।”

इस वक्त अविनाश लोहार आतंकवादी ही दृष्टिगोचर हो रहा था ।

ऊपर टॉयलेट की खिड़की से भी अब दो कमांडोज झांकने लगे थे और नीचे का दृश्य देख रहे थे ।

हर किसी की आंखों में कौतुहलता था ।

यह जानने की कौतुहलता, अविनाश लोहार पाइप पकड़कर ऊपर कैसे चढ़ पाता है ।

"आप लोग देखते जाइए ।" अविनाश लोहार बोला- "मुझे पाइप पर चढ़ने में मुश्किल से दो मिनट लगेंगे ।"

अविनाश लोहार ने आगे बढ़कर अपने दोनों हाथों से कसकर पाइप पकड़ लिया और फिर अपने दोनों पैर भी नीचे वाले क्लिप पर रखकर उसी से चिपका लिए ।

अब वो बिल्कुल छिपकली की तरह पाइप से चिपका था ।

उसके बाद वो धीरे-धीरे पाइप पर ऊपर की तरफ रेंगने लगा ।

आश्चर्य !

घोर आश्चर्य !

पाइप पर चढ़ते समय वह बिल्कुल भी क्लिपों का सहारा नहीं ले रहा था । बस कभी-कभार ही वो अपने पैर किसी क्लिप पर एक क्षण के लिए टिकाता और उसके बाद पुनः ऊपर की तरफ रेंगना शुरू कर देता ।

सब सांस रोके उसी को देख रहे थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना उसके चढ़ने के अंदाज को देखकर फौरन भांप गया, वह वाकई जंगल वारफेयर का कुशल योद्धा था । कोई जंगल वारफेयर का कुशल योद्धा ही पाइप पर इस तरह सीधा चढ़ सकता था ।

वह चढ़ता गया ।

चढ़ता गया ।

देखते-ही-देखते वह छठी मंजिल तक पहुँच गया था ।

उसके बाद उसने उसी प्रकार छठी मंजिल से नीचे उतरकर भी दिखाया ।

"अब बताइए कमाण्डर !" अविनाश लोहार बोला- "मैं पाइप पर ऊपर चढ़ सकता था या नहीं ?"

"अब तो संदेह की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं बची है ।" कमाण्डर गहरी सांस लेकर बोला ।

सब अविनाश लोहार से प्रभावित नजर आने लगे

बेहद प्रभावित !

वह वाकई कमाल का आदमी था ।

□□□

फिर कमाण्डर करण सक्सेना ने ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल के एक बिल्कुल बन्द कमरे में कमांडोज चीफ तथा डॉक्टरों के उस दल के साथ बातचीत की, जो अविनाश लोहार का इलाज कर रहे थे ।

"डॉक्टर, मैं अविनाश लोहार के सम्बन्ध में आप लोगों से कुछेक सवाल पूछना चाहता हूँ ।" कमाण्डर करण सक्सेना ने अपना क्लेंसी हैट दुरुस्त करते हुए कहा ।

उस क्षण वो बेहद संजीदा था ।

उसकी आंखों के गिर्द बार-बार अविनाश लोहार का चेहरा चक्कर काट रहा था ।

वह चार डॉक्टर थे, जो एक गोल मेज के इर्द-गिर्द अलग-अलग कुर्सियों पर बैठे थे । जबकि कमाण्डर करण सक्सेना के बिल्कुल सामने वाली कुर्सी पर वह कमांडोज चीफ बैठा हुआ था, जिसके हाथ में अविनाश लोहार की सिक्योरिटी के तमाम इंतजाम थे । कमांडो चीफ लंबे-चौड़े कद-काठी वाला आदमी था ।

उसकी मूंछें गुबरैली थीं और आंखों में ऐसी सख्ती के निशान थे, जो किसी कर्तव्यपरायण आदमी की आंखों में ही पाए जाते हैं।

"सबसे पहले मुझे यह बताइए।" कमाण्डर करण सक्सेना चारों डॉक्टरों की तरफ ध्यानपूर्वक देखता हुआ बोला- "कि अविनाश लोहार इस हॉस्पिटल में कब से एडमिट है ?"

"उसे इस हॉस्पिटल में एडमिट हुए दो महीने के करीब हो चुके हैं।" सफेद ओवरकोट पहने बैठा एक डॉक्टर बोला- "दरअसल जिस समय अविनाश लोहार को इस हॉस्पिटल में लाया गया था कमाण्डर, उस वक्त उसकी हालत बहुत नाजुक थी। उसके छः गोलियां लगी हुई थीं और सभी गोलियां सीने के ईद-गिर्द थीं। उस क्षण वह सांस भी लेता था, तो खून बाहर निकलता था। तब अविनाश लोहार की हालत देखकर कोई नहीं कहता था कि यह बचेगा। तब तो लोहार को देखकर यही लगता था कि अब इसकी जान निकली, अब निकली। हर किसी की जुबान पर बस यही बात थी कि वो कुछेक घंटों का मेहमान है।"

"फिर वह बच कैसे गया ?"

"बस जिंदगी थी उसकी। खुदा ने उसकी जानबख्शी करनी थी। उसे और जिंदगी से नवाजना था। सच तो ये है कमाण्डर, अविनाश लोहार का बच जाना ही अपने आपमें बहुत बड़ा करिश्मा था। अगर उस क्षण वह मर जाता, तो किसी को कोई हैरानी न होती लेकिन अविनाश लोहार बच गया, यह सबके लिए बहुत बड़ी हैरानी की बात थी।"

"ऐसा ?"

"बिल्कुल ऐसा।"

"क्या उसके किसी संवेदनशील जगह भी गोली लगी हुई थी ?"

"बिल्कुल लगी हुई थी।" डॉक्टर बोला- "एक गोली तो उसके एकदम फेफड़ों के पास लगी थी, जो उसके लिए बेहद जानलेवा बनी हुई थी। डॉक्टरों ने बड़ी मुश्किल से वह सभी गोलियां उसके जिस्म से बाहर निकालीं। गोलियां तो सकुशल निकल गयीं, लेकिन उसके बाद उसे फेफड़ों के कारण सांस लेने में थोड़ी दिक्कत होने लगी। पिछले दो महीनों से अविनाश लोहार के फेफड़ों का ही इधर हॉस्पिटल में इलाज चल रहा था।"

"अब उसकी कैसी तबीयत है ?"

"फिलहाल तो एकदम दुरुस्त है। फेफड़ों वगैरह में भी कोई दिक्कत अब उसे नहीं है। इतना ही नहीं, दो दिन बाद उसे हॉस्पिटल से भी डिस्चार्ज किया जा रहा है।"

कमाण्डर करण सक्सेना के लिए वह एक नई खबर थी।

नई सूचना।

अविनाश लोहार को हॉस्पिटल से डिस्चार्ज किया जा रहा था।

वो बिल्कुल ठीक हो चुका था।

"ऑफिसर !" कमाण्डर ने कमांडो चीफ की तरफ नजर उठाई।

"यस कमाण्डर !"

कमांडोज चीफ अलर्ट होकर बैठा।

"अविनाश लोहार को जब यहाँ से डिस्चार्ज किया जायेगा, तो फिर आप लोग उसे कहाँ लेकर जाएंगे ?"

"उसे फिर तिहाड़ जेल की एक स्पेशल सेल में रखा जायेगा ।" कमांडोज चीफ अगली जानकारी देता हुआ बोला- "फिलहाल उसे वहाँ रखे जाने की बड़े जोर-शोर से तैयारियां चल रही हैं ।"

"कैसी तैयारियां ?"

"जैसे वहाँ सुरक्षा प्रबंध बहुत बढ़ाए जा रहे हैं । जेल के सिक्योरिटी स्टाफ की बड़ी बारीकी से स्क्रीनिंग की जा रही है कि कोई उनमें दौलत का लालची व्यक्ति तो नहीं है, जो समय आने पर अपराधियों से मिल जाये और अविनाश लोहार के जेल से फरार होने का कारण बने ।"

"यानी जितनी तैयारियां मुमकिन हैं, वह सबकी सब तैयारियां आप लोग कर रहे हैं ।"

"बिल्कुल ।"

"इसके अलावा जेल में जितने भी देशद्रोही गतिविधियों में लिप्त संदेहजनक कैदी हैं, उन्हें दूसरी जेलों में शिफ्ट किया जा रहा है । लोहार को एक स्पेशल सेल में बंद करके रखा जायेगा, वहाँ उसके अलावा कोई नहीं होगा ।"

"हूँ ।"

इंतजाम वाकई जबरदस्त थे ।

सारी तैयारियां जबरदस्त थीं ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना फिर जनपथ पहुँचा ।

जनपद के इलाके में चौराहे के नजदीक बिल्कुल कोने वाली कोठी समाजवादी नेता नागेंद्र पाल की थी ।

आमतौर पर वह इलाका बड़ा सन्नाटे में डूबा रहता है, लेकिन रात तीन बजे के बाद से वहाँ की सारी खामोशी भंग हो चुकी थी।

जैसे ही नागेंद्र पाल की हत्या का समाचार दिल्ली में फैला, तो वहाँ आने-जाने वाले लोगों का अच्छा-खासा तांता-सा लग गया था।

अखबारों के प्रतिनिधि, टी.वी.रिपोर्टर, नेतागण और नागेंद्र पाल के परिचित रात से ही वहाँ आने-जाने लगे थे।

नागेंद्र पाल की बीवी का नाम शिल्पा था।

शिल्पा की उम्र हालांकि पैंतीस-छत्तीस साल थी, लेकिन इस उम्र में भी वह बड़ी कड़क जवान सुंदरी थी। उसके नाक-नक्श तीखे और आकर्षक थे।

उसके एक दस साल का लड़का भी था।

लड़के का नाम सावन था।

हालांकि शिल्पा की फिट बॉडी को देखकर इस बात का एहसास बिल्कुल नहीं होता था कि वह एक बच्चे की मां भी है।

उसके पेट में कसावट अभी तक बरकरार थी।

वक्ष किसी कुंवारी लड़की की भांति ही तने हुए थे। कमाण्डर करण सक्सेना जब असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर के साथ नागेंद्र पाल की कोठी में दाखिल हुआ, तो वहाँ चारों तरफ मातमी माहौल था। अंदर से किसी के जोर-जोर से रोने की आवाजें आ रही थीं, जो जरूर शिल्पा की आवाजें थीं।

पुलिस का भी अच्छा खासा जमघट वहाँ था।

"आइए सर !" वहाँ मौजूद एक पुलिस इंस्पेक्टर ने कमाण्डर करण सक्सेना और ए.सी.पी. का गरमजोशी के साथ स्वागत किया।

"क्या लाश का पोस्टमार्टम होकर आ चुका है ?" ए. सी.पी. ने पूछा।

"नहीं, अभी तक नहीं आया है।"

"मैं सबसे पहले वो कमरा देखना चाहता हूँ, जिस जगह हत्या हुई थी।"

"आइए, मैं आपको वहाँ लेकर चलता हूँ।"

पुलिस इंस्पेक्टर कोठी के कॉरीडोर में अंदर की तरफ बढ़ा।

कोठी काफी लम्बी-चौड़ी थी और उसमें दर्जन भर के करीब कमरे थे।

कमाण्डर करण सक्सेना और ए.सी.पी. उसके पीछे-पीछे ही कॉरीडोर में आगे की तरफ बढ़े।

शीघ्र ही पुलिस इंस्पेक्टर उन्हें लेकर एक कमरे के सामने पहुँचा।

कमरे का दरवाजा बन्द था और सांकल लगी हुई थी। अलबत्ता पुलिस ने ताला डालकर अभी उस कमरे को सीलबन्द नहीं किया था।

"यही वो कमरा है कमाण्डर !" पुलिस इंस्पेक्टर बोला- "जिस कमरे में नागेन्द्र पाल जी की अविनाश लोहार ने हत्या की।"

"मैं इस कमरे को एक बार अंदर से देखना चाहता हूँ।"

"अभी लीजिए।"

गया। जल्द ही जब
जोड़ी पतले दस्ताने

बसे पहले एक-एक
ए- “आप कमरे में
हन लें। इससे अंदर
यह नष्ट नहीं होंगे।”

.पी. ने अपने-अपने

ने पहने।
ने का कोई खतरा न

त हाथों से सिटकनी
पहले कमरे में वो
ो दोनों भी अंदर घुसे

ारों तरफ का अपनी
रना शुरु किया।

ड़ा हुआ था, जो रात
रहा था। अलबत्ता
द चाक से एक गोल
ंदर खून वाले हिस्से

“रात तीन बजे के करीब जब नागेन
हत्या हुई।” कमाण्डर करण सक्सेन
समय इस कमरे में कौन-कौन था?”

“कोई नहीं था।” इंस्पेक्टर बोला

“क्या मतलब? क्या बीवी-बच्चे
नहीं थे?”

“नहीं।”

“यह कैसे मुमकिन है?”

“मुमकिन है। दरअसल यह कमरा
बेडरूम नहीं था, बल्कि स्टडी-रूम जैस
दिल्ली के लाल-किला मैदान में ही उ
विशाल रैली आयोजित होनी थी, जो
कारण कैंसिल हो चुकी है। कल रात
उसी रैली में भाषण देने की तैयारी कर

“क्या नागेन्द्र पाल जी अपना भाष

“नहीं, नागेन्द्र पाल जी भाषण लिख
भाषण तैयार करने की उनकी ट्रिक दूस

“क्या?”

कमाण्डर करण सक्सेना ने थोड़ी दि
की तरफ देखा।

ए.सी.पी. की आंखों में भी हैरानी के

“दरअसल वो अपने सामने टेपरिक
जाते थे।” इंस्पेक्टर बोला- “और फि
हुए टेप पर अपना भाषण रिकार्ड करते
वही सब-कुछ कर रहे थे, जब अविना
गया और उसने उनकी हत्या कर दी।

“रात तीन बजे के करीब जब नागेन्द्र पाल जी की यहाँ हत्या हुई ।” कमाण्डर करण सक्सेना बोला- “तो उस समय इस कमरे में कौन-कौन था ?”

“कोई नहीं था ।” इंस्पेक्टर बोला ।

“क्या मतलब ? क्या बीवी-बच्चे कोई भी उनके पास नहीं थे ?”

“नहीं ।”

“यह कैसे मुमकिन है ?”

“मुमकिन है । दरअसल यह कमरा नागेन्द्र पाल जी का बेडरूम नहीं था, बल्कि स्टडी-रूम जैसा ही कुछ था । आज दिल्ली के लाल-किला मैदान में ही उनकी पार्टी की एक विशाल रैली आयोजित होनी थी, जो रैली उनकी मृत्यु के कारण कैंसिल हो चुकी है । कल रात वो इस कमरे में बैठे, उसी रैली में भाषण देने की तैयारी कर रहे थे ।”

“क्या नागेन्द्र पाल जी अपना भाषण खुद लिखते थे ?”

“नहीं, नागेन्द्र पाल जी भाषण लिखते नहीं थे, अलबत्ता भाषण तैयार करने की उनकी ट्रिक दूसरी थी ।”

“क्या ?”

कमाण्डर करण सक्सेना ने थोड़ी दिलचस्पी से इंस्पेक्टर की तरफ देखा ।

ए.सी.पी. की आंखों में भी हैरानी के भाव नमूदार हुए ।

“दरअसल वो अपने सामने टेपरिकार्डर ऑन करके बैठ जाते थे ।” इंस्पेक्टर बोला- “और फिर जोर-जोर से बोलते हुए टेप पर अपना भाषण रिकार्ड करते थे, उस रात भी वो वही सब-कुछ कर रहे थे, जब अविनाश लोहार यहाँ पहुँच गया और उसने उनकी हत्या कर दी ।”

“वो टेप कहाँ है, जिस पर वह रात भाषण रिकार्ड करके तैयार कर रहे थे ?”

“टेपरिकार्डर सामने रखा हुआ है ।”

कमाण्डर करण सक्सेना की निगाह सामने टेबल पर रखे टेपरिकार्डर पर जाकर फ्रीज हो गयी ।

उसने नजदीक जाकर टेपरिकार्डर देखा ।

टेपरिकार्डर जरूर वहाँ मौजूद था, लेकिन उसके अंदर से कैसिट गायब थी ।

“इसकी कैसिट कहाँ है ?”

“क्या इसके अंदर कैसिट मौजूद नहीं है ?” पुलिस इंस्पेक्टर बुरी तरह चौंककर बोला ।

उसकी हैरानी बढ़ी ।

“नहीं ।”

इंस्पेक्टर लपककर टेपरिकार्डर के पास आया और उसने उसका कैसिट वाला हिस्सा देखा ।

कैसिट सचमुच वहाँ से गायब थी ।

“इसके अंदर से कैसिट कहाँ गयी ?”

“यह तो तुम्हें मालूम होना चाहिये कि इसके अंदर से कैसिट कहाँ गयी ? आखिर तुम यहाँ काफी पहले से मौजूद हो ।”

“लेकिन कैसिट की तरफ तो किसी का भी ध्यान नहीं गया ।”

कमाण्डर को उन पुलिसकर्मियों की निष्क्रियता पर दुःख हुआ ।

यह वाकई बेइंतहा अफसोस की बात थी कि वहाँ का पुलिस डिपार्टमेंट इतना काहिल था, इतना सुस्त था, जो उसे इतनी महत्वपूर्ण बात नहीं सुझी थी ।

बहरहाल अविनाश लोहार चूंकि कमाण्डर करण सक्सेना को पहले ही उस कैसिट के बारे में बता चुका था, इसलिये उसे उस कैसिट को तलाशने में कोई दिक्कत न हुई । सोफे के पीछे थोड़ा आड़ में रखा गया नागेन्द्र पाल का ब्रीफकेस उसे तुरंत ही नजर आ गया ।

ब्रीफकेस काले रंग का था ।

कमाण्डर ने ब्रीफकेस खोला तो फौरन लिफाफे से लिपटी हुई एक कैसिट बरामद हो गयी ।

“क्या यह वही कैसिट है ?” इंस्पेक्टर चौंककर बोला- “जिस कैसिट पर नागेन्द्र पाल जी अपना भाषण रिकार्ड कर रहे थे ?”

“हाँ, यह वही कैसिट है ।”

“आपको कैसे मालूम ?”

“अभी देखते जाओ । तुम्हें भी सब कुछ मालूम हो जायेगा ।”

कमाण्डर करण सक्सेना ने अपने दस्तानेयुक्त हाथों से लिफाफे में बंद कैसिट बाहर निकाली ।

□□□

उसके बाद कमाण्डर ने एक महत्वपूर्ण काम किया ।

उसने अपने दस्तानेयुक्त हाथों से कैसिट पकड़े-पकड़े उसे टेप के अंदर डाल दी और फिर उसका प्ले वाला बटन दबा दिया ।

फौरन कैसिट में जितनी बातें रिकार्ड थीं, वह सब सुनाई पड़नी शुरू हो गयीं ।

कैसिट में तो सबसे पहले काफी सारा भाषण रिकार्ड था ।

"आज देश में अराजकता का माहौल है । भ्रष्टाचार का बोलबाला है ।" नागेंद्र पाल की गरमजोशी से भरी आवाज गूंज रही थी- "वर्तमान सरकार देश की अर्थव्यवस्था को दिन-ब-दिन खोखला बनाती जा रही है । अगर यह सरकार इसी तरह काम करती रही भाइयों, तो वह दिन दूर नहीं है, जब हमारी अर्थव्यवस्था बिल्कुल बेकार हो जायेगी और हमें कटोरा लेकर दुनिया भर के सामने दर-ब-दर भटकना पड़ेगा । इसलिये ऐसी नौबत आये , उससे पहले ही हमें जागना होगा । अगर भारतवर्ष को बचाना है, अपने देश को बचाना है तो इस सरकार को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा । वरना..."

बोलते-बोलते आवाज एकाएक रुक गयी ।

ऐसा लगता था, जैसे सुई कहीं अटक गयी हो ।

शायद एकाएक कमरे में कोई आ गया था ।

कोई ऐसा आदमी, जिसे देखकर नागेंद्र पाल जैसे आदमी की बोलती भी एकदम से बंद हो गयी थी ।

"त... तुम ?"

थोड़ा रुककर नागेंद्र पाल की एकाएक बेहद सस्पेंसफुल आवाज उभरी ।

आवाज में आश्चर्य का पुट था ।

हैरानी का पुट ।

"क्यों ?" टेप से एक बिल्कुल नई आवाज निकली- "मुझे अपने सामने देखकर हैरानी हो रही है नागेंद्र पाल ?"

हालांकि आवाज नई थी, लेकिन फिर भी कमाण्डर और ए.सी.पी. ने उस आवाज को बिल्कुल साफ-साफ पहचाना ।

वह अविनाश लोहार की आवाज थी ।

"अ...अविनाश लोहार तुम ?" नागेंद्र पाल की बेहद सकपकाई हुई आवाज- "तुम यहाँ ? लेकिन तुम तो पुलिस कस्टडी में थे।"

हंसा अविनाश लोहार।

उसके हंसने का अंदाज भी बेहद खूंखार था।

"पुलिस कस्टडी ?" वह पुनः हंसा- "तुम शायद भूल रहे हो नागेंद्र पाल, मेरा नाम अविनाश लोहार है और इस अविनाश लोहार को पुलिस की कोई कस्टडी रोककर नहीं रख सकती। सलाखें बस तभी तक मुझे रोककर रखती हैं, जब तक मैं वहाँ रुकना चाहता हूँ।"

"यानी तुम पुलिस कस्टडी से निकल भागे हो।"

"बिल्कुल।"

नागेंद्र पाल की आवाज अब और भी ज्यादा डरी-डरी नजर आने लगी।

भयभीत।

"ल...लेकिन पुलिस से भागकर तुम यहाँ मेरे पास क्यों आये हो ? क...क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"मतलब ?" अविनाश लोहार हंसा- "क्या अब मुझे यहाँ आने का मतलब भी बताना होगा नागेंद्र पाल ?"

"य...यह क्या ?" एकाएक नागेंद्र पाल बुरी तरह बौखलाया- "य...यह तुम अपनी जेब से बाहर क्या निकाल रहे हो ? रिवॉल्वर...र....रिवॉल्वर का तुम क्या करोगे ?"

"यह रिवॉल्वर आज तुम्हारे गुनाहों से तुम्हें छुटकारा दिलायेगी नागेंद्र पाल!" अविनाश लोहार फुंफकार उठा- "आज तुम्हें अपने हर गुनाह का हिसाब देना होगा।"

"नहीं ।" नागेंद्र पाल की आवाज में कंपकपी दौड़ी- "नहीं अविनाश लोहार, तुम ऐसा नहीं करोगे ।"

"ऐसा होगा । ऐसा आज हर हालत में होगा ।" अविनाश लोहार के स्वर में दृढ़ता कूट-कूटकर भरी थी- "तुम्हारे कारण मेरी पिछले कई सालों से नींद हराम हो रही है । मैं आज इस अध्याय को हमेशा-हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहता हूँ ।"

"लेकिन... ।"

"अब बहस मत करो ।"

"मेरी बात तो सुनो ।"

"नहीं । अब तुम्हारे पास कहने को कुछ नहीं है और न मेरे पास सुनने के लिए समय है ।"

"लेकिन... !"

"खामोश !" अविनाश लोहार गरजा- "तुम्हारा अंत समय आ चुका है ।"

"नहीं...नहीं ।" नागेन्द्र पाल गिड़गिड़ाने लगा- "मुझे माफ कर दो ।"

"अब माफी ऊपर जाकर अपने बनाने वाले से मांगना । गुड बाय एंड गुड लक ।"

नागेन्द्र पाल भांप गया, वह आज बचने वाला नहीं है ।

वह एकाएक गला फाड़कर चिल्लाया ।

धांय ! धांय ! !

तुरंत दो गोलियां चलने की आवाज हुई ।

एक बार फिर उसके हलक से बड़ी वीभत्स चीख निकली ।

वो चीख ऐसी वीभत्स थी, जैसे हलाल होते समय कोई बकरा डकराया हो ।

उसके बाद शांति छा गयी ।

गहरी शांति ।

जैसे वहाँ कुछ हुआ ही न था ।

बस टेप के स्पूल धीरे-धीरे घूमते रहे ।

□□□

नागेंद्र पाल और अविनाश लोहार के बीच हुआ वह पूरा वार्तालाप कमाण्डर करण सक्सेना, ए.सी.पी. और इंस्पेक्टर, उन तीनों ने बेहद ध्यानपूर्वक सुना ।

फिर कमाण्डर ने अपने दस्तानेयुक्त हाथों से ही टेप के अंदर से कैसिट निकाल कर वापस लिफाफे में डाल दी और लिफाफा अपनी ओवरकोट की जेब में रख लिया ।

"कमाण्डर !" ए.सी.पी. सोचता विचारता हुआ बोला- "इस कैसिट को सुनने के बाद कम-से-कम एक बात तो डंके की चोट पर साबित हो चुकी है ।"

"क्या ?"

"यही कि नागेंद्र पाल की हत्या अविनाश लोहार ने ही की है ।"

"दरअसल इस मामले में मेरी एक दूसरी मान्यता है ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला ।

"क्या ?"

"यही कि किसी भी केस की इन्वेस्टीगेशन करते समय इतनी जल्दी कोई रिजल्ट नहीं निकालना चाहिये बल्कि पहले ऐसी तमाम संभावनाओं पर विचार करना चाहिये ऑफिसर, जो दिखाई नहीं देतीं ।"

"कैसी संभावना ?"

"जैसे इस हत्याकांड में एक बड़ी अहम संभावना है, जिसे अभी तक सब लोग नजरअंदाज कर रहे हैं ।"

"क्या ?"

"जब नागेंद्र पाल जी के बॉडीगार्ड ने अविनाश लोहार को हत्या करने के बाद यहाँ से भागते देख लिया था ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "तो उसने उसी क्षण अविनाश लोहार को रोका क्यों नहीं ? उसे अरेस्ट क्यों नहीं किया ?"

ए.सी.पी. ने कमाण्डर को ध्यानपूर्वक देखा ।

"सवाल तो अच्छा है ।" ए.सी.पी. बोला ।

"सिर्फ सवाल ही अच्छा नहीं है ऑफिसर, बल्कि अगर इस केस को सुलझाना है तो इसका जवाब भी जरूरी है ।"

"इंस्पेक्टर !" ए.सी.पी. ने अब इंस्पेक्टर की तरफ गर्दन घुमाई- "तुम्हें मालूम है, नागेन्द्र पाल जी के बॉडीगार्ड ने अविनाश लोहार को यहीं पकड़ क्यों नहीं लिया ?"

"बॉडीगार्ड ने अविनाश लोहार को पकड़ने की कोशिश की थी सर ।" इंस्पेक्टर तुरंत बोला ।

"कोशिश की थी ?"

"जी हाँ !"

"क्या कोशिश की थी ?"

"सबसे पहले तो उसने उसे ललकारते हुए ही रोकने का प्रयास किया ।" इंस्पेक्टर बोला- "लेकिन जब उसने देखा कि वह इस तरह रुकने वाला नहीं है, तो उसने आनन-फानन अपने कंधे से स्टेनगन उतारनी चाही । बस यहीं वो अविनाश लोहार से मात खा गया ।"

"कैसी मात ?"

"बॉडीगार्ड अपने कंधे से स्टेनगन उतार पाता, उससे पहले ही अविनाश लोहार हरकत में आ गया और उसने अपने रिवॉल्वर से उसके ऊपर दो फायर कर दिए ।"

"दो फायर ?"

कमाण्डर करण सक्सेना और ए.सी.पी. दोनों चौंके ।

"बॉडीगार्ड का क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं हुआ ।" इंस्पेक्टर बोला- "बस वह मरने से बाल-बाल बच गया । एक गोली उसके कंधे में लगी है और एक टांग में लगी है । अगर कोई गोली जरा भी इधर-उधर लग जाती, तो वह भी अपने साहब की तरह यमलोक के लिए प्रस्थान कर चुका होता ।"

"अब बॉडीगार्ड कहाँ है ?"

"वह हॉस्पिटल में भर्ती है ।"

वह एक नई सूचना थी ।

कोठी के अंदर से शिल्पा के जोर-जोर से पछाड़ें खाकर रोने की आवाजें अभी भी सुनाई पड़ रही थीं । आने-जाने वाले लोगों का तांता पूर्ववत् जारी था । शिल्पा जिस प्रकार जोर-जोर से करुरणाजनक अंदाज में भीषण प्रलाप कर रही थी, उससे साफ जाहिर था कि उसे अपने पति की मौत का बेहद अफसोस है ।

वो नागेंद्र पाल से बेहद प्यार करती थी ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना फिर ए.सी.पी. और इंस्पेक्टर के साथ उस कमरे से बाहर निकल आया, जिसमें नागेंद्र पाल की हत्या हुई थी ।

इंस्पेक्टर ने कमरे का दरवाजा बंद करके बिल्कुल पहले की तरह सिटकनी चढ़ा दी । अलबत्ता उनमें से किसी ने अभी अपने हाथों से दस्ताने नहीं उतारे ।

वे एक दूसरे कमरे में पहुंचे, जो शायद उस कोठी का ड्राइंग रूम था ।

ड्राइंग रूम काफी सजा-धजा था ।

वहाँ एक सोफा सेट पड़ा हुआ था । एक किनारे पर दीवान मौजूद था और दीवारों पर कीमती फ्रेम में जड़ी आकर्षक पेंटिंग्स से सुसज्जित थीं ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने 'डनहिल' सुलगा ली और ड्राइंग रूम में इधर से उधर टहलते हुए उसके छोटे-छोटे कश लगाने लगा ।

"मैं शिल्पा के बारे में भी थोड़ी बहुत मालूमात करना चाहता हूँ ।" कमाण्डर करण सक्सेना अंदर से आती रुदन की आवाजें सुनता हुआ बोला ।

"कैसी मालूमात ?" इंस्पेक्टर बोला ।

"रात जिस समय नागेंद्र पाल जी कमरे में बैठे अपने भाषण की तैयारी कर रहे थे, उस समय शिल्पा जी कहाँ थीं ?"

"वह बेडरूम में थीं और सो रही थीं ।" इंस्पेक्टर ने बताया ।

"क्या उन्होंने गोलियां चलने की आवाजें नहीं सुनीं ?"

"नहीं !" इंस्पेक्टर बोला- "दरअसल उन्हें तो उस सारे हंगामे का तब पता चला, जब नागेंद्र पाल जी के बॉडीगार्ड के भी गोलियां लग गयीं और पूरी कोठी के अंदर जबरदस्त तरीके से हड़कंप मच गया । लोग इधर-से-उधर भागने लगे । खूब चीख-पुकार मचने लगी तब उन्हें पता चला,

उनका सुहाग उजड़ चुका है । किसी ने नागेंद्र पाल जी की निर्ममता पूर्वक हत्या कर दी है ।"

"आश्चर्य है ।"

"इसमें आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं कमाण्डर !"

"क्यों ?" कमाण्डर ने 'डनहील' का एक और कश लगाया ।

"दरअसल रात शिल्पा जी जहाँ सो रही थीं, वह बेडरूम नागेंद्र पाल जी के कमरे से काफी दूर था । फिर चूंकि आधी रात का समय था, इसलिये हो सकता है कि शिल्पा जी गहरी नींद में हों और इसीलिए वह एकाएक गोलियां वगैरह चलने की आवाजें न सुन सकीं ।"

"मैं उनका बयान लेना चाहता हूँ ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला ।

"अभी ?"

"हाँ, अभी ।"

"लेकिन आप देख ही रहे हैं, अभी उनकी हालत ठीक नहीं है ।" इंस्पेक्टर बोला- "रो-रोकर उनका बुरा हाल है । ऐसी हालत में शायद ही मुमकिन हो कि वह आपसे तरीके से कुछ बात करें ।"

"फिर भी मैं उनसे एक मुलाकात जरूर करना चाहता हूँ ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "क्योंकि दिल्ली शहर में मैंने ज्यादा समय रुकना नहीं है । अभी मैंने मद्रास, कलकत्ता होते हुए वापस मुम्बई पहुँचना है ।"

"ठीक है । मैं कोशिश करके देखता हूँ ।"

"कोशिश नहीं, तुमने यह मुलाकात करानी ही है ।"

"ओ.के. कमाण्डर !"

□□□

थोड़ी देर बाद ही पुलिस इंस्पेक्टर के साथ शिल्पा ड्राइंगरूम में दाखिल हुई ।

जिस कमरे में औरतें भरी पड़ी थीं, इंस्पेक्टर उसे वहीं से बुलाकर लाया था । हालांकि शिल्पा उस समय भीषण प्रलाप नहीं कर रही थी, अलबत्ता उसकी आंखों में आंसू की नन्हीं-नन्हीं बूंदें अभी भी थीं और वह बीच-बीच में जोर से सुबक उठती थी ।

वाकई रोते-रोते उसका बुरा हाल था ।

अलबत्ता वो खूबसूरत तब भी भरपूर लग रही थी ।

उस हालत में भी उसे देखकर किसी मर्द का इमान डोल जाये, तो कोई बड़ी बात नहीं थी ।

ड्राइंगरूम में आते ही वह सोफे पर बैठ गयी । सामने दीवार पर नागेन्द्र पाल की एक काफी बड़ी तस्वीर लगी हुई थी । शिल्पा की निगाह जैसे ही उस तस्वीर पर पड़ी, उसके संयम का बांध छूट गया और वो दोनों हथेलियों में अपना चेहरा छुपाकर पुनः जोर-जोर से फफक पड़ी ।

कमाण्डर ने तुरंत इंस्पेक्टर को कुछ इशारा किया ।

इंस्पेक्टर ने आगे बढ़कर दीवार पर लटकी नागेंद्र पाल की तस्वीर हटा दी ।

"धैर्य रखो ।" कमाण्डर करण सक्सेना उसके नजदीक पहुँचकर धीरे से बोला- "धैर्य रखो । मैं जानता हूँ, तुम्हारे ऊपर बहुत बुरी गुजरी है ।"

शिल्पा की और भी ज्यादा जोर से रुलाई छूट पड़ी ।

वो दोनों हथेलियों में मुँह छिपाए लगभग हिचकियां लेते हुए रो पड़ी ।

“गुड ! रिअली वेरी गुड ! सचमुच आप काफी समझदार हैं ।”

शिल्पा चुप बैठी रही ।

अलबत्ता भाव-विह्वल वो अब भी बहुत थी ।

“आप अपने आंसू साफ कर लीजिए ।”

शिल्पा ने आदेश का पालन किया ।

उसने अपनी बहुत खूबसूरत, लम्बी-लम्बी और पतली उंगलियों से कपोलों पर बहते आंसू साफ कर लिये ।

यह देखकर कमाण्डर करण सक्सेना की हिम्मत बढ़ी कि वो उसे भरपूर सहयोग दे रही थी ।

“सबसे पहले आप मुझे यह बताएं ।” कमाण्डर करण सक्सेना बोला- “कि रात जो हादसा हुआ, वो कैसे हुआ ?”

“मुझे तो उसके बारे में पता ही कुछ नहीं चला ।” शिल्पा भाव-विह्वल लहजे में बोली- “कि सब कुछ कब हुआ, कैसे हुआ ?”

“आप उस वक्त क्या कर रही थीं ?”

“मैं उस वक्त बहुत गहरी नींद में थी ।” शिल्पा बोली- “भयानक शोर-शराबा सुनकर मेरी एकाएक भक्क से आंख खुली । तभी एकाएक बुरी तरह डरा हुआ सावन बदहवासों की तरह दौड़ता हुआ मेरे बेडरूम में आया ।”

“सावन ? कौन सावन ?”

“मेरा बेटा ।”

“ओह !”

“सावन ने ही सबसे पहले मुझे बताया किसी ने डैडी के गोली मार दी है और इसी कारण कोठी में इतना हड़कंप मचा हुआ है ।”

"सावन को कैसे पता चला ?"

"स्वाभाविक है, सावन की मेरे से पहले आंख खुल गयी थी।"

"सावन क्या आप ही के पास सोया हुआ था ?"

शिल्पा के चेहरे पर अब थोड़े हिचकिचाहट के भाव पैदा हुए।

"जवाब दीजिए।"

"न... नहीं।" शिल्पा थोड़ा सकुचाते हुए बोली- "वह मेरे पास नहीं सो रहा था।"

"फिर ?"

"वह मेरे बेडरूम के बराबर वाले कमरे में सोया था।"

कमाण्डर करण सक्सेना चौंका।

अजीब मामला था।

अजीब ढंग का परिवार था।

रात के तीन बजे नागेंद्र पाल अपने कमरे में बैठा अपने भाषण की तैयारी कर रहा था।

बीवी अलग कमरे में सो रही थी।

बेटा अलग कमरे में सो रहा था।

घर था या सराय था, जिसमें हर आदमी एक मुसाफिर सा नजर आता था। जिसमें किसी का किसी से कोई मतलब नहीं था। आपस में कोई कंटिन्यूटी ही नहीं थी।

सावन के बारे में सुनकर कमाण्डर करण सक्सेना ज्यादा चौंका था।

दस साल का लड़का कोई बहुत बड़ा नहीं होता। उसे इतनी रात को मां के पास ही होना चाहिये था।

"सावन की बात सुनकर आप पर क्या प्रतिक्रिया हुई ?"

"वही प्रतिक्रिया हुई, जो ऐसी हालत में किसी पर भी होती । मैं तुरंत भागी-भागी उस कमरे में पहुंची, जहाँ रात वो बैठे हुए भाषण की तैयारी कर रहे थे । वहाँ पहुँचते ही मेरी भयानक चीख निकल गयी । सामने सोफे पर ही उनकी खून से लथपथ लाश पड़ी थी ।"

"क्या तब-तक उनका देहाँत हो चुका था ?"

"हाँ । उनका देहाँत हो चुका था ।" शिल्पा पुनः धीरे-धीरे सुबकने लगी- "अलबत्ता हमें एकाएक मालूम नहीं हुआ कि वह स्वर्ग सिधार चुके हैं । हम यही समझ रहे थे कि उनके सिर्फ गोलियां लगी हैं और वो जख्मी हैं । तुरंत डॉक्टर को बुलाया गया और उन्हें आनन-फानन हॉस्पिटल ले जाये जाने की तैयारियां की जाने लगीं, लेकिन तभी डॉक्टर ने बताया कि अब उन्हें हॉस्पिटल ले जाने का कोई फायदा नहीं है ।"

"ओह !"

"आतातायी ने गोलियां उनके बॉडीगार्ड के ऊपर भी चलाई थीं । तब सिर्फ बॉडीगार्ड को ही हॉस्पिटल ले जाया गया ।"

"सावन अब कहाँ है ?"

"वह अंदर वाले कमरे में बैठा हुआ है ।"

"मैं एक बार उसका भी बयान लेना चाहता हूँ ।"

"सावन का बयान ?"

सावन का बयान लेने के नाम पर न जाने क्यों शिल्पा के चेहरे पर थोड़ी घबराहट के भाव उभर आये ।

"नहीं-नहीं ।" शिल्पा जल्दी से बोली- "आप अभी सावन का बयान नहीं ले सकते ।"

"क्यों ?"

"उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं है। अपने डैडी की मौत की खबर सुनने के बाद रात से ही वह पस्ती जैसी हालत में है।"

"मैं उससे बस कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि वह मेरे सवालों के जवाब दे देगा।"

"वह आपके किसी सवालों के जवाब नहीं देगा। मैं उसे जानती हूँ। उसकी तबीयत ठीक नहीं है।"

"आप खामखाह फिक्रमंद हो रही हैं मैडम ! सावन से किस तरह बयान लेना है, वह आप मेरे ऊपर छोड़ दें।"

"आखिर आप सावन से जो कुछ पूछना चाहते हैं, वह मेरे से ही क्यों नहीं पूछ लेते ?"

शिल्पा का विरोध हर पल बढ़ता जा रहा था।

"क्या आप नहीं चाहतीं।" कमाण्डर बोला- "कि मैं सावन का बयान लूं ?"

"नहीं ! नहीं ! !" शिल्पा हड़बड़ाई- "ऐसी कोई बात नहीं है।"

"फिर ?"

"मैंने बताया न, उसकी तबीयत ठीक नहीं है।"

"उसकी फिक्र आप न करें। अगर वह मेरे सवालों का जवाब नहीं दे पाएगा, तो मैं उसके साथ जबरदस्ती नहीं करूंगा।"

"मैडम !" ए.सी.पी.भी बोला- "आप कमाण्डर से निश्चिंत रहें। इनकी मौजूदगी में ऐसी कोई बात नहीं होगी, जिससे सावन को थोड़ा बहुत भी नुकसान पहुंचे।"

शिल्पा फिर कुछ न बोली।

अलबत्ता उसने सावन के बयान लेने का जिस प्रकार विरोध किया था, उससे कमाण्डर के मन में संदेह का बीज अंकुरित हो चुका था।

जरूर कहीं कुछ गड़बड़ थी।

जरूर कोई बात थी।

शिल्पा अभी भी विचलित दिखाई पड़ रही थी।

□□□

शिल्पा चली गयी।

फिर उस कमरे में सावन को बुलाया गया।

सावन स्याह रंगत वाला साधारण सा लड़का था, खूबसूरत तो वह जरा भी नहीं था। कुल मिलाकर शिल्पा अगर हूर थी, तो उसका पति और बेटा दोनों लंगूर की नस्ल से थे।

कमाण्डर करण सक्सेना ने एक बात और नोट की, नागेंद्र पाल की मौत के कारण सावन इतनी बुरी तरह पस्ती के आलम में भी नहीं दिखाई दे रहा था, जितना बढ़ा-चढ़ाकर शिल्पा बयान कर रही थी। अलबत्ता वो उस गहरे सदमे की वजह से दुखी जरूर था और लगातार रोने के कारण उसकी आँखें सूजी हुई थीं, फिर भी वह किसी भी सवाल का जवाब देने की स्थिति में था और पूरी तरह चाक-चौबंद था।

सावन सोफे पर उसी जगह आकर बैठ गया, जहाँ थोड़ी देर पहले शिल्पा बैठी हुई थी।

कमाण्डर पूर्ववत् उसके सामने बैठा।

"सबसे पहले मुझे यह बताओ बेटा ।" कमाण्डर धीमी आवाज में बोला- "रात जिस वक्त तुम्हारे डैडी की हत्या हुई, उस वक्त तुम क्या कर रहे थे ?"

"मैं गहरी नींद में था ।"

"फिर तुम्हारी आंख कैसे खुली ? आंख खुलते ही तुम सीधे भागते हुए अपनी मां के पास पहुंचे ?"

"नहीं ।" सावन की गर्दन इंकार में हिली- "मेरी आंख खुलने के बाद मैं सबसे पहले भागता हुआ वहाँ पहुँचा, जिधर से गोलियां चलने और चीख-पुकार की आवाजें सुनाई दे रही थीं ।"

"फिर ?"

"वहाँ मैंने खून से लथपथ हालत में डैडी को पड़े हुए देखा । वह बुरी तरह छटपटा रहे थे । डैडी को उस हालत में देखकर मेरे होश उड़ गये । फिर मैं दौड़ता हुआ मम्मी के पास पहुँचा ।"

"मम्मी तब कहाँ सो रही थीं ?"

"वो मेरे बाजू वाले रूम में थीं ।"

सावन उस घटना का जिक्र करते-करते एकाएक पुनः आंदोलित दिखाई पड़ने लगा था ।

उसके चेहरे पर दुख के काले बादल मंडराने लगे ।

"क्या तुम रोज रात को अपनी मम्मी के बाजू वाले कमरे में ही सोते हो ?"

"नहीं ! मैं रोजाना बाजू वाले कमरे में नहीं सोता ।" सावन बोला- "बस कभी-कभी ही मम्मी मुझे अपने से अलग सुलाती हैं ।"

"यानी तुम अपनी मम्मी के पास ही सोते हो ?"

"हाँ ।"

कमाण्डर के दिमाग में खतरे की घंटी बज उठी।

सिर्फ कमाण्डर करण सक्सेना के दिमाग में ही क्यों, बल्कि ए.सी.पी.और इंस्पेक्टर के दिमाग में भी खतरे की घंटी बजी।

जरूर कुछ घपला था।

"कभी-कभी ही अलग सोते हो ?"

"हाँ।"

"लेकिन तुम्हारी मम्मी तुम्हें अपने से अलग क्यों सुलाती हैं ?"

सावन कुछ न बोला।

लगा भी नहीं, वह उस सवाल का कुछ जवाब देगा।

"अच्छा एक दूसरी बात बताओ।" कमाण्डर बोला- "रात अपने डैडी की लाश देखकर जब तुम दौड़े-दौड़े मम्मी के बेडरूम में पहुंचे, तो उस समय मम्मी क्या कर रही थीं ?"

सावन चुप !

वह अब नजरें चुराने लगा।

कमाण्डर के मन में संदेह और बढ़ गया। वह तुरंत उठकर खड़ा हो गया और बिल्कुल सावन के बराबर में जा बैठा।

"मेरे सवाल का जवाब दो बेटे।" कमाण्डर करण सक्सेना ने अपना स्नेहपूर्ण हाथ सावन के कंधे पर रख लिया- "सच-सच बताओ, रात मम्मी क्या कर रही थीं ? क्या जब तुम वहाँ पहुंचे, तो वह गहरी नींद में थीं ?"

"हाँ !"

"फिर गोलियां चलने और इतनी चीख-पुकार की आवाज सुनकर वो फौरन उठकर खड़ी क्यों हो गयीं ?"

सावन फिर चुप।

"जवाब दो ।"

सावन कुछ न बोला ।

"क्या उस समय वो बेडरूम में अकेली थीं या फिर कोई और भी उनके साथ था ?"

सावन घबराकर इधर-उधर देखने लगा । वो अब साफ-साफ नजरें चुरा रहा था ।

"बेटे यह बहुत सीरियस मामला है ।" कमाण्डर करण सक्सेना एक-एक शब्द पर जोर देता हुआ बोला- "यह तुम्हारे डैडी के मर्डर केस की इन्वेस्टिगेशन है । तुम जो कुछ जानते हो, वह सब सच-सच बताओ । बोलो, रात तुम्हारी मम्मी के बेडरूम में और कौन था ? वह कौन था, जिसकी मौजूदगी में तुम्हारी मम्मी गोलियां चलने और चीख-पुकार की आवाजें सुनने के बावजूद फौरन बेडरूम से बाहर नहीं निकल पायीं । क्या वह कोई आदमी था ?"

"ह...हाँ ।"

"कौन ?"

"रु...रुप सहाय ।"

"यह रुप सहाय कौन है ?"

"हमारा ड्राइवर है ।"

कमाण्डर करण सक्सेना, ए.सी.पी. और इंस्पेक्टर, उन तीनों के दिमाग में ऐसे प्रचण्ड धमाके होते चले गये, जैसे एटमबम फट पड़ा हो ।

वह जबरदस्त रहस्योद्घाटन था ।

यानी शिल्पा एक चरित्रहीन औरत थी ।

और वो कितनी चरित्रहीन थी, इसकी सबसे बड़ी मिसाल ये थी कि वह अपने ड्राइवर से मिलती थी । इतना ही नहीं, जिस दिन उसे ड्राइवर के साथ सहवास करना

होता, उस दिन वह अपने बेटे को भी दूसरे कमरे में सुलाती थी ।

सचमुच शिल्पा बड़ी दिलेर औरत थी, जो अपने पति के मौजूदगी में ही अपने यार के साथ गुलछर्रे उड़ाती थी ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने उस क्षण शिल्पा के बारे में जितना सोचा, उतनी ही हैरानी बढ़ी ।

□□□

तभी शिल्पा भी वापस कमरे में आ गयी ।

उस क्षण वह बिल्कुल जूड़ी की मरीज नजर आ रही थी । उसका चेहरा सफेद झक्क पड़ा हुआ था । होंठ कागज की तरह फड़फड़ा रहे थे और आंखों में हवाइयां थीं ।

साफ जाहिर था, शिल्पा एकाएक लौट आयी थी और सिर्फ लौट ही नहीं आयी थी, बल्कि उसने सावन के अंतिम शब्द भी सुन लिए थे । यही वजह थी, वो अंदर आकर धम्म से एक सोफा चेयर पर बैठ गयी और फिर दोनों हथेलियों में अपना चेहरा छुपाकर धीरे-धीरे सुबकने लगी ।

"हाँ, मैं चरित्रहीन हूँ ।" वो फफकते हुए बोली- "मैं दुराचारिणी हूँ । मैं यह सब करती थी ।"

"यानी तुम यह कबूल करती हो ।" कमाण्डर करण सक्सेना स्तब्ध लहजे में बोला- "कि तुम्हारे रुप सहाय के साथ अवैध सम्बन्ध थे ?"

"हाँ !" वो पूरी दिलेरी के साथ बोली- "मैं यह कबूल करती हूँ ।"

सब बहुत स्तम्भित-सी मुद्रा में अपनी-अपनी जगह खड़े रह गये ।

उस बेहद खूबसूरत औरत की जिन्दगी का एक नया अध्याय उनके सामने खुल रहा था ।

“क्या तुम्हें नागेन्द्र पाल जी से भी डर नहीं लगता था ?” कमाण्डर करण सक्सेना विस्मयपूर्वक बोला- “अगर उन्हें तुम्हारी इन हरकतों के बारे में सब-कुछ पता चल जाता तो ?”

“उनसे मुझे डरने की जरूरत नहीं थी ।”

“क्यों ?” कमाण्डर करण सक्सेना चौंका ।

“क्योंकि उन्हें पहले ही सब कुछ मालूम था ।”

कमाण्डर के दिमाग में एक और विस्फोट हुआ ।

भीषण विस्फोट ।

सब हैरानीपूर्वक शिल्पा की तरफ देखने लगे ।

शिल्पा, जो उन्हें अब आश्चर्य की प्रतिमूर्ति दिखाई पड़ रही थी ।

“य...यानी नागेंद्र पाल जी यह जानते थे ।” कमाण्डर का हद से ज्यादा विस्फारित स्वर- “कि तुम्हारे रूप सहाय के साथ अवैध संबंध हैं ?”

“हाँ ! वो जानते थे ।”

“आश्चर्य है । उन्होंने कभी तुम्हारे इन संबंधों का विरोध नहीं किया ?”

“वह विरोध करने की स्थिति में ही नहीं थे ।”

“क्यों ?”

शिल्पा ने एकाएक सावन की तरफ देखा, जो वहीं उसके बराबर में बैठा था ।

कमाण्डर उसका आशय भांप गया । उसने इंस्पेक्टर को इशारा किया, तो इंस्पेक्टर सावन को लेकर वहाँ से चला गया ।

“अब बताइए ।” कमाण्डर करण सक्सेना बोला- “वह विरोध करने की स्थिति में क्यों नहीं थे ?”

“क्योंकि वो मेरे साथ सेक्स नहीं कर पाते थे ।” शिल्पा, सावन के जाते ही थोड़ा खुलकर बोली- “मुझे ऐसी कोई रात याद नहीं आती, जब मैंने उनके साथ सेक्स सुख भोगा हो ।”

कमाण्डर की हैरानी बढ़ती जा रही थी ।

“तो फिर सावन... ।”

“सावन भी रूप सहाय का ही बेटा है ।”

“माय गॉड !”

कमाण्डर करण सक्सेना के दिमाग में आतिशबाजी सी छूटती चली गयी, जबकि शिल्पा ने अपना चेहरा पुनः दोनों हथेलियों में छिपा लिया था ।

“दरअसल नागेंद्र पाल और मेरे बीच एक समझौता हो गया था ।” शिल्पा धीमी आवाज में आगे बोली- “एक गुप्त समझौता । समझौता ये था, मैं हमेशा नागेंद्र पाल की ही बीवी बनकर रहूँगी । सोसायटी में उन तमाम दायित्वों को अंजाम दूंगी, जिन्हें एक बीवी को अंजाम देना होता है, लेकिन मैं अपनी सेक्सुअल लाइफ कैसे गुजारती हूँ, किस-किस से मिलती हूँ, क्या-क्या करती हूँ, इससे नागेंद्र पाल को कोई मतलब न होगा । नागेंद्र पाल ने मेरी बात मान ली । एक बार हम दोनों के बीच जो अंडरस्टैंडिंग हो गयी थी, तो फिर वह अभी तक जारी थी । इसमें फिर कहीं कोई गतिरोध नहीं आया । लेकिन यह बात आप आगे किसी को न बताना । इसमें मेरी और नागेंद्र पाल दोनों की ही बहुत ज्यादा बदनामी होगी । सबसे बड़ी बात ये है, अगर यह बात फैल गयी तो इससे सावन के भविष्य पर बड़ा बुरा

अलबत्ता उसने रूप सहाय के सामने ऐसा जाहिर नहीं किया कि उसे शिल्पा तथा उसके अवैध संबंधों की कोई जानकारी है ।

□□□

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना सफदरजंग हॉस्पिटल पहुँचा और वहाँ नागेंद्र पाल के उस बॉडीगार्ड से मिला, जो अविनाश लोहार को दबोचने के चक्कर में जख्मी हो गया था ।

बॉडीगार्ड का नाम मुकुंद मवानी था ।

मुकुंद मवानी खूब तगड़े जिस्म का मालिक था । लंबे-चौड़े कद-काठ वाला था । उसकी बड़ी-बड़ी मूंछे थीं और आंखों में सुर्खी छाई हुई थी ।

मुकुंद मवानी की सबसे बड़ी खूबी ये थी कि उसका पहाड़ जैसा जिस्म देखते ही एहसास होता था, वह बॉडीगार्ड जैसी कोई चीज है । फिर उसके हाथ और कंधे इतने सुडौल थे, जो किसी भी आदमी के दिल में खौफ पैदा कर सकते थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही मुकुंद मवानी ने बिस्तर छोड़कर बैठने की कोशिश की ।

"नहीं-नहीं !" कमाण्डर ने उसका कंधा पकड़ा- "तुम लेटे रहो ।"

मुकुन्द मवानी फिर भी बेड से पीठ लगाकर बैठ गया ।

उसकी तबीयत अब काफी ठीक नजर आ रही थी ।

उसकी दोनों गोलियां निकाली जा चुकी थीं और कंधे तथा टांग पर पट्टी बंधी थी ।

अलबत्ता उसने रूप सहाय के सामने ऐसा जाहिर नहीं किया कि उसे शिल्पा तथा उसके अवैध संबंधों की कोई जानकारी है ।

□□□

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना सफदरजंग हॉस्पिटल पहुँचा और वहाँ नागेंद्र पाल के उस बॉडीगार्ड से मिला, जो अविनाश लोहार को दबोचने के चक्कर में जख्मी हो गया था ।

बॉडीगार्ड का नाम मुकुंद मवानी था ।

मुकुंद मवानी खूब तगड़े जिस्म का मालिक था । लंबे-चौड़े कद-काठ वाला था । उसकी बड़ी-बड़ी मूंछे थीं और आंखों में सुर्खी छाई हुई थी ।

मुकुंद मवानी की सबसे बड़ी खूबी ये थी कि उसका पहाड़ जैसा जिस्म देखते ही एहसास होता था, वह बॉडीगार्ड जैसी कोई चीज है । फिर उसके हाथ और कंधे इतने सुडौल थे, जो किसी भी आदमी के दिल में खौफ पैदा कर सकते थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही मुकुंद मवानी ने बिस्तर छोड़कर बैठने की कोशिश की ।

"नहीं-नहीं !" कमाण्डर ने उसका कंधा पकड़ा- "तुम लेटे रहो ।"

मुकुन्द मवानी फिर भी बेड से पीठ लगाकर बैठ गया ।

उसकी तबीयत अब काफी ठीक नजर आ रही थी ।

उसकी दोनों गोलियां निकाली जा चुकी थीं और कंधे तथा टांग पर पट्टी बंधी थी ।

"तुम्हें यहाँ से कब डिस्चार्ज किया जा रहा है ?" कमाण्डर करण सक्सेना उसके नजदीक बैठता हुआ बोला ।

"बस थोड़ी बहुत देर में ही मुझे यहाँ से छुट्टी मिल जायेगी ।"

"अब तुम कैसा महसूस कर रहे हो ?"

"फिलहाल तो तबीयत काफी ठीक है, लेकिन थोड़ी देर पहले तक कंधे में दर्द हो रहा था । डॉक्टर ने इंजेक्शन दिया, तो वह भी ठीक हो गया ।"

"मैं तुमसे अविनाश लोहार के बारे में कुछेक सवाल पूछने आया हूँ ।"

"पूछिए कमाण्डर !"

मुकुंद मवानी, अविनाश लोहार के नाम पर थोड़ा अलर्ट दिखाई पड़ने लगा ।

चौंकन्ना ।

"सबसे पहले तो मुझे यह बताओ ।" कमाण्डर बोला- "कि अविनाश लोहार कोठी के अंदर दाखिल कैसे हुआ ? क्योंकि वहाँ अच्छी-खासी सिक्योरिटी थी । यह कैसे हुआ कि किसी ने अविनाश लोहार को कोठी के अंदर घुसते भी नहीं देखा ?"

"सच तो ये है कमाण्डर, यह बात मुझे भी हैरान कर रही है कि अविनाश लोहार कोठी के अंदर घुसा, तो कैसे घुसा ? किसी की भी नजर उसके ऊपर नहीं पड़ी । मैं तो तब चौंका, जब मैंने कोठी के अंदर से गोली चलने की आवाज सुनी और फिर नागेंद्र पाल साहब की जोरदार चीख मेरे कानों में पड़ी ।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? गोली चलने और साहब के चीखने की आवाज सुनते ही मैं उस कमरे की तरफ दौड़ा, जिसमें बैठे हुए साहब भाषण की तैयारी कर रहे थे, लेकिन मैं कमरे तक पहुँच पाता, उससे पहले ही मैंने अविनाश लोहार को कमरे से बाहर निकलते देखा । उसकी आंखों में खून तैर रहा था और हाथ में रिवॉल्वर थी । मैंने तुरंत अविनाश लोहार को दबोचने का प्रयास किया, लेकिन मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि अविनाश लोहार में गजब की फुर्ती थी । उसके एक्शन किसी प्रशिक्षित कमांडोज जैसे थे । मैं अपने कंधे से स्टेनगन उतार पाता, उससे पहले ही उसने बहुत जोर से एक फ्लाइंग किक मेरे पेट में जड़ी और फिर अपनी रिवॉल्वर से मेरे ऊपर दो फायर किए । गोलियां लगते ही मेरा सारा विरोध खत्म हो गया था और अविनाश लोहार वहाँ से भाग खड़ा हुआ ।"

"क्या वहाँ मौजूद किसी और गार्ड ने अविनाश लोहार को पकड़ने का प्रयास नहीं किया ?" कमाण्डर करण सक्सेना बोला ।

"किसी को इतना मौका ही नहीं मिला, जो कोई उसे पकड़ पाता ।" मुकुंद मवानी बोला- "सब-कुछ बेहद आनन-फानन हुआ । खासतौर पर अविनाश लोहार तो जैसे तूफान बना हुआ था । मेरे ऊपर फायर करते ही वह द्रुतगति के साथ कोठी से बाहर निकल गया । जैसे ही वह कोठी से बाहर निकला, तभी एक मारुति वैन बंदूक से छूटी गोली की भांति बिल्कुल कोठी के मेन गेट के सामने आकर रुकी और उसका स्लाइडिंग डोर यूं झटके के साथ खुला, जैसे कोई भूकंप आ गया हो । अविनाश लोहार ने किसी कुशल

कमांडो की भांति एकदम वैन के अंदर जंप लगा दी और तत्काल वैन वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गयी ।"

"यानी किसी और गार्ड को मौका ही नहीं मिला, जो वह अविनाश लोहार को दबोच पाता ?"

"बिल्कुल ।"

"हूँ !"

कमाण्डर गंभीर हो उठा ।

उस घटनाक्रम का एक-एक वाकया चौंका देने वाला था ।

"मेरे एक दूसरे सवाल का जवाब और दो दोस्त ।"

"पूछिए ।"

"क्या तुम गारंटी के साथ कह सकते हो कि जिसने नागेंद्र पाल जी की हत्या की, वह अविनाश लोहार ही था ?"

"बिल्कुल गारंटी के साथ कह सकता हूँ कमाण्डर ।"

"इतना विश्वास तुम्हें क्यों है ?"

"क्योंकि अविनाश लोहार की तस्वीरें मैंने दर्जनों मर्तबा अखबारों में छपी देखी है । टीवी पर देखी है । कम-से-कम इस मामले में मुझसे कोई गलती नहीं हो सकती कि मैं अविनाश लोहार को पहचानने में धोखा खा जाऊं ।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने फिर भी अपने ओवरकोट की जेब से निकालकर अविनाश लोहार की एक तस्वीर उसे दिखाई ।

"क्या यही अविनाश लोहार है ?" कमाण्डर ने पूछा ।

"बिल्कुल यही अविनाश लोहार है ।" मुकुंद मवानी दृढ़तापूर्वक बोला ।

कमाण्डर करण सक्सेना के लिए अब संदेह की कोई गुंजाइश नहीं बची थी।

यानी मुकुंद मवानी ने अविनाश लोहार को पहचानने में कहीं कोई गलती नहीं की थी।

"और यह हत्या अविनाश लोहार ने की है।" मुकुंद मवानी बोला- "इसका चश्मदीद गवाह सिर्फ मैं ही नहीं हूँ कमाण्डर, बल्कि कई गार्डों ने भी अविनाश लोहार को साहब की हत्या करने के बाद वहाँ से जाते देखा और उसे साफ-साफ पहचाना।"

"यानी दूसरे गार्ड भी इस बात के चश्मदीद गवाह हैं।"

"बिल्कुल !"

कमाण्डर करण सक्सेना समझ गया, समाजवादी नेता नागेंद्र पाल की हत्या हण्ड्रेड परसेंट अविनाश लोहार ने ही की थी और अब इस बारे में सवाल-जवाब करने बेकार थे।

क्योंकि अविनाश लोहार को पहचानने में एक आदमी धोखा खा सकता था, मगर कई आदमियों को धोखा होना असंभव था।

मुकुंद मवानी का बयान लेने के बाद फिर कमाण्डर करण सक्सेना मोर्ग पहुँचा और वहाँ उसने नागेंद्र पाल की लाश देखी।

नागेंद्र पाल की लाश का पोस्टमार्टम हो चुका था और उसके भी दो गोलियां लगी हुई थीं। मगर सच तो ये है, नागेंद्र पाल के दिल के पास लगी पहली गोली ही उसकी मौत का वायस बन गयी थी।

उस समय मोर्ग में नागेंद्र पाल की लाश को काफी सारे लोग रिसीव भी करने आये हुए थे।

जो लगभग सभी उसकी पार्टी के कार्यकर्ता थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने एक डॉक्टर के साथ मोर्ग के अंदर जाकर लाश का बड़ी बारीकी से मुआयना किया और फिर वहाँ से रुख्सत हुआ ।

□□□

धीरे-धीरे शाम घिरने लगी थी ।

एक-के-बाद एक देश भर में हुई उन चार हत्याओं ने पब्लिक को झकझोर डाला था ।

सांध्य दैनिक अखबार उन खबरों से रंगे पड़े थे ।

वह केस कमाण्डर करण सक्सेना को सौंपा जा चुका था, यह उस दिन के अखबार की सबसे प्रमुख खबर थी ।

इतना ही नहीं, अविनाश लोहार ने कमाण्डर करण सक्सेना को वह केस सॉल्व करने का जो चैलेंज दिया था, वह भी उस दिन के अखबारों की सबसे प्रमुख हेडलाइन था ।

टीवी पर उस हत्याकांड से संबंधित विशेष प्रसारण दिखाएं जा रहे थे ।

पब्लिक में उस हत्याकांड के बारे में जानने की गहन उत्सुकता थी ।

एक-एक खबर पर लोगों की बड़ी गहरी नजर थी ।

हर कोई यह जानना चाहता था, आखिर इस बार कौन जीतेगा ।

कमाण्डर करण सक्सेना या अविनाश लोहार ?

दोनों ही अपने-अपने फील्ड के महारथी थे ।

दोनों उस्ताद ।

इसमें कोई शक नहीं, वह मुकाबला एक यादगार मुकाबला साबित होने वाला था ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना कलकत्ता पहुँचा ।

कलकत्ता, जो किसी जमाने में बड़ी सांस्कृतिक नगरी रही है और उस शहर ने बड़ी-बड़ी कला विभूतियों को जन्म दिया है ।

क्रिकेट खिलाड़ी विजय पटेल की जिस फार्म हाउस में हत्या हुई थी, वह फार्म हाउस कलकत्ता की मुख्य आबादी से लगभग पांच किलोमीटर दूर एक बिल्कुल तन्हा इलाके में बना हुआ था । वहाँ आस-पास सिर्फ फार्म हाउस थे ।

बड़े-बड़े गेस्ट हाउस थे ।

या फिर कुछ छोटे-छोटे कॉटेज बने हुए थे, जहाँ दो-तीन रातें अकेले साथ गुजारने के तमन्नाई लड़के-लड़कियां आते थे, कॉटेज किराए पर लेते थे और मौज-मस्ती करके लौट जाते थे ।

कुल मिलाकर वह जगह शहर की आबादी से तो दूर थी, लेकिन काफी रोमांटिक जगह थी । फार्म हाउसों में रहने वाले बड़े-बड़े अय्याश और रईस बूढ़े भी अक्सर वहाँ रंगरलिया मनाते देखे गये थे । वह पन्द्रह-पन्द्रह, सोलह-सोलह साल की मासूम लड़कियों को बुक करके अपने साथ ले आते थे और फिर उनके साथ मौज मस्ती करके अपने जवानी के दिनों की याद ताजा करते थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना सीधा फार्म हाउस पर पहुँचा ।

जिस फार्म हाउस में विजय पटेल की हत्या हुई थी, उस फार्म हाउस का नाम गोल्डन गेट फार्म हाउस था ।

फार्म हाउस का मालिक जोज़फ ब्रिगेंजा नाम का एक अधेड़ गोवानी था, जो अपनी पत्नी के साथ वहाँ रहता था।

जोजफ ब्रिगेंजा की एक टांग को कुछ साल पहले पैरालाइसिस (लकवा) मार गया था। तब से वह चलने-फिरने के काबिल नहीं रहा था और अब सिर्फ व्हील चेयर का मोहताज था। इसके अलावा वह दमा का भी मरीज था और वह थोड़ा भी ज्यादा बोलता था तो उसे बहुत जोर से दमे का धसका उठता था। कुल मिलाकर जीवन की उस संध्या में उसकी पत्नी उसके साथ थी और हर तरह से साथ थी।

मैडम ब्रिगेंजा वैसे भी बहुत चाक-चौबंद और तंदुरुस्त औरत थीं। फार्म हाउस में जितने भी नौकर-चाकर काम करते थे, सुबह से शाम तक मैडम ब्रिगेंजा का हुक्म उनके ऊपर कोड़े की तरह बरसता रहता।

कमाण्डर फार्म हाउस में पहुँचकर उन दोनों पति-पत्नी से मिला और उन्हें अपना परिचय दिया।

"कमाण्डर आप ?" कमाण्डर करण सक्सेना को अपने सामने देखकर वह दोनों गोवानी दम्पत्ति चौंक उठे।

जोजफ ब्रिगेंजा उस समय भी व्हीलचेयर पर था और ऐसा निढाल नजर आ रहा था, जैसे किसी ने मिक्सी में डालकर उसके शरीर का सारा खून में निचोड़ लिया हो।

"दरअसल रात आपके फार्म हाउस में जो विजय पटेल की हत्या हुई है।" कमाण्डर करण सक्सेना बिना किसी भूमिका के बोला- "मैं उसी हत्या के सिलसिले में आपसे कुछ मालूमात हासिल करने आया हूँ।"

"मैन, तुमने उस बारे में जो भी बात करनी हो।" मैडम ब्रिगेंजा हमेशा की तरह कड़क लहजे में बोलीं- "इधर अपुन

से मालूमात करना । जोजफ की तबीयत आज मॉर्निंग से ही कुछ ठीक नहीं है । उसे आज मॉर्निंग में ही दमे का बड़ा जबरदस्त दौरा पड़ा था ।”

“ओह, क्या यह दमे के पेशेण्ट हैं ?”

“यस ।”

कमाण्डर करण सक्सेना की सरसरी-सी निगाह जोजफ ब्रिगेंजा के चेहरे पर घूम गयी ।

जबकि जोजफ ब्रिगेंजा ने अपने होठों पर बस आहिस्ता से जबान फिराई ।

“दरअसल मैं फार्म हाउस का वह कमरा चेक करने आया हूँ ।” कमाण्डर करण सक्सेना ‘डनहिल’ का छोटा-सा कश लगाता हुआ बोला- “जिस कमरे में मिस्टर पटेल की हत्या हुई थी ।”

“आइए मैं आपको वह कमरा दिखाती हूँ ।”

“किधर है वह कमरा ?”

“उस तरफ ।”

मैडम ब्रिगेंजा कमाण्डर करण सक्सेना के साथ हॉल कमरे की तरफ आगे बढ़ीं ।

जोजफ ब्रिगेंजा भी अपनी व्हीलचेयर के पहिए धीरे-धीरे घुमाता हुआ उनके पीछे-पीछे चला ।

पूरा फार्म हाउस बहुत सुव्यवस्थित दिखाई पड़ रहा था । फार्म हाउस की पिचहत्तर प्रतिशत जमीन पर नर्सरी थी और वहाँ तरह-तरह के फूल थे । जबकि बाकी जमीन पर बड़े-बड़े हॉल कमरे बने हुए थे और उन्हें एक बंगले की शक्ल दी गयी थी ।

वह तीनों उस हॉल कमरे के पास पहुंचे, जिसमें विजय पटेल की हत्या की गयी थी ।

फिलहाल उस कमरे का दरवाजा बंद था और उसे सील किया गया था ।

"इसे सीलबंद किसने किया ?"

"कल जब पुलिस जहाँ से विजय पटेल की लाश ले गयी थी मैन, तभी उन्होंने इसे सीलबंद कर दिया था ।"

"ओह !"

"वैसे कुछ भी था ।" व्हील चेयर पर बैठा जोजफ ब्रिगेंजा गहरी सांस छोड़ता हुआ बोला- "विजय पटेल लड़का बढ़िया था मैन ! बॉलर तो वह बहुत ही गजब का था । याद है, एक बार पाकिस्तान टीम के खिलाफ उसने कैसा जोरदार प्रदर्शन किया था ? लगातार तीन बॉल पर तीन आउट ! हेट्रिक ! रिअली ! कभी-कभार ही इस तरह का टैलेंट सामने आता है । उसकी मौत से इंडियन टीम को बहुत बड़ी क्षति पहुंची है ।"

जोजफ ब्रिगेंजा की सांस जोर-जोर से फूलने लगी ।

साफ दिखाई पड़ रहा था, वह दमे का मरीज है ।

"जोजफ !" मिसेज ब्रिगेंजा गुर्रायी- "मैंने तुमसे क्या कहा ? कम बोलो, एकदम कम ।"

"ओ.के. डार्लिंग ! ओ.के. !" जोजफ मुर्दों की तरह ढेर हो गया और उसने अपना शरीर ढीला छोड़ दिया ।

कमाण्डर ने 'डनहील' का छोटा-सा कश लगाया ।

सीलबंद हॉल कमरा उसे काफी विचलित कर रहा था ।

क्योंकि वो हॉल कमरे की अंदर से तलाशी लेना चाहता था ।

"क्या सोच रहे हो मैन ?"

"मैं दरअसल हॉल कमरे की अंदर से तलाशी लेना चाहता हूँ ।"

"यह मुमकिन नहीं । तुम देख ही रहे हो, हॉल कमरा अंदर से बंद है और बिना पुलिस की मदद के कोई भी इसमें नहीं घुस सकता ।"

"अगर कमरे की सील बिल्कुल ठीक-ठाक यूं ही लगी रहे ।" कमाण्डर करण सक्सेना अपने होंठ सिकोड़कर बोला- "और मैं अंदर जाकर तलाशी ले लूं, तो आप लोगों को तो कुछ ऐतराज न होगा ?"

जोजफ ब्रिगेंजा चौंका ।

वह फिर बोले बिना न रह सका ।

"लेकिन तुम इस तरह तलाशी कैसे लेगा मैन ?"

मिसेज ब्रिगेंजा ने उसे घूरकर देखा, तो जोजफ पुनः खामोश हो गया ।

"दरअसल सील तोड़े बिना कमरे के अंदर घुसने की हैडक पूरी तरह मेरी है ।" कमाण्डर करण सक्सेना 'डनहिल' का कश लगाता हुआ बोला- "आप सिर्फ यह बताइए, आपको मेरे इस तरह अंदर घुसने में कुछ परेशानी तो नहीं है ?"

"लेकिन इस काम के लिए तुम सीधे-सीधे पुलिस की हेल्प क्यों नहीं ले लेते मैन ?"

"वह एक लंबा प्रॉसेस है । इसके लिए मैंने पहले स्थानीय पुलिस स्टेशन में जाना होगा । कमिश्नर को सूचित करना होगा । पुलिस का एक पूरा स्टाफ यहाँ आयेगा और उसके सामने सील तोड़ी जायेगी । इस पूरी प्रक्रिया में कम-से-कम चार-पांच घंटे खर्च हो जाएंगे । जबकि मेरे पास इतना समय नहीं है । मैंने फौरन अभी यहाँ से निपटकर मद्रास पहुँचना है ।"

"ओह !"

“जबकि अगर आप लोग इजाजत देंगे, तो यह काम अभी सेकेंडों में हो जायेगा।”

“लेकिन तुम्हारे इस तरह हॉल कमरे में घुसने से कोई लफड़ा तो नहीं होगा मैन ?”

“नहीं। कोई लफड़ा नहीं होगा। अगर तुम्हारे से कोई सवाल-जवाब करे, तो तुम बेहिचक मेरा नाम ले लेना।”

“ओ.के. ! ओ.के. ! फिर हमें कोई ऐतराज नहीं। मगर तुम घुसेगा कैसे ?”

“वह सारा इंतजाम मैं अभी करता हूँ।”

कमाण्डर करण सक्सेना ने देखा, उस हॉल कमरे में कुल चार खिड़कियां थीं और चारों काफी बड़ी-बड़ी खिड़कियां थीं।

कमाण्डर एक-एक करके उन सभी खिड़कियों के पास पहुँचा और उसने सभी खिड़कियों को अंदर की तरफ टहोककर देखा। उनमें से तीन खिड़कियां अंदर से कसकर बंद थीं, जबकि एक खिड़की टहोककर देखने पर कुछ हिली। कमाण्डर करण सक्सेना समझ गया, उसकी सिटकनी अंदर से बस थोड़ी-सी अटकी हुई है।

“क्या मुझे तांबे का या लोहे का कोई तार मिलेगा ?”

“मैं अभी लाती हूँ।”

“थैंक यू।”

मिसेज ब्रिगेंजा वहाँ से चली गयीं।

जोजफ ब्रिगेंजा अभी भी वहीं था और अपलक कमाण्डर करण सक्सेना को देख रहा था।

अलबत्ता वो खामोश था।

उसका चेहरा बता रहा था, वो आदमी बहुत बेबसी की जिन्दगी बसर कर रहा है।

तभी मिसेज ब्रिगेंजा तांबे का एक तार ले आयीं ।

तार कोई एक फुट लम्बा था । कमाण्डर करण सक्सेना ने तार को आगे से तीन-चार बल देकर थोड़ा मोटा कर लिया और फिर उसे चौखट तथा खिड़की के पल्ले के बीच में ठीक उस जगह घुसाया, जहाँ सिटकनी चमक रही थी । फिर उसने तार की मदद से सिटकनी धीरे-धीरे नीचे की तरफ सरकानी शुरू की ।

मुश्किल से दो मिनट लगे ।

सिटकनी अंदर से 'खट' की आवाज करते हुए गिर गयी और सिटकनी गिरते ही खिड़की के दोनों पल्ले भी लहलहाते हुए खुलते चले गये ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने अपने दोनों हाथों पर पतले सफेद दस्ताने चढ़ाये और फिर अंदर हॉल कमरे में कूद पड़ा ।

□□□

हॉल कमरे का दृश्य बेहद विहंगमकारी था ।

वह किसी रेलवे प्लेटफार्म जैसे लंबे-चौड़े आकार का हॉल कमरा था । छत में चार बहुत खूबसूरत झाड़-फानूस लटके हुए थे । पीछे एक बहुत बड़ा बुकशेल्फ था । इसके अलावा 'कोका-कोला' के कई छोटे-बड़े कट आउट भी उस हॉल कमरे में लगे हुए थे । साफ जाहिर था, उस कमरे को भी शूटिंग के लिए तैयार किया गया था । इसके अलावा हॉल कमरे में एक बहुत मूल्यवान सोफा सेट था । सोफा चेयर थीं और दरवाजे के बिल्कुल बराबर में बार काउंटर बना हुआ था, जहाँ एक से एक बेशकीमती शराब

मौजूद थी। कमाण्डर करण सक्सेना हॉल कमरे के बीच में खड़े होकर एक-एक चीज को ध्यानपूर्वक देखने लगा।

सोफा सेट के बिल्कुल सामने ही ढेर सारा खून पड़ा हुआ था। खून, जो अब सूख चुका था और जिसके चारों तरफ पुलिस ने सफेद चाक से गोल दायरा बना रखा था।

तभी कमाण्डर करण सक्सेना की निगाह उस वार्डरोब पर पड़ी, जिसकी जानकारी अविनाश लोहार ने उसे दी थी।

कमाण्डर वार्डरोब के नजदीक पहुँचा और उसने अपने दस्तानेयुक्त हाथों से सावधानीपूर्वक वार्डरोब खोला।

वार्डरोब में काफी सारे पुराने कपड़े भरे हुए थे।

कमाण्डर करण सक्सेना ने धीरे-धीरे कपड़े इधर-उधर हटाकर पैग तलाश करना शुरू किया।

"क्या बात है मैन।" मिसेज ब्रिगेंजा खिड़की के बाहर खड़ी-खड़ी बोलीं- "तुम उधर क्या तलाश रहे हो?"

"कुछ नहीं।"

"कुछ तो...।"

"मुझे दरअसल किसी खास वस्तु की तलाश है।" कमाण्डर करण सक्सेना संजीदगी के साथ बोला।

उसकी जबान से अभी वो शब्द निकले ही थे कि तभी उसे पैग मिल गया।

वह वार्डरोब के सबसे ऊपर वाले खाने में कपड़ों के पीछे छुपाकर रखा गया था। पैग में अभी भी दो-तीन घूंट शराब थी।

"यह पैग इधर कहाँ से आ गया?" मिसेज ब्रिगेंजा वार्डरोब में से उस पैग को निकलते देखकर चौंकी।

"इसे किलर ने यहाँ छुपा कर रखा था।"

"अविनाश लोहार ने?"

"यस ।"

मिसेज ब्रिगेंजा के नेत्र फैल गये ।

जबकि कमाण्डर सक्सेना ने अब अपने ओवरकोट की जेब से पॉलीथीन की दो थैलियाँ निकालीं, जिन्हें वो पहले ही अपने साथ लेकर आया था । फिर उसने एक पॉलिथीन में पैग की सारी शराब पलटी और उसे ऊपर कसकर बांध दिया । इसके अलावा उसने दूसरी पॉलिथीन की थैली में कांच का पैग बांधा ।

वह सबूत भी सुरक्षित तौर पर उसकी ओवरकोट की जेब में पहुँच गये ।

फिर कमाण्डर की निगाहें हॉल कमरे में इधर-उधर घूमीं, लेकिन उसे वहाँ कोई और काम की चीज न दिखाई पड़ी ।

वहाँ और कुछ न था ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना, जोजफ ब्रिगेंजा और मिसेज ब्रिगेंजा, वह तीनों उस समय फार्म हाउस के एक काफी बड़े डायनिंग हॉल में बैठे थे ।

मिसेज ब्रिगेंजा ने कमाण्डर करण सक्सेना को एक कप में कॉफी सर्व की और कॉफी का दूसरा कप अपने सामने रखा ।

"क्या मेरे लिए कॉफी नहीं मंगाई ?" जोजफ ब्रिगेंजा व्हील चेयर पर बैठे-बैठे बोला ।

"नहीं । कॉफी तुम्हारी सेहत के लिए नुकसानदेह है जोजफ ।" मिसेज ब्रिगेंजा की आवाज हमेशा की तरह आदेशात्मक थी- "वैसे भी पिछले तीन-चार रोज से तुम्हारी

तबीयत कुछ ठीक नहीं है, इसलिये मैंने तुम्हारे वास्ते बस टोमैटो सूप मंगाया है।"

मिसेज ब्रिगेंजा के शब्द पूरे भी नहीं हुए थे कि उसी क्षण सफेद वर्दी में सजा-धजा एक नौकर ट्रे में सूप का प्याला लेकर आ गया, जिसमें एक चम्मच भी पड़ा हुआ था।

उसने सूप जोजफ ब्रिगेंजा के सामने टेबल पर रखा और जिस तरह वहाँ आया था, उसी तरह वहाँ से वापस चला गया।

टोमैटो सूप को देखकर जोजफ ब्रिगेंजा के चेहरे पर कुछ अच्छे भाव नहीं उभरे।

अलबत्ता वो खामोश रहा।

साफ जाहिर था, वो अपनी उस बदहाल जिंदगी से खुश नहीं था।

"मिसेज ब्रिगेंजा !" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "मैं क्रिकेटर विजय पटेल के बारे में आपसे कुछेक सवाल पूछना चाहता हूँ।"

"पूछो मैन !" मिसेज़ ब्रिगेंजा धीरे से कॉफी सिप करते हुए बोलीं।

"क्या विजय पटेल इस फार्म हाउस पर अक्सर आता था ?"

"नहीं, वो कल रात पहली बार इधर शूटिंग करने आया था।" मिसेज ब्रिगेंजा बोलीं- "कल रात से पहले तो कभी भी उसके इधर कदम नहीं पड़े थे। बल्कि शूटिंग वो करेगा, यह बात भी अपुन को पहले से मालूम नहीं थी।"

"क्यों ?"

"दरअसल 'वाहेगुरु' करके एक एडवरटाइजमेंट एजेंसी है, जिसका मालिक सरदार मनजीत सिंह नाम का एक

लंबा तगड़ा आदमी है । सरदार मनजीत सिंह ही पहली बार अपुन से आकर मिला था और उसी ने ‘कोका-कोला’ की विज्ञापन फिल्म के वास्ते हमारा यह फार्म हाउस बुक किया था । मनजीत सिंह ने फार्म हाउस बुक करते समय बस इतना ही बताया कि वह एक एडवरटाइजमेंट फिल्म शूट करना चाहता है । एडवरटाइजमेंट फिल्म में कौन स्टार काम करेगा, इस बारे में उसने हमें कोई जानकारी नहीं दी ।”

“आपने पूछा भी नहीं ?”

“पूछने की जरूरत भी क्या थी मैन ? वह हमारे फार्म हाउस को शूटिंग प्लेस की तरह इस्तेमाल करना चाहता था और उसका फुल रेन्ट वो अपुन को दे रहा था, अपुन को और क्या चाहिये था सिंपल ।”

“हूँ ।”

“मैन, ‘कोका-कोला’ की एडवरटाइजमेंट फिल्म में विजय पटेल काम कर रहा है ।” मिसेज ब्रिगेंजा बोलीं- “यह बात भी हमें तब पता चली, जब विजय पटेल शूटिंग की पूरी यूनिट के साथ यहाँ आया ।”

“क्या नाइट शिफ्ट में शूटिंग थी ?”

“हाँ, उन्होंने सारी शूटिंग नाइट शिफ्ट में ही करनी थी ।”

कमाण्डर करण सक्सेना कॉफी धीरे-धीरे चुसकता रहा ।

जोजफ ब्रिगेंजा ने भी अब अपने हाथ में टोमैटो सूप का प्याला पकड़ लिया और चम्मच से धीरे-धीरे सूप पीने लगा ।

“क्या सरदार मनजीत सिंह का एड्रेस आपके पास है ?”

“क्यों नहीं ।” मिसेज ब्रिगेंजा तुरंत बोली- “बिल्कुल है ।”

"मुझे वह एड्रेस चाहिये ।"

"अभी देती हूँ ।" फिर मिसेज ब्रिगेंजा विपरीत दिशा में गर्दन घुमाकर जोर से चिल्लाई- "येशुदास !"

येशुदास तुरंत वहाँ प्रकट हुआ । वो अट्ठाइस-तीस साल का एक साधारण कद-काठ का नौकर था ।

"यस मैडम !"

"मेरी डायरी लेकर आओ ।"

"ओ.के.मैडम !"

येशुदास जितनी तेजी से गया, उतनी तेजी से पुनः आया । लेकिन अब उसके हाथ में ब्राउन कलर की एक डायरी थी ।

उसने वो डायरी मिसेज ब्रिगेंजा को दी ।

"दरअसल हम अपना यह फार्म हाउस अक्सर शूटिंग और पार्टी वगैरह के लिए किराए पर देते रहते हैं ।" मिसेज ब्रिगेंजा बोलीं- "ग्राहक का नाम और एड्रेस मैं इसी डायरी में नोट करके रखती हूँ ।"

"गुड !"

मिसेज ब्रिगेंजा ने डायरी खोली और उसके कुछ पन्ने पलटे ।

फिर उसने कमाण्डर करण सक्सेना को मनजीत सिंह का एड्रेस बताया । एड्रेस मुंबई, लोखंडवाला का था ।

कमाण्डर करण सक्सेना मुंबई का एड्रेस सुनकर चौंका ।

"एक बात समझ नहीं आयी ।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने कॉफी का कप खाली करके टेबल पर रख दिया ।

"जब सरदार मनजीत सिंह मुंबई शहर का रहने वाला था और वहीं लोखंडवाला जैसी जगह उसकी एडवरटाइजमेंट

एजेंसी थी, तो उसने शूटिंग मुंबई शहर में ही क्यों नहीं रखी ? उसने तमाम यूनिट और शूटिंग का सारा ताम-झाम यहाँ तक ढोकर लाने की क्या जरूरत थी ? जहाँ तक फार्म हाउस का सवाल है, तो मुंबई शहर में शूटिंग की इससे बढ़िया लोकेशंस उन्हें मिल सकती थी ।”

“यह तो मनजीत सिंह ही ज्यादा बेहतर बता सकता है मैन ।” मिसेज ब्रिगेंजा बोलीं- “कि उसने शूटिंग मुंबई शहर में ही क्यों नहीं रखी, इधर क्यों रखी ?”

“शूटिंग इधर कलकत्ता में करने के पीछे एक वजह हो सकती है ।” जोजफ ब्रिगेंजा टोमैटो सूप धीरे-धीरे चम्मच से सिप करता हुआ बोला ।

कमाण्डर ने अब थोड़ा चौंककर जोजफ ब्रिगेंजा की तरफ देखा ।

जोजफ ब्रिगेंजा अभी भी शांत था ।

नजरें झुकाए हुए ।

“क्या वजह हो सकती है ?”

“दरअसल कल इंडियन टीम ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर क्रिकेट खेलने जा रही है ।” जोजफ ब्रिगेंजा नजरें झुकाए-झुकाए बोला- “हो सकता है, उसी बिजी शेड्यूल के कारण विजय पटेल ने इधर कलकत्ता में ही शूटिंग रखी हो, क्योंकि विजय पटेल कलकत्ता में ही रहता था और यही एक स्टेडियम में सारी प्रैक्टिस करता था ।”

कमाण्डर करण सक्सेना की आँखें चमक उठीं ।

“यस मिस्टर ब्रिगेंजा !” वो बोला- “यह बात हो सकती है ।”

कमाण्डर करण सक्सेना ने देखा, थोड़ा बहुत बोलने से ही जोजफ ब्रिगेंजा की सांसें पुनः बुरी तरह फूलने-पिचकने

लगी थीं, परंतु इस मर्तबा मिसेज ब्रिगेंजा के कुछ कहने की नौबत नहीं आयी। उससे पहले ही जोजफ ब्रिगेंजा खामोश हो गया और पहले की तरह ही धीरे-धीरे टोमैटो सूप सिप करने लगा।

"एक सवाल और।"

"पूछिए।"

"जिस समय विजय पटेल की हत्या हुई थी, उस समय उसके पास कौन-कौन था ?"

"कोई नहीं था।" मिसेज ब्रिगेंजा बोलीं- "दरअसल जिस हॉल में हत्या हुई मैन, उस हॉल में मनजीत सिंह ने बस एक शॉट लेना था और वह शॉट वो ले चुका था। उसके बाद अब दूसरे हॉल में शूटिंग की तैयारी चल रही थी। ट्रॉली सेट की जा रही थी। नागरा फिट किया जा रहा था। आर्ट डायरेक्टर बैकग्राउंड को अंतिम टच दे रहा था। इस बीच विजय पटेल पहले वाले हॉल कमरे में ही अकेला बैठा हुआ था और वहाँ कॉकटेल पी रहा था। तभी गोली चलने की आवाज ने सबको चौंकाकर रख दिया और विजय पटेल के गला फाड़कर चिल्लाने की आवाज सबको सुनाई पड़ी। जब तक लोग उस हॉल से निकलकर धड़ाधड़ पहले वाले हॉल में पहुंचे, तब तक सारा काम-तमाम हो चुका था।"

"यानी विजय पटेल ने दम तोड़ दिया था ?"

"बिल्कुल।"

"और हत्यारा ?"

"हत्यारे को सबने वहाँ से निकलकर भागते हुए देखा।"

"क्या वह अविनाश लोहार ही था ?"

"बिल्कुल !" जोजफ ब्रिगेंजा धीमी आवाज में बोला- "शत-प्रतिशत वह अविनाश लोहार ही था। मैंने खुद उसे अपनी आंखों से देखा है।"

"आपने देखा !" कमाण्डर करण सक्सेना हैरानीपूर्वक बोला- "क्या आप भी इतनी रात को जागकर शूटिंग देख रहे थे ?"

"जी, यह शूटिंग नहीं देख रहे थे।" जोजफ ब्रिगेंजा कुछ कहता, उससे पहले ही मिसेज ब्रिगेंजा बोल पड़ीं- "दरअसल कल रात इन्हें बहुत जोर से दमे का दौरा उठा था, जिसमें उनकी हालत काफी सीरियस हो गयी थी। मैंने सिरप वगैरह पीने के लिए दिया, तब कहीं जाकर इनकी हालत कुछ संभली। फिर मैं रात में ही इन्हें बाहर थोड़ी हवाखोरी कराने लिए आयी थी। तभी गोली चलने की आवाज हमारे कानों में पड़ी और फिर हम दोनों ने ही अविनाश लोहार को भागते हुए भी देखा।"

"यानी कम-से-कम इस मामले में शक-शुबहे की कोई गुंजाइश नहीं।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "कि विजय पटेल की हत्या अविनाश लोहार ने ही की थी।"

"यस मैन ! हत्यारा तो हण्ड्रेड परसेंट अविनाश लोहार ही था। गारंटीड वही था।"

"ओ.के.।"

□□□

अगले दिन के तमाम अखबार भी उसी हत्याकांड की खबरों से रंगे पड़े थे।

अविनाश लोहार ने खुद अपने खिलाफ कमाण्डर को जो सबूत बताए थे, उन सबूतों का बड़े जोर-शोर के साथ अखबारों में जिक्र किया गया था।

कमाण्डर को नागेंद्र पाल और अविनाश लोहार के वार्तालाप का जो टेप घटनास्थल से बरामद हुआ था, उसका भी तमाम अखबारों में सुर्खियों के साथ वर्णन था ।

टेप, जो अविनाश लोहार के खिलाफ बड़ा पुख्ता सबूत था ।

मजबूत सबूत ।

सबसे बड़ी बात ये थी, उसकी जानकारी खुद अविनाश लोहार ने ही कमाण्डर करण सक्सेना को दी थी ।

जिसने भी वह खबर सुनी, वही चौंका ।

आश्चर्य !

घोर आश्चर्य !

आखिर अविनाश लोहार क्या खेल खेल रहा था ?

क्या चाल चलने जा रहा था वो ?

इसके अलावा कलकत्ता के 'गोल्डन गेट' फार्म हाउस से भी कमाण्डर सक्सेना को शराब का जो पैग बरामद हुआ था और जिस पर अविनाश लोहार के मुताबिक उसने अपने फिंगरप्रिंट तथा होठों के निशान छोड़े थे, वो खबर भी अखबारों में बड़ी सुर्खियों के साथ छपी ।

कोई नहीं समझ पा रहा था, अविनाश लोहार क्या मायाजाल फैला रहा है ?

हर किसी की जुबान पर उसी हत्याकांड की चर्चा थी ।

हर कोई एक ही सवाल पूछ रहा था, अगर सचमुच अविनाश लोहार ने ही यह चारों हत्याएं की हैं, तो एक ही रात में मात्र एक-एक घंटे के अंतराल से यह करिश्मा कैसे हुआ ?

क्या कमाण्डर करण सक्सेना इस बार इस केस को सुलझा पाएगा ? सवाल जटिल था ।

रहस्य गहरा।

सस्पेंस बढ़ता जा रहा था। हिंदुस्तान की तमाम जनता में उस केस के प्रति कौतुहलता बढ़ती जा रही थी।

जबरदस्त बेचैनी।

ऐसी बेचैनी, जो पहले कभी किसी केस के लिए नहीं देखी गयी थी।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना अविनाश लोहार के खिलाफ सबूत जुटाता हुआ मद्रास पहुँचा।

मद्रास, जहाँ उद्योगपति अर्जुन मेहता की हत्या हुई थी। अर्जुन मेहता एक युवा उद्योगपति था और अपने मुश्किल से दस साल के कैरियर में उसने जो कामयाबी हासिल की थी, उसने संपूर्ण उद्योग-जगत को चौंका डाला था।

बहरहाल कमाण्डर करण सक्सेना जब मद्रास पहुँचा तो सारा शहर बंद था और वहाँ अजीब-सा सन्नाटा फैला था।

कमाण्डर करण सक्सेना सीधा होटल सनशाइन गया।

होटल सनशाइन वह जगह थी, जहाँ अर्जुन मेहता का मर्डर हुआ था।

होटल सनशाइन एक सात मंजिला इमारत थी और वो फाइव स्टार इंटर कांटिनेंटल होटल था। कमाण्डर करण सक्सेना ने वहाँ पहुँचकर जो सबसे खास बात देखी, वो ये थी कि होटल के बाहर भारी मात्रा में पुलिस का जमावड़ा था।

उन्होंने मूंगिया कलर के जालीदार हैट लगाए हुए थे, जो उनके आधे से ज्यादा चेहरे को ढके थे। हाथों में संगीनें और राइफले थीं।

इसके अलावा अवरोध पैदा करने के लिए लोहे के छोटे-छोटे बैरकेट्स थे ।

वो सारा ताम-झाम देखकर साफ लग रहा था, किसी हमले की आशंका से उन्होंने सारा इंतजाम किया हुआ है ।

मामला क्या है ?

कमाण्डर करण सक्सेना कुछ न समझ पाया ।

वो एक बात देखकर और ज्यादा चौंका । होटल सनशाइन इमारत के शीशे भी बुरी तरह टूटे हुए थे ।

जैसे होटल पर हाल-फिलहाल में ही जबरदस्त हमला किया गया हो ।

□□□

होटल के बाहर ही इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप तैनात था ।

इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप लगभग अड़तीस साल का काला भुजंग आदमी था । उसके सिर के बाल काफी घने और स्याह काले थे । फिर भी उसके चेहरे में ऐसा कुछ था कि उसे देखकर हंसी आती थी ।

हालांकि वह जोकर जैसा बिल्कुल नहीं लगता था ।

हंसी आने की शायद सबसे बड़ी वजह ये थी कि उसका चेहरा प्रसिद्ध फिल्म कॉमेडियन सतीश कौशिक से काफी कुछ मिलता था । इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप, कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही फौरन पहचान गया । वो होटल के ग्लास डोर के पीछे लॉबी में एक कुर्सी डालकर बैठा हुआ था । उसने वहीं से कमाण्डर करण सक्सेना को देख लिया और दौड़ा-दौड़ा उसके पास पहुँचा ।

“हैलो कमाण्डर !” इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप ने बड़ी गरमजोशी के साथ कमाण्डर से हाथ मिलाया- “मुझे पूरी

कमाण्डर करण सक्सेना उस कुर्सी पर बैठ गया ।

इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप उसके सामने बैठा ।

"दरअसल कल से ही पूरा मद्रास शहर बंद है और यहाँ व्यापार मंडल ने हंगामा मचाया हुआ है । अर्जुन मेहता व्यापार मंडल का अध्यक्ष था । अर्जुन मेहता के मर्डर से व्यापार मंडल के सदस्यों में जबरदस्त रोष व्याप्त है । उन्होंने कल से ही मद्रास शहर में अनिश्चितकालीन बंद की घोषणा कर रखी है ।"

"क्यों ?"

"वह इस बात की डिमांड कर रहे हैं ।" इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप बोला- "कि अर्जुन मेहता का मर्डर अविनाश लोहार ने किया है या किसी और ने किया है, इसका जल्द-से-जल्द पता लगाया जाये ।"

"और यह होटल क्यों बंद है ?"

"होटल कल वाले हादसे के बाद बंद हुआ ।"

"हादसा ?"

कमाण्डर करण सक्सेना उस शब्द को सुनकर बुरी तरह चौंका ।

"कैसा हादसा ?"

"होटल में घुसते समय आपने देखा ही होगा कमाण्डर ।" इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप बोला- "कि बाहर से होटल के लगभग तमाम शीशे टूटे हुए हैं । जगह-जगह से टूटे हुए हैं ।"

"बिल्कुल देखा है । यह शीशे किसने तोड़े ?"

"यह शीशे ही तो कल वाले हादसे के बाद टूटे कमाण्डर ।"

"कैसे ?"

“दरअसल कल व्यापार मंडल के कार्यकर्ताओं ने होटल के सामने धरना दिया था और धरने पर बैठे-बैठे ही वह अर्जुन मेहता की मौत को लेकर इतना गुस्से में भर गये, इतना आंदोलित हो उठे कि उन्होंने पत्थर उठा-उठाकर धुआंधार तरीके से होटल पर बरसा डाले ।”

“ओह ! क्या धरने के समय पुलिस यहाँ नहीं थी ?” कमाण्डर करण सक्सेना ने पूछा ।

“नहीं ! पुलिस तो थी ।” इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप बोला- “लेकिन बहुत ज्यादा संख्या में नहीं थी, बहुत ज्यादा तादाद में नहीं थी । इसलिये भीड़ काबू में नहीं आयी । उस घटना के बाद से ही होटल का तमाम स्टाफ और यहाँ जितने भी आदमी ठहरे हुए थे, वह सब होटल खाली करके चले गये । होटल का मालिक भी कल वाली घटना से गुस्से में है । बहुत आक्रोश में है और उसका सारा आक्रोश पुलिस के प्रति है क्योंकि कल वाली उस घटना से जहाँ उसे बड़ा आर्थिक नुकसान पहुँचा है, वहीं उसके होटल की रेपुटेशन पर भी बड़ा फर्क पड़ा है । उसे अपने आर्थिक नुकसान से ज्यादा होटल के रेपुटेशन की फिक्र है ।”

“वह अपनी जगह बिल्कुल ठीक है ।”

सुरेंद्र प्रताप चुप रहा ।

“शायद कल जो उपद्रव हुआ था, उसी कारण अब तुमने यहाँ पुलिस का बंदोबस्त भी ज्यादा किया हुआ है ।”

“यस कमाण्डर !”

कमाण्डर करण सक्सेना सारी बात समझ गया ।

“क्या अभी भी उम्मीद है ।” कमाण्डर करण सक्सेना थोड़ा आश्चर्यपूर्वक बोला- “कि व्यापार मंडल के मेंबर होटल के ऊपर दोबारा हमला नहीं करेंगे ?”

"नहीं ! उम्मीद तो नहीं है । यूं तो कल भी उनकी ऐसी कोई मंशा नहीं थी ।" इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप बोला- "बस एकाएक ही किसी बात पर उनमें गुस्सा भर गया । कोई तो यह कह रहा है, होटल स्टाफ के मेंबर ने अर्जुन मेहता के खिलाफ कुछ बात बोल दी थी, जिससे एकाएक हालात बिगड़ गये और उन्होंने अपने गुस्से से बेकाबू होकर पत्थर बरसा डाले । कोई हालात बिगड़ने के लिए पुलिस को दोषी ठहरा रहा है । बहरहाल कल वाली घटना फिर न दोहराई जाये, इसके लिए पुलिस ने यहाँ मजबूत इंतजाम कर रखे हैं ।"

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना ने कुर्सी पर बैठे-बैठे एक 'डनहील' सुलगा ली ।

एक 'डनहील' उसने इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप को भी ऑफर की । वह भी सिगरेट पीता था ।

उसने भी लगभग कमाण्डर करण सक्सेना के साथ-साथ ही अपनी 'डनहिल' सुलगाई ।

मद्रास शहर में अर्जुन मेहता की मौत के बाद जो हंगामा हो रहा था, उसे कमाण्डर करण सक्सेना समझ सकता था । इस तरह की घटनाएं भारतवर्ष में अब आम बात हो गयी थीं । कोई भी बड़ा आदमी मरता था, तो पब्लिक अपनी भावनाएं काबू में नहीं रख पाती थी और तब इस तरह के नतीजे सामने आते थे ।

इस तरह के बड़े हंगामे होते थे ।

जोकि गलत थे ।

सरासर गलत थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना जानता था, इस तरह की घटनाएं खत्म होने वाली नहीं हैं ।

"इस होटल का मालिक कौन है ?" कमाण्डर ने 'डनहिल' का कश लगाते हुए पूछा ।

"एक मद्रासी है ।" इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप की निगाहें कमाण्डर करण सक्सेना के चेहरे पर ही टिकी थीं ।

"नाम क्या है ?"

"रंगास्वामी । रंगास्वामी का होटल का ही कारोबार है ।" सुरेंद्र प्रताप बोला- "और अच्छा-भला कारोबार है । इधर मद्रास में उसके दो होटल और हैं, जो काफी अच्छे चलते हैं ।"

"यानी कुल मिलाकर रंगास्वामी एक पैसे वाला आदमी है ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला ।

"यस कमाण्डर ! वह अच्छा-खासा पैसे वाला आदमी है ।"

"इस समय रंगास्वामी कहाँ होगा ?"

"मालूम नहीं किधर होगा ।"

"उससे मुलाकात करने का कोई रास्ता है ?"

"बिल्कुल है । मेरे पास उसका सेल नंबर है । अगर आप कहें तो मैं अभी उसे फोन करके यहाँ बुलाता हूँ ।"

"बुलाओ ।"

इंस्पेक्टर सुरेन्द्र प्रताप कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया और होटल के रिसेप्शन काउण्टर की तरफ बढ़ा, जहाँ दो-तीन फोन रखे थे ।

□□□

मुश्किल से आधा घंटे बाद ही रंगास्वामी वहाँ पहुंच गया । वो सिल्वर कलर की टाटा सुमो में वहाँ पहुँचा ।

रंगास्वामी लगभग अड़तालीस-उंचास साल का तपी हुई रंगत वाला आदमी था । हालांकि वो खूबसूरत नहीं था, लेकिन फिर भी शक्ल-सूरत से उसकी रईसी झलकती थी । बाल आधे से ज्यादा उड़े हुए थे, मगर जितने थे, वो रेशमी थे ।

उसने सिल्क का कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था और हाथ की उंगलियों में सोने की अंगूठियां थीं ।

रंगास्वामी हालांकि कमाण्डर से उत्साहपूर्वक मिला, लेकिन वो थोड़ा उखड़ा हुआ भी था ।

थोड़ा विचलित ।

"नमस्ते कमाण्डर !" कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही उसने अपने दोनों हाथ जोड़े ।

"नमस्ते ।"

"अइयय यो !" रंगास्वामी चिर-परिचित मद्रासी लहजे में बोला- "मेरे ऊपर बहुत बुरी गुजर रही है कमाण्डर ! मुरुगन (मद्रासियों का इष्ट देवता) मुझे न जाने किस बात का दंड दे रहा है । आपने देखा ही, मेरे होटल का कितना बुरा हश्र किया है कमबख्तों ने । मेरे तो यही समझ नहीं आ रहा अइयय यो, मेरा कसूर क्या था ? मुझसे ऐसा क्या पाप हो गया था, जो उन हरामजादों ने मेरे होटल का नक्शा तब्दील कर डाला । सारा थोबड़ा बदल डाला । उनकी जात का पैंदा मारूं, मैं उनके बारे में जितना सोच रहा हूँ, उतना मेरा खून फुंक रहा है । उतना मैं फड़फड़ा रहा हूँ ।"

"रिलैक्स ! रिलैक्स रंगास्वामी ! वी आर सिम्पैथाइज्ड विद यू ।"

"सिम्पैथी ?" रंगास्वामी और कलप उठा- "सिम्पैथी ! सिर्फ सिम्पैथी से कुछ नहीं होता अइयय यो ! मैं लाखों के नीचे आ गया । इसके अलावा मेरे होटल की जो रेपुटेशन, जो गुडविल खराब हुई, सो अलग ।"

"मैं आपका दुख समझ रहा हूँ मिस्टर रंगास्वामी !" कमाण्डर करण सक्सेना उसे भरपूर दिलासा देते हुए बोला- "सच तो ये है, कभी-कभी हमें ऐसा नुकसान भी उठाना पड़ जाता है, जिससे हमारा कुछ लेना-देना नहीं होता, जिससे हमारा कोई सरोकार नहीं होता ।"

अब रंगास्वामी के नेत्र एकाएक सिकुड़ गये ।

वह गौर से कमाण्डर की तरफ देखने लगा ।

"तुम इस तरह मेरी तरफ क्या देख रहे हो ?"

"मैं देख रहा हूँ अइयय यो !" रंगास्वामी कुढ़कर बोला- "आप भी उन्हीं हरामजादों की हिमायत कर रहे हो । आप भी उन्हीं जात का पैंदा मारो का साथ दे रहे हो, जिन्होंने यह लीला रची, जिन्होंने मुझे बर्बाद किया ।"

"मैं आतताइयों की हिमायत नहीं कर रहा ।" कमाण्डर करण सक्सेना दृढ़तापूर्वक बोला- "बल्कि आपको दिलासा दे रहा हूँ मिस्टर रंगास्वामी ! आपको समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि जो कुछ आपके साथ गुजरा है, वह कोई इतनी बड़ी घटना नहीं है, जिसके बारे में सोच-सोचकर आप इस कदर परेशान हों ।"

"यह बड़ी घटना नहीं है ?" रंगास्वामी चौंका ।

उसके चेहरे पर हैरानी के भाव पैदा हुए ।

"नहीं ! बिल्कुल नहीं ! हादसों के बारे में तो अभी शायद आप कुछ जानते भी नहीं ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "आपने कभी उन सीधे-सादे शरीफ लोगों के बारे

में सोचा है मिस्टर रंगास्वामी, जो शहर में दंगे भड़कने पर सिर्फ इसलिये दंगाइयों की गोलियों का शिकार बन जाते हैं क्योंकि वह हिंदू थे या फिर मुसलमान थे ? जरा सोचिए, आखिर क्या कसूर होता है उन शरीफ लोगों का ? सन चौरासी में पूरे देश के अंदर भयानक दंगे हुए । किस कदर निर्दोष लोग मारे गये । उन्हें बिल्कुल भेड़-बकरियों की तरह काट डाला गया । क्या कसूर था उन सबका ? वह सब निर्दोष थे । बिल्कुल निर्दोष । और आप ? आपके तो सिर्फ शीशे टूटे हैं मिस्टर रंगास्वामी, सिर्फ शीशे । कोई जानी नुकसान तो आपको नहीं झेलना पड़ा । जरा उन लोगों से जाकर पूछिए, जिनके घर में रोजी-रोटी का इंतजाम करने वाला सिर्फ एक शख्स होता है और वह शख्स भी दंगाइयों की गोली का निशाना बन जाता है । दंगाइयों की गोली उसके सीने पर नहीं लगी होती बल्कि सीधे उस घर के चूल्हे पर जाकर लगी होती है । चूल्हे पर वो एक गोली उनके सपने हमेशा-हमेशा के लिए चकनाचूर कर डालती है । मैं यह सारी बात कहकर आतताइयों की तरफदारी नहीं कर रहा हूँ कि उन्होंने जो कुछ किया ठीक किया, बल्कि आप को दिलासा देने की कोशिश कर रहा हूँ । आपको समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि जिस प्रकार आपको खामखाह बिना किसी मतलब के नुकसान उठाना पड़ा है, उसी तरह खामखाह बिना मतलब के लोगों के इससे भी बड़े-बड़े नुकसान हो जाया करते हैं । इस नुकसान की भरपाई भी मुमकिन है, मगर उस नुकसान की तो भरपाई भी मुमकिन नहीं ।"

रंगास्वामी के नेत्र झुक गये ।

उसके चेहरे पर अपराध बोध जागा ।

कमाण्डर की उन बातों का उससे कोई जवाब देते न बना ।

"मिस्टर रंगास्वामी !" कमाण्डर करण सक्सेना फिर थोड़ा शांत लहजे में बोला- "हो सकता है आपको मेरी बात कुछ गलत लगी हो, परंतु अगर आप गहराई में जाकर सोचेंगे तो आपको एहसास होगा कि यही सच है । यही जिंदगी की हकीकत है ।"

"अइयय यो कमाण्डर !" रंगास्वामी भावुक हो उठा । बुरी तरह भावुक हो उठा- "सॉरी ! वेरी सॉरी ! सचमुच आज आपने मेरी आँखें खोल दी । आपने एहसास दिला दिया कि मैं ही गलत था ।"

रंगास्वामी की आंखों में शर्मिंदगी के भाव दिखाई देने लगे ।

"नहीं ! गलत तुम नहीं थे ।" कमाण्डर करण सक्सेना संशोधन करता हुआ बोला- "गलत आतातायी ही थे । गलत वही था, जो कुछ उन्होंने किया । लेकिन अपने आपको दिलासा देने के लिए भी तो हमने कोई बहाना करना पड़ता है । कुछ समझाना पड़ता है ।"

रंगास्वामी अब और भी ज्यादा हैरानी से कमाण्डर करण सक्सेना को देखने लगा ।

कमाण्डर !

जिसका वो एक नया रूप देख रहा था ।

उसकी आंखों में कमाण्डर के प्रति इज्जत के भाव उभर आये ।

बेहद इज्जत के भाव ।

□□□

फिर रंगास्वामी, कमाण्डर करण सक्सेना और इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप को लेकर अपने ऑफिस में पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने कमाण्डर करण सक्सेना की आवभगत की। दिल से आवभगत की।

उसने कमाण्डर करण सक्सेना के लिए कोल्ड ड्रिंक और नाश्ते का ढेर सारा सामान मंगाया।

“मेरी एक इच्छा है।” कमाण्डर करण सक्सेना ने कोल्ड ड्रिंक सिप करते हुए कहा।

“बोलिए।”

“मैं होटल के उस सुइट का मुआयना और करना चाहता हूँ।” कमाण्डर करण सक्सेना बोला- “जिसमें उद्योगपति अर्जुन मेहता का मर्डर हुआ।”

“क्यों नहीं ?” रंगास्वामी तुरंत बोला- “मैं खुद अभी आपको उस सुइट में लेकर चलता हूँ कमाण्डर !”

“सुइट का नंबर क्या है ?”

“सुइट नंबर तीन सौ पांच है और वह तीसरी मंजिल पर है।”

“आप मेरे एक सवाल का जवाब और दो।”

“पूछिए।”

“परसों रात ठीक एक बजे जब अर्जुन मेहता का आपके होटल में मर्डर हुआ था।” कमाण्डर ने एक-एक शब्द बहुत नापते-तोलते हुए कहा- “तो क्या आप उस समय यहाँ होटल में थे ?”

“मर्डर के वक्त ?”

“हाँ !”

“अइयय यो ! मैं बिल्कुल यहीं था।” रंगास्वामी बोला- “मैं रोजाना रात के ठीक दो बजे इधर से जाता हूँ।”

"दो बजे ?"

"हाँ ।"

"इतनी रात को ?"

"धंधा ही अपना ऐसा है । सारा बवाल तो यूं समझो, मेरे सामने ही हुआ कमाण्डर ! सारा हंगामा, सारी अफरा-तफरी मेरे सामने मची । तौबा, मुरुगन का बस कहर ही बरपा हो गया था उस वक्त तो । गोली चलने और अर्जुन मेहता के प्रचंड रुप से चिल्लाने की आवाज सुनकर होटल में ऐसी भगदड़ मची थी अइयय यो, ऐसी चिल्लम-पों मची, जैसे यहाँ कोई भूकंप आ गया हो । जैसे कोई जलजला आ गया हो ।"

"क्या रात के एक बजे भी होटल में काफी भीड़ थी ?"

कमाण्डर करण सक्सेना की आंखों में हैरानी के भाव उभरे ।

आश्चर्य के ।

"सबसे ज्यादा भीड़ इधर रात में ही होती है कमाण्डर !" रंगास्वामी बोला ।

"क्यों ?"

"दरअसल रोजाना नाइट में साढ़े बारह बजे तक यहाँ एक डांस पार्टी का प्रोग्राम चलता है ।" रंगास्वामी पूरी डिटेल बयान करता हुआ बोला- "और बड़ा जबरदस्त, बड़ा हंगामाखेज प्रोग्राम चलता है । डांस पार्टी का वह प्रोग्राम पूरे शहर में फेमस भी खूब है । खासतौर पर शहर के नौजवान लड़के-लड़कियां तो उस प्रोग्राम के इतने शैदाई हैं, इतने दीवाने हैं कि पूछो मत । यही वजह है, यहाँ नाइट में खूब रौनक रहती है । नाइट में तो इधर ऐसा मेला जुटता

है, जैसा कुछेक होटलों में इकत्तीस दिसंबर की रात को जुटता है ।”

“रात को यहाँ किस टाइम तक भीड़-भड़क्का रहता है ?”

“मैंने बताया न अइयय यो, साढ़े बारह बजे तक तो डांस पार्टी का प्रोग्राम ही चलता है । उसके बाद भी काफी देर तक नौजवान लड़के-लड़कियां डांसिंग फ्लोर पर खूब अलमस्त होकर थिरकते रहते हैं । कुल मिलाकर रात के नौ बजे से वह जो हंगामा शुरू होता है, तो फिर कहीं रात के एक-डेढ़ बजे तक जाकर वो खत्म होता है ।”

“यानी एक-डेढ़ बजे इस होटल में खूब रौनक रहती है ।” कमाण्डर करण सक्सेना ने कोल्ड ड्रिंक का एक घूंट और सिप किया- “ खूब हंगामा रहता है ।”

“बिल्कुल !”

“जिस वक्त अर्जुन मेहता को गोली मारी गयी थी, उस वक्त तुम होटल में कहाँ थे ?”

कमाण्डर करण सक्सेना एक-एक बात बहुत बारीकी से पूछ रहा था । बहुत खोद-खोदकर ।

वो जानता था, इन्वेस्टिगेशन के दौरान पूछी गयी बहुत छोटी-से-छोटी बात भी कभी पूरे केस का पर्दाफाश कर डालती है ।

“जिस वक्त अर्जुन मेहता को गोली मारी गयी ।” रंगास्वामी ने बताया- “उस वक्त मैं अपने इसी ऑफिस में बैठा था और टेलीफोन पर एक पार्टी से बात कर रहा था ।”

“गोली चलने की आवाज आपने ऑफिस के अंदर साफ-साफ सुनी ?”

"बिल्कुल साफ-साफ सुनी।"

"लेकिन अभी आपने थोड़ी देर पहले बताया।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "कि अर्जुन मेहता तीन सौ पांच नंबर सुइट में ठहरा हुआ था, जो तीसरी मंजिल पर है। तीसरी मंजिल !" कमाण्डर ने एक-एक शब्द चबाया- "क्या तीसरी मंजिल पर चली गोली की आवाज तुम्हें इधर अपने ऑफिस में साफ-साफ सुनाई पड़ी ? वो भी इतने जबरदस्त हंगामे के बीच ? इतने जबरदस्त अफरातफरी के बीच ?"

"उस समय होटल में हंगामा बिल्कुल भी नहीं मच रहा था अइयय यो ! सब कुछ बिल्कुल शांत था। एकदम शांत। अपने निर्धारित वक्त पर साढ़े बारह बजे ही डांस पार्टी के प्रोग्राम का दी एंड हो चुका था। आर्केस्ट्रा वगैरह सब कुछ बिल्कुल शांत था और कहीं कोई हंगामा न था। सिर्फ डांसिंग फ्लोर पर कुछेक लड़के-लड़कियां ही एक दूसरे की बांहों में बांहें डाले थिरक रहे थे। इतना तो आप भी समझ सकते हो कमाण्डर, उनके थिरकने से शोर-शराबे का कोई प्रश्न ही न था। इसलिये एक बजे जब गोली चली, तो मुझे न सिर्फ गोली चलने की आवाज बिल्कुल साफ-साफ सुनाई पड़ी, बल्कि अर्जुन मेहता के चिल्लाने की आवाज भी सीधे मेरे कानों में पड़ी। मैं फौरन टेलीफोन रखकर बाहर की तरफ भागा।"

"फिर ?"

"बाहर पहुँचते ही मुझे मालूम हुआ कि गोली होटल में ऊपर कहीं चली है। मैं यह पता लगाने की कोशिश करता कि गोली किस सुइट में चली है और वह किसके चिल्लाने की आवाज़ थी, अइयय यो उससे पहले ही मुझे

सीढ़ियों पर धड़ाधड़ किसी के ऊपर से नीचे दौड़कर आने की आवाज सुनाई पड़ी ।"

"वह कौन था ?"

कमाण्डर करण सक्सेना की बहुत स्तब्ध नजरें रंगास्वामी के चेहरे पर टिकी थीं ।

"वह अविनाश लोहार था ।"

"ओह !"

कमाण्डर करण सक्सेना कोल्ड ड्रिंक पीता-पीता ठिठक गया ।

वो अपलक उसे देखने लगा ।

"कसम मुरुगन की ।" रंगास्वामी थोड़ा सिहर कर बोला- "अविनाश लोहार उस समय साक्षात दरिंदा दिखाई पड़ रहा था । खूंखार दरिंदा । रिवॉल्वर उसके हाथ में थी और खून के कई छींटे उसके कपड़ों पर पड़े हुए थे । वह सीढ़ियां उतरता हुआ ऐसा लग रहा था, जैसे कोई शैतान सीढ़ियां उतर रहा हो । अविनाश लोहार को देखते ही होटल की लॉबी में मौजूद कई लोगों के हलक से वीभत्स चीखें निकल गयीं । डांसिंग फ्लोर पर थिरकते लड़के-लड़कियों के कदम एकदम से फ्रीज हो गये ।"

कमाण्डर करण सक्सेना सुनता रहा ।

"पूरे होटल में अविनाश लोहार को देखकर खौफ छा गया था । जबरदस्त खौफ ।"

"यानी अर्जुन मेहता की हत्या करने के बाद अविनाश लोहार को यहाँ से जाते हुए सिर्फ तुमने ही नहीं देखा ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "बल्कि और भी कई लोगों की उसके ऊपर निगाह पड़ी ।"

"बिल्कुल ।" रंगास्वामी बोला- "सबसे बड़ी बात तो ये है अइयय यो, अविनाश लोहार ने अर्जुन मेहता का मर्डर करने के बाद खुद को छिपाने की जरा भी कोशिश नहीं की थी । उसकी जात का पैदा मारूं, उल्टा वह तो दिलेरी के साथ धड़ाधड़ सीढ़ियां उतरता हुआ चला जा रहा था, जैसे कोई बड़ा काम अंजाम देकर आ रहा हो । जैसे कोई किला फतह करके आ रहा हो ।"

"हूँ !"

कमाण्डर करण सक्सेना ने हल्की-सी हुंकार भरी ।

अविनाश लोहार के बारे में वह सारी बातें सुनकर वो विस्मित था ।

कम-से-कम एक मामले में यहाँ भी सब कुछ 'ओपन एंड शट' था कि अविनाश लोहार को वहाँ भी काफी सारे लोगों ने हत्या करने के बाद जाते देखा था ।

वहाँ भी इस बात के दर्जनों चश्मदीद गवाह मौजूद थे कि हत्या अविनाश लोहार ने ही की है ।

अविनाश लोहार !

जो एक पहेली बनता जा रहा था ।

जबरदस्त पहेली ।

□□□

"मेरे एक सवाल का जवाब और दो मिस्टर रंगास्वामी !" कमाण्डर काफी सोच-विचार कर बोला ।

"पूछो ।"

इंस्पेक्टर सुरेंद्र प्रताप इस दौरान बिल्कुल चुप बैठा था और सिर्फ कमाण्डर करण सक्सेना की बातों में ही उसकी दिलचस्पी थी ।

कमाण्डर !

जिसे रूबरू देखने का मौका उसे जिंदगी में पहली बार हासिल हो रहा था ।

"मिस्टर रंगास्वामी !" कमाण्डर बोला- "क्या अर्जुन मेहता अक्सर इस होटल में आता था ? मेरे पूछने का मतलब है, क्या इस होटल में उसके नाम सुइट बुक रहता था ?"

"नहीं ! बिल्कुल नहीं !"

"फिर ?"

"अइयय यो ! अर्जुन मेहता तो परसों रात पहली बार ही इस होटल में आया था । मुझे तो याद नहीं पड़ता कि इससे पहले वो कभी इस तरफ आया हो ।"

"यानी इस होटल के अंदर आना-जाना उसके रूटीन में शामिल नहीं था । वो यहाँ अक्सर नहीं आता था ?"

"नहीं ! बिल्कुल नहीं !" रंगास्वामी बोला- "अक्सर तो वो यहाँ किसी हालत में नहीं आता था ।"

"फिर वो परसों रात ही यहाँ क्यों आया ?"

"दरअसल उसकी किसी के साथ बिजनेस मीटिंग थी और वो बिजनेस मीटिंग इसी होटल में फिक्स की गयी थी । उसने यहीं होटल के कमरे में बैठकर बात करनी थी ।"

"किसके साथ बात करनी थी ?"

"यह तो मालूम नहीं हो सका कि उसकी किसके साथ बिजनेस मीटिंग थी ।"

"जब अर्जुन मेहता ने होटल में आकर बिजनेस मीटिंग का जिक्र किया ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "तब तो उसने इस बारे में कुछ बताया ही होगा, तब तो कुछ कहा ही होगा ?"

"नहीं ! कुछ नहीं कहा ।" रंगास्वामी बोला- "अर्जुन मेहता ने होटल के रिसेप्शन पर पहुँचकर सिर्फ इतना कहा अइयय यो, उसकी वहाँ किसी के साथ मीटिंग है और रात के ठीक एक बजे जो भी कोई उससे मिलने आये, उसे सीधे उसके सुइट में भेज देना ।"

"कोई भी ?"

कमाण्डर करण सक्सेना का अचरज पूर्ण लहजा ।

"हाँ, कोई भी ।"

"आश्चर्य है ।"

"इसमें आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं अइयय यो ! अर्जुन मेहता उस रात हमारे होटल में था, यह बात सिर्फ उसी व्यक्ति को मालूम हो सकती थी, जिसके साथ उसकी मीटिंग थी । ऐसी परिस्थिति में अगर अर्जुन मेहता ने यह बोल दिया कि जो भी कोई उससे मिलने आये, उसे उसी के सुइट में भेज देना, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं था ।"

बात ठीक थी ।

कमाण्डर हालात समझने की कोशिश कर रहा था ।

हालात ।

जो नाजुक थे ।

"फिर रात के एक बजे होटल में अर्जुन मेहता से मिलने कौन आया ?"

कमाण्डर की नजरें एक क्षण के लिए भी रंगास्वामी के चेहरे से नहीं हट पा रही थीं ।

"कोई भी नहीं आया ।" रंगास्वामी बोला- "कसम मुरुगन की, आया तो बस अविनाश लोहार आया और अपने पूरे जालो-जलाल के साथ आया । उसने रिसेप्शन पर आकर अर्जुन मेहता के बारे में पूछा, तो रिसेप्शनिस्ट ने

यही समझा कि वही वो व्यक्ति है, जिसकी अर्जुन मेहता के साथ बिजनेस मीटिंग है। लिहाजा उसने अर्जुन मेहता के कहे मुताबिक अविनाश लोहार को सीधे तीन सौ पांच नम्बर सुइट में भेज दिया और उसके बाद जो हंगामा हुआ, वह आपको मालूम ही है।"

"हूँ।"

कमाण्डर ने कोल्ड ड्रिंक खाली करके सामने टेबल पर रखी।

रंगास्वामी और इंस्पेक्टर सुरेन्द्र प्रताप पहले ही अपनी-अपनी कोल्डड्रिंक खाली कर चुके थे।

"मिस्टर रंगास्वामी !" कमाण्डर करण सक्सेना के नेत्र एकाएक सिकुड़ते चले गये- "इस समय मेरे दिमाग में एक बड़ा खतरनाक ख्याल मंडरा रहा है।"

"कैसा खतरनाक ख्याल ?"

रंगास्वामी ने गौर से कमाण्डर की तरफ देखा।

और !

देखा इंस्पेक्टर सुरेन्द्र प्रताप ने भी।

खतरनाक ख्याल, वह शब्द ही हिला देने वाला था।

"कहीं ऐसा तो नहीं फ्रेंड्स !" कमाण्डर की आवाज एकाएक बहुत सनसनीखेज हो उठी- "कि अर्जुन मेहता की होटल में रात के एक बजे जिस आदमी के साथ बिजनेस मीटिंग थी, वो आदमी अविनाश लोहार ही था।"

कमाण्डर की बात सुनकर रंगास्वामी और इंस्पेक्टर सुरेन्द्र प्रताप, दोनों चौंक उठे।

दोनों के दिमाग में विस्फोट हुए।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं कमाण्डर ?" इंस्पेक्टर सुरेन्द्र प्रताप हकबकाकर बोला- "अविनाश लोहार ? नहीं-

नहीं ! अविनाश लोहार जैसे आतंकवादी का भला अर्जुन मेहता से क्या सम्बन्ध हो सकता है ? अर्जुन मेहता की कारपोरेट फिल्ड में धाक है, ज़बरदस्त पोजीशन है । वो एक इज्जतदार बिजनेस मैन था ।"

"मैंने कब कहा कि वो इज्जतदार बिजनेस मैन नहीं था, लेकिन इस दुनिया में कब किसके साथ सम्बन्ध निकल आये, कुछ पता नहीं चलता इंस्पेक्टर !" कमाण्डर बोला- "और फिर तुम एक बहुत महत्वपूर्ण बात भूल रहे हो ।"

"क्या ?"

"मान लो, वो आदमी अविनाश लोहार नहीं था, जिसके साथ अर्जुन मेहता की मीटिंग थी, तो वह आदमी कौन था, जिसके साथ मीटिंग थी ? और फिर वो ठीक एक बजे अर्जुन मेहता से मिलने होटल पहुँचा क्यों नहीं ? क्योंकि एक बजे अर्जुन मेहता से मिलने कोई आदमी होटल आया हो, इसका कहीं कोई रिकार्ड मौजूद नहीं है ।"

दोनों हैरान ।

दोनों आश्चर्यचकित ।

"या फिर होटल में कोई ऐसा रिकार्ड मौजूद है मि. रंगास्वामी ?"

"नहीं !" रंगास्वामी की गर्दन तुरन्त इनकार में हिली- "ऐसा तो कोई रिकार्ड मौजूद नहीं है । अगर कोई और भी अर्जुन मेहता से मिलने आता, तो रिसेप्शनिस्ट कम-से-कम इसकी जानकारी मुझे जरूर देता ।"

"जो कि नहीं दी ।"

"नहीं ।"

"आपने रिसेप्शनिस्ट से इस बारे में सवाल किया था ?"

"नहीं !" रंगास्वामी थोड़ा सकुचाते हुए बोला- "मैंने तो उससे ऐसा कोई सवाल नहीं पूछा अइयय यो ! सच तो ये है, ऐसी कोई बात मेरे जेहन में ही नहीं आयी ।"

"लेकिन मैंने उससे यह सवाल पूछा था ।" इंस्पेक्टर सुरेन्द्र प्रताप तुरंत ही बोला ।

"क्या पूछा था ?"

"मैंने रिसेप्शनिस्ट से पूछा, क्या अविनाश लोहार के अलावा कोई और भी अर्जुन मेहता से मिलने आया था ?"

"फिर वह क्या बोला ?"

"उसने साफ-साफ कहा- नहीं, अविनाश लोहार के अलावा उससे कोई मिलने नहीं आया था ।"

"फिर तो सारी बात ही खत्म हो गयी ।" कमाण्डर बोला- "अब दो ही बातें मुमकिन हैं ।"

"क्या ?"

"या तो अर्जुन मेहता की अविनाश लोहार के साथ ही मीटिंग थी या फिर जिस दूसरे आदमी के साथ मीटिंग थी, वह होटल में तब आया था, जब वहाँ अर्जुन मेहता का खून हो चुका था और होटल में खूब जबरदस्त अफरा-तफरी मची थी । उस हंगामें को देखकर वो वहाँ से चुपचाप खिसक गया ।"

रंगास्वामी और इंस्पेक्टर सुरेन्द्र प्रताप ने एक-दूसरे की तरफ देखा ।

उनकी नजर-से-नजर मिली ।

"बात तो ठीक है ।" रंगास्वामी संजीदगी के साथ बोला- "ऐसा भी हो सकता है अइयय यो !"

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने रंगास्वामी तथा इंस्पेक्टर सुरेन्द्र प्रताप से कुछेक सवाल और पूछे, जिनके उन्होंने जवाब दिये ।

साफ-साफ जवाब दिये ।

फिर कमाण्डर ने ऊपर जाकर उस सुइट नम्बर तीन सौ पांच का भी बारीकी के साथ निरिक्षण किया, जिसमें अर्जुन मेहता का मर्डर हुआ था ।

वहाँ अजीब सी खामोशी तारी थी ।

सन्नाटा !

सुइट में घुसते ही अंदाजा होता था, वहाँ कोई दुर्घटना घटी है ।

कमाण्डर करण सक्सेना ने उस सुइट के एक-एक कोने-खुदरे को अच्छी तरह देखा ।

खूब चेक किया ।

मगर उस सुइट में उसे ऐसा कुछ न दिखाई पड़ा, जो काबिले जिक्र हो ।

जिसका कोई महत्व हो ।

□□□

उसके बाद कमाण्डर उन दोनों से विदा लेकर मोर्ग पहुँचा ।

मोर्ग !

जहाँ उसकी मुलाकात डॉक्टर चिदंबरम से हुई ।

डॉक्टर चिदंबरम सैंतालिस-अड़तालीस साल का अधेड़ मद्रासी था ।

वो बिल्कुल काला-भुजंग था ।

आंखों पर हमेशा सुनहरे फ्रेम का ऐनक चढ़ाकर रखता था और ज्यादातर अपने कपड़ों के ऊपर सफेद ओवरऑल पहने रहता। इसके अलावा उसके हाथों पर स्किन फर दस्ताने चढ़े हुए भी आम देखे जा सकते थे।

डॉक्टर चिदंबरम, जो अपने पेशे के प्रति बहुत समर्पित इंसान था।

डॉक्टर चिदंबरम ने कमाण्डर करण सक्सेना से बेहद उत्साहपूर्वक हाथ मिलाया।

"हैलो कमाण्डर !" उसने खुद कमाण्डर को अपना परिचय दिया- "मुझे डॉक्टर चिदंबरम कहते हैं। और अर्जुन मेहता का पोस्टमार्टम मेरी ही देख-रेख में हुआ है।"

"गुड !"

यह एक अच्छी बात थी, कमाण्डर सीधे उसी डॉक्टर से मुखातिब था, जो अर्जुन मेहता के पोस्टमार्टम के समय वहाँ मौजूद था।

"क्या अर्जुन मेहता की बॉडी अभी भी मोर्ग में ही है ?" कमाण्डर ने उससे पूछा।

"जी नहीं !" डॉक्टर चिदंबरम बोला- "अर्जुन मेहता की बॉडी तो कल ही उसके परिवारजनों को सौंप दी गयी थी। अब तक तो संभव है, अर्जुन मेहता की लाश का दाह-संस्कार भी हो गया हो।"

"और लाश की पोस्टमार्टम रिपोर्ट ?"

"वो भी कल ही पुलिस को सौंप दी गयी थी।" डॉक्टर चिदंबरम ने बताया।

"रिपोर्ट में कोई खास बात देखने को मिली ?"

"नहीं ! पोस्टमार्टम रिपोर्ट में तो कोई खास बात नहीं थी।" डॉक्टर चिदंबरम बोला- "सब कुछ एकदम सिम्पल

मामला था, हद से ज्यादा साधारण ! अर्जुन मेहता को दो गोली मारी गयी थी और वह दोनों गोलियां ठीक उसके दिल में लगी थीं । बचने का प्रश्न ही कुछ नहीं था, जहाँ तक मैं समझता हूँ, अर्जुन मेहता ने गोली लगने के मुश्किल से एक-एक मिनट में ही दम तोड़ दिया होगा । या फिर शायद इतना भी समय न लगा हो ।”

“यानी हत्यारे का निशाना काफी सच्चा था ।” कमाण्डर बोला ।

“बिल्कुल ।” डॉक्टर चिदंबरम यकीन के साथ बोला- “निशाना तो वाकई उसका परफैक्ट था । एकदम सच्चा ! पहली गोली दिल में जिस जगह पर जाकर लगी थी, दूसरी गोली उसके बिल्कुल ठीक बराबर में जाकर लगी । अगर कोई उन दोनों गोलियों के बीच का फासला देख लेता कमाण्डर, तो वह हैरान हुए बिना न रहता ।”

“क्यों, उसमें हैरानी की क्या बात थी ?”

“क्योंकि वह फासला मुश्किल से बाल के बराबर था ।” डॉक्टर चिदंबरम बोला- “हैरतअंगेज फैसला था ।”

“ओह !”

कमाण्डर करण सक्सेना को अविनाश लोहार के बारे में नयी-नयी जानकारियां मिल रही थीं ।

उसकी नयी-नयी क्षमताओं का पता चल रहा था ।

“एक प्रश्न और ?”

“पूछो ।”

“अर्जुन मेहता के शरीर में जो गोलियां बरामद हुईं, वह कितने कैलीबर की रिवॉल्वर से चलाई गयी थीं ?”

“प्वाइंट बत्तीस कैलीबर की रिवॉल्वर से ।”

“ओह ! प्वाइंट बत्तीस कैलीबर रिवॉल्वर ।”

“यस कमाण्डर !”

“इसके अलावा कोई और खास बात ?” कमाण्डर करण सक्सेना बोला- “जो आपकी निगाह में आयी हो ?”

“एक खास बात और थी ।” डॉक्टर चिदंबरम अपने चेहरे पर विहंगमकारी भाव पैदा करता हुआ बोला- “और बड़ी खास बात थी ।”

“खास बात !”

“हाँ ! सुनोगे तो आपको भी हैरानी होगी कमाण्डर !”

“ऐसी क्या खास बात थी ?” कमाण्डर करण सक्सेना के चेहरे पर सस्पैंस के भाव पैदा हुए ।

वह थोड़ा आगे को झुका ।

“खास बात तो वह बहुत थी कमाण्डर ! दरअसल अविनाश लोहार ने, जो कि संभवतः हत्यारा था, उसने अर्जुन मेहता के सिर्फ गोलियां ही नहीं मारी थीं बल्कि डंके की चोट पर यह साबित करने के लिए कि वो सब-कुछ उसी का किया-धरा है, उसने अर्जुन मेहता की पीठ पर अपने हस्ताक्षर भी कर दिये थे ।”

“हस्ताक्षर ?”

कमाण्डर करण सक्सेना के शरीर में सिहरन दौड़ी ।

“यस कमाण्डर !”

“क्या उसने वो हस्ताक्षर चाकू की नोक से किये थे ?”

“जी हाँ ! उसने चाकू के नोक से ही वो हस्ताक्षर किये थे ।” बोलते-बोलते डॉक्टर चिदंबरम ने एकाएक चौंककर कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ देखा- “ल…लेकिन…लेकिन यह बात आपको कैसे मालूम ?”

“क्या बात ?”

"यही कि अविनाश लोहार ने वो हस्ताक्षर चाकू की नोक से किये थे ।"

"इस रहस्य के ऊपर पर्दा ही पड़ा रहने दें तो ज्यादा बेहतर है डॉक्टर !" कमाण्डर करण सक्सेना शांत लहजे में बोला- "मुझे सिर्फ यह बताओ, उन हस्ताक्षरों का कोई नमूना आपके पास है ?"

"बिल्कुल है ।"

"क्या नमूना है ?"

"दरअसल कल लाश को सौंपने से पहले उन हस्ताक्षरों के अलग-अलग एंगिल से काफी सारे फोटो खींचे गये थे । अभी थोड़ी देर पहले ही उस रोल के फोटोग्राफ्स बनकर आ गये हैं, जो अब पुलिस को सौंपे जाएंगे ।"

"यानी हस्ताक्षर वाले वो फोटोग्राफ्स फिलहाल यहीं हैं ?" कमाण्डर सक्सेना उत्साहपूर्वक बोला ।

"जी हाँ, यही हैं मेरे केबिन में हैं ।"

"गुड ! मैं वो फोटोग्राफ्स देखना चाहूँगा ।" कमाण्डर ने कहा ।

"क्यों नहीं आइए !"

कमाण्डर, डॉक्टर चिदंबरम के साथ उनके केबिन में पहुँचा ।

केबिन ।

जो नजदीक ही था ।

वहाँ पहुँचकर डॉक्टर चिदंबरम ने उसे वो फोटोग्राफ्स दिखाये ।

फोटोग्राफ्स बहुत साफ-सुथरे थे और उनकी संख्या दस-बारह थी ।

कमाण्डर ने देखा, हर फोटोग्राफ्स में अविनाश लोहार के हस्ताक्षर स्पष्ट रूप से चमक रहे थे ।

"क्या इनमें से दो फोटोग्राफ्स मैं अपने पास रख सकता हूँ ?"

"क्यों नहीं ! यह सारे फोटोग्राफ्स पुलिस के लिए ही तो हैं ।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने उनमें से दो फोटोग्राफ्स निकालकर अपने पास रख लिए ।

अविनाश लोहार के द्वारा कही गयी अभी तक हर बात सच साबित हो रही थी ।

हर बात ।

नागेंद्र पाल के घर से कमाण्डर करण सक्सेना को वार्तालाप की ऑडियो कैसिट मिली थी ।

विजय पटेल के वार्डरोब से शराब का वह प्याला भी मिला था, जिस पर उसके फिंगरप्रिंट तथा होठों के निशान थे और अब अविनाश लोहार के द्वारा कही गयी यह बात भी सच साबित हुई थी कि विजय पटेल की पीठ पर उसने अपने हस्ताक्षर किए हैं ।

यानी !

अविनाश लोहार की एक-एक बात सच साबित हो रही थी । उसने सब कुछ बहुत योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दिया था ।

परफेक्ट प्लानिंग के साथ ।

□□□

फिर कमाण्डर मुंबई पहुँचा ।

शशि मुखर्जी की हत्या के कारण मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में अभी भी जबरदस्त गम का माहौल था ।

शोक की स्थिति थी ।

दरअसल फिल्म स्टार शशि मुखर्जी अपने अंतिम समय में बारह हिंदी फिल्मों में काम कर रहा था और वह सभी फिल्में बड़े-बड़े बजट तथा बड़ी स्टारकास्ट वाली फिल्में थीं, जिनके ऊपर फिल्म इंडस्ट्री का सौ करोड़ रुपए से भी ज्यादा धन लगा हुआ था । और अब शशि मुखर्जी की अकस्मात मृत्यु के कारण वह सारा धन एक ही झटके में डूब गया था ।

सौ करोड़ !

सचमुच वह एक बड़ी धनराशि थी ।

बड़ी रकम !

इसलिये सौ करोड़ों रुपए की उस धनराशि के एक साथ डूबने ने पूरी फिल्म इंडस्ट्री को झकझोर डाला था ।

शशि मुखर्जी का केस जिस पुलिस इंस्पेक्टर की कस्टडी में था, उसका नाम इंस्पेक्टर विश्वनाथ था । इंस्पेक्टर विश्वनाथ, कमाण्डर करण सक्सेना का काफी अच्छा परिचित था । कमाण्डर ने मुंबई पहुँचने के बाद उसे सीधे रॉ हेडक्वार्टर में ही बुला भेजा ।

“कमाण्डर ! एक बात तो कंफर्म है ।” इंस्पेक्टर विश्वनाथ, कमाण्डर के सामने वाली कुर्सी पर इत्मीनान से बैठता हुआ बोला ।

“क्या ?”

“यही कि शशि मुखर्जी का मर्डर हण्ड्रेड परसेन्ट अविनाश लोहार ने ही किया है । अविनाश लोहार के

अलावा दूसरा कोई आदमी शशि मुखर्जी का मर्डर नहीं कर सकता। इस बात का मेरा दावा है।"

"दावा?"

"यस कमाण्डर!"

कमाण्डर करण सक्सेना 'डनहिल' सिगरेट का कश लगाते-लगाते ठिकक गया।

इतना ही नहीं उसने चौंककर इंस्पेक्टर विश्वनाथ की तरफ देखा।

"यह बात तुम इतने यकीन के साथ कैसे कह सकते हो इंस्पेक्टर?" कमाण्डर बोला- "कि शशि मुखर्जी का मर्डर अविनाश लोहार ने ही किया है?"

"क्योंकि फिल्मीस्तान स्टूडियो में काफी सारे चश्मदीद गवाह हैं, जिन्होंने अविनाश लोहार को मर्डर करने के बाद वहाँ से जाते हुए देखा। बाद में पक्की आईडेंटिफिकेशन के लिए मैंने उन सबको अविनाश लोहार की तस्वीर भी दिखाई, जिसे वो देखते ही पहचान गये और डंके की चोट पर बोले कि यही वो आदमी था, जिसने शशि मुखर्जी का मर्डर किया। वही हत्यारा है। उस आईडेंटिफिकेशन के बाद शक-शुबहे की कोई गुंजाइश ही नहीं बची थी।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने 'डनहील' का छोटा-सा कश लगाया।

उसके चेहरे पर विचलित भाव थे।

हालांकि केस के ऊपर छाई धुंध छठ रही थी, लेकिन फिर भी अभी तस्वीर साफ नहीं हुई थी।

"इंस्पेक्टर, इस तरह की बहुत मजबूत और पुख्ता गवाहियां दूसरी जगह से भी सुनने को मिली हैं।" कमाण्डर बोला- "फिर भी मैं समझता हूँ, सिर्फ इन गवाहियों को ही

आधार बनाकर एकदम से किसी नतीजे पर नहीं पहुँचा जा सकता । सच तो ये है, किसी पुख्ता नतीजे पर पहुँचने के लिए अभी इन्वेस्टिगेशन की जरूरत है, जांच पड़ताल की जरूरत है ।”

“यानी आप यह कहना चाहते हैं ।” इंस्पेक्टर विश्वनाथ के स्वर में हैरानी थी- “कि शशि मुखर्जी का मर्डर अविनाश लोहार ने नहीं किया है ।”

“अभी मैं एकदम से कुछ भी नहीं कहना चाहता । अभी तो मैं सिर्फ मौका-ए-वारदात का निरीक्षण कर रहा हूँ । लोगों के बयान सुन रहा हूँ । जहाँ तक किसी नतीजे पर पहुँचने का प्रश्न है, वह मैं बाद में पहुचूंगा । पूरे मामले की भली-भांति जांच पड़ताल करने के बाद पहुंचूंगा ।”

“हूँ !”

इंस्पेक्टर विश्वनाथ, कमाण्डर करण सक्सेना के काम करने का तरीका समझ गया ।

“तुम मेरे एक सवाल का जवाब दो ।”

“पूछिए कमाण्डर !”

“क्या शशि मुखर्जी का पोस्टमार्टम हो चुका है ?” कमाण्डर बोला ।

“बिल्कुल ! कल ही हो गया था ।”

“अब महत्वपूर्ण सवाल ।” कमाण्डर की आवाज रहस्यमयी हो उठी और वह थोड़ा आगे को झुक गया- “पोस्टमार्टम के दौरान क्या शशि मुखर्जी के पेट से कोई खास वस्तु बरामद हुई ?”

“खास वस्तु ?” इंस्पेक्टर विश्वनाथ चौंक उठा ।

उसकी आंखों में बेहद हैरानी के भाव तैरे ।

“हाँ, खास वस्तु ।”

"कैसी खास वस्तु ?"

"जैसे फोन का सिम कार्ड या कुछ और ?"

कमाण्डर का वह सवाल सुनकर इंस्पेक्टर विश्वनाथ यूं चिहुंका, जैसे उसके दिमाग में रखा कोई बम फट पड़ा हो।

टाइम बम।

"स...सिम कार्ड !" वह पूरी तरह हकबकाया-सा बोला- "कमाण्डर आपको यह बात कैसे मालूम कि शशि मुखर्जी के पेट से सिम कार्ड बरामद हुआ है ? हमने तो यह बात बेहद छुपाकर रखी थी। किसी को इसकी कानों-कान भनक तक नहीं लगने दी।"

"यानी वास्तव में ही पोस्टमार्टम के दौरान शशि मुखर्जी के पेट से सिम कार्ड बरामद हुआ है।"

"जी हाँ।"

कमाण्डर ने गहरी निःश्वास छोड़ी।

उसने 'डनहिल' का एक छोटा-सा कश लगाया।

अविनाश लोहार की वह अंतिम बात भी सच साबित हुई थी। तमाम सबूत चीख-चीखकर एक ही बात कह रहे थे, वह सब किया-धरा अविनाश लोहार का ही है।

वही हत्यारा है।

"क्या शशि मुखर्जी का दाह संस्कार हो चुका है ?" कमाण्डर करण सक्सेना ने पूछा।

"नहीं ? अभी नहीं हुआ।"

"क्यों ?" कमाण्डर का विस्मयपूर्ण स्वर- "शशि मुखर्जी का अभी तक दाह संस्कार क्यों नहीं हुआ ?"

"दरअसल शशि मुखर्जी की पत्नी एक शादी के सिलसिले में लंदन गयी हुई थीं। कल ही उन्हें शशि मुखर्जी की मौत के संबंध में सूचना दी गयी है। आज वो

थोड़ी बहुत देर में जब मुंबई पहुँच जायेंगी, तब उसके बाद दाह-संस्कार की तैयारियां शुरू होंगी ।"

"फिलहाल शशि मुखर्जी की डेड बॉडी कहाँ है ?"

"इस वक्त शशि मुखर्जी की डेड बॉडी को बर्फ में लगाकर मोर्ग के अंदर ही रखा गया है ।"

"और सिम कार्ड ?"

"सिम कार्ड पुलिस की कस्टडी में है ।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने 'डनहिल' का एक कश और लगाया ।

वह तमाम हालातों पर बहुत संजीदगी के साथ विचार करने लगा ।

हालात ।

जो नाजुक थे ।

"ओ.के. ।" कमाण्डर काफी सोच-विचारकर बोला- "मैं वह सिम कार्ड देखना चाहता हूँ, जो शशि मुखर्जी के पेट से बरामद हुआ है ।"

"नो प्रॉब्लम उस सिम कार्ड को मैं अभी आपको दिखाने का बंदोबस्त करता हूँ कमाण्डर !"

इंस्पेक्टर विश्वनाथ हेडक्वार्टर से चला गया ।

फिर तकरीबन दो घंटे बाद उसकी वापसी हुई ।

इस बार इंस्पेक्टर विश्वनाथ अपने साथ सिम कार्ड भी लेकर आया था, जिसे प्लास्टिक के एक बहुत छोटे से जार में बड़ी हिफाजत के साथ बंद करके रखा गया था ।

कमाण्डर ने बहुत ध्यानपूर्वक वो सिम कार्ड देखा ।

बहुत गौर से ।

सिम कार्ड में कोई खास बात न थी ।

उसके बाद शशि मुखर्जी की पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी उसने पढ़ी।

रिपोर्ट में भी ऐसी कोई बात नहीं लिखी हुई थी, जो उसका ध्यान आकर्षित करती।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना, शशि मुखर्जी की लाश देखने मोर्ग भी पहुँचा।

शशि मुखर्जी की लाश की हालत सचमुच बहुत वीभत्स थी। गोली चूंकि सीधे उसके चेहरे पर मारी गयी थी, इसलिये उसके चेहरे के चिथड़े-चिथड़े बिखर गये थे और अब उसे पहचानना भी मुश्किल था।

फिल्म स्टार शशि मुखर्जी का चेहरा, जिसके कभी लाखों-करोड़ों लोग दीवाने थे, अब वही सबसे बदतर हालत में था।

□□□

उस दिन कमाण्डर करण सक्सेना, सत्तार मलिक से भी मिलने पहुँचा।

सत्तार मलिक, 'बेखुदी' नामक उस फिल्म का प्रोड्यूसर था, जिसमें शशि मुखर्जी काम कर रहा था और जिस फिल्म की शूटिंग के दौरान शशि मुखर्जी मारा गया था।

कमाण्डर इस उम्मीद में सत्तार मालिक के पास पहुँचा कि हो सकता है, उसी से इस संबंध में कोई महत्वपूर्ण जानकारी मिल जाये।

कोई सुराग मिल जाये।

कमाण्डर करण सक्सेना, सत्तार मलिक से मिलने सबसे पहले उसके ऑफिस पहुँचा।

ऑफिस बन्द था।

उसके बाहर सिर्फ एक बिहारी छोकरा बैठा था, जो शायद ऑफिस में पीऑन (चपरासी) वगैरह का काम करता था। उसने बताया, जिस दिन से शशि मुखर्जी का मर्डर हुआ है, वो ऑफिस तभी से बंद है।

"सत्तार मलिक कहाँ है ?" कमाण्डर ने क्लेंसी हैट दुरुस्त करते हुए पूछा।

"वो अपने घर पर हैं।"

"घर का एड्रेस ?"

बिहारी छोकरे ने उसे सत्तार मलिक के घर का एड्रेस बताया।

सत्तार मलिक, लोखण्डवाला कॉम्प्लेक्स के नजदीक मिल्लत नगर में रहता था।

कमाण्डर करण सक्सेना, सत्तार मलिक से मिलने मिल्लत नगर पहुँचा।

उसने कॉलबेल दबाई, तो एक बड़ी कड़क जवान औरत ने डोरचेन लगाकर मुश्किल से छः इंच दरवाजा खोला और बाहर झांका।

लेकिन उस छः इंच दरवाजे में से ही कमाण्डर को उसके मुजस्सम हुस्न के सम्पूर्ण दर्शन हुए।

उसका रंग दूध जैसा सफेद था।

वक्षस्थल भारी।

इसके अलावा नाक-नक्श ऐसे थे, जैसे संगमरमर की मूर्ति को किसी बहुत कुशल शिल्पकार ने बड़े प्यार से तराशा हो।

"जी कहिए !" वो अपलक कमाण्डर को देखते हुए बोली।

"क्या मिस्टर सत्तार मलिक यहीं रहते हैं ?"

कमाण्डर करण सक्सेना की निगाहें उस अनिंद्य सुन्दरी के ऊपर से हट नहीं पा रही थीं ।

"जी हाँ !"

"मैं उन्हीं से मिलने आया हूँ ।"

"आपकी तारीफ ?"

वह बात पूछते हुए उस औरत की आंखों में ढेरो प्रश्न उभर आये थे ।

कमाण्डर ने उसे अपनी 'तारीफ' बतायी ।

और !

जैसे ही उस औरत को यह मालूम हुआ कि उसके सामने खड़ा शख्स कमाण्डर करण सक्सेना है, वो हड़बड़ा उठी ।

उसके चेहरे पर एकदम भूकंप जैसे भाव उभरे ।

उसने डोरचेन हटाकर जल्दी से दरवाजा पूरा-का-पूरा खोला ।

"आइए कमाण्डर ! युअर वेलकम ।"

कमाण्डर अंदर फ्लैट में दाखिल हुआ ।

अब वो औरत उसे अपने फुल साइज में बिना किसी कट के दिखाई पड़ी ।

फुल साइज में और बिना किसी कट के वह औरत और भी ज्यादा सुंदर थी ।

तौबा !

उसे देखकर तो कलेजा मुँह को आता था ।

बिल्कुल अलिफ लैला के किस्से-कहानियों की हूर जैसी । महर्षि विश्वामित्र जैसे साधक का भी इमान डोला देने वाली अप्सरा ।

जितनी सुंदर वो थी, उतनी ही सुंदर ढंग से उसने अपने फ्लैट को भी डेकोरेट करके रखा था । हर चीज़ अपनी जगह पर बहुत करीने से सजी हुई थी ।

"मेरा नाम रेहाना है ।" वो औरत बोली- "और मैं सत्तार साहब की बीवी हूँ । आप बैठिए ।"

कमाण्डर करण सक्सेना बैठा नहीं ।

वो खड़ा रहा ।

"क्या सत्तार मलिक साहब यहीं हैं ?"

कमाण्डर के उस सवाल पर रेहाना के चेहरे पर थोड़े हिचकिचाहट के भाव प्रतिबिंबित हुए ।

साफ-साफ लगा, वह उस सवाल का जवाब देते हुए कुछ सकुचा रही है ।

"क्या बात है ?" कमाण्डर सशंकित लहजे में बोला- "क्या वो नहीं हैं ?"

"हैं तो वो यहीं ।" रेहाना धीमी जबान में बोली- "लेकिन.... ।"

"लेकिन क्या ?"

"इ...इस समय उनकी हालत ऐसी नहीं है कमाण्डर !" रेहाना बोली- "कि कोई भी उनसे मिले । खास-तौर पर वो सवालों के जवाब देने की कंडीशन में तो बिल्कुल भी नहीं हैं ।"

"क्या हो गया है उन्हें ?"

"दरअसल जिस दिन से शशि मुखर्जी का खून हुआ है, उसी दिन से वह नशे में धुत पड़े हुए हैं ।" रेहाना बेहद अफसोसजनक लहजे में बोली- "वो मुझसे भी ढंग से नहीं बोल रहे हैं । और बस हरदम बहकी-बहकी बात करते रहते हैं ।"

वह शब्द बोलते-बोलते रेहाना कुछ उदास हो गयी थी।

"मुझे तो नहीं लगता कमाण्डर !" रेहाना थोड़ा रुककर पुनः बोली- "आपका ऐसी हालत में उनसे मिलना उचित है।"

"इस वक्त वो हैं कहाँ ?"

"अंदर वाले कमरे में हैं।" रेहाना ने ड्राइंग हाल से ही अटैच एक कमरे की तरफ अंगुली उठा दी।

"ठीक है ! मैं एक बार उनसे मिलकर देखता हूँ।"

"लेकिन.... !"

"डोंट वरी ! मैं सब संभाल लूंगा।"

फिर रेहाना ने कुछ ऐतराज जाहिर न किया।

वो कुछ न बोली।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना आगे बढ़ा और उसने धीरे से उस कमरे का दरवाजा खोला, जिसमें सत्तार मलिक मौजूद था।

कमरे का दरवाजा खोलते ही कमाण्डर करण सक्सेना चौंका।

कमरे की वाकई बड़ी हंगामाई स्थिति थी। पूरा कमरा सिगरेट के धुएं और शराब की गंध से भभक रहा था।

सामने जमीन पर ही एक बड़ा मोटा और लंबा चौड़ा गद्दा बिछा था, जिसने कमरे की आधी से ज्यादा जगह घेरी हुई थी। गद्दे पर सुर्ख शेनील का बड़ा कीमती गिलाफ चढ़ा था। एयरकंडीशनर चल रहा था। कमरा सिटिंग रुम की तरह था, जैसा आमतौर पर फिल्मी प्रोड्यूसरों और डायरेक्टरों का होता है, जहाँ बैठकर वो स्टोरी वगैरह पर डिस्कशन करते हैं। सामने गद्दे पर ही एक गोल तकिए से

कमर लगाए सत्तार मलिक अधलेटी-सी मुद्रा में बैठा था और सिगरेट पर सिगरेट फूंक रहा था ।

उसके सामने एश-ट्रे रखी थी ।

एश ट्रे, जो टोटों से लबालब भरी थी ।

सत्तार मलिक चालीस पार कर चुका आदमी था, लेकिन जिस्मानी तौर पर अभी पूरी तरह चाक-चौबंद था ।

रेहाना और सत्तार मलिक में जमीन-आसमान का फर्क था । रेहाना जन्नत की हूर थी तो सत्तार मलिक काला सांड था, जिसे देखकर कोई भी हूर भाग सकती थी । लेकिन रेहाना न सिर्फ उसके पास टिकी हुई थी, बल्कि पूरी वफादारी के साथ टिकी हुई थी ।

कमाण्डर करण सक्सेना के पीछे-पीछे रेहाना भी उसी कमरे में दाखिल हुई और उसने सत्तार मलिक के पास पहुँचकर उसके कान में धीरे से कुछ कहा ।

सत्तार मलिक सिगरेट पीता-पीता ठिठक गया और बहुत ध्यान से कमाण्डर करण सक्सेना को देखने लगा ।

मगर उसकी आँखें उनींदी-सी थी ।

जो शायद नशे के कारण हो रही थीं ।

"बैठो कमाण्डर !"

कमाण्डर करण सक्सेना वहीं उसके पास गद्दे पर बैठ गया ।

"बाबा, शशि मुखर्जी नहीं मरा है ।" फिर सत्तार मलिक ने एकाएक भीषण आर्तनाद करना शुरू कर दिया- "मैं मरा हूँ, मैं । मालूम, यह सत्तार मलिक कभी चौपाटी पर नारियल-पानी बेचता था पर फिर यह सत्तार मलिक अपनी जांमारी और हिम्मत की बदौलत तरक्की की सीढ़ियां चढ़ता हुआ यहाँ तक पहुँचा । नारियल पानी बेचने वाला

सत्तार मलिक एक-एक फिल्म में करोड़ों रुपया लगाने वाला प्रोड्यूसर बन गया । पण मालूम बाबा, मेरे को चौपाटी से इधर हिंदी फिल्मों का प्रोड्यूसर बनने में कितना टेम लगा ? मालूम ?”

“नहीं ।” कमाण्डर की आवाज़ धीमी थी ।

काफी धीमी ।

“अगर नहीं मालूम बाबा तो पूछो । मेरो से पूछो ।”

“कित्ता टेम लगा ?” कमाण्डर का बेहद सस्पेंसफुल स्वर ।

वह बिल्कुल उसी जैसी टोन में बोला ।

“बीस साल ! बाबा रे बाबा !! मैं बीस बरस तक खूब एड़ी चोटी का जोर लगाता रहा । बीस बरस तक मैं इंच-इंच सीढ़ियां चढ़ता रहा, तब कहीं मैं यहाँ तक पहुँचा । इस मुकाम तक पहुँचा, लेकिन शशि मुखर्जी ने एक ही झटके में, एक ही थपेड़े के साथ वापस मेरे को वहीं पहुँचा दिया, जहाँ से मैं चला था । शशि मुखर्जी नहीं मरा है बाबा, सत्तार मलिक मरा है । सत्तार मलिक के गोली लगी है । देखो-देखो !”

सत्तार मलिक अपने एक-एक कपड़े उठा-उठाकर कमाण्डर करण सक्सेना को दिखाने लगा ।

बिल्कुल पागलों की तरह ।

दीवानों की तरह ।

अपने शौहर की यह हालत देखकर रेहाना की आंखों में आंसू आ गये ।

उसने अपना चेहरा दोनों हथेलियों में छुपा लिया और धीरे से सुबक उठी ।

“या मेरे मौला !” रेहाना अपने दोनों कानों पर हाथ रखकर चीख उठी- “यह मैं क्या सुन रही हूँ ! ऐसी बात सुनने से पहले मुझे मौत क्यों न आ गयी ?”

रेहाना एकाएक अपनी जगह छोड़कर उठ खड़ी हुई और फिर जोर-जोर से फफकती हुई कमरे से बाहर की तरफ भागी ।

रेहाना की अच्छी-खासी दुर्गति बनी हुई थी ।

उसका बुरा हाल था ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना समझ गया, शशि मुखर्जी की मौत ने सत्तार मलिक को वाकई बहुत बुरी तरह झकझोरा हुआ है ।

बहुत बुरी तरह हिलाया हुआ है ।

ऐसी गहन पस्ती के आलम में उससे बात करना सचमुच जटिल था ।

“बाबा !” सत्तार मलिक ने रेहाना के जाने के बाद अपने बराबर में रखी शराब की बोतल उठाई और उसके दो बड़े तगड़े घूंट खींचे- “इस दुनिया में सबसे बुरा कोई काम है, तो मालूम क्या काम है?”

“क्या ?”

“सबसे बुरा काम, फिल्म का काम बाबा ! कूड़े में नावा फेंक दे, पण जरा भी समझदार आदमी हो, तो फिल्म में नावा न लगाए । फिल्म से ज्यादा घटिया काम कोई नहीं ।”

कमाण्डर करण सक्सेना बड़े धैर्य से उसकी राम कहानी सुनता रहा ।

बहुत धैर्य से ।

हालांकि उसकी उल-जलूल बातें सुन-सुनकर उसके सब्र का पैमाना छलक-छलक जा रहा था ।

लेकिन फिर भी वो किसी तरह अपना धैर्य कायम रखे था ।

अलबत्ता इस बीच एक बात वो काफी अच्छी तरह समझ चुका था, सत्तार मलिक के पास आकर उसने ठीक नहीं किया है ।

वो सिर्फ टाइम खोटी करने वाला आदमी था ।

उससे उस केस की बाबत कोई फायदा नहीं पहुँचना था ।

"बाबा ! कभी शशि मुखर्जी मेरे आगे-पीछे काम के वास्ते कुत्ते की तरह पगलाया-सा घूमता था । मेरे से बोलता था, सत्तार भाई ! मेरे को फिल्म हीरो बना दो । मैं तमाम उम्र तुम्हारे पैर धो-धोकर पीऊंगा । वो घंटों-घंटों मेरे इस फ्लैट के बाहर खड़ा रहता था । एक दिन मेरे को उस पर तरस आ गया बाबा, रहम आ गया । और मैंने उसे फिल्म हीरो बना दिया । इस अक्खी फिल्म इंडस्ट्री में शशि मुखर्जी को सबसे पहले साइन करने वाला अगर कोई बंदा था ।" सत्तार मलिक पूरे रौब से अपना सीना ठोंकता हुआ बोला- "तो यह सत्तार मलिक था, यह सत्तार मलिक ! इस सत्तार मलिक ने उस शशि मुखर्जी की किस्मत डायमंड की माफिक चमकाई बाबा ! एक बार शशि मुखर्जी को मेरे साइन करने की देर थी, फिर तो अक्खी फिल्म इंडस्ट्री उसके पीछे हो गयी । शशि मुखर्जी मेरे से सौ हाथ आगे निकल गया और इतना आगे निकल गया कि मेरे जैसे प्रोड्यूसर के बस का उसे साइन करना नहीं रहा । मालूम

बाबा, इस बार शशि मुखर्जी मेरे से क्या बोल रहा था ? बोल रहा था, सत्तार भाई अब इस शशि मुखर्जी की मार्केट प्राइस बहुत ऊंची है लेकिन मैं तुम्हारे साथ फिल्म फ्री में करूंगा, ताकि एक ही झटके में तुम्हारे वारे-न्यारे हो जाएं । बाबा ! वो यह फिल्म फ्री में करके मेरा अहसान उतारना चाहता था ।”

कमाण्डर करण सक्सेना उसकी बातें चुपचाप सुनता रहा ।

खामोशी से ।

“मेरे को भी यह गोल्डन चांस लगा बाबा !” सत्तार मलिक पुनः बोला- “आखिर शशि मुखर्जी आज की तारीख में जैकपॉट था, लॉटरी का ऐसा बम्पर टिकट था, जो निकलना-ही-निकलना था । उस पर आँखें बंद करके रोकड़ा लगाया जा सकता था । मैंने भी फिल्म पर खूब धुआंधार रोकड़ा लगाना शुरु कर दिया । अपनी जितनी एफडी थी, सब बेच डाली । पिछली फिल्मों के नेगेटिव राइट बेच डाले । बीवी के जेवर बेच डाले । बाबा ! मैंने कुछ नहीं छोड़ा, कुछ भी नहीं । मेरे को कहाँ मालूम था कि शशि मुखर्जी मेरे वारे-न्यारे नहीं करने जा रहा है, बल्कि मुकम्मल तौर पर मेरा बेड़ा-गर्क करने जा रहा है । मुकम्मल तौर पर मेरा भट्टा बैठाने जा रहा है ।”

सत्तार मलिक अर्ध्दविक्षिप्तों की तरह जोर-जोर से अपने सिर को इधर-उधर झटकने लगा ।

उसने बोतल उठाकर शराब के दो घूंट और खींचे ।

“अगर तुम्हारी कहानी खत्म हो गयी हो ।” कमाण्डर करण सक्सेना बड़े सब्र के साथ बोला- “एक सवाल मैं भी पूछूं ?”

"पूछो । बिल्कुल पूछो ।" सत्तार मलिक गर्दन झुकाए बोला ।

"मुखर्जी को जिस आदमी ने गोली मारी, क्या तुमने उसे अपनी आंखों से देखा था ?"

"नहीं ! बिल्कुल नहीं !" सत्तार मलिक इनकार की सूरत में गर्दन हिलाता हुआ बोला ।

"क्यों ?"

"क्यों क्या बाबा, मैं उस समय शूटिंग पर ही मौजूद नहीं था ।"

"यानि तुम तब फिल्मीस्तान स्टूडियो में नहीं थे ?" कमाण्डर करण सक्सेना चौंका ।

"बिल्कुल नहीं ! मैं तो तब अपने म्यूजिक डायरेक्टर के घर बैठा गानों की धुन सुन रहा था ।"

"माय गॉड !"

कमाण्डर करण सक्सेना का दिल चाहा, वो अपना सिर धुन ले । अपने बाल नोच ले ।

जिस आदमी की वो इतनी देर से बकवास सुन रहा था ।

इतनी देर से उसे झेल रहा था ।

वह आदमी हकीकत में उसके किसी काम का ही नहीं था ।

वह मौका-ए-वारदात के समय घटनास्थल पर ही मौजूद नहीं था ।

"ठीक है !" कमाण्डर एकाएक गद्दा छोड़कर खड़ा होता हुआ बोला- "मैं चलता हूँ ।"

सत्तार मलिक कुछ न बोला ।

उसे मानो किसी आने-जाने वाले आदमी से कोई मतलब ही न था ।

वह उस वक्त पूरी तरह पस्ती में डूबा हुआ आदमी था और उस झटके को सह नहीं पा रहा था ।

□□□

कमाण्डर अपना ओवरकोट दुरुस्त करता हुआ कमरे से बाहर निकला ।

रेहाना उस समय ड्राइंग हॉल में ही मौजूद थी और एक सोफा चेयर पर बहुत दुखी अंदाज में पैर फैलाए बैठी थी । उसकी आंखों में आंसू की नन्हीं-नन्हीं बूंदे तब भी मौजूद थीं ।

कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही वो जल्दी से सोफा चेयर छोड़कर खड़ी हुई ।

“बैठिए कमाण्डर ! मैं आपके लिए चाय बनाकर लाती हूँ ।”

रोने के कारण रेहाना की आँखें हल्की गुलाबी हो रही थीं ।

इसके अलावा उसके चेहरे पर अपार दुःख के चिह्न थे ।

“नहीं, चाय रहने दो ।” कमाण्डर उसे दिलासा देने वाली मुद्रा में बोला- “मुझे एक जरूरी काम के सिलसिले में फौरन कहीं पहुँचना भी है ।”

“लेकिन... ।”

“डोंट माइंड ! तुम इस समय मेरी नहीं बल्कि अपने शौहर की फिक्र करो । ऐसी नाजुक घड़ी में अगर सत्तार मलिक के अंदर दोबारा से कोई हिम्मत पैदा कर सकता है, तो वह सिर्फ तुम कर सकती हो ।”

रेहाना की रुलाई छूट पड़ी ।

वो फफकने लगी ।

"डोंट वरी !" कमाण्डर ने उसका कंधा थपथपाया- "हैव फैथ इन गॉड । एवेरीथिंग इज गोइंग टू बी ऑलराइट ।"

रेहाना सुबकती रही ।

सुबकती रही ।

"तुम्हारा कोई नजदीकी रिश्तेदार है ? मां-बहन, सास-ननद या कोई और ?"

"एक ननद है ।" रेहाना बोली ।

"यहीं मुंबई में रहती है ?"

"नहीं ! पुणे में रहती है ।"

"तो ऐसे में अपनी ननद को ही पूना से कुछ दिन के लिए यहाँ बुला लो ।" कमाण्डर ने उसे उपाय सुझाया- "इससे तुम्हारी हिम्मत बढ़ेगी और इन मुश्किल हालातों से उबरने का हौसला आयेगा ।"

"ठीक है ! मैं उसे बुलाती हूँ ।"

"गुड !"

कमाण्डर वहाँ से रुखसत हुआ ।

□□□

फिर कमाण्डर करण सक्सेना फिल्मीस्तान स्टूडियो पहुँचा । रोजाना की तरह वहाँ उस दिन भी काफी गहमा-गहमी भरा माहौल था । स्टूडियो के अलग-अलग हिस्सों में वहाँ तीन-चार फिल्मों की शूटिंग चल रही थी ।

लोग आ-जा रहे थे ।

कमाण्डर स्टूडियो के वॉचमैन से मिला ।

"कमाण्डर सब कुछ अपने सामने हुआ ।" शशि मुखर्जी की हत्या का जिक्र छिड़ते ही वॉचमैन रोमांचित हो उठा था- "बिल्कुल अपने सामने ।"

"क्या हुआ था ?"

"यह तो आपको मालूम ही है, नाइट शिफ्ट में शूटिंग चल रही थी ।" वॉचमैन इस तरह सब कुछ बताने लगा, जैसे किसी फिल्म की स्टोरी सुना रहा हो- "वह जो दूर आप काफी सारी झाड़ियां देख रहे हैं, उसके पास ही एक लंबा-चौड़ा फाइट सीन फिल्माया जा रहा था। शशि साहब उस समय मेकअप रूम में थे और अकेले थे ।"

"मेकअप रूम कहाँ है ?"

"उधर ।" गार्ड ने एक दूसरी तरफ हाथ उठाया- "वहाँ जो आपको चार कमरे बने हुए दिखाई दे रहे हैं, उनमें दाएं से दूसरे कमरे में शशि साहब थे ।"

"दाएं से दूसरे ?"

"यस कमाण्डर !"

कमाण्डर करण सक्सेना ने 'डनहील' निकालकर सुलगाई ।

"उसी कमरे में शशि साहब को गोली मारी गयी थी ।" गॉर्ड पुनः बोला ।

"क्या तुमने हत्यारे को देखा था ?"

"बिल्कुल देखा था कमाण्डर !" वॉचमैन बोला- "हत्यारा मेरे सामने स्टूडियो से बाहर निकलकर गया था । शुरु-शुरु में तो मुझे मालूम भी नहीं था कि वह अविनाश लोहार है, क्योंकि इत्तेफाक से न तो मैंने पहले कभी अविनाश लोहार का नाम ही सुना था और जब नाम ही नहीं सुना था, तो उसे पहचानने का मतलब ही कुछ नहीं था । अलबत्ता बाद में जब मैंने पुलिस के पास अविनाश लोहार की तस्वीरें देखी, तो मैंने उसे फ़ौरन गोली की माफिक पहचाना कि वही आदमी है ।"

"वो अविनाश लोहार ही था ?"

"बिल्कुल कमाण्डर ! वो शत-प्रतिशत अविनाश लोहार था ।"

"क्या तुम्हें मालूम है !" कमाण्डर करण सक्सेना 'डनहील' का कश लगाते हुए बोला- "कि अविनाश लोहार इन दिनों दिल्ली के ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल में एडमिट है और वहाँ अपना इलाज करा रहा है ?"

"मालूम है ।"

"तुमने फिर यह नहीं सोचा कि एक आदमी दो-दो जगह मौजूद कैसे हो सकता है ? जब अविनाश लोहार दिल्ली के ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल में मौजूद था और भरपूर सुरक्षा व्यवस्था के बीच मौजूद था, तो फिर वह शशि मुखर्जी की हत्या करने इधर मुंबई शहर में कैसे आ गया ?"

"सच बात बोलूं कमाण्डर ?" वाचमैन ने थोड़े रहस्यमयी अंदाज में कहा ।

"बोलो !"

"हकीकत तो ये है, मैंने यह बात सोची थी ।" वॉचमैन के चेहरे पर प्रबुध्दतापूर्ण भाव उभरे ।

"फिर ?"

"फिर क्या ? मुझे कोई तरीका सुझा ही नहीं कि एक ही आदमी दो-दो जगह कैसे मौजूद हो सकता है ।" वॉचमैन बोला- "इसके पीछे मेरे ख्याल से तो दो ही बात मुमकीन है ।"

"क्या ?"

"या तो जो अविनाश लोहार यहाँ आया, वह डुप्लीकेट था कमाण्डर ! या फिर जो अविनाश लोहार हॉस्पिटल में

"उसके हाथ में खुली हुई और पूरी तरह लॉडिड रिवॉल्वर था। इसके अलावा उसके सिर पर खून भी सवार था, ऐसे में भला कौन उसका रास्ता रोकता ?"

"हूँ !"

कमाण्डर करण सक्सेना ने 'डनहील' का एक कश और लगाया।

वॉचमैन ठीक कह रहा था।

सचमुच ऐसे में बहुत कम लोग ही आततायी को रोकने की हिम्मत दिखा पाते हैं।

"क्या तुम्हारे अलावा स्टूडियो में ऐसे कुछेक लोग और भी हैं।" कमाण्डर अपने दिमाग के घोड़े दौड़ाते हुए बोला- "जिन्होंने उस रात अविनाश लोहार को यहाँ से शशि मुखर्जी की हत्या करने के बाद जाते हुए देखा हो ?"

"एक क्या, ऐसे तो यहाँ कई लोग मौजूद हैं। स्टुडियो स्टॉफ के ही कई मेम्बर हैं। इसके अलावा 'बेखुदी' फिल्म का जो कैमरामैन था, वो भी इस समय यहीं है और एक दूसरी फिल्म की शुटिंग कर रहा है।"

"क्या उसने भी अविनाश लोहार को जाते देखा था ?"

"सबसे पहले तो उसी ने देखा था कमाण्डर।"

"ठीक है ! मेरी उससे मुलाकात कराओ।"

कमाण्डर करण सक्सेना फिर 'बेखुदी' फिल्म के कैमरामैन से भी मिला। वो एक महाराष्ट्रीयन आदमी था।

उसने भी डंके की चोट पर ठोककर कहा- शशि मुखर्जी की हत्या अविनाश लोहार ने ही की है।

वही हत्यारा है।

□□□

पूरे देश में हत्याकाण्ड को लेकर हंगामा बढ़ता जा रहा था।

जितनी तेजी से उस केस में प्रेस मीडिया की दिलचस्पी बढ़ रही थी, उससे कहीं ज्यादा तेजी के साथ पब्लिक का भी उस केस के प्रति रुझान बढ़ता जा रहा था।

हर अखबार, हर टी.वी. चैनल उस केस की ज्यादा-से-ज्यादा कवरेज दिखाने में लगा था।

क्योंकि अब तो एक और हंगामा उस केस के साथ जुड़ गया था।

कुछ सटोरिये भी उस केस में दिलचस्पी दिखाने लगे थे और कमाण्डर करण सक्सेना तथा अविनाश लोहार के ऊपर सट्टा लगाना शुरु कर दिया था।

उस केस में जीत किसकी होगी ? कमाण्डर करण सक्सेना की ?

या अविनाश लोहार की ?

दोनों के ऊपर ही पब्लिक में बढ़-चढ़कर दांव लगाया जा रहा था।

सटोरियों की मौत आ गयी थी। पूरे देश में हंगामा था।

जबरदस्त हंगामा।

कमाण्डर करण सक्सेना को उस इन्वेस्टिगेशन के दौरान जितने भी सबूत मिले थे, वह सारे सबूत उसने रॉ डिपार्टमेंट के ही एक रिसर्च सेंटर के हवाले कर दिए, ताकि उन्हें अच्छी तरह जांचा-परखा जा सके। सबूतों में ऑडियो कैसिट, वह पैग जिस पर अविनाश लोहार के फिंगरप्रिंट तथा होठों के निशान थे। अर्जुन मेहता की पीठ पर किये गये हस्ताक्षर का फोटोग्राफ और सिम कार्ड इत्यादि शामिल थे।

रिसर्च सेंटर के अधिकारियों ने उन सभी सबूतों को जांचने-परखने के लिए कमाण्डर से चौबीस घण्टे का समय मांगा ।

कमाण्डर करण सक्सेना को कुछ ऐतराज न हुआ ।

ठीक चौबीस घंटे बाद उसकी रिसर्च सेंटर के अधिकारियों के साथ व्यापक मीटिंग हुई ।

"कमाण्डर !" एक अधिकारी बोला- "सबसे पहले तो आप यह समझ लें कि आपने हमे जितने भी सबूत जांचने-परखने के लिए दिये थे, वह सारे सबूत बिल्कुल सही पाये गये हैं । ऑडियो कैसिट में नागेन्द्र पाल और अविनाश लोहार की ही आवाज है । पैग पर से जो फिंगरप्रिंट तथा होठों के निशान बरामद हुए, वह भी अविनाश लोहार के ही थे । इसके अलावा अर्जुन मेहता की पीठ पर चाकू की नोंक से जो हस्ताक्षर किये गये हैं, वह भी शत-प्रतिशत अविनाश लोहार के हस्ताक्षरों से मैच करते हैं ।"

"यानी शक की कोई गुंजाइश नहीं ?"

"बिल्कुल नहीं ।"

"हूँ !"

कमाण्डर करण सक्सेना ने 'डनहील' सुलगाने का उपक्रम किया ।

उसे इस बात की उम्मीद पहले से ही थी कि सारे सबूत एकदम दुरुस्त पाए जायेंगे ।

"मैं समझता हूँ कमाण्डर !" एक दूसरा अधिकारी बोला- "इस केस में अब कम-से-कम इस बात को लेकर सोच-विचार करना बिल्कुल बेकार है कि यह हत्याएं अविनाश लोहार ने की हैं या नहीं की हैं, क्योंकि हत्याएं तो हण्ड्रेड परसेन्ट उसी आदमी ने की है ।"

"नहीं !" कमाण्डर ने 'डनहील' का कश लगाया और एकदम दृढ़ता के साथ इनकार में गर्दन हिलाता हुआ बोला- "हमें यूं एकाएक किसी फैसले पर नहीं पहुँच जाना चाहिये ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि इस प्रकार की बातें करने का मतलब है ऑफिसर, हमने बिल्कुल अविनाश लोहार की तरह सोचना शुरू कर दिया है और आखिर यही तो वह चाहता है । हमारे इस प्रकार सोचने में ही तो अविनाश लोहार की जीत है ।"

तमाम अधिकारी बेहद गौर से कमाण्डर की तरफ देखने लगे ।

"यह सच है कि सारे सबूत बिल्कुल सही पाए गये हैं ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "मगर फिर भी हमें थोड़ी देर के लिए कुछ अलग हटकर सोचना चाहिये ।"

"अलग हटकर ?"

"हाँ ! अलग हटकर ।" कमाण्डर का दिमाग़ उस समय काफी तेज स्पीड के साथ काम कर रहा था- "जैसे हमें यह सोचना चाहिये कि जिसने यह चारों हत्याएं की, वह अविनाश लोहार नहीं था बल्कि उसका डुप्लीकेट था । उसका हमशक्ल था ।"

"लेकिन यह सब कैसे संभव है कमाण्डर ?"

"क्यों नहीं है संभव ?"

"क्योंकि अगर यह हत्याएं अविनाश लोहार के डुप्लीकेट ने की थी, तो वह डुप्लीकेट अर्जुन मेहता की पीठ पर हूबहू अविनाश लोहार के हस्ताक्षर कैसे कर सकता था ? और उस ऑडियो कैसिट को आप शायद बिल्कुल भूल गये दिखते हैं कमाण्डर, जो ऑडियो कैसिट आपको

समाजवादी नेता नागेंद्र पाल के घर से बरामद हुई और जिसमें नागेंद्र पाल तथा अविनाश का हत्या से पहले का सारा वार्तालाप रिकार्ड था । अगर नागेंद्र पाल की हत्या करने वाला खुद अविनाश लोहार नहीं तो हूबहू अविनाश लोहार की आवाज में वह वार्ता कैसे रिकार्ड हो सकती थी ?"

"गुड क्वेश्चन !" कमाण्डर ने 'डनहिल' का एक कश लगाया- "अच्छा सवाल है, लेकिन यह सारे काम उस हालत में भी अंजाम दिए जा सकते थे ऑफिसर ! जरा सोचो, आज की तारीख में हमारे देश के अंदर ऐसे मिमिक्री आर्टिस्टों की कोई कमी नहीं है, जो हूबहू किसी की आवाज भी अपने मुँह से निकालने की क्षमता रखते हैं । ऐसी परिस्थितियों में यह क्या मुश्किल है कि वह ऑडियो कैसिट किसी मिमिक्री आर्टिस्ट के द्वारा तैयार कराई गयी हो ?"

"यानी आप यह कहना चाहते हो ।" अधिकारी चौंककर बोला- "कि जो ऑडियो कैसिट वार्ड नेता नागेंद्र पाल के घर से बरामद हुई और जिसमें अविनाश लोहार तथा नागेंद्र पाल के बीच का वार्तालाप रिकार्ड है, वह कैसिट वास्तव में किसी मिमिक्री आर्टिस्ट के द्वारा तैयार कराई गयी है ?"

"क्यों ? इसमें क्या मुश्किल है ? अविनाश लोहार ने सब कुछ बेहद योजनाबद्ध अंदाज में किया । इस तरह किया, जो ऐसा लगे कि यह सारी हत्यायें उसी ने की हैं । इसलिये उसने हर मर्डर स्पॉट पर सबूत भी खूब सोच-समझकर प्लांट किए और वार्तालाप वाली वो ऑडियो कैसिट भी उन्हीं प्लांट किए गये सबूतों की एक कड़ी थी । इसके अलावा अर्जुन मेहता की पीठ पर जहाँ तक चाकू की नोक से हस्ताक्षर करने का सवाल है, तो वह कोई बहुत

ज्यादा मुश्किल काम नहीं । यह काम तो अविनाश लोहार के डुप्लीकेट ने ही हस्ताक्षरों की काफी प्रैक्टिस करने के बाद किया हो सकता है ।”

“और शशि मुखर्जी के पेट से जो सिम कार्ड बरामद हुआ, कलकत्ता के फार्म हाउस से वार्डरोब में रखा हुआ जो शराब का पैग बरामद हुआ, जिस पर अविनाश लोहार के होठों के निशान तथा फिंगरप्रिंट पाए गये हैं, उसके बारे में आप क्या कहेंगे कमाण्डर ?”

“देखिए !” कमाण्डर करण सक्सेना ने ‘डनहील’ का एक कश लगाया- “सिम कार्ड भी कोई ज्यादा कठिन मामला नहीं है । शशि मुखर्जी के पेट में सिम कार्ड डालने का काम तो अविनाश लोहार के डुप्लीकेट ने ही अंजाम दिया हो सकता है । अलबत्ता अविनाश लोहार ने यह बात चूंकि शशि मुखर्जी के पोस्टमार्टम होने से पहले ही बड़े ड्रामेटिक अंदाज में मुझे बता दी, तो उस बात ने मुझे प्रभावित किया । जबकि सच पूछा जाये, तो इसमें करिश्मा जैसा कुछ भी नहीं था । अविनाश लोहार को यह सारी बातें एडवांस में ही इसलिये मालूम थीं, क्योंकि उसी के कहने पर उसका डुप्लीकेट वो सारा काम कर रहा था ।”

“और उन फिंगरप्रिंट तथा होठों के निशानों के बारे में आप क्या कहेंगे, जो पैग के ऊपर से मिले हैं । वह तो झूठ नहीं हो सकते ?”

“बिल्कुल सही कहा । फिंगरप्रिंट तथा होठों के निशान झूठ नहीं हो सकते, क्योंकि उसका एक दूसरा हल है ?”

“क्या ?”

“यह क्या जरूरी है कि वह वही पैग था, जिसमें क्रिकेटर पटेल वहाँ बैठकर शराब पी रहा था ? यह भी तो मुमकिन

है कि अविनाश लोहार ने एक पैग एडवांस में ही अपने डुप्लीकेट को दे दिया हो, जिस पर उसके होठों के निशान तथा फिंगरप्रिंट मौजूद थे और उस डुप्लीकेट ने उस पैग को वार्डरोब में छुपा कर रख दिया।"

"लेकिन उस पैग के ऊपर से हमें क्रिकेटर विजय पटेल की उंगलियों के निशान भी बरामद हुए हैं कमाण्डर !"

"तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?" कमाण्डर करण सक्सेना सहज मुद्रा में बोला- "विजय पटेल की उंगलियों के निशान डुप्लीकेट ने घटनास्थल पर पहुँचने के बाद ही ले लिए होंगे वेरी सिंपल।"

रिसर्च सेंटर के तमाम अधिकारी गौर से एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे।

सब कमाण्डर करण सक्सेना की बातों से मंत्रमुग्ध थे।

"एक बात समझ में नहीं आ रही कमाण्डर !"

"क्या ?"

"आप यह बात ही डंके की चोट पर साबित करने के लिए क्यों तुले हुए हो कि यह चारों हत्याएं अविनाश लोहार ने नहीं की हैं, बल्कि उसके डुप्लीकेट ने की हैं ?"

"मैं कुछ भी साबित करने के लिए नहीं तुला हूँ एवरीबडी।" कमाण्डर करण सक्सेना 'डनहिल' का कश लगाता हुआ बोला- "बल्कि मैं इस केस के हर पहलू पर अच्छी तरह विचार-विमर्श करना चाहता हूँ। हत्या किसने की हो सकती है और किसने नहीं की हो सकती है, इन तमाम एंगलों को ठोक बजाकर देखना चाहता हूँ। हालांकि इस अवसर पर मुझे अविनाश लोहार की एक बात याद आ रही है, जिसके बाद कम-से-कम इस एंगल पर सोचने-विचारने लायक कुछ नहीं बचता।"

"क्या बात याद आ रही है ?"

"अविनाश लोहार ने ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल में मुझसे खूब जोर देकर कहा था कि इस पूरे प्रकरण में ऐसा कहीं कोई फिजूल का ड्रामा नहीं है, कहीं कोई डुप्लीकेट मौजूद नहीं है । उसने खूब ठोककर कहा कि देश के अलग-अलग महानगरों में हुई यह चारों हत्याएं कंफर्म तौर पर उसी ने की हैं । अपने हाथों से की हैं । कम-से-कम अविनाश लोहार के उस दावे के बाद तो इस सिलसिले में बहस करने लायक वैसे भी कुछ नहीं बचता, क्योंकि मैं समझता हूँ, इस मुद्दे को लेकर अविनाश लोहार ने झूठ नहीं बोला होगा । फिर भी मैं हर संभावना को अपने सामने रखकर चल रहा हूँ ।"

मीटिंग हॉल में सन्नाटा छा गया ।

गहरा सन्नाटा ।

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना की रॉ चीफ गंगाधर महंत के साथ भी एक मीटिंग हुई ।

इस बीच कमाण्डर ने एक महत्वपूर्ण कार्य और किया । उसने चारों महानगरों के एयरपोर्ट से हत्या वाली रात को जितनी उड़ाने हुई थीं, उनका पूरा टाइम टेबल मंगा लिया, लेकिन यह देखकर उसे आश्चर्य हुआ कि उस रात हत्या वाले टाइम से मैच करती हुई एक महानगर से दूसरे महानगर जाने के लिए कोई फ्लाइट ही नहीं थी । जैसे रात के ठीक बारह बजे जब पहला मर्डर मुंबई में हो गया, तो मुंबई से मद्रास जाने के लिए बारह बजे के आस-पास कोई फ्लाइट नहीं थी । उसी तरह मद्रास से कलकत्ता जाने के लिए एक बजे के आस-पास कोई फ्लाइट नहीं थी । अलबत्ता कलकत्ता से दिल्ली जाने के लिए सवा दो बजे के

करीब एक फ्लाइट थी, लेकिन वह फ्लाइट भी घटना की रात घने कोहरे की वजह से कैंसिल हो गयी थी और अपने निश्चित टाइम से दो घंटे लेट हुई थी ।

सबसे बड़ी बात तो ये थी कि अगर उस रात हत्या वाले टाइम से मैच करती हुई चारों महानगरों से उड़ानें होती भीं, तब भी कमाण्डर करण सक्सेना को उस केस में कोई बहुत लंबी-चौड़ी मदद नहीं मिलनी थी, क्योंकि अपने आपमें सबसे बड़ा शाश्वत सत्य तो यही था कि हवाई जहाज से भी एक महानगर से दूसरे महानगर पहुँचने के लिए जहाँ दो घंटे के आसपास का समय लगता है, वहीं हत्याएं मात्र एक-एक घंटे के अंतराल से हुई थीं ।

गंगाधर महंत ने भी उड़ानों की वो पूरी डिटेल बड़े गौर से चेक की और फिर वह फाइल एक तरफ सरका दी ।

उस टाइम-टेबल को देखकर उनके चेहरे पर कैसे भी कोई भाव नहीं उभरे ।

शायद वो पहले से ही उसे लेकर बहुत ज्यादा उत्साहित नहीं थे ।

“देखो करण !” गंगाधर महंत ‘हवाना’ सिगार का कश लगाते हुए बोले- “इसमें तो कोई शक ही नहीं, मामला बहुत पेचीदा है । मेरे पूरे कैरियर में हत्या का इतना उलझा देने वाला केस पहले कभी नहीं आया । यह बात स्पष्ट रूप से नहीं कहीं जा सकती कि अविनाश लोहार ने अगर यह चारों हत्याएं की हैं, तो किस तरह की हैं । सचमुच काफी सस्पेंसफुल है । अलबत्ता अविनाश लोहार के बारे में हम कम-से-कम एक बात दावे के साथ जरूर कह सकते हैं ।”

“क्या ?”

का ध्यान नहीं गया है और जो बात मेरे दिमाग को बुरी तरह झंझोड़ रही है।”

“क्या ?”

“जैसाकि अविनाश लोहार का कहना है।” गंगाधर महंत ‘हवाना’ शिकार का कश लगाते हुए बोले- “कि यह चारों हत्याएं उसने की हैं और उन हत्याओं को करने के लिए वो रात के ग्यारह बजे ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल से निकला था।”

“बिल्कुल ठीक।”

“यहाँ बड़ा सनसनीपूर्ण सवाल जन्म ले रहा है करण ! जब अविनाश लोहार एक पुलिस के शिकंजे से भाग निकला था, तो फिर वह चारों हत्याएं करने के बाद वापस ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल में क्या करने आया ? उसने खुद को दोबारा मौत के मुँह में इस तरह क्यों धकेला ? इसके पीछे क्या वजह हो सकती है, क्योंकि पच्चीस मार्च को तो अविनाश लोहार को वैसे ही फांसी लगने वाली है।”

गंगाधर महंत की बात सुनकर कमाण्डर करण सक्सेना के दिमाग में चिंगारियां छूटने लगीं।

जबरदस्त चिंगारियां।

सवाल वाकई झकझोर देने वाला था।

“अगर तुमने इस केस को सुलझाना है।” गंगाधर महंत दृढ़तापूर्वक बोले- “तो अपनी इन्वेस्टिगेशन आगे बढ़ाने से पहले इन सवालों के जवाब हासिल करने होंगे। इसके लिए तुम्हें मेरी एक सलाह है।”

“क्या ?”

“तुम एक बार फिर दिल्ली जाकर अविनाश लोहार से मुलाकात करो और उससे इस बारे में पूछो।”

कमाण्डर को भी लगा, गंगाधर महंत ठीक कह रहे हैं।

वाकई।

अभी उसका अविनाश लोहार से एक बार और मिलना जरूरी था।

क्योंकि इस बात को कमाण्डर करण सक्सेना भी खूब अच्छी तरह समझता था कि किसी भी हत्याकांड के ऊपर से तब-तक पर्दा उठना असंभव होता है, जब तक हत्या का उद्देश्य सामने न आ जाये।

“ठीक है।” कमाण्डर करण सक्सेना खूब सोच-विचारकर बोला- “मैं दिल्ली जाकर अविनाश लोहार से एक बार और मुलाकात करता हूँ।”

“यही बेहतर रहेगा।” वो मीटिंग वहीं बर्खास्त हो गयी।

अविनाश लोहार से कमाण्डर की वो दूसरी मुलाकात कई मायनों में महत्वपूर्ण थी।

महत्वपूर्ण भी दिलचस्प भी।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना इस बार जब अविनाश लोहार से मुलाकात करने दिल्ली पहुँचा, तो अविनाश लोहार को अब ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल से ट्रांसफर करके तिहाड़ जेल भेज दिया गया था और वो वहाँ एक स्पेशल सेल में बंद था।

कमाण्डर करण सक्सेना की अविनाश लोहार की उसी स्पेशल सेल में मुलाकात हुई।

वहाँ सचमुच पुलिस ने सुरक्षा के बड़े व्यापक इंतजाम किए हुए थे । जिस सेल में अविनाश लोहार को बंद करके रखा गया था, उस सेल के आसपास कोई परिंदा भी 'पर' नहीं मार सकता था । खासतौर पर अविनाश लोहार से मिलना तो इतना कठिन बना दिया गया था कि बाहरी आदमी की बात तो दरकिनार है, तिहाड़ जेल के बहुत से कांस्टेबलों की भी उस तक पहुँच संभव नहीं थी । खुद कमाण्डर करण सक्सेना भी कई सारी कागजी औपचारिकताओं से गुजरने के बाद अविनाश लोहार तक पहुँचा ।

"आइए कमाण्डर !" अविनाश लोहार कमाण्डर को देखते ही गरमजोशी पूर्वक बोला- "मैं अपनी आंखों पर यकीन नहीं कर पा रहा हूँ कि इतनी जल्दी मेरी आपसे दोबारा मुलाकात हो रही है ।"

अविनाश लोहार उस समय पूरी तरह कैदियों वाली वेशभूषा में था ।

"दरअसल मुझे लगता है मिस्टर अविनाश !" कमाण्डर संजीदगी के साथ बोला- "कि मेरी अब तुमसे इतनी ही जल्दी-जल्दी और भी कई मुलाकातें होने वाली हैं ।"

"यह तो मेरी खुशनसीबी होगी कमाण्डर !" यह बात कहकर अविनाश लोहार हंसा ।

परंतु कमाण्डर के चेहरे पर संजीदगी के भाव व्याप्त थे । पिछले कुछ दिनों से हंसना मानो वह बिल्कुल भूल चुका था ।

सेल में एक काफी बड़ा सीमेंट का चबूतरा बना हुआ था, वह दोनों उसी चबूतरे पर जाकर बैठ गये ।

हालांकि धीरे-धीरे पच्चीस मार्च का वह दिन नजदीक आता जा रहा था, जिस दिन अविनाश लोहार को फांसी होनी थी, परंतु उसके चेहरे पर अपनी मौत का कोई डर नहीं था ।

"मिस्टर अविनाश ! मैं इस बार एक बहुत खास बात पूछने के लिए तुम्हारे पास आया हूँ ।" कमाण्डर 'डनहिल' सुलगाता हुआ बोला- "और मुझे उम्मीद है कि तुम मेरी इस बात का बिल्कुल सही-सही जवाब दोगे ।"

अविनाश लोहार अब थोड़ा सतर्क होकर बैठा ।

चौंकन्ना ।

"क्या खास बात पूछने आये हो कमाण्डर ?" अविनाश लोहार गौर से उसे देखने लगा ।

"मुझे सिर्फ एक बात बताओ ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "जब तुम चारों हत्याएं करने के लिए उस रात तमाम ब्लैक कैट कमांडोज की आंखों में धूल झोंककर ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल से भाग निकले थे, तो फिर तुम हत्याएं करने के बाद वापस हॉस्पिटल में ही क्यों आ गये ? वह तो तुम्हारे लिए गोल्डन चांस था मिस्टर अविनाश ! तुम पुलिस के शिकंजे से भाग निकले थे । तुम फांसी की सजा से आजाद हो गये थे । लेकिन फिर भी तुमने वापस लौट आने की मूर्खता क्यों की ?"

अविनाश लोहार एकाएक कमाण्डर की तरफ देखने लगा ।

जबकि बोलते-बोलते कमाण्डर करण सक्सेना के नेत्र गोल दायरे में सिकुड़ चुके थे और वो अपलक अविनाश लोहार को ही देखे जा रहा था ।

"इसके अलावा एक बात और मेरे मन को काफ़ी विचलित कर रही है मिस्टर अविनाश !"

"क्या ?"

"तुमने यह चारों हत्याएं इतने नाटकीय अंदाज में करने की क्या जरूरत थी ? क्या इसके पीछे भी कोई वजह है ?"

अविनाश लोहार ने गहरी सांस ली ।

उसकी सारी हंसी मानो लुप्त हो चुकी थी ।

वो एकाएक बेहद संजीदा नजर आने लगा ।

"वजह ? इसके पीछे एक बड़ी वजह है कमाण्डर !" अविनाश बोला- "लेकिन वो वजह सिर्फ दो लाइनों में बयां नहीं की जा सकती, बल्कि उस वजह को सुनने के लिए तुम्हें एक कहानी सुननी होगी ।"

"कहानी ?"

"हाँ ! एक बहुत दिल दहला देने वाली कहानी । अलबत्ता उस कहानी को सुनने के बाद तुम्हें अपने हर सवाल का जवाब खुद-ब-खुद मिल जायेगा ।"

"मैं वह कहानी सुनने के लिए तैयार हूँ ।"

"ठीक है । तो फिर वह कहानी सुनो ।" वो शब्द बोलते-बोलते अविनाश लोहार एकाएक दूर कहीं ख्यालों में गुम होता चला गया था ।

उसकी आँखें जैसे कोई भावनात्मक किताब बन गयीं और उस किताब के पन्ने पलटते चले गये ।

□□□

पांच दोस्त, यह कहानी पांच दोस्तों से शुरू होती है ।

अविनाश लोहार की भर्राई हुई आवाज इस तरह निकल रही थी, जैसे किसी गहरे अंधकूप से निकल रही हो ।

वह पांच दोस्त थे।

अर्जुन मेहता।

विजय पटेल।

नागेंद्र पाल।

शशि मुखर्जी।

और श्रीकांत चौधरी।

श्रीकांत चौधरी इन पांचों में सबसे बड़ा था।

कोई दस साल बड़ा।

इसके अलावा वह उन सभी में सबसे ज्यादा बुद्धिमान भी था।

हालांकि श्रीकांत चौधरी में और बाकी चारों में उम्र का बड़ा फर्क था, लेकिन फिर भी उनकी दोस्ती बेमिसाल थी।

यादगार थी।

कुल मिलाकर श्रीकांत चौधरी उन सबका 'लीडर' था और वह उसकी हर बात मानते थे। श्रीकांत चौधरी बचपन से ही उनके अंदर कुछ करने का जोश भरता रहता था।

"मैं तुम्हें इस दुनिया की सबसे कीमती चीज दे रहा हूँ दोस्तों!" श्रीकांत चौधरी अक्सर उनसे बेहद उत्साहपूर्वक कहता- "मैं तुम्हें एक सपना दे रहा हूँ। सपना, जो इंसान की सबसे बड़ी ताकत होता है। हिम्मत होता है। याद रखो, हम पांचों ने इस दुनिया में कुछ खास काम करने के लिए जन्म लिया है। इस पृथ्वी पर सिर्फ दो ही तरह के लोग पैदा होते हैं। एक वो, जो वी.आई.पी. कैटेगरी में आते हैं और बेहद खास होते हैं। जबकि दूसरे आम लोग होते हैं, साधारण लोग होते हैं, जिनका जन्म सिर्फ शासित होने के लिए होता है। हमने पहले वाली कैटेगरी का आदमी बनना है। खास लोगों में शुमार होना है।"

श्रीकांत चौधरी के शब्द उनके दिल-दिमाग को झंझोड़ते ।

"हमारे पास अपनी-अपनी प्रतिभा है ।" श्रीकांत चौधरी गरमजोशी के साथ कहता- "जोश है । हमने उस जोश को कम नहीं होने देना है दोस्तों ! फिर तुम देखना, हम इस दुनिया के अंदर कुछ भी कर जाएंगे । हर मंजिल हमारे कदमों में होगी ।"

सब दोस्त श्रीकांत चौधरी की एक-एक बात ध्यानपूर्वक सुनते ।

इससे उन्हें हौसला मिलता ।

उनके अंदर नया उत्साह जन्म लेता । कुल मिलाकर श्रीकांत चौधरी बचपन से ही अपने उन साथियों के दिमाग में एक बात कील की तरह ठोक-ठोककर भर रहा था- वो खास हैं ।

उन्होंने कुछ विशिष्ट कार्य करने के लिए इस दुनिया में जन्म लिया है ।

□□□

और ।

श्रीकांत चौधरी ने उन्हें जो एक सपना दिया था, वह सपना धीरे-धीरे उन सबका दृढ़ निश्चय बनता चला गया ।

उन्होंने अपना कैरियर बनाने के लिए दिलोजान से मेहनत की ।

उनकी प्रतिभाएं रंग लायीं ।

वह सब अपने-अपने क्षेत्र की बड़ी हस्तियां बने ।

नागेंद्र पाल जहाँ राष्ट्रीय स्तर का लीडर बना, वहीं शशि मुखर्जी एक कामयाब फिल्म स्टार बना, विजय पटेल एक

अंतरराष्ट्रीय ख्याति वाला क्रिकेटर बना और अर्जुन मेहता उद्योगपति बना ।

वह सब कामयाब आदमी बन चुके थे ।

और ।

श्रीकांत चौधरी ! वह श्रीकांत चौधरी, जो उनमें सबसे ज्यादा बुद्धिमान था और उन सबके सपनों का रचयिता था, वह उन सभी में सबसे ज्यादा कामयाब आदमी निकला ।

श्रीकांत चौधरी ने ऑस्ट्रेलिया में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर की बड़ी कंपनी लगाई और देखते-ही-देखते उसके सॉफ्टवेयर आइटम ने पूरी दुनिया में अपनी धूम मचा डाली ।

उसने बेपनाह दौलत कमायी ।

इतनी दौलत, जिसकी कोई आसानी से कल्पना भी न कर सके ।

हालांकि नागेन्द्र पाल, विजय पटेल, शशि मुखर्जी, अर्जुन मेहता, सब बड़ी हस्तियां थे । सबने खूब धन कमाया था, लेकिन श्रीकांत चौधरी के अकूत धन के सामने वो कहीं नहीं ठहरते थे ।

उसका तो बकायदा एक साम्राज्य-सा स्थापित हो चुका था ।

कंप्यूटर सॉफ्टवेयर की दुनिया में उसका नाम था ।

उसकी पूजा होती थी ।

वह पांचों जहाँ बड़ी-बड़ी हस्तियां बने, वहीं उसके बाद उनके जीवन में कुछ परिवर्तन भी हुए ।

जैसे अब वो सभी बहुत व्यस्त हो चुके थे । उनके प्रोग्राम उनके सेक्रेटरी फाइनल करते थे । यही वजह थी, उनकी मुलाकातें भी बहुत कम हो पाती थीं ।

खासतौर पर ऐसा दुर्लभ अवसर तो कभी-कभार ही आता, जब वह पांचों एक साथ सिर-से-सिर जोड़कर बैठते ।

□□□

श्रीकांत चौधरी की बदौलत ही ऐसा एक अवसर आया ।

हिंदुस्तान के नजदीक अरब महासागर में स्थित 'सकहूत' नाम का एक छोटा-सा आइलैण्ड था, जिसे श्रीकांत चौधरी ने खरीदा और उसे खरीदने की खुशी में अपने दोस्तों को वहाँ आमंत्रित किया । सिर्फ अपने दोस्तों को । हालांकि पूरी दुनिया में आज उसके ढेरों व्यावसायिक मित्र थे, जो उसके एक इशारे पर वहाँ पहुँच सकते थे, लेकिन श्रीकांत चौधरी बचपन की दोस्ती और आर्थिक लाभ के लिए की गयी व्यावसायिक मित्रता के उस फर्क को पहचानता था ।

आइलैण्ड के पास जहाँ एक छोटी-सी जेटी बनी हुई थी, जिसके किनारे स्टिमर और शिप तक खड़ा हो सकता था । वहीं आइलैण्ड पर एक प्राइवेट रनवे भी बना हुआ था, जिसमें सुख-सुविधाओं के तमाम साधन थे और उसके अंदर लाइट के लिए एक जनरेटर की भी व्यवस्था थी ।

वह पांचों उसी बंगले के एक काफी बड़े हॉल में एकत्रित हुए, जहाँ काली आबनूस की लकड़ी से निर्मित एक गोल मेज पड़ी हुई थी और उसके चारों तरफ काफी सारी कुर्सियां थीं ।

उन्होंने आइलैण्ड खरीदने की खुशी में सबसे पहले शैम्पेन खोली तथा फिर उसके कई-कई पैग पीये ।

"दोस्तों !" फिर श्रीकांत चौधरी अपनी कुर्सी से खड़ा होकर हमेशा की तरह बेहद गरमजोशी के साथ बोला- "मैं समझता हूँ, इस सारी दुनिया में, इस समस्त ब्रह्मांड में हमसे ज्यादा खुशनसीब कोई नहीं है । हमने जो चाहा, वह पाया । हम खास आदमी बनना चाहते थे, हम खास आदमी बन गये । हम खूब धन कमाना चाहते थे, हमने खुद धन कमा लिया । हमारा हर सपना पूरा हुआ । बस...बस कमी रही तो एक बात की रही दोस्तों !" वह शब्द बोलते-बोलते श्रीकांत चौधरी की आवाज में गहरे अहसास के भाव पैदा हुए । गहरा खालीपन पैदा हुआ- "सपनों को पाने की इस चाह में, जिंदगी की इस भाग-दौड़ में हम एक-दूसरे से दूर होते चले गये । अब वो दिन अतीत का एक हिस्सा बन चुके हैं, जब हम दोस्तों की शामें एक साथ गुजरा करती थीं ।"

"इसमें तो कोई शक नहीं श्रीकांत !" शशि मुखर्जी के मुँह से भी ठंडी आह निकली- "वह दिन भी क्या खूब दिन थे यार ! हमने शोहरत और दौलत चाहे जितनी पा ली हो, लेकिन ऐसी एक शाम के लिए हम सब आज भी तरसते हैं ।"

"मैं तुम्हारे दिल का एहसास समझ सकता हूँ मेरे दोस्त !" श्रीकांत चौधरी जज्बाती हो उठा । भावुक हो उठा- "सच तो ये है, मैं खुद चाहता हूँ कि हमारे वही दिन वापस लौट आएं ।"

"यह अब मुश्किल है ।"

"नहीं ! कुछ मुश्किल नहीं ।" श्रीकांत चौधरी बोला- "इंसान अगर दृढ़ संकल्प कर ले, तो हर काम संभव हो जाता है, बल्कि सच तो ये है, मैंने ऐसा एक फार्मूला खोज

भी निकाला है, जिसकी बदौलत हम बार-बार पहले की तरह मिल सकेंगे ।”

“फार्मूला खोज निकाला है ?”

चारों दोस्तों की आँखें चमक उठीं ।

“ऐसा क्या फार्मूला है ?” अर्जुन मेहता उत्साहित होकर बोला- “आखिर हमें भी तो पता चले ।”

“बताता हूँ ।” श्रीकांत चौधरी एकाएक बहुत संजीदा नजर आने लगा था । उसने अपना ब्रीफकेस खोला तथा उसमें से एक नक्शा निकाला और एक फाइल निकाली ।

इस समय वह चारों श्रीकांत चौधरी को ऐसे कौतुहलपूर्ण नजरों से देख रहे थे, जैसे दर्शक मंच पर खड़े किसी जादूगर को देखते हैं ।

श्रीकांत चौधरी ने फाइल एक तरफ रखी और नक्शा खोलकर पूरी टेबल पर फैला दिया ।

“मैं तुम्हें एक नक्शा दिखाने जा रहा हूँ ।” श्रीकांत चौधरी बोला- “उस नक्शे को देखने के बाद मेरा पूरा प्रोग्राम तुम्हारे सामने स्पष्ट हो जायेगा ।”

“नक्शा ? लेकिन कैसा नक्शा है ?”

“अभी सब कुछ सामने आता है ।”

श्रीकांत चौधरी ने फाइल एक तरफ रखी और नक्शा खोलकर पूरी टेबल पर फैला दिया ।

नागेन्द्र पाल, विजय पटेल, शशि मुखर्जी और अर्जुन मेहता, सब उस नक्शे पर झुक गये और बेहद उत्सुकतापूर्वक उसे देखने लगे ।

वह किसी कम्पनी का नक्शा था और उस नक्शे में एक-एक डिपार्टमेंट बड़ी बारीकी के साथ उजागर किया गया था ।

उन चारों ने अब एक-दूसरे की तरफ देखा । अलबत्ता फाइल उठाकर किसी ने प्रोजेक्ट रिपोर्ट देखने की कोशिश नहीं की ।

वैसे भी ।

श्रीकांत पर सबको भरोसा था ।

यकीन था ।

आखिर वह उसे बचपन से जानते थे ।

"नहीं !" काफी सोचने-विचारने के बाद एकाएक विजय पटेल की गर्दन इनकार की सूरत में हिलने लगी- "मेरे को तुम्हारा प्रोजेक्ट नहीं जमता ।"

"क्यों ?" श्रीकांत चौधरी चौंककर बोला- "प्रोजेक्ट में क्या कमी है ?"

"प्रोजेक्ट में कोई कमी नहीं मेरे भाई ! कमी जेब में है । तुम तो जानते हो कि मैं बड़ी मुश्किल से इंडियन क्रिकेट टीम में सेलेक्ट हुआ हूँ और मैंने थोड़ा बहुत धन कमाया है । अगर मैंने इतनी मेहनत-मशक्कत से कमाया गया अपना वह धन कंपनी में लगा दिया और किसी कारणवश कंपनी डूब गयी, तो मैं कहीं का भी नहीं रहूँगा । मैं तो सड़क पर आ जाऊंगा मेरे भाई !"

विजय पटेल की बात सुनकर श्रीकांत चौधरी के हलक से एक बहुत बुलन्द कहकहा उबल पड़ा, जबकि उसके इस प्रकार खुलकर हंसने से विजय पटेल थोड़ा सकपका उठा और यूं इधर-उधर देखने लगा, जैसे उससे कोई गलती हो गयी हो ।

"तू आखिर रहा वैसे का वैसा ही ।" श्रीकांत चौधरी हंसते हुए बोला- "जैसा बचपन में था । बिज्जू का बिज्जू ! विजय पटेल आज तक नहीं बन सका । मुझे तो हैरानी है

मेरे दोस्त, तुम इंडियन क्रिकेट टीम में कैसे सेलेक्ट हो गये और उससे भी ज्यादा बड़ी हैरानी की बात ये है कि तुम आज एक बेहतरीन ऑलराउंडर के तौर पर जाने जाते हो। रियली सरप्राइजेबल।"

विजय पटेल के चेहरे की रंगत फीकी पड़ गयी। दोस्तों के बीच अक्सर बचपन से ही उसका इस तरह मजाक उड़ता रहता था।

श्रीकांत चौधरी की बात सुनकर बाकी दोनों भी हंसे।

"तुम्हारे लिए ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है मेरे भाई !" श्रीकांत चौधरी कुर्सी पर बैठता हुआ बोला- "तुम्हारी जानकारी के लिए एक नई बात और बता दूं। इस पूरे कंपनी प्रोजेक्ट में साठ प्रतिशत शेयर्स मेरे होंगे। बाकी चालीस प्रतिशत शेयर्स में तुम चारों भागीदार बनोगे। यानी चौबीस करोड़ मैं लगाऊंगा और सिर्फ चार करोड़ का इन्वेस्टमेंट तुम लोगों का होगा। इसमें तुम्हारा कोई बड़ा रिस्क नहीं है और न ही कोई घाटे का सौदा है। वैसे भी तुम जानते ही हो, श्रीकांत चौधरी कभी कोई घाटे का सौदा नहीं करता और खासतौर पर कंप्यूटर सॉफ्टवेयर में तो इस श्रीकांत को महारत हासिल है।"

"ल...लेकिन फिर भी एक प्रतिशत मान लो।" विजय पटेल हिम्मत करके पुनः आशंकाग्रस्त लहजे में बोला- "अगर हमारा धन डूब गया तो ?"

"मैंने कहा न।" श्रीकांत चौधरी उसकी बात बीच में ही काटकर बोला- "नहीं डूबेगा।"

"ओ.के. ! आयी हैव नो ऑब्जेक्शन !" फिल्म स्टार शशि मुखर्जी इस प्रोजेक्ट के प्रति सबसे पहले सहमति जाहिर करता हुआ बोला- "आयी एण्टायर्ली एग्री विद यू

। मैं पैसा लगाने के लिए तैयार हूँ। इसके अलावा मैं तुमसे भी एक बात कहूँगा विजय !”

“क्या ?”

“आज हम जो कुछ हैं, श्रीकांत की बदौलत हैं। श्रीकांत की बदौलत ही हमने इतना धन कमाया है। इसने हमें बचपन में जो सपना दिया था, अगर वह सपना न दिया होता तो हम सब आज एक साधारण आदमी होते। इसलिये अगर श्रीकांत के बताए किसी प्रोजेक्ट में हमारा धन डूब भी जाता है, तब भी हमें कोई परवाह नहीं करनी चाहिये। फिर चार-चार करोड़ की रकम हममें से किसी के लिए भी कोई बहुत ज्यादा बड़ी रकम नहीं है।”

“बिल्कुल ठीक बात है।” अर्जुन मेहता भी गरमजोशी के साथ बोला- “मैं भी पैसा लगाने के लिए तैयार हूँ। अपनी दोस्ती के लिए इतना तो सब कुछ हम कर ही सकते हैं।”

“मेरी तरफ से भी मामला डन है।” नागेंद्र पाल ने भी उत्साहपूर्वक कहा।

जबकि विजय पटेल के चेहरे पर थोड़े संकोच के भाव उभरे।

वह कुछ बोलते हुए हिचकिचा रहा था।

“क्या बात है विजय ?” अर्जुन मेहता बोला- “तुम्हारा इस प्रोजेक्ट के बारे में क्या विचार है ?”

“म...मैं भी तैयार हूँ।” विजय पटेल थोड़ी धीमी आवाज में बोला।

“देखो विजय !” श्रीकांत चौधरी गंभीरतापूर्वक बोला- “अगर तुम्हारा दिल इस प्रोजेक्ट पर पैसा लगाने के लिए गवाही नहीं दे रहा है, तो मत लगाओ। मैं किसी के ऊपर

प्रेशर नहीं डाल रहा हूँ। मैंने दोस्ती की गरमाहट बनाए रखने के लिए एक प्रस्ताव तुम लोगों के सामने रखा है, जिससे तुम इनकार भी कर सकते हो।"

"नहीं ! ऐसी कोई बात नहीं है।" विजय पटेल जल्दी से बोला- "मैं दिल से पैसा लगा रहा हूँ।"

"सच कह रहे हो ?"

"बाई गॉड !"

"ओ.के. ।" श्रीकांत चौधरी गर्व से बोला- "मुझे खुशी है। हम सब आज भी एक दूसरे के वास्ते कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं और हमारी दोस्ती एक बंद मुट्ठी की तरह है, जो हमारी एकता का परिचय देती है। श्रीकांत चौधरी इस मौके पर तुमसे वादा करता है कि वह तुम्हारे धन को डूबने नहीं देगा। अगर इत्तेफाक से कंपनी प्रोजेक्ट में नुकसान की कोई नौबत आती है, तो वह नुकसान सिर्फ और सिर्फ श्रीकांत चौधरी का ही होगा। वह नुकसान श्रीकांत चौधरी अपनी जेब से भरेगा।"

कुल मिलाकर वह प्रोजेक्ट फाइनल हो गया। वह पांचों दोस्त, जो बचपन से ही खूबसूरत सपने के हिस्सेदार थे, उस दिन के बाद से एक कंपनी के पार्टनर बन गये।

दोस्ती के नाम पर एक व्यापार की आधारशिला रख दी गयी।

□□□

फिर उन पांचों ने सारा दिन उस आइलैण्ड में इधर-से-उधर घूमते हुए गुजारा था।

वो वाकई एक खूबसूरत जगह थी।

दूर-दूर तक फैला समुद्र तो और भी ज्यादा विहंगमकारी और सुंदर दृश्य उत्पन्न करता था ।

शाम को विदा लेने से पहले उन पांचों ने उसी आइलैण्ड पर एक साथ भोजन भी किया ।

"मैं तुम लोगों को कंपनी प्रोजेक्ट से संबंधित ही एक बात और बताना चाहता हूँ ।" श्रीकांत चौधरी भोजन करता हुआ बोला ।

"वह क्या ?"

चारों ने ध्यान से श्रीकांत चौधरी की तरफ देखा ।

अलबत्ता वह भोजन करते रहे ।

"सबसे पहले तो मैं यह बता दूं, हमारी कंपनी का नाम 'फ्रेण्ड्स कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर कंपनी' होगा ।" श्रीकांत चौधरी बोला- "इसके अलावा जो सबसे अहम बात है, वो ये है कि इस कंपनी के शेयर हम पांचों को छोड़कर किसी बाहरी आदमी को नहीं बेचे जाएंगे । अगर हममें से कोई किसी कारणवश अपने शेयर्स बेचना भी चाहेगा तो हम पांचों में से ही किसी को बेचेगा । यह सिर्फ और सिर्फ हम दोस्तों की कंपनी है । इस कंपनी में बाहर का कोई आदमी कभी भी हिस्सेदार नहीं बनेगा । यह बात खासतौर पर हमारी पार्टनरशिप डीड में भी लिखी जायेगी । इतना ही नहीं, यह शर्त हमारे वारिसों पर भी लागू होगी ।"

"वारिसों पर ? वो कैसे ?"

"हमारे बाद जब इस कंपनी की वारिस हमारी संताने बनेंगी ।" श्रीकांत चौधरी एक-एक बात खोलकर समझाता हुआ बोला- "तो वह भी इस कम्पनी के शेयर्स किसी बाहरी आदमी को नहीं बेच सकेंगी, बल्कि उनमें से किसी को अपने शेयर्स बेचने होंगे, तो आपस में ही उनकी

दूर-दूर तक फैला समुद्र तो और भी ज्यादा विहंगमकारी और सुंदर दृश्य उत्पन्न करता था ।

शाम को विदा लेने से पहले उन पांचों ने उसी आइलैण्ड पर एक साथ भोजन भी किया ।

"मैं तुम लोगों को कंपनी प्रोजेक्ट से संबंधित ही एक बात और बताना चाहता हूँ ।" श्रीकांत चौधरी भोजन करता हुआ बोला ।

"वह क्या ?"

चारों ने ध्यान से श्रीकांत चौधरी की तरफ देखा ।

अलबत्ता वह भोजन करते रहे ।

"सबसे पहले तो मैं यह बता दूं, हमारी कंपनी का नाम 'फ्रेण्ड्स कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर कंपनी' होगा ।" श्रीकांत चौधरी बोला- "इसके अलावा जो सबसे अहम बात है, वो ये है कि इस कंपनी के शेयर हम पांचों को छोड़कर किसी बाहरी आदमी को नहीं बेचे जाएंगे । अगर हममें से कोई किसी कारणवश अपने शेयर्स बेचना भी चाहेगा तो हम पांचों में से ही किसी को बेचेगा । यह सिर्फ और सिर्फ हम दोस्तों की कंपनी है । इस कंपनी में बाहर का कोई आदमी कभी भी हिस्सेदार नहीं बनेगा । यह बात खासतौर पर हमारी पार्टनरशिप डीड में भी लिखी जायेगी । इतना ही नहीं, यह शर्त हमारे वारिसों पर भी लागू होगी ।"

"वारिसों पर ? वो कैसे ?"

"हमारे बाद जब इस कंपनी की वारिस हमारी संताने बनेंगी ।" श्रीकांत चौधरी एक-एक बात खोलकर समझाता हुआ बोला- "तो वह भी इस कम्पनी के शेयर्स किसी बाहरी आदमी को नहीं बेच सकेंगी, बल्कि उनमें से किसी को अपने शेयर्स बेचने होंगे, तो आपस में ही उनकी

खरीद-फरोख्त होगी। मेरी इस पार्टनरशिप डीड से किसी को कोई ऐतराज हो तो वह बताए।"

कोई कुछ न बोला।

सब चुप रहे।

"यानी किसी को कोई ऐतराज नहीं ?"

"नहीं !" अर्जुन मेहता बोला- "ऐतराज का मतलब ही नहीं श्रीकांत, बल्कि यह तो हमारे लिए खुशी की बात है कि यह कंपनी सदा दोस्तों की कंपनी बनकर रहेगी। हमारी मजबूत और दृढ़ दोस्ती की यादगार बन कर रहेगी।"

"विजय, तुम्हें तो इस डीड से कोई ऐतराज नहीं है।"

"नहीं ! मुझे भी कोई ऐतराज नहीं है।"

इस प्रकार पार्टनरशिप डीड की बात भी उन पांच दोस्तों के बीच फाइनल हो गयी।

उस दिन जब वह आइलैण्ड से रुखसत हुए तो कंपनी की पूरी रुपरेखा बन चुकी थी।

□□□

"कमाण्डर !" अविनाश लोहार की बहुत गुमसुम और खोई-खोई सी आवाज गूंजी- "अब मैं तुम्हारी दो किरदारों से और मुलाकात कराने जा रहा हूँ। वह किरदार, जो इस कहानी का बड़ा अहम हिस्सा हैं, जिसके बिना यह कहानी पूरी नहीं होगी। सबसे पहले मैं आपकी पहले किरदार से मुलाकात कराता हूँ।"

"पहला किरदार ?"

"हाँ, पहला किरदार। उसका नाम प्रिया था।"

प्रिया, श्रीकांत चौधरी की जवान बेटी थी।

जैसाकि पहले ही बताया जा चुका है, श्रीकांत चौधरी अपने सभी दोस्तों में सबसे बड़ा था ।

कोई दस साल बड़ा ।

काफी पहले ही उसने शादी कर ली थी । उसका कारोबार ऑस्ट्रेलिया में जरूर था, लेकिन उसने शादी एक हिंदुस्तानी लड़की से ही की थी और इधर हिंदुस्तान में ही उसका परिवार रहता था ।

प्रिया बेहद खूबसूरत थी ।

जैसे संगमरमर की कोई प्रतिमा हो ।

या इंद्रलोक की कोई अप्सरा ।

प्रिया का रंग बहुत साफ-सुथरा था । नाक सुतवां और आँखें जैसे बादाम की गिरी ।

कुल मिलाकर प्रिया को देखकर कोई भी उसका दीवाना बन सकता था ।

वो चीज ही ऐसी थी ।

"और दूसरा किरदार ?" कमाण्डर करण सक्सेना कौतुहलतापूर्वक बोला- "दूसरा किरदार कौन था ?"

"दूसरा किरदार एक लड़का था कमाण्डर !" अविनाश लोहार की खोई-खोई सी आवाज गूंजी ।

"लड़का ?"

"हाँ, उसका नाम बबलू था ।" अविनाश लोहार बोला- "बबलू अनाथ था । उसका पालन-पोषण अनाथ आश्रम के अंदर हुआ था, लेकिन बबलू में एक बहुत बड़ी खूबी थी ।"

"क्या ?"

"कंप्यूटर उसका शौक था । काफी कम आयु में ही वह कंप्यूटर का मास्टर बन चुका था । उधर श्रीकांत चौधरी भी

"ल...लेकिन अगर वह बबलू तुम थे।" कमाण्डर करण सक्सेना विस्मित लहजे में बोला- "तो फिर तुम्हारा नाम अविनाश लोहार कैसे पड़ा ?"

"यह रहस्य की गुत्थी भी कहानी में आगे चलकर खुलेगी, परंतु फिलहाल आपको एक बात बतानी जरूरी है।"

"क्या ?"

"प्रिया इस बबलू से, इस अनाथ बबलू से प्यार करती थी।"

"ओह !"

कमाण्डर करण सक्सेना के दिमाग में सनसनी-सी मचती चली गयी।

नए-नए रहस्योद्घाटन हो रहे थे। नए-नए आश्चर्य सामने आ रहे थे।

□□□

एक तरफ जहाँ प्रिया और बबलू की मोहब्बत परवान चढ़ रही थी।

दीवानगी बढ़ रही थी।

वहीं दूसरी तरफ अब 'फ्रेण्ड्स कंप्यूटर सॉफ्टवेयर कंपनी' भी शुरु हो चुकी थी।

इतना ही नहीं, उस कंपनी ने आश्चर्यजनक तौर पर तरक्की की सीढ़ियां चढ़नी शुरु कर दी।

वह कंपनी किसी की भी कल्पना से ज्यादा धन कमाने लगी।

नागेंद्र पाल, विजय पटेल, शशि मुखर्जी और अर्जुन मेहता ने जो चार-चार करोड़ रुपए लगाए थे, वह चार करोड़

रुपए सोना उगलने लगे । उन चार करोड़ रुपयों से उनकी वार्षिक आय ही कई-कई करोड़ रुपये हो गयी ।

अर्जुन मेहता ने इस खुशी में सब दोस्तों को अपने घर पर पार्टी दी ।

उस पार्टी में श्रीकांत चौधरी नहीं आ सका था, क्योंकि वह उन दिनों ऑस्ट्रेलिया में था, लेकिन उसने फोन पर ही बात करके सबके साथ अपनी उपस्थिति दर्ज की ।

"सॉरी फ्रेंड्स !" श्रीकांत चौधरी बड़ी गरमजोशी के साथ बोला- "मुझे दुख है, खुशी के इस मौके पर मैं तुम लोगों के पास नहीं हूँ, लेकिन फिर भी मुझे इस बात पर गर्व है कि मैंने तुम लोगों को जो रास्ता दिखाया था, उस रास्ते पर चलकर तुम सब खुश हो ।"

"न सिर्फ खुश हैं ।" नागेंद्र पाल ने उत्साहपूर्वक कहा- "बल्कि बेहद खुश हैं श्रीकांत ! हमने कल्पना भी नहीं की थी कि वो कम्पनी इतना ज़बरदस्त धन कमाएगी ।"

"थैंक यू !"

"ऐसा ही कोई और प्रोजेक्ट हो मेरे भाई तो बताना ।"

श्रीकांत चौधरी हंसा ।

"लगता है राजनीति से ज्यादा तुम्हें अब व्यवसाय में रुचि होने लगी है मेरे दोस्त !"

"बिल्कुल ठीक कहा श्रीकांत ! बिल्कुल ठीक कहा ।" नागेंद्र पाल ने बेहिचक सच बात कबूल की- "मेरी अब बिजनेस में ही रुचि बढ़ रही है । राजनीति में क्या रखा है । जनता का मूड कब हमारी तरफ से खराब हो जाये, पता नहीं चलता । जीतना वैसे ही मुश्किल होता है । ऊपर से देश में हर साल इलेक्शन होने लगे हैं । ऐसे में बिजनेस ही सेफ है । बिजनेस ही सबसे बढ़िया रहता है ।"

श्रीकांत चौधरी पहले से भी ज्यादा जोर से हंसा ।

"हैरानी है । तुम्हारे जैसे संसद में हंगामा करने वाले नेता के ऊपर भी मेरे कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का असर हो रहा है ।"

"इसमें कोई शक नहीं, तुमने बढ़िया कारोबार में हाथ डाला है । खासतौर पर तुम्हारे इस कारोबार में भागीदार बनकर मैं तो बहुत खुश हूँ ।"

"थैंक यू ! मुझे भी खुशी है । मे यू ऑलवेज बी लकी माय फ्रेंड्स !"

श्रीकांत चौधरी ने उतने ही जोश और उत्साह के साथ अपने सब दोस्तों से बात की तथा उनकी खुशी में शामिल हुआ ।

वह सब प्रसन्न थे ।

फोन पर बात करने के बाद फिर पार्टी में सबसे पहले सेलिब्रेशन वाइन के तौर पर 'शैम्पेन' खोली गयी ।

चीयर्स !

चीयर्स ! !

मैनी हैप्पी रिटर्नस ऑफ द डे ।

फिर शैम्पेन से भरे गिलास उन चारों ने ही बड़े उत्साहपूर्वक एक दूसरे से टकराए ।

"सचमुच यह एक अच्छा कारोबार है ।" शशि मुखर्जी जैसा कामयाब फिल्म स्टार भी बड़े जोश के साथ बोला- "पिछले दो वर्ष के अंदर मैंने इस कंपनी में सिर्फ चार करोड़ रुपया लगाकर इतना धन कमाया है, जो अपनी पूरी जिंदगी में फिल्म इंडस्ट्री से नहीं कमा सका । हकीकत तो ये है, फिल्म इंडस्ट्री अब कोई बहुत अच्छा व्यवसाय नहीं रहा । साल भर में सिर्फ दो-तीन फिल्में ही हिट हो पाती हैं, बाकी तो सब घाटे का सौदा ही हैं । जबकि श्रीकांत चौधरी का

कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का यह बिजनेस एक बेहतरीन बिजनेस है । सबसे बड़ी बात यह है, इसकी सेल का नेटवर्क पूरी दुनिया के अंदर फैला हुआ है और कंप्यूटर का भविष्य काफी उज्जवल है ।”

“इसमें कोई शक नहीं ।” अर्जुन मेहता जैसा उद्योगपति भी तुरंत बोला- “बिजनेस मैंने भी काफी किया है और इस मद्रास शहर के अंदर लगी मेरी कई यूनिट बड़ा अच्छा कारोबार कर रही हैं, परंतु श्रीकांत चौधरी की कंपनी में सिर्फ दस परसेंट का पार्टनर बनकर मैंने जो धन कमाया है दोस्तों, वह तो आश्चर्यजनक है ।”

“मैं एक बात बोलूं मेरे भाई !” विजय पटेल, जो काफी देर से चुप था, उसने एकाएक बड़े अफसोस के साथ कहा ।

“बोलो ।”

“मुझे तो इस बात का दुख है कि मैंने श्रीकांत चौधरी की कंपनी में सिर्फ दस परसेंट का शेयर लगाया । मैंने तो इतना धन कमाने की कभी जिंदगी में भी नहीं सोची थी, जितना सिर्फ इन दो साल के अंदर कमा लिया है । काश ! मैंने अपना सारा धन उसी कंपनी में लगा दिया होता ।”

“लेकिन तब तो तुम्हें कम्पनी के अन्दर दस परसेंट शेयर्स लगाने से भी ऐतराज था ।”

“वह मेरी भूल थी, जिसका मुझे अभी तक अफसोस है । सच तो ये है, हम सभी ने कंपनी में बिल्कुल बराबर-बराबर का हिस्सेदार बनना चाहिये था ।”

कुल मिलाकर वह चारों उस कंपनी का शेयर होल्डर बनकर खुश थे ।

और !

बहुत ज्यादा खुश थे।

हालांकि वह चारों ही बहुत स्थापित आदमी थे, ग्लैमर की दुनिया से जुड़े हुए थे, परंतु फिर भी उन्होंने अपनी जिंदगी में इतना धन नहीं कमाया था, जितना तब एक झटके में कमा डाला था।

वह इतने खुश थे कि उन्हें अपना-अपना व्यवसाय बुरा नजर आने लगा था और वह पूरी तरह कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के कारोबार से जुड़ने की बात सोचने लगे थे।

फिर एक घटना घटी।

हृदयविदारक घटना।

श्रीकांत चौधरी की एकाएक मौत हो गयी। उसका ऑस्ट्रेलिया दौरे के दरम्यान ही हार्ट फेल हो गया था और फिर वहाँ से उसका शव एक चाटर्ड प्लेन के द्वारा हिंदुस्तान लाया गया।

श्रीकांत चौधरी की मौत ने उन चारों दोस्तों को झकझोर डाला।

और प्रिया !

प्रिया बेचारी तो अपने डैडी की मौत के बाद बिल्कुल अकेली रह गयी थी।

तन्हा !

उसकी मम्मी का काफी पहले ही एक बीमारी के दौरान देहान्त हो चुका था।

डैडी की मौत की खबर सुनकर तो वह बिल्कुल ही बिखर गयी।

वो खूब फूट-फूटकर हिड़कियों से रोई।

उसके संयम का बांध टूट गया।

ऐसा लगा, जैसे उसके आंसू अब थमेंगे नहीं।

उन मुश्किल परिस्थितियों में मैंने ही उसे दिलासा दी कमाण्डर !

क्योंकि अब यह 'बबलू' ही उसके सबसे नजदीक था।

यह बबलू ही था, जिससे प्रिया अपने दिल की कोई बात कह सकती थी। चारों दोस्तों की उपस्थिति में श्रीकांत चौधरी का दाह-संस्कार कर दिया गया।

उस दिन प्रिया सारी रात जागकर रोती रही।

रोती रही।

और, दुःखी मैं भी कम नहीं था।

क्योंकि श्रीकांत चौधरी ही वो इंसान था, जिसकी बदौलत मैं एक अनाथ और लावारिस जिंदगी से ऊपर उठकर समाज में इज्जत के साथ जिंदगी जीने वाला आदमी बना था।

□□□

फिर मुझे एक दृश्य याद आता है, जब श्रीकांत चौधरी के बाद 'फ्रेंड्स कंप्यूटर सॉफ्टवेयर कंपनी' की पहली बोर्ड की मीटिंग हुई।

मीटिंग हिंदुस्तान में ही हुई थी और उस मीटिंग ने एक तरह से हंगामा कर दिया।

चारों दोस्तों के अलावा उस मीटिंग में प्रिया भी शामिल हुई। प्रिया उस दिन बोर्ड की मीटिंग में मुझे अपने साथ लेकर गयी थी।

वह चारों दोस्त प्रिया के साथ मुझे देखकर चौंक पड़े, क्योंकि बोर्ड की मीटिंग में सिर्फ कंपनी के मालिकों को ही बैठने की परमिशन थी।

और मैं !

मैं तो कुछ भी नहीं था।

बल्कि मैं तो नौकर आदमी था।

प्रिया उस दिन उन चारों के सामने चेयरमैन की उस कुर्सी पर बैठी, जिस कुर्सी पर पहले खुद श्रीकांत चौधरी बैठता था। मैं प्रिया के बिल्कुल बराबर वाली कुर्सी पर बैठा और वह चारों उसके सामने बैठे। उस समय उन चारों के चेहरों से साफ जाहिर हो रहा था कि मेरी वहाँ उपस्थिति उन्हें सख्त नागवार गुजर रही है।

सब आश्चर्यचकित थे कि आखिर प्रिया मुझे वहाँ अपने साथ क्यों लेकर आयी है ?

वह उस बाबत कोई सवाल करते, उससे पहले प्रिया ने ही उन्हें जवाब दे दिया।

"मैं जानती हूँ अंकल !" प्रिया बोली- "एक अजनबी को आप मेरे साथ देखकर चौंक रहे होंगे, मैं सबसे पहले इनसे आपका परिचय कराती हूँ।"

चारों के चेहरे पर एकाएक कौतुहलता झलकने लगी।

जबरदस्त कौतुहलता।

वह आखिर मेरे बारे में जानने को बेहद बेचैन थे।

"इनका नाम बबलू है।" प्रिया बोली- "और यह हमारी हिंदुस्तान में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर बनाने वाली जो यूनिट लगी हुई है, उसके मैनेजर हैं।"

बबलू !

चारों चौंके !

उनकी निगाहें मेरे चेहरे पर ही आकर टिक गयीं।

"कहीं ये वही बबलू तो नहीं।" एकाएक अर्जुन मेहता बोला- "जो लड़का अनाथ था, मगर जिसकी दिलचस्पी कंप्यूटर में थी और फिर बाद में जब तुम्हारे डैडी की निगाह

इसीलिए मैंने सोचा, क्यों न पहले एक बार मिस्टर बबलू की आप लोगों के साथ एक मुलाकात करा दी जाये । ताकि आप एक दूसरे को भली-भांति पहचान लें ।”

“चेयरमैन ? कंपनी का चेयरमैन ?”

चारों उछल पड़े ।

इस तरह उछले, मानो जिस सीट पर वह बैठे थे, वो सीट एकाएक जलते हुए तवे में परिवर्तित हो गयी हो ।

आँखें गहन आश्चर्य से उबल पड़ीं ।

“च...चेयरमैन !” नागेन्द्र पाल खिसियानी सी हंसी हंसकर बोला- “लगता है तुम मजाक कर रही हो बेबी !”

“नहीं नागेंद्र अंकल !” प्रिया के चेहरे पर एकाएक सख्ती के भाव उभरे- “मैं मजाक नहीं कर रही । यह सच है । जल्द ही बबलू ‘फ्रेण्ड्स कंप्यूटर सॉफ्टवेयर’ नामक कंपनी का चेयरमैन बनेगा और इसी कुर्सी पर बैठेगा ।”

अब !

अब उन चारों ने एक-दूसरे की तरफ देखा ।

वह तुरंत भांप गये, मामला गंभीर है ।

बेहद गंभीर ।

“लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है ?” फिल्म स्टार शशि मुखर्जी थोड़ा उत्तेजित होकर बोला- “कोई भी बाहर का आदमी इस कंपनी का चेयरमैन कैसे बन सकता है ? तुमने शायद ‘फ्रेण्ड्स कंप्यूटर सॉफ्टवेयर’ कंपनी की पार्टनरशिप डीड नहीं पढ़ी । उस पार्टनरशिप डीड के मुताबिक यह कंपनी सिर्फ हम पांचों दोस्तों के लिए खोली गयी है । इस कंपनी के न तो शेयर्स किसी बाहरी आदमी को बेचे जा सकते हैं और न कोई बाहरी आदमी इस कंपनी के बोर्ड का मेंबर या चेयरमैन ही बन सकता है ।”

"मैंने वह पार्टनरशिप डीड पढ़ी है ।" प्रिया पहले की तरह संजीदा लहजे में बोली- "इतना ही नहीं, मैं उस पार्टनरशिप डीड का कोई उल्लघन भी नहीं करने वाली हूँ, क्योंकि मैं जानती हूँ कि यह कंपनी डैडी का सपना थी और यह पार्टनरशिप का क्लोज उन्होंने जानबूझकर डाला था, परंतु इस पार्टनरशिप डीड में एक बात और भी लिखी हुई थी अंकल, जिसे आप जानते होंगे ।"

"क्या ?"

"डीड में लिखा था कि अगर पांचों में से किसी पार्टनर की मृत्यु हो जाती है, तो उसके बाद उसका वारिस बोर्ड का मेंबर या चेयरमैन बनेगा ।"

"बिल्कुल ठीक ।" अर्जुन मेहता तुरंत बोला- "यह बात पार्टनरशिप डीड में लिखी हुई थी, लेकिन वारिस सिर्फ वारिस ।"

"मैं भी वारिस की ही बात कर रही हूँ, किसी और की बात नहीं कर रही ।"

"लेकिन बबलू श्रीकांत चौधरी का वारिस कहाँ है ?" विजय पटेल फौरन बोला ।

प्रिया के चेहरे पर पुनः मुस्कान उभर आयी ।

मुस्कान, जो गहरी होती चली गयी थी ।

"बबलू अभी तो वारिस नहीं है अंकल !" प्रिया और जबरदस्त रहस्योद्घाटन करते हुए बोली- "लेकिन वह बहुत जल्द डैडी की तमाम प्रॉपर्टी का वारिस बनने वाला है ।"

"वह कैसे ?"

"क्योंकि मैं !" प्रिया बोलते-बोलते ठिठकी, उसने एक-एक शब्द पर जोर देकर कहा- "मैं बबलू से शादी करने जा रही हूँ ।"

धमाका हो गया हॉल में ।

विस्फोट ।

सबकी आँखें फटी-की-फटी रह गयीं ।

“शादी !” शशि मुखर्जी हतप्रभ लहजे में बोला- “त...तुम बबलू से शादी करने वाली हो ?”

“यस अंकल !” प्रिया पूरी दिलेरी के साथ बोली- “मेरे शादी करते ही बबलू डैडी का दामाद बन जायेगा, श्रीमान चौधरी का दामाद ! और दामाद क्या वारिस नहीं होता, प्रॉपर्टी का वारिस ?”

सबके नेत्र फटे-के-फटे रह गये ।

चारों के दिमाग में बम गड़गड़ाते हुए गिरे ।

प्रिया ने वो शादी वाली एक ही बात कहकर पूरी की पूरी बाजी मेरे यानी ‘बबलू’ के हक में कर दी थी ।

□□□

शशि मुखर्जी, नागेंद्र पाल, अर्जुन मेहता और विजय पटेल, उन चारों को इस बात ने बुरी तरह झकझोर डाला था कि मैं उनकी प्रॉपर्टी का वारिस भी बन सकता हूँ ।

मैं !

जो एक अनाथ था ।

जो एक नौकर आदमी था ।

वह चारों उसके बाद शशि मुखर्जी के घर पर एकत्रित हुए ।

चारों ही उस समय काफी परेशान थे ।

“यह लड़की पागल हो गयी है ।” विजय पटेल सिगरेट का कश लगाते हुए गुर्रा उठा- “इश्क का भूत सवार हो गया है उसके ऊपर ।”

"सचमुच ।" नागेंद्र पाल ने भी गुस्से में कहा- "प्रिया का दिमाग ठिकाने पर नहीं है ।"

"मैं तो कहता हूँ ।" विजय पटेल बिफर कर बोला- "उस लड़की को इतनी भी अक्ल नहीं है कि वह किससे शादी करने जा रही है । बबलू, जिसके न घर-बार का कुछ पता है और न जाति-धर्म का । इसके अलावा हमारे लिए सबसे ज्यादा डूब मरने की बात तो ये है कि वह आदमी हमारा बॉस बनेगा । हमारी कंपनी का चेयरमैन बनेगा । विजय पटेल, जो क्रिकेट जगत की एक हस्ती है, जिसके आज दुनिया में लाखो-करोड़ों फैन हैं, उस विजय पटेल को भी उससे बॉस जैसा बर्ताव करना पड़ेगा । व्हाट ए शेम ! इससे तो अच्छी यह बात है कि मेरे जैसा आदमी आत्मदाह कर ले ।"

"वाकई यह बड़ी शर्मनाक स्थिति है ।" फिल्म स्टार मुखर्जी भी बोला- "हम अपने-अपने क्षेत्र की इतनी प्रसिद्ध और गणमान्य हस्तियां हैं, लेकिन वह कल का लड़का एकदम से हमारा बॉस बन जायेगा ।"

"उससे भी ज्यादा शर्मनाक तो ये है मेरे भाई ।" समाजवादी नेता नागेंद्र पाल अपनी ही ट्यून में बोला- "कि वह लड़का महज इसलिये हमारा बॉस बन जायेगा, क्योंकि प्रिया उससे शादी कर रही है । कितनी हास्यास्पद बात है, सिर्फ प्रिया के गलत फैसले के कारण खुद हमारे लिए भी इतना बड़ा बवाल होने वाला है ।"

"वाकई !" उन सबमें सबसे ज्यादा शांत रहने वाले उद्योगपति अर्जुन मेहता ने भी कहा- "यह हमारे लिए बड़ी अजीब स्थिति है और हमें इसका कोई समाधान ढूंढना पड़ेगा ।"

"लेकिन इसका समाधान क्या हो सकता है ?"

"यही तो सोचने की बात है ।"

"इसके अलावा एक बात आप लोग और समझ लें ।" नागेंद्र पाल बोला ।

"क्या ?"

"इस समस्या का कोई समाधान भी हमें जल्दी ढूंढना होगा, क्योंकि प्रिया आनन-फानन शादी करने के मूड में है ।"

"इसमें कोई शक नहीं !" शशि मुखर्जी ने भी कबूल किया- "उसने आज जिस तरह बबलू से हमारा परिचय कराया, उसका वो अंदाज बता रहा है कि वो जल्द ही उससे शादी करेगी ।"

"लेकिन हम इस शादी को रोक कैसे सकते हैं ?"

"देखिए !" अर्जुन मेहता एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला- "शादी तो हमें रोकनी पड़ेगी ।"

"मगर कैसे ?"

"यही सोचना है ।"

सब गंभीरता की प्रतिमूर्ति बनकर खामोश बैठ गये और सोचने लगे, उस समस्या का क्या समाधान किया जाये ?

वह सोचते रहे ।

सोचते रहे ।

"देखो दोस्त !" नागेन्द्र पाल ने अपनी अक्ल के घोड़े दौड़ाए- "इस समस्या का सिर्फ एक ही हल है ।"

"क्या ?"

"हम अकेले में प्रिया से मिलें और उसे समझाने की कोशिश करें कि बबलू उसके स्तर का लड़का नहीं है ।"

"क्या हमारे समझाने से वो समझ जायेगी ?" शशि मुखर्जी की आवाज में आशंका थी ।

"शायद वो समझ जाये ।"

"और अगर वह न समझी ?"

"तब-की-तब देखेंगे । फ़िलहाल कोशिश करके तो देखी जा सकती है ।"

"ठीक बात है । कोशिश करके देखने में कोई हर्ज नहीं ।"

□□□

वह शनिवार का दिन था और रात के दस बज रहे थे, जब चारों प्रिया के घर पर पहुंचे और उससे मुलाकात की ।

नागेंद्र पाल एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया था ।

शशि मुखर्जी और विजय पटेल प्रिया से थोड़ा फासले पर फायर प्लेस के नजदीक खड़े रहे । विजय पटेल उस समय सिगरेट पी रहा था ।

जबकि उद्योगपति अर्जुन मेहता बड़े स्नेहपूर्ण अंदाज में प्रिया के नजदीक पहुँचा । प्रिया से बात करने की जिम्मेदारी उसे ही सौंपी गयी थी, क्योंकि उन चारों में प्रिया के सबसे ज्यादा करीब अगर कोई था, तो वह था ।

"बेटी ।" अर्जुन मेहता प्रिया के नजदीक पहुँचकर थोड़े भावनामयी लहजे में बोला- "एक बात तो तुम मानती हो ।"

"क्या ?"

"हम चारों तुम्हारे पिता की तरह हैं और तुम्हारा हर अच्छा-बुरा सोचने की सलाहियत रखते हैं ।"

"इसमें कोई शक नहीं ।" प्रिया टुकुर-टुकुर उन्हें देख रही थी ।

शायद वो नहीं समझ पा रही थी, वह चारों इतनी रात गये उसके पास क्यों आये हैं ।

"हम तुमसे कुछ कहना चाहते हैं ।" अर्जुन मेहता थोड़ा रुककर पुनः बोला- "और हमें उम्मीद है कि तुम हमारी बात मानोगी ।"

"क्या कहना चाहते हैं आप लोग ?" प्रिया ने बड़े सस्पेंसफुल अंदाज में उन चारों की तरफ देखा । वह बड़ा अजीब-सा महसूस कर रही थी ।

"दरअसल जबसे तुमने हमें यह बताया है कि तुम बबलू से शादी करने वाली हो, तबसे हम परेशान हैं ।" अर्जुन मेहता उसके नजदीक खड़े-खड़े बोला ।

"क्या परेशानी है ?"

"क्योंकि बबलू तुम्हारे योग्य पति नहीं है । उसके तो जात-पात और धर्म के बारे में भी कुछ मालूम नहीं है कि वह कौन है, उसका परिवार क्या है ।"

"सिर्फ उसके परिवार के बारे में न पता होना ही बबलू का कोई जुर्म नहीं हो सकता अंकल !" प्रिया तीव्र स्वर में बोली- "जहाँ तक बबलू का सवाल है, उसे मैं अच्छी तरह जानती हूँ । वह एक बेहद काबिल लड़का है ।"

"लेकिन तुम उस बबलू के पीछे ही हाथ धोकर क्यों पड़ी हुई हो बेबी !" नागेंद्र पाल दूर से ही कुर्सी पर बैठा-बैठा बोला- "आखिर इस दुनिया में लड़कों की कोई कमी थोड़े ही है ।"

"फिर श्रीकांत चौधरी का उद्योग जगत में एक रुतबा है ।" शशि मुखर्जी भी बोला- "पोजीशन है । ऐसी

परिस्थिति में क्या यह मुनासिब होगा कि श्रीकांत चौधरी की बेटी ऐसे लड़के से शादी करें ?”

“हम सब लोग तुम्हारे शुभचिंतक हैं बेटी ।” विजय पटेल भी बोला- “हम अगर यह बात तुमसे कह रहे हैं, तो तुम्हारी भलाई के लिए ही कह रहे हैं । आखिर श्रीकांत अब इस दुनिया में मौजूद नहीं है, अब हमने ही तुम्हारे अच्छे-बुरे का ख्याल रखना है ।”

“हो सकता है कि आप सब लोग सही हों अंकल !” प्रिया दृढ़ लहजे में बोली- “लेकिन मैं जानती हूँ, बबलू एक अच्छा लड़का है । उससे शादी करने का फैसला करके मैं कोई गलती नहीं कर रही हूँ ।”

“यह तुम्हारा वहम है ।” अर्जुन मेहता गुर्राया- “बबलू से शादी करने का फैसला तुम्हारी जिंदगी का सबसे गलत फैसला है । तुम नहीं जानती, तुम कितने बड़े बिजनेस एंपायर की मालकिन हो । यह भी हो सकता है कि बबलू की निगाह तुम्हारी दौलत पर हो ।”

“अंकल !” प्रिया अपमानित लहजे में बोली- “आप यह सब मेरे होने वाले पति के बारे में कह रहे हैं ।”

“बेटी ! तुम हमें गलत समझ रही हो ।” अर्जुन मेहता बोला- “हमारी बबलू से कोई दुश्मनी नहीं है । हम सिर्फ इतना चाहते हैं कि तुम किसी अच्छे लड़के से शादी करो । बबलू को छोड़कर तुम जिस लड़के की तरफ अंगुली उठा दोगी, हम तुम्हारी उसी से शादी करा देंगे ।”

“नहीं अंकल !” प्रिया पूर्ववत् लहजे में बोली- “मैं अगर शादी करूंगी, तो बबलू से और फिर आप नहीं जानते, डैडी को भी बबलू बहुत पसंद था ।”

"पसंद था। मैं भी मानता हूँ कि पसंद था।" शशि मुखर्जी बोला- "मगर एक वर्कर के तौर पर पसंद था, एक एम्पलाई के तौर पर पसंद था। शायद तुम नहीं जानती, एक एम्पलाई और एक दामाद में जमीन-आसमान का फर्क होता है। जो एम्पलाई है, जरूरी नहीं कि वो अच्छा दामाद भी बन जाये।"

"देखिए अंकल ! अगर आप लोग सिर्फ और सिर्फ बबलू के बारे में बात करने आये हैं, तो आई एम वेरी सॉरी। मैं इस सिलसिले में कोई बात नहीं करना चाहती।"

"क्यों ?"

"क्योंकि बबलू से शादी करने का मेरा फैसला बिल्कुल अटल फैसला है। मैं अगर शादी करूंगी, तो सिर्फ उसी से। इसके अलावा मैं एक लाइन में आप लोगों को एक बात और बता दूं, मेरे इस फैसले को दुनिया की कोई ताकत नहीं बदल सकती।"

चारों ने अब बेहद सकते जैसी हालत में एक दूसरे की तरफ देखा।

वो भांप गये, वहाँ अब उनका रुकना मुनासिब नहीं है।

□□□

"एक बात तो तुम सब लोग बहुत अच्छी तरह समझ लो मेरे भाई !" समाजवादी नेता नागेंद्र पाल अपनी ही ट्यून में बोला।

"क्या ?"

"यह लड़की किसी भी हालत में हमारी बात मानने वाली नहीं है। यह उन बेवकूफ और बेहद उदंड किस्म की लड़कियों में से एक है, जिनके ऊपर इश्क का भूत जब एक

बार सवार हो जाता है, तो फिर उन्हें दुनिया जहान की कोई परवाह नहीं रहती ।”

प्रिया से मुलाकात करने के बाद वह चारों पुनः एक जगह एकत्रित हुए थे ।

प्रिया के शादी वाले मामले ने उन्हें बुरी तरह झंझोड़ा हुआ था और वो अभी भी चिंतित थे ।

“सच तो ये है दोस्तों !” क्रिकेटर विजय पटेल थोड़ा तुनककर बोला- “मुझे इस बात का अंदाजा पहले से ही था कि प्रिया हमारी बात नहीं मानेगी ।”

“क्यों ?”

“क्योंकि वह जिद्दी लड़की है और उसके जिद्दीपन का एहसास उसके चेहरे से ही होता है ।”

“बहरहाल इस सारी बहस को यहीं खत्म किया जाये ।” शशि मुखर्जी आंदोलित लहजे में बोला- “अब हमें यह सोचना है कि हम लोग आगे करें तो क्या करें । क्योंकि यह तो किसी हालत में नहीं हो सकता कि वह दो टके का लड़का बबलू हमारी कंपनी का चेयरमैन बन जाये, हमारा बॉस बन जाये और हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें ।”

“परंतु अब हम लोग कर भी क्या सकते हैं ?”

“कुछ-न-कुछ तो हमें करना ही होगा ।”

“लेकिन क्या ?” अर्जुन मेहता बोला- “वो कुछ क्या है, यह भी तो हमें पता चले ।”

“एक तरीका मैं बताता हूँ ।” नागेंद्र पाल कुछ सोच-विचार कर बोला ।

फौरन सबकी निगाहें नागेंद्र पाल की तरफ उठ गयीं ।

नागेंद्र पाल, जिसके चेहरे से उस समय थोड़ी हिचकिचाहट झलक रही थी ।

“हाँ ! यही तरीका है ।” नागेंद्र पाल सख्ती के साथ बोला- “जब नासूर हद से ज्यादा बढ़ जाये, तो उसका एक ही इलाज होता है कि उसमें चीरा लगा दिया जाये ।”

“लेकिन किसी की हत्या करना कोई हंसी-खेल नहीं होता नागेंद्र पाल !” अर्जुन मेहता बोला ।

“अगर हंसी खेल नहीं होता, तो कुछ मुश्किल भी नहीं होता । किसी को रास्ते से किस तरह हटाया जाता है, यह कोई राजनेताओं से पूछे ।”

“इसमें कोई शक नहीं । राजनेता इस मामले में एक्सपर्ट होते हैं ।”

“अगर इजाजत हो ।” क्रिकेटर विजय पटेल, जो बहुत देर से चुप था, एकाएक बोला- “तो मैं भी कुछ कहूँ ?”

“क्यों नहीं ।”

“मुझे तो नहीं लगता बबलू की हत्या कराने से कुछ होगा ।”

सब पुनः बुरी तरह चौंक पड़े ।

वह एक नया रहस्योद्घाटन था ।

“क्यों ?” नागेंद्र पाल हैरानी से बोला- “बबलू की हत्या कराने से कुछ क्यों नहीं होगा ?”

“क्योंकि हमारी समस्या बबलू नहीं है मेरे भाई ! बल्कि हमारी असली समस्या प्रिया है प्रिया, जो एक पागल लड़की है और बेहद इश्कियाई हुई लड़की है । अगर हम बबलू का मर्डर करा देंगे, तो प्रिया फिर किसी और लड़के की मोहब्बत में गिरफ्तार हो जायेगी तथा जैसी वो इश्कियाई हुई है, ऐसी हालत में उसकी पसंद फिर कोई बबलू जैसा ही थर्ड क्लास लड़का होगा । क्या मैं गलत कह रहा हूँ ?”

तीनों अब एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे ।

बेहद हैरानी से ।

"जरा सोचिए दोस्तों !" विजय पटेल ने एक-एक शब्द पर जोर देकर कहा- "अगर ऐसे हालात में हमने बबलू की हत्या करा भी दी, तो क्या फर्क पड़ेगा ? हमारे लिए तो फिर एक दूसरा बबलू पैदा हो जायेगा ।"

तीनों विजय पटेल के तर्क से साफ-साफ प्रभावित दिखाई पड़े ।

बात अपनी जगह ठीक थी ।

सही थी ।

"बात में तो दम है ।" शशि मुखर्जी भी बोला- "वाकई बबलू की हत्या कराने से हमारी समस्या का मुकम्मल हल नहीं होगा । अलबत्ता थोड़े-बहुत दिन के लिए हमारी सिरदर्दी कुछ कम जरूर हो सकती है ।"

"फिर इस समस्या का क्या हल है ?"

"हल भी मेरे पास है ।" क्रिकेटर विजय पटेल बोला- "और हल भी सॉलिड है । पक्का हल ।"

"क्या ?"

"इस समस्या की मूल जड़ में बबलू नहीं है बल्कि प्रिया है, इसलिये हमें बबलू के स्थान पर सीधे-सीधे प्रिया की हत्या करनी होगी ।"

"प्रिया की हत्या ?"

सब उछल पड़े ।

सबके शरीर में मानो चार सौ चालीस वोल्ट का करंट दौड़ गया ।

"य... यह तुम क्या कह रहे हो विजय ?" अर्जुन मेहता अचरजपूर्वक बोला- "हम प्रिया की हत्या करें ? अपने ख़ास दोस्त की बेटी की हत्या करें ?"

"मैं भी जानता हूँ, वो श्रीकांत की बेटी है ।" क्रिकेटर विजय पटेल बोला- "और श्रीकांत से जितना तुम सब लोगों को प्यार था, उतना ही मुझे भी था । मगर अब मजबूरी है, क्योंकि प्रिया को अपने रास्ते से हटाए बिना हम कम-से-कम इस समस्या का कोई मुकम्मल हल नहीं ढूंढ सकते । वो जब तक जिंदा रहेगी, हमेशा हमारी सिरदर्दी बनी रहेगी । वैसे भी प्रिया की हत्या से हमें कई फायदे हैं ।"

"कई फायदे ?"

तीनों का दिमाग भी अब पूरी तरह सक्रिय हो उठा था ।

वह अपलक विजय पटेल की तरफ देख रहे थे ।

"क्या फायदे हैं ?" सबसे पहले नागेंद्र पाल ने पूछा ।

"पहला फायदा तो यही है ।" विजय पटेल बोला- "कि फिलहाल हमारे सामने जो समस्या आकर खड़ी हो गयी है, वह समस्या खत्म हो जायेगी । इसके अलावा प्रिया की हत्या से हमें जो दूसरा बड़ा फायदा है दोस्तों, वो ये है कि 'फ्रेण्ड्स कंप्यूटर सॉफ्टवेयर' कंपनी में श्रीकांत चौधरी के नाम जो साठ परसेंट के शेअर्स हैं, वो हमें मिल जाएंगे, क्योंकि कंपनी की पार्टनरशिप डीड के मुताबिक हम पांच दोस्तों और उनके वारिसों के अलावा कोई बाहर का आदमी इस कंपनी का मालिक नहीं बन सकता । ऐसे हालात में श्रीकांत चौधरी का कोई निकट संबंधी भी उन साठ परसेंट शेयर्स के लिए हमारे ऊपर दावा नहीं कर सकेगा ।"

साठ परसेंट शेयर्स ।

उस दूसरे फायदे ने उन सबको चौंकाकर रख दिया ।

क्योंकि उस सॉफ्टवेयर कंपनी में वह दस-दस परसेंट शेयर लगाकर ही बेहद खुश थे और अब पन्द्रह-पन्द्रह परसेंट शेयर्स हाथ लग जाना तो किसी बड़ी लॉटरी निकलने के समान ही था ।

सब पुनः एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे ।

उस वक्त उन सबकी आंखों में गजबनाक लालच की चमक थी ।

"बोलिए !" क्रिकेटर विजय पटेल उनमें से एक-एक के चेहरे को पढ़ता हुआ बोला- "आपको समस्या का यह समाधान कैसा लगा ?"

"समाधान थोड़ा खतरनाक जरूर है ।" अर्जुन मेहता शुष्क लहजे में बोला- "लेकिन फिर भी बेहतर है, उचित है । और बबलू का क्या करेंगे हम ?"

"बबलू को रास्ते से हटाने का भी एक बड़ा अच्छा तरीका मेरे पास है ।" विजय पटेल ने मानो उस मामले में एक-एक पहलू को खूब अच्छी तरह ठोक बजाकर देखा हुआ था ।

"क्या तरीका है ?"

विजय पटेल ने बबलू को भी रास्ते से हटाने का तरीका बताया ।

वह तरीका पहले तरीके से भी ज्यादा जबरदस्त था ।

शशि मुखर्जी, नागेंद्र पाल और अर्जुन मेहता, तीनों की आंखों में विजय पटेल के प्रति प्रशंसा के भाव उभर आये ।

फिर पत्ते फैलाए गये । योजना के पत्ते ! प्रिया को रास्ते से हटाने के लिए उन्होंने सब-कुछ काफी योजनाबद्ध अंदाज में किया ।

श्रीकांत चौधरी का दिल्ली में महरौली के पास एक काफी बड़ा फार्म हाउस था, जो ज्यादातर बंद रहता था । श्रीकांत चौधरी ने उसे कभी सिर्फ पैसा इन्वेस्ट करने के लिहाज से खरीदा था । फार्म हाउस कई एकड़ भूमि में फैला था और फिलहाल बहुत खंडहर हालत में था, इसलिये श्रीकांत चौधरी ने वहाँ देखभाल करने के लिए कोई केयर-टेकर वगैरह भी नहीं रखा हुआ था ।

एक दिन शाम के समय वह चारों अपनी-अपनी कारों में सवार होकर उसी फार्म हाउस में पहुंचे ।

चारों बहुत संभलकर वहाँ आये थे ।

इतना ही नहीं, उन्होंने इस बात का भी खास ख्याल रखा था कि फार्म हाउस के अंदर आते-जाते हुए किसी की उनके ऊपर नजर न पड़े । विशेष रूप से शशि मुखर्जी और विजय पटेल ने तो इस बात का कुछ ज्यादा ही ख्याल रखा कि कोई उन्हें न देखने पाए क्योंकि वह फिल्म और क्रिकेट जगत की हस्तियां थे, पब्लिक फीगर थे और आम आदमी उन्हें एक नजर देखते ही पहचानता था ।

कुल मिलाकर वह चारों कुशलतापूर्वक वहाँ पहुँचने में कामयाब रहे ।

उनके लगभग साथ-साथ ही प्रिया भी वहाँ पहुंची । वो अपनी कीमती बी.एम.डब्ल्यू.कार में आई थी और उसके साथ मैं भी था ।

मैं !

यानी बबलू !

मुझे प्रिया के साथ देखकर उन चारों की भृकुटी थोड़ी तनी, मगर उन्होंने कहा कुछ नहीं ।

बल्कि उस दिन वह खुशी-खुशी हमसे मिले ।

"मैं एक बात नहीं समझ पा रही हूँ ।" प्रिया अपनी बी.एम.डब्ल्यू. कार से बाहर निकलते हुए बोली- "कि आप लोगों ने मुझे यहाँ किसलिए बुलाया है ?"

प्रिया के चेहरे पर उस समय कुछ सस्पेंसफुल भाव थे । सुबह ही उसके पास अर्जुन मेहता का टेलीफोन आया था कि वह शाम पांच बजे महरौली वाले फार्म हाउस पर पहुंचे ।

"क्यों ?" प्रिया ने पूछा ।

"यह बात शाम को ही बताई जायेगी ।"

अर्जुन मेहता के उस जवाब ने प्रिया को थोड़ा उलझाकर रख दिया था ।

वो बेचैनी अनुभव करने लगी ।

"बात कोई बहुत ज्यादा खास नहीं है ।" समाजवादी नेता नागेंद्र पाल कार में बैठे-बैठे बोला- "दरअसल श्रीकांत हमसे इस फार्म हाउस की तारीफ बहुत करता रहता था, हमने सोचा कि क्यों न एक बार इस फार्म हाउस को ही देखा जाये । हमने कुछ गलत तो नहीं किया ?"

"नहीं ! इसमें गलत ही क्या है ।" प्रिया बोली- "सच तो ये है, एक बार मैं भी यहाँ आना चाहती थी ।"

प्रिया ने अपने पर्स में से चाबी निकाली और आगे बढ़कर फार्म हाउस का मेन गेट खोला ।

मेन गेट काफी भारी-भरकम था और लोहे की मजबूत चादर का बना हुआ था । मेन गेट को खोलने-बंद करने के

लिए जमीन में एक ट्रेक बना हुआ था, जिस पर गेट के नीचे लगे पहिए आगे-पीछे सरकते थे ।

प्रिया ने ताला खोलने के बाद गेट को अंदर की तरफ धकेला, तो वह विशालकाय पहाड़-सा दरवाजा खुलता चला गया और फार्म हाउस नजर आने लगा, जहाँ चारों तरफ अव्यवस्था का साम्राज्य नजर आ रहा था ।

जगह-जगह जंगली घास उग आई थी ।

पेड़-पौधे भी बदतर हालत में थे । इसके अलावा सामने दस-बारह कमरों का जो एक दोमंजिला मकान बना हुआ था, उसका भी प्लास्टर जगह-जगह से उखड़ गया था और पुताई की पपड़ी जम गयी थी । ऐसा मालूम होता था, वहाँ बीस साल से कोई नहीं रहता था ।

मेन गेट खुलते ही सब अपनी-अपनी गाड़ियां ड्राइव करते हुए फार्म हाउस के अंदर ले गये ।

प्रिया ने भी अपनी कार अंदर ले जाकर पार्क की ।

फिर सब अपनी-अपनी कार से नीचे उतरे ।

"जगह तो वाकई शानदार है ।" फिल्म स्टार शशि मुखर्जी भी बड़े मंत्रमुग्ध अंदाज में चारों तरफ नजरें दौड़ाता हुआ बोला- "मैंने सोचा भी नहीं था कि दिल्ली के महरौली जैसे पॉश एरिये में किसी एक आदमी के पास इतनी जगह भी हो सकती है ।"

"जहाँ तक मैं समझता हूँ ।" क्रिकेटर विजय पटेल बोला- "यह इस इलाके का सबसे बड़ा फार्म हाउस होना चाहिये ।"

"आपने बिल्कुल ठीक अंदाजा लगाया अंकल !" प्रिया ने गर्व के साथ कहा- "वाकई यह इस इलाके का सबसे बड़ा फार्म हाउस है ।"

"मैं तो कहता हूँ मेरे भाई !" नागेंद्र पाल अपनी ही ट्यून में बोला- "जितनी बड़ी यह जगह है, इतनी जगह में तो कोई अच्छी-खासी बड़ी फैक्ट्री भी लग सकती है ।"

"इसमें कोई शक नहीं ।" अर्जुन मेहता बोला- "फैक्ट्री तो वाकई यहाँ बड़ी लाजवाब लगेगी ।"

मैं यानी 'बबलू' इस दौरान बिल्कुल चुप था ।

एकदम खामोश ।

मैं सिर्फ उनकी बातें सुन रहा था ।

मेरी खामोशी की वजह भी शायद ये थी, क्योंकि मैं जानता था कि वह चारों मुझे पसंद नहीं करते हैं ।

वह सब आपस में बातचीत करते और जोर-जोर से ठहाके लगाते हुए धीरे-धीरे फार्म हाउस में बने दो मंजिले मकान की तरफ बढ़ने लगे ।

तभी मेरी निगाह उन चारों की एक ऐसी हरकत पर पड़ी, जिसे देखकर मैं चौंक उठा ।

और !

चौंका भी बुरी तरह !

बात थी भी चौंकाने वाली !

मैंने देखा उन चारों ने अपने हाथों पर बहुत पतले-पतले बारीक रबर के स्किन फिट दस्ताने चढ़ाए हुए थे । दस्तानों का रंग बिल्कुल उनकी त्वचा के रंग जैसा ही था ।

एक तो यही मालूम नहीं पड़ता था कि उन चारों ने दस्ताने भी पहने हुए हैं ।

"मैं आप लोगों से एक बात पूछ सकता हूँ ?" उन दस्तानों को देखकर मैं अपने मन में पैदा हुई उत्कंठा रोके बिना न रह सका ।

"क्या बात ?" नागेंद्र पाल ने मेरी तरफ देखा ।

बाकी तीनों और प्रिया की नजरें भी मेरी तरफ उठीं।

"आप लोगों ने हाथों में दस्ताने क्यों पहने हुए हैं ?"

मेरा सवाल सुनकर उन चारों के चेहरे कुछ क्षण के लिए एकदम फक्क पड़ गये।

जैसे किसी ने उन्हें चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया हो।

"द...दस्ताने ?" क्रिकेटर विजय पटेल एकदम से हड़बड़ाकर बोला- "दस्ताने तो हमने यूं ही पहने हुए हैं, सुरक्षा के लिए।"

"कैसी सुरक्षा ?"

विजय पटेल हड़बड़ाहट में कोई गलत जवाब देता, उससे पहले ही शशि मुखर्जी बोल पड़ा।

"द...दरअसल तुम्हें तो मालूम ही है।" शशि मुखर्जी तुरंत बोला- "आजकल देश में एड्स का प्रभाव बहुत बढ़ रहा है। उसी एड्स के प्रभाव से बचने के लिए हम चारों ने फैसला किया है कि अब हम लोग हमेशा यह स्कीन फिट दस्ताने पहना करेंगे।"

"इससे क्या होगा ?"

मैं चौंका।

मेरे चेहरे पर आश्चर्य के भाव नमूदार हुए।

"इससे हाथों से हमारे शरीर में एड्स के कीटाणु पेट के अंदर नहीं जाएंगे।"

"फिर तो लगता है।" मैं विस्मयपूर्वक बोला- "आप लोगों को एड्स के बारे में बड़ी गलत जानकारी है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि एड्स कोई छूत की बीमारी नहीं है एवरीबडी! जिसके कीटाणु सिर्फ हाथ मिलाने से ही किसी दूसरे के

शरीर में प्रविष्ट हो जाएं और इस बात का विज्ञापन सरकार द्वारा जगह-जगह होर्डिंग तथा पोस्टर लगाकर किया जाता है, ताकि आम आदमियों के बीच किसी भी तरह की कोई गलतफहमी न पैदा हो। जबकि आप तो बहुत ज्यादा पढ़े-लिखे लोग हैं और इस देश की सम्मानित हस्तियां हैं।"

"फिर भी सावधानी बरतने में तो कुछ जाता ही नहीं है या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ ?"

मैं चुप ही रहा।

मैं कुछ न बोला।

परंतु दस्ताने पहनने के पीछे फिल्म स्टार शशि मुखर्जी ने जो दलील दी थी, वह मेरे हलक से नीचे नहीं उतरी थी।

इतने सीधे तो वह लोग नहीं थे, जो ऐसी साधारण जानकारी न रखते हों।

जरूर कुछ और बात थी।

जरूर कोई और माजरा था।

मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा, क्योंकि इतना तो मैं समझ ही चुका था कि वह लोग कोई बहुत भले आदमी नहीं है।

□□□

हम सभी फार्म हाउस के लंबे-चौड़े ड्राइव वे पर टहलते हुए पिछले हिस्से में पहुंचे और फार्म हाउस में दूर-दूर तक दृष्टिपात किया।

जगह वहाँ वाकई खूब थी।

दिल्ली शहर के बिल्कुल बीच में इतनी विशालकाय जगह ने मुझे भी प्रभावित किया।

जबकि वह चारों फार्म हाउस में इधर से उधर टहलते घूम रहे थे और एक-एक इंच जगह मानो अपनी खुर्दबीन जैसी निगाहों से देख रहे थे । साफ लग रहा था कि वह लोग नाटक कर रहे हैं, ड्रामा कर रहे हैं ।

हकीकतन वह सब वहाँ टाइम पास कर रहे थे ।

फार्म हाउस में टहलते-टहलते जब वह सब थक गये, तो वह सब दो-मंजिले मकान में दाखिल हुए, जो फार्म हाउस के बीच में बना हुआ था और खस्ता हालत में था ।

उस मकान के बाहर भी ताला लगा था ।

प्रिया ने ही आगे बढ़कर उस मकान का ताला खोला और सबसे पहले अंदर वो दाखिल हुई । मकान में चारों तरफ धूल का अंबार था । जगह-जगह जाले लगे हुए थे । प्रिया उस मकान में ज्यादा अंदर नहीं गयी । ग्राउंड फ्लोर पर नजदीक में ही एक कमरा था । प्रिया ने उस कमरे का दरवाजा भी खोला । वह कमरा एकदम साफ-सुथरा पड़ा हुआ था । वहाँ काफी सारी कुर्सियां भी थीं । एक टेबल भी था और लाइट का इंतजाम भी था । वहीं एक फ्रीज भी रखा हुआ था, जिसमें खाने-पीने की वस्तुएं थीं ।

सब उस कमरे में जाकर अलग-अलग कुर्सियों पर बैठ गये ।

"यह सारा इंतजाम यहाँ डैडी ने किया हुआ है ।" प्रिया भी उन सब के साथ-साथ एक कुर्सी पर बैठते हुए बोली- "जब कभी वो इस फार्म हाउस पर आते थे, तो थोड़ा बहुत समय इसी कमरे में बिताते थे ।"

"जगह तो वाकई अद्भुत है ।" नागेंद्र पाल मंत्रमुग्ध लहजे में बोला ।

"मैं तो कहता हूँ ।" अर्जुन मेहता ने भी अपनी व्यावसायिक बुद्धि दौड़ाई- "तुम्हें इस बेहतरीन जगह का कोई-न-कोई इस्तेमाल जरूर करना चाहिये बेबी ! यह कोई अकलमंदी की बात नहीं कि इस जगह को यूं ही खंडहरों की तरह पड़ा रहने दो ।"

"जगह का भी कुछ-न-कुछ इंतजाम हो जायेगा ।" प्रिया बोली- "पहले मैं आप लोगों को कुछ पिलाती हूँ ।"

"क्यों नहीं ?"

"बोलिए, क्या पिएंगे ?"

"इस वीराने में तो जो मिल जाये, वही अमृत होगा ।"

"ऐसी कोई बात नहीं मैंने बताया न, डैडी ने यहाँ ऐसे कई इंतजाम करके रखे हुए हैं ।"

प्रिया कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गयी ।

फिर वह फ्रिज के नजदीक पहुंची । उसने फ्रिज खोला । फ्रिज खोलते ही उसके अंदर कई तरह के पेय पदार्थ चमके । प्रिया उनमें से सॉफ्ट ड्रिंक की एक बोतल और फ्रीज के ऊपर रखे डिब्बे में से बेहद खूबसूरत कटिंग वाले छः गिलास निकाल लायी ।

उसके बाद उसने सॉफ्ट ड्रिंक के गिलास तैयार किए ।

अभी तक पूरा माहौल बिलकुल सहज बना हुआ था ।

लेकिन !

न जाने क्यों मेरा दिल डर रहा था ।

मुझे लग रहा था, कोई-न-कोई अनिष्ट कार्य वहाँ जरूर होने वाला है ।

□□□

अनिष्ट हुआ ।

“आज की शाम का यह पहला ड्रिंक तुम्हारी शादी की खुशी में।” क्रिकेटर विजय पटेल बड़ी गरमजोशी के साथ बोला- “तुम्हारी शादी के नाम।”

“थैंक यूं।”

सबने सॉफ्ट ड्रिंक से लबालब भरे अपने-अपने गिलास उठा लिए।

सिर्फ मुझे छोड़कर !

मैंने अपना गिलास नहीं उठाया।

“क्या बात है बबलू ?” फिल्म स्टार शशि मुखर्जी ने बड़ी पैनी निगाहों से मुझे घूरा- “क्या तुम्हें अपनी शादी से खुशी नहीं ?”

“य...यह आप क्या कह रहे हैं ?” मैं हड़बड़ा उठा- “ऐसा भला कैसे हो सकता है ?”

“तो फिर तुम गिलास क्यों नहीं उठाते ?”

मैंने अपना गिलास उठाया।

“चियर्स !”

“चियर्स !”

फिर सबके गिलास एक-दूसरे से इस तरह इस तरह टकराए, जैसे वह शराब की कोई बहुत बड़ी पार्टी थी।

मैंने भी सॉफ्ट ड्रिंक का एक घूँट भरा।

फिर थोड़ा रुककर दो-तीन घूँट और भरे।

और !

मेरा दो-तीन घूँट भरना ही गजब हो गया।

एकाएक मेरा सिर जोर-जोर से चकराने लगा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे मेरे दिमाग की नसें चटक रही हों। जैसे मेरे दिमाग में आतिशबाजी छूट रही हो, अनार छूट रहे हों।

खतरा !

फ़ौरन यही एक शब्द मेरे दिमाग में हथौड़े की तरह बजा ।

जरूर उन चारों में से कोई एक अपनी कारस्तानी दिखा गया था और बातचीत के दौरान ही उसने बड़ी सफाई के साथ मेरे गिलास में कुछ मिला दिया था ।

मैंने उठने की कोशिश की, तो मेरे कदम बहुत बुरी तरह लड़खड़ाये और मैं धड़ाम से कुर्सी से नीचे जा गिरा ।

मेरी हृदयविदारक चीख पूरे कमरे में गुंजायमान होती चली गयी ।

□□□

"ब...बबलू !"

चीखी प्रिया भी ।

गला फाड़कर चीखी ।

मेरे कुर्सी से नीचे गिरते ही वो झपटकर अपनी जगह से उठी और बन्दूक से छूटी गोली की भांति मेरी तरफ झपटी ।

"बबलू ! बबलू !" उसने मेरे कंधे पकड़कर बुरी तरह झंझोड़े- "क्या हुआ बबलू ?"

"म...मेरा सिर चकरा रहा है ।" मैं फर्श पर पड़ा हुआ बुरी तरह छटपटाता-सा बोला- "मुझे ऐसा लग रहा है, जैसे मेरा दम घुट रहा हो ।"

"द...दम ?"

हवा खुश्क हो गयी प्रिया की ।

आँखों में आतंक ।

"य...यह तुम क्या कह रहे हो बबलू ?"

"म...मैं सच कह रहा हूँ प्रिया !" मुझे अपनी आँखों के गिर्द अब अँधेरा-सा भी घिरता महसूस होने लगा- "म... मुझे कुछ नजर नहीं आ रहा है। मुझे ऐसा लग रहा है, जैसे मैं बेहोश होने वाला हूँ।"

मेरी बुरी हालत थी।

मैं भांप रहा था, मैं और प्रिया किसी षड़यंत्र में फंस चुके हैं।

किसी भयानक षड़यंत्र में।

बेहोश !

प्रिया के जिस्म का अब एक-एक रोआं खड़ा हो गया।

उसने झपटकर फ्रीज में से 'बिसलरी' की बोतल निकाली और ढेर सारे पानी के छींटे मेरे मुँह पर मारे।

परन्तु !

पानी का भी मेरे ऊपर कुछ असर न हुआ।

मुझे कोई घातक चीज दी गयी थी।

"बबलू !" प्रिया पुनः गला फाड़कर चिल्लाई- "बबलू !"

"त...तुम !" मेरे मुँह से फंसा स्वर निकला- "तुम यहाँ से भ...भाग जाओ प्रिया ! ज...जल्दी...फ-फ़ौरन।"

"लेकिन क्यों ? क्या हो गया ?"

"क...क्योंकि...क्योंकि..।"

उससे आगे मेरे मुँह से कोई शब्द न निकला।

मैं कुछ कहता, उससे पहले ही मेरी गर्दन लुढ़क गयी।

मैं बेहोश हो गया।

□□□

सारा नजारा एकदम से चेंज हो चुका था।

जिस कमरे में थोड़ी देर पहले तक खुशी के जाम टकराए जा रहे थे, वहाँ अब फर्श के बीचो-बीच मेरा बेहोश शरीर पड़ा था। मेरे नजदीक ही लकड़ी की वो कुर्सी भी लुढ़की पड़ी थी, जिस पर मैं बैठा हुआ था।

कमरे में था अब सन्नाटा।

ब्लेड की धार से भी पैना सन्नाटा।

शशि मुखर्जी, विजय पटेल, नागेन्द्र पाल, तथा अर्जुन मेहता, वह चारों भी अब अपनी-अपनी कुर्सियां छोड़कर खड़े हो चुके थे और उन्होंने प्रिया को चारों तरफ से घेर लिया था।

खतरा प्रिया भी भांप चुकी थी।

मैं अपनी बात उससे भले पूरी न कर पाया था, मगर इतनी समझदार प्रिया जरूर थी, जो हालातों के हिसाब से अंदाजा लगा लेती।

मेरे बेहोश शरीर के पास बैठे-बैठे उसने अपनी गर्दन उठाकर उन चारों की तरफ देखा। उस समय उनकी आँखें धधक रही थीं, उनमें ढेर सारे शक के निशान थे।

वह उठकर खड़ी हुई।

"ज...जरूर !" वह एकाएक जहरीली नागिन की भांति फुंफकार उठी- "जरूर यह हरकत आपमें से ही किसी की है। जरूर आप में से ही किसी ने बबलू को कुछ खिलाया है।"

वह चुप खड़े रहे।

बिल्कुल चुप।

"बताओ।" प्रिया दहाड़ी- "क्या किया है तुमने मेरे बबलू के साथ ?"

"हमने कुछ नहीं किया है।" उन चारों की तरफ से सबसे पहले क्रिकेटर विजय पटेल ने चुप्पी तोड़ी- "हमने इसे सिर्फ बेहोश किया है, वह भी थोड़ी देर के लिए।"

"लेकिन क्यों ?" प्रिया अर्द्धविक्षिप्तों की भांति चिल्लाकर बोली- "क्यों किया तुमने ऐसा, आखिर मेरे बबलू ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ?"

"क्या बिगाड़ा था तुम्हारे बबलू ने हमारा।" विजय पटेल फ़िल्मी खलनायकों की तरह हंसा।

"हाँ !"

"उसका भी जवाब देते हैं।"

एक-एक करके उन सबके हाथ अपनी जेब के अंदर गये और फिर जब बाहर निकले, तो उन चारों के हाथ में रिवॉल्वर दबी हुई थी।

चार रिवॉल्वर !

चारों पूरी तरह ऑटोमेटिक !

चारों लोड।

उन चारों के हाथ में रिवॉल्वर देखकर प्रिया भयभीत हो उठी।

उसका पूरा शरीर एकदम सूखे पत्ते की तरह कंपकंपा गया।

"र...रिवॉल्वर !" प्रिया शुष्क स्वर में बोली- "रिवॉल्वर क्यों निकाल रहे हैं आप ? अ...आखिर क्या करने जा रहे हैं आप ?"

इस बार नागेन्द्र पाल भी हंसा।

रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े उसने जोरदार कहकहा लगाया।

“हम आज वही करने जा रहे हैं प्रिया बेबी !” नागेन्द्र पाल बोला- “जो हमें तुम्हारी जैसी किसी जिद्दी लड़की के साथ करना चाहिये ।”

“लेकिन क्या ?”

“तुम्हारा खून ।”

शशि मुखर्जी ने एक ही झटके में वो बात कहकर मानो धमाका-सा कर दिया था ।

विस्फोट !

“न...नहीं...इ...इ !” अपनी ‘हत्या’ के नाम से प्रिया दहल उठी- “नहीं ! तुम लोग ऐसा नहीं कर सकते ।”

“क्यों ?”

“क...क्योंकि...क्योंकि मैं तुम्हारे दोस्त की बेटी हूँ ।”

हंसा !

जोर से हंसा अर्जुन मेहता ।

“अगर तुम ऐसा सोच रही हो बेबी !” अर्जुन मेहता दांत किटकिटाता हुआ बोला- “तो यह तुम्हारा बहुत बड़ा वहम है ।”

“अ...अंकल आप भी... ?” प्रिया के नेत्र दहशत से उबल पड़े ।

“हाँ...मैं भी...मैं भी मार डालना चाहता हूँ तुम्हें । ख़त्म कर देना चाहता हूँ तुम्हारी जिन्दगी के इस किस्से को । नादान लड़की !” अर्जुन मेहता भभके स्वर में बोला- “तुमने यह सोच भी कैसे लिया कि हम बबलू जैसे एक बेहद मामूली लड़के को अपनी कंपनी का चेयरमैन बन जाने देंगे ।”

“त... तो क्या आप बबलू के कारण मुझे मार डालना चाहते हैं ?”

प्रिया के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो रहा था ।

वो विचलित थी ।

“हाँ, बबलू के कारण ही हम तुम्हें मार डालना चाहते हैं ।” शशि मुखर्जी भी दहाड़कर बोला- “हम यह कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते कि किसी कम्पनी में मामूली नौकरी करने वाला एक लड़का हमार बॉस बन जाये ।”

“और फिर उसकी औकात ही क्या थी ?” नागेन्द्र पाल भी रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े चिल्लाया- “सड़क पर दुर-दुर करके भटकने वाला एक कुत्ता था वो, अगर श्रीकांत की निगाह उस पर न पड़ी होती, तो शायद वह अपने पैरों पर खड़ा होने के लायक भी न बनता । लेकिन तुमने उसे हमारे सामने लाकर बिठा दिया ।”

“सच तो ये है बेबी !” क्रिकेटर विजय पटेल भी अत्यंत हिंसक लहजे में बोला- “तुमने खुद अपनी मौत को दावत दी है ।”

और !

उनकी बातें सुन-सुनकर एक बात अच्छी तरह समझ गयी प्रिया ।

खूब अच्छी तरह ।

वह लोग उसे छोड़ेंगे नहीं ।

प्रिया की आंखों के गिर्द उनके दस्तानेयुक्त हाथ घूमे, उन हाथों में पकड़ी रिवॉल्वर घूमी, वो तुरन्त भांप गयी कि उन चारों ने सब-कुछ योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दिया था । उसे फॉर्म हाउस जैसी वीरान जगह में बुलाया ही इसलिये गया था, ताकि उसका मर्डर किया जा सके ।

मर्डर !

प्रिया के शरीर का एक-एक रोआं खड़ा हो गया ।

‘नहीं ! वो मरेगी नहीं’ एकाएक प्रिया की अंतरात्मा में से कोई चिल्लाया- ‘वो इतनी आसान मौत नहीं मरेगी ।’

यह बात सोचते ही प्रिया में न जाने कहाँ से बेपनाह हौसला आ गया था । हालांकि वह चारों उसके इर्द-गिर्द बड़ी मुस्तैदी के साथ खड़े थे ।

पूरे चौकन्ने ।

परन्तु फिर भी प्रिया एकाएक जंगली चीते की तरह नागेन्द्र पाल के ऊपर झपट पड़ी ।

चीख निकल गयी नागेन्द्र पाल की ।

प्रिया को उन चारों में सबसे कमजोर वही शख्स दिखाई दिया था ।

नागेन्द्र पाल चीखता हुआ धड़ाम से पीछे फर्श पर जाकर गिरा ।

और !

प्रिया के लिए इतना समय बहुत था । वह तुरन्त द्रुतगति के साथ कमरे से बाहर की तरफ झपटी ।

“पकड़ो !” विजय पटेल हलक फाड़कर चिल्लाया- “पकड़ो उसे ।”

सब फौरन प्रिया के पीछे दौड़े ।

नागेन्द्र पाल भी जल्दी से उठकर उसके पीछे-पीछे झपटा ।

□□□

प्रिया के शरीर में एकाएक न जाने कहाँ से फुर्ती समा चुकी थी ।

बेपनाह फुर्ती ।

उसके पैरों में मानो पंख लग गये ।

वह एक बार कमरे से बाहर निकली, तो फिर दौड़ती चली गयी, बेपनाह स्पीड के साथ। आखिर उन चारों से कहीं ज्यादा वह उस फॉर्म हाउस के चप्पे-चप्पे से वाकिफ थी।

वह चारों उसके नजदीक भी फटक पाते या फिर उसे पकड़ने में कामयाब होते, उससे पहले ही प्रिया उस दो मंजिले मकान के गलियारे में दौड़ती हुई एक मोड़ पर मुड़ी तथा फिर धड़धड़ाती हुई एक कमरे में जा घुसी।

दरवाजा उसने अन्दर से बन्द कर लिया।

सिटकनी चढ़ा ली।

फिर वो वहीं दरवाजे से पीठ लगाकर जोर-जोर से हाँफने लगी, उसके सांस उल्टे-सीधे चल रहे थे।

बाहर से शशि मुखर्जी, विजय पटेल, नागेन्द्र पाल और अर्जुन मेहता के गलियारे में दौड़कर आने की आवाजें उसके कानों में पड़ीं।

उनके जूतों की ध्वनि प्रिया के दिमाग से इस तरह टकरा रही थी, जैसे कोई हथौड़े बजा रहा हो।

जोर-जोर से हथौड़े।

वह चारों दौड़ते हुए उसे दोमंजिले मकान के गलियारे में बिल्कुल उसी तरफ मुड़े तथा उस कमरे के एकदम सामने आकर ठिठक गये।

डर के मारे प्रिया की सांसें तक थम गयीं।

उसकी आंखों में मौत थी।

सिर्फ मौत।

"वह कहाँ गयी?" तुरंत विजय पटेल की आवाज उसके कानों में पड़ी।

"मालूम नहीं कहाँ गयी ?" शशि मुखर्जी बोला- "जरूर वो इधर-उधर ही कहीं जा छुपी होगी" ।

"यह ठीक नहीं हुआ ।" नागेन्द्र पाल की आवाज में साफ-साफ चिन्ता झलक रही थी- "यह लड़की हमारे हाथ से नहीं निकलनी चाहिये । अगर कहीं अब वो लड़की हमारे हाथ से निकल गयी और उसने पुलिस के सामने जाकर सब-कुछ बक दिया, तो मेरा तो सारा राजनीतिक कैरियर ही चौपट हो जायेगा मेरे भाई ! मेरी तो जीवन भर की कमाई पर पानी फिर जायेगा ।"

"वह लड़की अब सिर्फ तुम्हारे लिए ही खतरा नहीं है नागेन्द्र पाल !" अर्जुन मेहता थोड़े नागवारी वाले अंदाज में गुर्राया- "बल्कि हम सबके लिए खतरा है, हम सबने अगर सकून से रहना है, तो फिलहाल उसका मरना बहुत ज्यादा जरूरी हो गया है ।"

"ठीक बात है ।" विजय पटेल भी बोला- "इस वक्त हमें आपस में उलझने की बजाय उस लड़की को तलाशना चाहिये ।"

"चलो उसे थोड़ा आगे चलकर देखते हैं ।"

"चलो ।"

कदमों की पदचापें गलियारे में आगे की तरफ बढ़ गयीं ।

□□□

प्रिया ने अब राहत की सांस ली ।

बहुत गहरी राहत की सांस ।

उसने पदचापों की वह आवाजें आगे की तरफ जाते हुए सुनीं, तो उसे ऐसा लगा, जैसे कोई बला टल गयी हो ।

वरना उसे यह डर हो रहा था कि कहीं वह चारों मिलकर आसपास के कमरों की तलाशी न लेने लगे । अगर वह ऐसा करते, तो प्रिया के पकड़े जाने में कुछ देर न थी ।

वह बस बाल-बाल बची थी ।

मगर प्रिया एक बात और बहुत अच्छी तरह जानती थी ।

वो जानती थी कि वह बला कोई बहुत ज्यादा देर के लिए नहीं टली है, क्योंकि वह चारों जिस गलियारे में आगे की तरफ गये थे, उस गलियारे का रास्ता आगे जाकर बन्द था ।

रास्ता बन्द देखकर वह जल्दी लौटेंगे और फिर शायद एक-एक कमरे की तलाशी भी लें ।

प्रिया को उस कमरे में अब और ज्यादा देर रुकना खतरनाक लगने लगा ।

उसकी निगाहें इधर-उधर घूमीं ।

वहीं कमरे मे लोहे की एक रॉड पड़ी थी ।

रॉड !

जो लम्बी थी ।

और मजबूत भी ।

प्रिया ने कुछ सोचकर लोहे की वह रॉड उठा ली और फिर बहुत आहिस्ता से दरवाजे की सिटकनी नीचे गिराई ।

सिटकनी गिराने में उसने बहुत एहतियात बरती थी और उसका भरसक प्रयास यह रहा था कि उससे ध्वनि पैदा न हो ।

सिटकनी बिल्कुल निःशब्द ढंग से खुली ।

फिर प्रिया ने बहुत धीरे-धीरे दरवाजा भी खोला और उसमें से थोड़ी सी झिर्री बनाकर बाहर गलियारे में झांका ।

गलियारे में कोई न था ।

वहाँ सन्नाटा था ।

गहरा सन्नाटा ।

प्रिया झटके के साथ कमरे से बाहर निकल आयी और फिर उस दोमंजिले मकान के मुख्य दरवाजे की तरफ द्रुतगति के साथ भागी ।

बस प्रिया से यहीं गलती हुई ।

भयंकर गलती ।

जैसे ही वो द्रुतगति के साथ भागी, तो उसके भागने की पूरे गलियारे में आवाज गूंजी ।

“जरूर वही है ।” एकाएक दूर से शशि मुखर्जी बहुत स्तब्ध लहजे में गला फाड़कर चिल्लाया- “वही है, वो पीछे है ।”

तुरंत वह चारों धड़ाधड़ पलटकर उसी तरफ घूमे ।

प्रिया की हवा खुश्क ।

आंखों में आतंक ।

वह और जी-जान से भागी ।

लोहे की रॉड उसने अपने हाथों में कसकर पकड़ी हुई थी ।

“वो बचने न पाए ।” नागेन्द्र पाल धुआंधार स्पीड से भागता हुआ चिल्लाया- “बचने न पाए साली, पकड़ो जल्दी से ।”

प्रिया ने बेतहाशा भागते हुए अपने खुश्क होठों पर जुबान फिराई ।

उसका चेहरा एकदम सफेद झक्क पड़ा हुआ था ।

और !

होंठ बार-बार कागज की तरह फड़फड़ा रहे थे ।

नागेन्द्र पाल, शशि मुखर्जी और विजय पटेल सबके दिमाग में वह बात एकदम गोली की तरह लगी ।

बात सही थी ।

विजय पटेल उस वक्त उन चारों में सबसे ज्यादा फुर्तीला साबित हुआ । शायद इसलिये, क्योंकि वह एक खिलाड़ी था और ऊपर से ज़बरदस्त फास्ट बॉलर भी था । वह एकदम बिजली जैसी तेजी के साथ दौड़ता हुआ प्रिया के नजदीक पहुँचा ।

प्रिया के शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी ।

उसे लगा, विजय पटेल ने अब उसे पकड़ा ।

अब पकड़ा ।

और इससे पहले कि विजय पटेल उसे पकड़ता, प्रिया ने फिर एक बड़ा दिलेराना कदम उठाया । वह लोहे की रॉड अपने हाथ में सख्ती के साथ पकड़े-पकड़े झटके से विजय पटेल की तरफ घूम गयी । एक क्षण के लिए हकबकाया विजय पटेल, उसके होश उड़े, मगर वो सम्भलता, उससे पहले ही प्रिया ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से लोहे की रॉड उसके ऊपर खींचकर मारी ।

विजय पटेल के हलक से ऐसी हृदयग्राही चीख निकली, जैसे किसी ने उसकी गर्दन को तलवार से काट डाला हो ।

लोहे की रॉड धड़ाक से सीधे उसके मुँह पर जाकर लगी थी ।

रॉड मुँह पर लगते ही विजय पटेल के हाथ से रिवॉल्वर छूट गयी ।

वह एकदम दोनों हाथों से अपना मुँह कसकर पकड़े-पकड़े धड़ाम से नीचे ड्राइव-वे पर जाकर गिरा और उसके हाथ-पैर फैल गये ।

प्रिया अब धुआंधार स्पीड से दौड़ती हुई कार तक पहुँच चुकी थी ।

“ग... गोली चलाओ ।” विजय पटेल ड्राइव-वे पर पड़ा-पड़ा और दर्द से छटपटाता हुआ हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्लाया- “जल्दी से उस लड़की को गोली मारो, अब यही एक तरीका है ।”

“ल...लेकिन... ।” अर्जुन मेहता ने कुछ कहना चाहा ।

“आवाज इस फॉर्म हाउस से बाहर नहीं जायेगी बेवकूफों, यह बहुत बड़ा फॉर्म हाउस है । जल्दी करो, क्विक !”

प्रिया का हाथ अब अपनी कार के ड्राइविंग डोर पर पड़ा और उसने हेंडिल पुश करके झटके के साथ दरवाजा खोलना चाहा ।

उन्माद अब अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था ।

सबकी बुद्धि मंद थी ।

प्रिया ड्राइविंग डोर खोल पाती, उससे पहले ही शशि मुखर्जी ने एक्शन ले लिया था । उसने अपनी रिवॉल्वर का ट्रिगर दबा दिया ।

धांय !

गोली चलने की उस सन्नाटे में ऐसी आवाज हुई, जैसे कोई बम फटा हो ।

प्रिया की कर्णभेदी चीख निकल गयी ।

गोली ठीक उसकी टांग में लगी थी ।

गोली लगते ही प्रिया के हाथ से कार का हेंडिल छूट गया और वो धड़ाम से वहीं नीचे जाकर गिरी ।

तत्काल सब दौड़ते हुए उसके नजदीक पहुंचे ।

प्रिया की रूह फ़ना हो गयी ।

गुस्से में उबलते हुए नागेन्द्र पाल ने प्रिया के पास पहुँचते ही उसके मुँह पर बड़ी जोर से झापड़ रसीद कर दिया ।

दिमाग झन्ना उठा प्रिया का ।

"साली... चालाक बनती है खुद को ।" नागेन्द्र पाल ने अपने दांत किटकिटाए- "चालाक बनती है ।"

उसने गुस्से में एक झापड़ और रसीद किया ।

प्रिया के हलक से पुन: चीख निकली ।

उसकी आँखों के गिर्द रंग-बिरंगे तारे झिलमिला उठे ।

"मैं कहता हूँ, इसके साथ ज्यादा चख-चख मत करो ।" अर्जुन मेहता कर्कश स्वर में बोला- "अगर इसका काम तमाम करना है, तो जल्दी करो । फ़ौरन ! वरना फिर बबलू भी होश में सकता है ।"

शशि मुखर्जी ने अब प्रिया की खोपड़ी की तरफ रिवॉल्वर तान दी और उसकी उंगली पुन: ट्रिगर की तरफ बढ़ी ।

"नहीं ।" नागेन्द्र पाल ने चीखते हुए उसे रोका- "नहीं, गोली मत चलाना ।"

शशि मुखर्जी चौंका ।

उसकी अंगुली ट्रेगर पर पहुँचते-पहुँचते ठिठकी । अर्जुन मेहता ने भी चौंककर नागेन्द्र पाल की तरफ देखा ।

"इसे यहाँ गोली मारना ठीक नहीं है ।" नागेन्द्र पाल बोला- "यहाँ गोली मारोगे तो यहाँ चारों तरफ खून फैलेगा, जो ठीक नहीं । इसे पहले मकान के अंदर लेकर चलो ।"

विजय पटेल भी तब तक ड्राइव-वे से उठकर वहाँ आ गया था ।

रॉड लगने से उसका चेहरा लाल सुर्ख हो रहा था । इसके अलावा उसमें दर्द भी था ।

"चलो, अगर इसे मकान में लेकर चलना है ।" अर्जुन मेहता बोला- "तो जल्दी लेकर चलो ।"

"चलो ।"

उन चारों ने अब नीचे झुककर प्रिया के हाथ-पैर पकड़ लिए ।

खूब कसकर ।

फिर वह प्रिया को ड्राइव-वे पर बड़ी बेदर्दी के साथ घसीटते हुए अंदर की तरफ ले जाने लगे ।

प्रिया हिस्टीरियाई अंदाज में चीखने-चिल्लाने लगी, उसे अपनी आँखों के सामने साक्षात मौत मंडराती दिखाई दे रही थी ।

वह जोर-जोर से अपने हाथ-पैर पटकने लगी ।

छटपटाने लगी ।

उसकी अत्यंत वीभत्स चीखें पूरे फॉर्म हाउस में गूँज रही थीं ।

लेकिन अब उन दरिंदों के बंधन से आजाद होना नामुमकिन था ।

पूरी तरह नामुमकिन ।

वह प्रिया को यूं ही बड़ी बेदर्दी से घसीटते हुए उस दोमंजिले मकान के अंदर ले गये ।

उसके बाद दो गोलियां चलने की आवाज आयीं ।

फिर प्रिया की पहले से भी ज्यादा वीभत्स चीख गूंजी ।

उसके बाद शांति ।

गहरी शांति ।

□□□

अविनाश लोहार की आँखें धुंआ-धुंआ हो रही थीं ।

उसके चेहरे पर बड़े ही दुःख के भाव थे ।

बड़ी संजीदगी के भाव ।

इस समय अविनाश लोहार की आंखों से साफ पता चल रहा था, जैसे उसकी जिन्दगी में कोई बहुत बड़ा तूफान गुजरा है और उस वक्त उस तूफान के चलचित्र उसकी आंखों में बहुत साफ-साफ देखे जा सकते थे ।

कमाण्डर करण सक्सेना और अविनाश लोहार उस समय उसी स्पेशल सेल में थे और पहले की तरह चबूतरे पर बैठे हुए थे ।

"कमाण्डर !" अविनाश लोहार उस गुजरी हुई दास्तान को बड़ी बेचैनी से याद करता हुआ बोला- "मुझे उस फार्म हाउस के दोमंजिले मकान में फिर जब होश आया, तो तब तक मेरी दुनिया उजड़ चुकी थी । होश में आते ही मेरी एक ऐसे दृश्य पर निगाह पड़ी, जिसे देखते ही मेरे हलक से बहुत तेज चीख निकल गयी ।"

"ऐसा क्या दृश्य देखा तुमने ?"

कमाण्डर की निगाहें अपलक उसी के चेहरे पर टिकी थीं ।

"होश में आने के बाद मैंने देखा कमाण्डर, मेरे नजदीक ही प्रिया की खून से लथपथ लाश पड़ी थी ।" अविनाश लोहार बोला- "उस प्रिया की लाश पड़ी थी, जिसे मैंने अपनी जिन्दगी में सबसे ज्यादा चाहा था । जिससे मैंने दीवानावार मोहब्बत की थी । सबसे भयंकर बात ये थी कमाण्डर, प्रिया के शरीर पर उस समय कपड़े की एक धज्जी तक नहीं थी और उसके योनि मार्ग (गुप्तांग) से खून बह रहा था । उफ, वह कम्बख्त उसके डैडी की उम्र के थे, उसके अंकल थे । मगर उन्होंने बड़ी ही बेदर्दी के साथ उसका कौमार्य भंग कर डाला था । और तभी मेरी निगाह

एक और ऐसे दृश्य पर पड़ी, जिसने मुझे पहले से भी ज्यादा बुरी तरह झकझोर डाला ।”

“क्या देखा तुमने ?” कमाण्डर करण सक्सेना उसकी एक-एक बात बड़े ध्यान से सुन रहा था ।

“मैंने देखा, मेरे शरीर पर भी जगह-जगह खरोंच के निशान थे, जैसे किसी ने बड़ी बेदर्दी के साथ मेरे शरीर में नाखून गड़ाए हों । और किसी की मेरे साथ खूब जमकर छीना-झपटी हुई हो । उस समय मैं ये नहीं समझ सका कि मेरे शरीर पर नाखूनों के वो निशान क्यों बनाए गये हैं कमाण्डर, बाद में मेरे सब कुछ समझ में आया, लेकिन तब तक हालात पूरी तरह मेरी मुट्ठी से बाहर निकल चुके थे ।”

“वह चारों उस समय कहाँ थे ?” कमाण्डर ने पूछा ।

“वो वहाँ से जा चुके थे । उस समय पूरे फॉर्म हाउस पर सिर्फ मैं था या प्रिया की लाश थी । हम दोनों के अलावा उस लम्बे-चौड़े फॉर्म हाउस पर कुछ था तो सन्नाटा था, गहरा सन्नाटा । और फिर वह सन्नाटा भी भंग हो गया तथा बड़े ही जबरदस्त हंगामे के साथ भंग हुआ । मैं अभी अपने शरीर पर लगे नाखूनों के निशान देख ही रहा था कि एकाएक जोर-जोर से सायरन बजाती हुई पुलिस की तीन चार पेट्रोलिंग कारें एक झटके के साथ फॉर्म हाउस के अन्दर आकर रुकीं ।

“पुलिस !”

“यस कमाण्डर पुलिस ! मेरे होश में आने के मुश्किल से पांच मिनट के अन्दर-ही-अन्दर पुलिस वहाँ पहुँच गयी थी ।”

"लेकिन पुलिस को इतनी जल्दी यह पता कैसे चला ?" कमाण्डर करण सक्सेना अचरजपूर्वक बोला- "कि उस फॉर्म हाउस के अन्दर कोई मर्डर भी हो गया है ?"

"पुलिस ने तो इस संदर्भ में यह दलील दी कि उन्हें आस-पड़ोस के किसी आदमी ने इस बाबत इनफॉर्मेशन दी है, लेकिन जहाँ तक मैं समझता हूँ, पुलिस को सूचना देने का वह काम उन्हीं चारों में से किसी एक ने किया था । पुलिस ने वहाँ आते ही प्रिया की हत्या के इल्जाम में मुझे गिरफ्तार कर लिया और मेरे ऊपर बलात्कार का आरोप भी लगाया गया कमाण्डर, वह चारों बहुत हरामजादे आदमी थे और बहुत ज्यादा बुध्दिमान भी । उन्होंने एक ही तीर से कई निशाने लगाए । प्रिया की हत्या करके जहाँ उन्होंने 'फ्रेण्ड्स कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर कम्पनी' को पूरी तरह अपने कब्जे में कर लिया, वहीं मुझे भी प्रिया की हत्या के इल्जाम में फंसाकर अपने रास्ते से हटा दिया । उन्होंने हर एक चाल बहुत सोच-समझकर चली । एक ही झटके में उनके तमाम रास्ते साफ हो गये थे । मैंने पुलिस के सामने खूब चीख-चीखकर कहा कि प्रिया की हत्या मैंने नहीं की है, प्रिया के साथ बलात्कार मैंने नहीं किया है, लेकिन मेरी कोई फरियाद नहीं सुनी गयी । मेरी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया गया । फिर मेरा मेडिकल परीक्षण हुआ और मेरे स्पर्म (वीर्य) को लैब में टेस्ट करने के लिए भेजा गया ।"

"मेडिकल परिक्षण के बाद तो यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया होगा ।" कमाण्डर बोला- "कि प्रिया के साथ बलात्कार तुमने नहीं किया था ?"

"नहीं कमाण्डर, मुझे इसी बात का सख्त अफसोस है कि मेडिकल परिक्षण के बाद भी मेरे ऊपर लगा यह धब्बा

साफ नहीं हुआ ।" अविनाश लोहार गहरी सांस लेकर बोला- "अलबत्ता जब मेडिकल परिक्षण के लिए मेरा स्पर्म लिया गया था, तब मुझे इस बात की उम्मीद जरूर थी कि अब मैं बच जाऊंगा। अब मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा, क्योंकि परिक्षण में तो हर हालत में यह स्पष्ट हो जाना था कि प्रिया की बॉडी में जो स्पर्म पाया गया, वह मेरा स्पर्म नहीं था । लेकिन हुआ बिल्कुल उल्टा कमाण्डर, बिल्कुल उल्टा ।"

"क्या ?"

"हुआ यह कि मेडिकल परिक्षण की जब रिपोर्ट आयी, तो उस रिपोर्ट में बहुत साफ-साफ लिखा था कि प्रिया की बॉडी में जो स्पर्म पाया गया, वह मेरे स्पर्म से हूबहू मैच करता है और अब इस बात में शक-शुबहे की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती थी कि प्रिया के साथ बलात्कार मैंने ही किया था । सच तो ये है, उस मेडिकल रिपोर्ट ने मेरे बचने के तमाम रास्ते बन्द कर दिए थे । उन चारों ने सबको खरीद डाला था, सबको ।"

"यानी वह रिपोर्ट बदलवायी गयी थी ?"

"यस कमाण्डर, यही सब कुछ हुआ था ।" अविनाश लोहार बोला- "आखिर वह सब बहुत साधन-सम्पन्न लोग थे, बहुत पैसे वाले लोग थे । मैंने कोर्ट में खूब चीख-चीखकर कहा कि वह रिपोर्ट झूठी है, फर्जी है। उन डॉक्टर्स को खरीद लिया गया है, जिन्होंने वह रिपोर्ट तैयार की । लेकिन किसी ने मेरी कोई बात नहीं सुनी । जज भी उन चारों के हाथों बिक चुका था और जब जज ही बिक जाये, तो फिर न्याय की उम्मीद किससे की जा सकती है ।"

कमाण्डर के चेहरे पर उस समय भूकम्प जैसे भाव थे ।

वह बहुत स्तब्ध होकर उसकी एक-एक बात सुन रहा था ।

और !

जलजले के भाव अविनाश लोहार के चेहरे पर भी कुछ कम नहीं थे, उसका चेहरा धधकता अग्निकुण्ड बना हुआ था ।

“फिर वह समय भी आया कमाण्डर !” अविनाश लोहार चबूतरे पर बैठा-बैठा बोला- “जब जज ने मुझे फांसी की सजा सुनायी । मुझे उस प्रिया की हत्या के इल्जाम में फांसी की सजा सुनायी गयी, जो प्रिया मेरी जिन्दगी थी । जिसके साथ मैंने अपनी आइन्दा जिन्दगी के ढेरों ख्वाबों का ताना-बाना बुना था ।”

□□□

मुझे जेल की काल-कोठरी में ले जाकर डाल दिया गया कमाण्डर !

जेल !

यह वो जगह थी, जहाँ से मेरे आतंकवादी जीवन का अध्याय शूरू हुआ ।

सच तो ये है कमाण्डर, अगर उन चारों दरिन्दों ने निर्दोष प्रिया की हत्या न की होती या फिर मुझे उसकी हत्या के इल्जाम में न फंसाया होता, तो यह शख्स जो आज आपके सामने बैठा हुआ है, कभी दुनिया का इतना बड़ा आतंकवादी न बनता ।

जेल मेरे जीवन की एक जबरदस्त मोड़ साबित हुई ।

मुझे जेल की जिस काल-कोठरी में डाला गया, उसी काल-कोठरी में एक और अपराधी भी बन्द था और उसे भी थोड़े दिन बाद ही फांसी होने वाली थी ।

उस अपराधी का नाम था- सुलेमान !

सुलेमान लोहार !

हालांकि सुलेमान लोहार एक दुर्दांत कातिल था और ऐसा अपराधी था, जिसने अपनी जिन्दगी में हर बड़े-से-बड़ा अपराध किया था और बेखौफ होकर किया था । लेकिन फिर भी सुलेमान लोहार के व्यक्तित्व में कोई ऐसी बात थी कि आज भी जब मैं उसे याद करता हूँ, तो मेरे दिल में उसके लिए अपार श्रध्दा के भाव पैदा होते हैं, सम्मान के भाव पैदा होते हैं ।

सुलेमान लोहार की उम्र लगभग तरेपन-चौवन साल थी ।

उसकी कद-काठी का वर्णन करने के लिए अगर मैं किसी ताड़ के पेड़ से उसकी तुलना करूं, तो ज्यादा बेहतर होगा ।

वह बिल्कुल वैसा ही था, ताड़ के पेड़ जैसा ।

पेड़ के तने की तरह की लम्बा, बेहद मजबूत और अटल इरादों वाला ।

हालांकि सुलेमान लोहार की उम्र काफी थी, मगर चीते जैसी चपलता उसमें तब भी नजर आती थी । खासतौर पर उम्र के उस पड़ाव में भी जैसी चमक मैंने उसकी आंखों में देखी, वैसी चमक कम-से-कम मैंने किसी दूसरे पुरुष की आंखों में नहीं देखी ।

मौत से डरना तो जैसे वह इंसान जानता ही नहीं था ।

उसे कुछ ही दिन बाद फांसी होने वाली थी, मगर उसके चेहरे पर हल्की सी शिकन तक नहीं थी।

□□□

काल-कोठरी में पहुँचने के बाद दो दिन तक सुलेमान लोहार से मेरी कोई बातचीत ही न हुई।

मैंने अंदाजा लगाया, वह काफी कम बोलने वाला इंसान था। वैसे भी जैसा आमतौर पर होता है, अपने अंतिम दिनों में इंसान के अंदर ईश्वर के प्रति कुछ ज्यादा ही भक्तिभाव जाग उठता है। वैसा ही भक्तिभाव सुलेमान लोहार के अंदर भी जाग उठा था। मैंने उसे वहीं जेल की काल-कोठरी में बड़े दिल से पांचों वक्त की नमाज पढ़ते देखा। और जब कभी वह लकड़ी की रहल पर कुरान शरीफ रखकर पढ़ने बैठ जाता, तो फिर घंटों तक मदरसे के बच्चों की तरह आगे-पीछे हिलते हुए खूब जोर-जोर से कुरान की आयतें पढ़ता रहता। उस वक्त सुलेमान लोहार को देखकर भला कौन कह सकता था कि वह इंसान एक दुर्दांत हत्यारा भी हो सकता है। दो दिन बाद सुलेमान लोहार खुद चलकर मेरे पास आया। हालांकि वो शाम का समय था, लेकिन काल-कोठरी में दिन पूरी तरह ढलने से पहले ही अंधेरा फैल चुका था और उस वक्त वहाँ जीरो वाट के बल्ब का बहुत मद्धिम प्रकाश चारों तरफ फैला था।

सुलेमान लोहार मेरे सामने आकर बैठ गया और अपलक मुझे देखने लगा।

"मुझे मालूम हुआ है।" वह बहुत शांतिपूर्ण लहजे में बोला- "कि तुम्हारा नाम बबलू है।"

"हाँ!" मैंने भी धीरे से गर्दन हिलाई।

हो सकती, जिस हत्या के इल्जाम में तुम्हें यह फांसी की सजा सुनाई गयी है ।”

मैं चौंक उठा ।

मेरे दिल-दिमाग पर एकाएक वज्रपात हुआ ।

“क्यों, क्या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ ?”

मैंने अपना चेहरा दोनों घुटनों के बीच छुपा लिया और मैं सुबक उठा ।

सुलेमान लोहार पहला आदमी था, जिसने इस बात को समझा था कि मैं खूनी नहीं हो सकता ।

मैंने प्रिया का क़त्ल नहीं किया हो सकता ।

और यह कितनी विचित्र बात थी, मैं खूनी नहीं हूँ, यह बात जिसने समझी थी, वो खुद एक दरिंदा था ।

जबकि कानून इतनी-सी बात न समझ सका ।

“तुम्हारे इन आंसुओं ने अब इस बात की और भी ज्यादा पुख्ता शहादत दे दी है बेटे !” सुलेमान की आवाज में दृढ़ता थी- “कि तुम निर्दोष हो ।”

मैं घुटनों में अपना मुँह छिपाए बैठा रहा ।

मैं भावुक हो रहा था ।

पहली बार कोई मुझसे इस प्रकार हमदर्दी से बात करने वाला था ।

“अगर तुम्हें कोई ऐतराज़ न हो ।” सुलेमान लोहार बोला- “तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम हत्या के इस झूठे इल्जाम में कैसे फंसे ?”

“वो एक लम्बी कहानी है बाबा !” मेरी आवाज में गम का साया था ।

"फिर भी मैं वो पूरी कहानी सुनना चाहता हूँ । हमारे पास सारी रात अपनी है और सुनने-सुनाने के लिए भी कुछ नहीं है ।"

मैंने दोनों घुटनों के बीच से अपना चेहरा ऊपर उठाया और सुलेमान लोहार की तरफ देखा ।

उसकी आँखों में अपनापन था ।

गहरा अपनापन !

कोई अदृश्य ताकत थी, जो मुझे उस इंसान की तरफ खींचे जा रही थी । भावनाओं की उसी डोर में बंधा मैं उसे सब-कुछ बताता चला गया, सब कुछ ।

□□□

मेरी कहानी सुनकर सुलेमान लोहार को तेज झटका लगा था ।

शायद उसने कल्पना भी नहीं की थी कि मेरी कहानी इतनी हृदयविदारक होगी । वह कुछ देर बिल्कुल मूर्तिवत मेरे सामने बैठा रहा, फिर वो बड़ी बेचैनी के साथ काल-कोठरी में इधर-से-उधर टहलने लगा । उसके गले में काले कपड़े में लिपटा एक ताबीज पड़ा था, दो-तीन बार उसने उस ताबीज को भी होठों से लगाकर चूमा ।

"वाकई तुम्हारे साथ ठीक नहीं हुआ है ।" सुलेमान लोहार इधर-से-उधर टहलता हुआ बोला- "बिल्कुल ठीक नहीं हुआ ।"

मैं अपनी जगह शांत बैठा रहा ।

मेरी आँखों के गिर्द अब प्रिया का चेहरा मंडरा रहा था, जिसने मुझे और उदास कर दिया था ।

“वह चारों आदमी नहीं थे बेटा, शैतान थे शैतान !” सुलेमान लोहार फुंफकारा- “मैंने अपने इस जीवन में एक-से-एक दुर्दांत हत्यारा देखा है, लेकिन इतना दुर्दांत कोई नहीं देखा कि वो अपनी ही बेटी के साथ बलात्कार करके उसकी हत्या कर डाले। उन्होंने तो वहशीपन की इंतहा कर दी थी।”

सुलेमान लोहार काल-कोठरी में इधर-से-उधर टहलता हुआ ठिठका।

फिर वो वापस पहले की तरह मेरे सामने आकर बैठ गया था।

“एक बात बोलूं बेटा !” सुलेमान लोहार की पैनी आँखें पुनः मेरे चेहरे पर गड़ गयी थीं।

“क्या ?”

“सचमुच हमारे देश का कानून बड़ा अद्भुत है।” सुलेमान लोहार बोला- “कभी-कभी तो दिल चाहता है कि भारतीय कानून व्यवस्था का बहुत जोर से खिलखिलाकर मजाक उड़ाऊं। यह कानून निर्दोषों को फांसी पर चढ़ा देता है और जो दोषी हैं, जो मुजरिम हैं, वह समाज में खुले घूमते हैं। सड़कों पर खुले घूमते हैं। कानून उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता, कभी कुछ नहीं। सच तो ये है, कानून आज की तारीख में सिर्फ-और-सिर्फ उन लोगों की बपौती बनकर रह गया है, जो या तो बेहद दौलतमंद हैं, या फिर कानून की कमजोरियों से अच्छी तरह वाकिफ हैं तथा धाराओं को तोड़-मरोड़कर उन्हें अपने हक में इस्तेमाल करना जानते हैं।”

मैंने चौंककर सुलेमान लोहार की तरफ देखा।

कम-से-कम उस जैसे शातिर मुजरिम के मुँह से मुझे ऐसी बातें सुनने की उम्मीद न थी ।

“तुम्हें एक हैरतअंगेज बात और बताता हूँ ।”

“क्या ?”

“यह जो सुलेमान लोहार तुम्हारे सामने बैठा है बेटा, इस सुलेमान लोहार ने अपनी पूरी जिंदगी में कितने खून किए, उनकी सही गिनती इस सुलेमान को भी मालूम नहीं है और सबसे ज्यादा हैरानी की बात ये है कि मैं कभी किसी हत्या के अपराध में नहीं पकड़ा गया और अगर एक-आध बार पकड़ा भी गया तो मैं निर्दोष छूट गया, बाइज्जत बरी होकर छूट गया । लेकिन तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा ।” सुलेमान लोहार एक-एक शब्द पर जोर देता हुआ बोला- “कि इस बार, इस बार जिस हत्या के इल्जाम में मुझे फांसी की सजा होने जा रही है, वही हत्या मैंने नहीं की थी ।”

मेरी आंखों में अचरज के भाव तैर गये ।

“यानी....यानी आप भी निर्दोष हैं बाबा !”

मैं चौंका ।

मेरे दिमाग में धमाके हुए ।

“नहीं, मैं पूरी तरह अपने आपको निर्दोष तो नहीं मान सकता ।”

“क्यों ?”

“क्योंकि जिस हत्या के इल्जाम में मुझे फांसी की सजा सुनायी गयी है, वह हत्या मैंने भले न की सही, लेकिन उससे पहले तो मैंने अनगिनत हत्याएं की हैं । मैंने तो यह सोचकर अपने दिल को तसल्ली दे रखी है कि शायद मेरे खुदा ने उन हत्याओं के ऐवज में मुझे यह सजा दी है, इसलिये मुझे कानून से भी कोई गिला-शिकवा नहीं, परंतु मुझे तुम्हारी

बात सुनकर दुःख जरूर हो रहा है बेटा ! तुम तो पूरी तरह निर्दोष थे।”

“हो सकता है बाबा, मुझसे भी अनजाने में कोई ऐसा गुनाह हो गया हो।” मैं बोला- “जिसकी मुझे इस रूप में सजा मिल रही है।”

“नहीं, यह सब बेकार की बातें हैं।” सुलेमान लोहार बोला- “मैं इस तरह की बातों में यकीन नहीं रखता। सच तो ये है, तुम्हें जबरदस्ती फांसी पर लटकाया जा रहा है और उन चारों दरिंदों के अलावा अगर इसका सबसे बड़ा दोषी कोई है, तो कानून है।”

मैं चुप बैठा रहा।

मैं भी जानता था, सुलेमान लोहार की बातों में काफी हद तक सच्चाई है।

जेल की काल-कोठरी में तब मुझे अपना एक हमदर्द मिल गया था, जोकि मेरे लिए अच्छी बात थी।

□□□

मैंने देखा सुलेमान लोहार उस सारी रात सो नहीं सका था। वह बस रात भर इधर-से-उधर करवटें बदलता रहा।

नींद मुझे भी नहीं आई। मेरी आंखों के गिर्द भी बार-बार प्रिया का चेहरा चक्कर काट जाता।

सुबह होते ही सुलेमान मुसल्ला बिछाकर नमाज पढ़ने खड़ा हो गया।

फिर वह काफी देर तक नमाज पढ़ता रहा। अपने इष्ट देवता की इबादत वो बड़े दिल से करता था।

तब तक एक कॉन्स्टेबल काल-कोठरी में ही सुबह का नाश्ता ले आया।

नाश्ते में दो स्लाइस और एक चाय थी। चाय बिल्कुल गरम पानी की तरह थी, जिसमें दूध और चाय की पत्ती बस नाममात्र के लिए ही थी।

हम दोनों नाश्ता अक्सर अलग-अलग करते थे, मगर उस दिन हमने एक साथ नाश्ता किया।

"क्या बात है बाबा !" मैं गौर से उसकी ब्लेड की धार जैसी पैनीं आँखें देखता हुआ बोला- "आप कुछ उदास हैं ?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।" सुलेमान लोहार ने चाय का घूंट भरा।

"फिर भी कुछ तो !"

"दरअसल।" सुलेमान लोहार विचारपूर्ण लहजे में बोला- "मैं रात से ही एक बात सोच रहा हूँ बेटा !"

"क्या ?"

"मैंने अपनी इस जिंदगी में कभी कोई अच्छा काम नहीं किया।" सुलेमान लोहार की आवाज बेहद अफसोस से भरी हुई थी- "बस हत्याएं की हैं, शरीफ और बेकसूर लोगों पर जुल्म ढाए हैं, लेकिन जैसे-जैसे मेरी मौत का दिन करीब आता जा रहा है, बिल्कुल वैसे-वैसे मेरे दिल में एक ख्वाहिश भी जोर पकड़ती जा रही है।"

"कैसी ख्वाहिश ?"

मैंने भी स्लाइस खाया और चाय पी।

"बेटा मेरी इच्छा है कि मैं अपने पाक परवरदिगार के दरबार में जाने से पहले कम-से-कम एक अच्छा काम जरूर करूं।"

"कैसा अच्छा काम ?"

"मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ।"

मैं उछल पड़ा ।

मैं घोर विकसित निगाहों से सुलेमान लोहार को देखता रह गया ।

परंतु सुलेमान लोहार के ऊपर कोई प्रतिक्रिया न थी, वह बिल्कुल शांतचित्त बैठा था ।

उसने अपनी चाय का कप खाली करके नीचे रखा ।

“अगर मैं तुम्हें फांसी पर चढ़ने से बचा सका बेटा, तो यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात होगी । मैंने आज तक जिंदगियां ली हैं, यह पहला मौका होगा, जब मैं किसी को जिंदगी दूंगा ।”

“लेकिन आप मुझे कैसे बचायेंगे बाबा ? उन चारों ने सबको खरीदा हुआ है, सबको । अगर आप मेरे लिए अपील भी करेंगे, तो उसकी कहीं भी कोई सुनवाई नहीं होगी ।”

“बेफिक्र रहो, मैं कहीं कोई अपील करने वाला नहीं हूँ । कानून और उसके द्वारा बनायी गयी व्यवस्था पर मेरा कोई भरोसा नहीं है ।”

“फिर आप मुझे कैसे बचायेंगे ?”

“सच तो ये है ।” सुलेमान लोहार बोला- “अब मैंने बस यही सोचना है ।”

मैं सुलेमान लोहार को देखता रह गया ।

तब तक मैं नहीं जानता था, वह खूंखार आदमी क्या करने जा रहा है ?

उसका अगला कदम क्या होगा ?

□□□

काल-कोठरी में वह पूरा दिन मेरा बड़े सस्पेंस के आलम में गुजरा ।

क्योंकि सुलेमान लोहार ने मुझसे फिर कोई बात नहीं की थी । वह कागज-पेंसिल लेकर बस एक कोने में जा बैठा और फिर उस पर आड़ी-तिरछी लकीरें खींचता रहा । सबसे बड़ी बात ये थी कि उस दिन वो नमाज पढ़ना भी भूल गया और उसने कुरान को भी हाथ नहीं लगाया ।

वो किसी गहरी उधेड़बुन में था ।

शाम को वह बड़े उत्साहपूर्वक मेरे पास आया । उस समय उसकी आँखें बहुत विलक्षण अंदाज में चमक रही थीं और उसके चेहरे पर जोश था ।

"मुबारक हो बेटा, मैंने तुम्हें बचाने की पूरी रुपरेखा तैयार कर ली है ।"

तब तक मेरी उत्सुकता भी बहुत बढ़ चुकी थी और वह क्या करने जा रहा है, इसमें मेरी गहरी दिलचस्पी थी ।

"क्या रुपरेखा तैयार की है बाबा ?"

"इस जेल से बाहर निकलने के बाद तुम्हारी जिंदगी का एक नया अध्याय शुरु होगा, बिल्कुल नया अध्याय । आज तक तुम्हारा कोई नाम नहीं था, तुम्हारा कभी किसी ने कोई नाम नहीं रखा । तुम्हें बस तमाम लोग 'बबलू' के नाम से पुकारते थे । लेकिन अब, अब तुम्हारा एक नाम होगा । आज यह बूढ़ा सुलेमान लोहार तुम्हारा नामकरण करता है बेटा ! अब यह तमाम दुनिया तुम्हें 'अविनाश' के नाम से जानेगी, अब तुम्हारा नाम अविनाश होगा ।"

"अ...अविनाश !" मेरी आवाज कांपी ।

मेरे दिमाग में आतिशबाजी छूटी ।

"हाँ, अविनाश ! और यह नाम मैंने तुम्हारा बहुत ही सोच समझकर रखा है बेटा ! बल्कि इस नाम को रखने के पीछे खास वजह है, खास उद्देश्य है । तुम्हारी अब आगे की जिंदगी उन चारों दरिन्दों की देन होगी, जिन्होंने तुम्हारी प्रिया का मर्डर किया, जिन्होंने तुम्हें हत्या के झूठे इल्जाम में फंसाकर जेल की काल-कोठरी तक पहुँचाया । चूंकि तुम्हारी अब आइन्दा जिन्दगी पर उन चारों की गहरी छाप होनी है, इसलिये तुम्हारा अविनाश नाम भी मैंने उन चारों के नाम के प्रथम अक्षर को मिला कर रखा है ।"

"प...प्रथम अक्षर को मिलाकर ?"

"हाँ, प्रथम अक्षर को मिलाकर ।"

मेरे दिमाग में पहले से भी ज्यादा तेज रोशनी के अनार छूटते चले गये ।

एक-एक करके उन चारों दरिंदों के नाम मेरे मस्तिष्क में कौंधे ।

अर्जुन मेहता ।

विजय पटेल ।

नागेंद्र पाल ।

शशि मुखर्जी ।

मेरे होठों पर उन नामों के प्रथम अक्षर चेक करते ही मुस्कान उभर आयी ।

सचमुच वह बूढ़ा बुद्धिमान था, हद से ज्यादा बुद्धिमान ।

खासतौर पर उसने मेरा नामकरण करने में जो दिमाग इस्तेमाल किया था, वह तो अद्भुत ही था ।

"मुझे उम्मीद है बेटा !" सुलेमान लोहार बोला- "तुम्हें तुम्हारा नाम पसंद आया होगा ।"

“क्या कह रहे हैं आप ? योजना भी बना चुके हैं ?”

“हाँ !”

“योजना क्या है ?”

सुलेमान लोहार ने मुझे योजना बतायी ।

जैसे-जैसे मैंने योजना सुनी, मेरे रोंगटे खड़े होते चले गये ।

योजना वाकई अद्भुत थी ।

□□□

थोड़ी देर बाद कॉन्स्टेबल रात का खाना ले आया ।

“आज बाहर का मौसम बहुत अच्छा हो रहा है ।” कॉन्स्टेबल खाने की प्लेट वहीं उनके पास रखता हुआ बोला- “हल्की-हल्की बारिश हो रही है ।”

फांसी के कैदियों को खाना काल-कोठरी के अंदर ही सर्व किया जाता था ।

जबकि दूसरे साधारण कैदियों को खाना खाने के लिए प्लेटें पकड़कर एक लंबी लाइन लगानी पड़ती ।

“यहाँ तो मौसम का कुछ पता ही नहीं चलता ।” सुलेमान लोहार गहरी सांस लेकर बोला- “न आंधी-बारिश का, न धूप का । काल-कोठरी इतनी अंदर बनाई गयी है ।”

“यह तो है बाबा !” जेल में भी सुलेमान लोहार को सब ‘बाबा’ ही बोलते थे- “सच तो ये है, कभी-कभी मुझे फांसी के कैदियों पर बड़ा तरस आता है ।”

“क्यों ?”

“आखिर खुले आसमान को देखे हुए उन्हें हफ्तों गुजर जाते हैं और कभी-कभी तो महीनों तक फांसी से पहले ही

मौत के एक अनजाने-से एहसास में जीने के लिए उन्हें छोड़ दिया जाता है ।”

“सही कह रहे हो ।”

सुलेमान लोहार के चेहरे पर मलिनता-सी पुत गयी ।

सच तो ये है, सुलेमान लोहार पिछले एक महीने से ऐसी ही जिंदगी बसर कर रहा था ।

उसे सूरज की किरणों को देखे हुए काफी टाइम गुजर चुका था ।

“और जेंटलमैन !” कॉन्स्टेबल ने बड़ी गर्मजोशी से मेरी तरफ देखा- “तुम्हारे क्या हाल हैं ?”

मैं धीरे से मुस्कुरा दिया ।

“तुम्हारी फांसी की तारीख तो अभी शायद फाइनल नहीं हुई ।”

“हाँ ।”

“ठीक है, मैं चलता हूँ ।”

कॉन्स्टेबल जाने के लिए मुड़ा ।

“सुनो ।”

सुलेमान लोहार ने उसे आवाज दी ।

कॉन्स्टेबल, जो काल-कोठरी के दरवाजे के पास पहुँच गया था, ठिठका ।

“क्या बात है बाबा ?”

“हरिमोहन चौरसिया तो यहीं होगा ?”

“हाँ, है ।”

“अगर वो दिखाई पड़े, तो मेरे पास भेजना ।”

“ठीक है बाबा !”

कॉन्स्टेबल काल-कोठरी से बाहर निकल गया ।

निकलते ही उसने लोहे का मजबूत दरवाजा बंद कर दिया और उस पर पहले की तरह ताला डाल दिया ।

काल-कोठरी में अब पूर्व की भांति अंधेरा छा चुका था, घुप्प अंधेरा ।

सिर्फ जीरो वाट के बल्ब का मध्धिम प्रकाश किसी जुगनू की मानिंद वहाँ टिमटिमा रहा था ।

□□□

"यह हरिमोहन चौरसिया कौन है ?"

मैंने कॉन्स्टेबल के जाने के काफी देर बाद वह सवाल सुलेमान लोहार से पूछा था ।

"हरिमोहन चौरसिया एक कॉन्स्टेबल है ।"

"कॉन्स्टेबल ?"

"हाँ ।"

"उससे आपको क्या काम है, जो आपने उसे यहाँ बुलाया ?"

सुलेमान लोहार के होठों पर एकाएक षड़यंत्रपूर्ण मुस्कान थिरक उठी ।

वह मुस्कान ऐसी थी, जिसका अर्थ एकदम से लगा पाना मुश्किल था ।

"दरअसल जेल तोड़कर भागने की दिशा में यह मेरा पहला कदम है ।"

"क्या मतलब ?"

मैं उछल पड़ा ।

"आप यह कहना चाहते हैं ।" मैं बोला- "कि हरिमोहन चौरसिया नाम का वह कॉन्स्टेबल जेल से भाग निकलने में हमारी मदद करेगा ?"

"नहीं, उसके मदद करने का तो प्रश्न ही नहीं है ।" सुलेमान लोहार सपाट लहजे में बोला- "बल्कि अगर हरिमोहन चौरसिया को इस बात की भनक भी लग गयी कि हम जेल तोड़कर फरार होने की कोई योजना बना रहे हैं, तो वह हमारे लिए खतरे की घंटी अलग से बन जायेगा ।"

"फिर उसे बुलाने से क्या फायदा है ?"

"वह बस मेरे लिए एक बहुत छोटा सा काम करेगा बेटा ! ऐसा काम, जिसकी बदौलत हम इस काल-कोठरी से निकलकर जेल के मेडिकल-एड सेंटर में शिफ्ट हो सकेंगे ।"

"लेकिन वह काम तो कोई भी कॉन्स्टेबल कर सकता है ।"

"नहीं कर सकता ।" सुलेमान लोहार तुरंत बोला- "ऐसे आड़े-तिरछे या उल्टे-सीधे काम कोई करता है, तो हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला करता है । हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला एक रिश्वतखोर कॉन्स्टेबल है, रुपयों के लिए वह सब कुछ कर देगा । जेल में किसी कैदी ने पान-बीड़ी मंगानी हो, सिगरेट मंगानी हो, यहाँ तक की स्मैक भी मंगानी हो, तो हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला उसे सब कुछ लाकर देगा ।"

"सिर्फ रुपयों के लिए ?"

"हाँ, सिर्फ रुपयों के लिए ।"

"जेलर को उसकी इस हरकत की खबर है ?"

"पता नहीं, खबर है या नहीं है ।" अलबत्ता हरिमोहन चौरसिया का अपना काम बड़े धड़ल्ले से चल रहा है ।"

"एक सवाल पूछूं ?"

"पूछो ।"

“जेल से बाहर निकलने के यह क्या जरूरी है कि इस काल-कोठरी से निकलकर पहले मेडिकल-एड सेंटर में शिफ्ट हुआ जाये ?”

“बहुत जरूरी है ।”

“क्यों ?”

“तुम जानते ही हो ।” सुलेमान लोहार मुझे अपनी योजना विस्तारपूर्वक समझाता हुआ बोला- “कि इस काल-कोठरी से निकल भागना न सिर्फ मुश्किल है, बल्कि बहुत मुश्किल है, क्योंकि यह काल-कोठरी जेल की एक बहुत बड़ी बैरक के अंदर बनी हुई है । अगर हम यहाँ से भागेंगे तो पहले हमें काल-कोठरी का यह बेहद मजबूत दरवाजा तोड़ना होगा और उसके बाद बैरक का दरवाजा तोड़ना होगा । तब कहीं हम जेल के प्रांगण तक पहुंचेंगे । पता नहीं बैरक का दरवाजा तोड़ना कितना मुश्किल है, परंतु काल-कोठरी का यह जो दरवाजा तुम देख रहे हो, इसे देखकर तो मैं एक बात दावे के साथ कह सकता हूँ कि इसे तोड़ना बहुत मुश्किल है ।”

मेरी निगाह भी काल-कोठरी के दरवाजे पर जाकर ठिठक गयी ।

वाकई ।

सुलेमान लोहार बिल्कुल ठीक कह रहा था ।

काल-कोठरी के उस दरवाजे को तोड़ना बहुत मुश्किल था ।

“इसलिये मैंने एक बिल्कुल नई तरकीब सोची है बेटा !” सुलेमान लोहार आगे बोला- “इन दोनों दरवाजों में उलझने से बेहतर ये है कि हम काल-कोठरी से ही

निकलकर किसी ऐसी जगह शिफ्ट हो जाएं, जहाँ से हम आसानी के साथ भाग सकें ।"

"और इसके लिए आपने जेल की मेडिकल-एड सेंटर को चुना है ।"

"करेक्ट, क्योंकि जेल में वही एक ऐसी जगह है, जहाँ हम इस काल-कोठरी से निकलकर शिफ्ट हो सकते हैं ।"

"कैसे ?"

"वह सब मेरी बुद्धि का चमत्कार है । तुम देखते जाओ । बस मुझे हरिमोहन चौरसिया के आने का इंतजार है ।"

मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा ।

सच तो ये है, जेल तोड़कर भाग निकलने के नाम से ही मुझे घबराहट हो रही थी ।

मेरा कलेजा मुँह को आ रहा था ।

क्योंकि मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया था ।

जेल तोड़ना या गोली चलाना तो बहुत बड़ी बात होती है, मैंने आज तक कभी किसी को झापड़ तक नहीं मारा था ।

जबकि अब मैं सीधे-सीधे जेल तोड़ने जैसे बड़े काम को अंजाम देने जा रहा था ।

मैं जितना उस बारे में सोचता, उतना मेरे हाथ-पांव फूलते ।

रात के नौ बज रहे थे, जब हम दोनों ने साथ-साथ खाना खाया ।

□□□

सुबह होते ही हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला वहाँ आ धमका ।

वह बड़ा हास्यास्पद-सा करैक्टर था । उसकी तोंद बेइंतहा मोटी थी, जो गोश्त के एक बड़े लोथड़े की तरह उसके आगे झूलती रहती और जब वो चलता, तो वह आगे-आगे थरथराती । इसके अलावा उसकी मूंछें भी बड़ी गुच्छेदार थीं, जिन्हें वह हमेशा और ज्यादा उमेठ-उमेठकर उनमें बल देता रहता था ।

हरिमोहन चौरसिया की सबसे बड़ी पहचान उसका डंडा था, जो सदा उसके हाथ में रहता ।

"अस्सैलाम अलेकुम बाबा !" हरिमोहन चौरसिया काल-कोठरी में दाखिल होते हुए बाकायदा बुलंद आवाज में बोला ।

"अस्सैलाम अलेकुम !"

हरिमोहन चौरसिया को देखते ही सुलेमान लोहार के चेहरे पर भी रौनक आ गयी ।

वह बस थोड़ी देर पहले ही सुबह की नमाज पढ़कर निपटा था और अब मुसल्ला उठा रहा था ।

"कसम डंडे महाराज की बाबा !" हरिमोहन चौरसिया बड़े जोश के साथ बोला- "सतपाल से अभी थोड़ी देर पहले जब यह पता चला कि बाबा मुझे याद कर रहे हैं, तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा । बाबा, यह मेरे लिए बड़े फख्र की बात होगी कि मैं आपके किसी काम आऊं । एक महीना आपको यहाँ आये हुए हो गया, लेकिन कभी आपने मेरी सेवाएं नहीं लीं ।"

"कभी जरूरत ही नहीं पड़ी ।"

"यही, यही सोच-सोचकर तो मेरी हवा संट होती थी बाबा, कि आपको मेरी सेवाओं की जरूरत नहीं पड़ी । आपको हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला की सेवाओं की

जरूरत नहीं पड़ी । मैं यह सोचकर कांप उठता था बाबा, अगर जेल के सारे कैदी किसी दिन आपके जैसे सदाचारी हो गये, तो इस हरिमोहन चौरसिया का क्या होगा । इस हरिमोहन चौरसिया की चलती-फिरती दुकान का शटर तो उसी दिन एक झटके के साथ बन्द हो जायेगा ।"

सुलेमान लोहार ने अपने गले में झूलते ताबीज को आहिस्ता से पकड़कर चूमा और फिर हंसने लगा ।

"तुम बोलते बहुत हो हरिमोहन !"

"कसम डंडे महाराज की बाबा, यह हरिमोहन चौरसिया दो बातों का ही तो खाता है । एक तो अपने इस डंडे और दूसरी जबान का ।"

"लगता है ।" सुलेमान लोहार मुस्कुराता हुआ बोला- "तुम जबान का कुछ ज्यादा ही खाते हो ।"

सुलेमान लोहार की बात सुनकर हरिमोहन चौरसिया भी हंसा ।

जबकि मैं शांत था ।

बिल्कुल शांत ।

मैं काल-कोठरी के ही एक कोने में बैठा था और उन दोनों का वार्तालाप सुन रहा था ।

"यह बताओ बाबा !" हरिमोहन चौरसिया अपने डंडे को धीरे-धीरे जांघ पर थपथपाता हुआ बोला- "आपको आज मेरी याद कैसे आयी ?"

"तुमसे बस एक मामूली-सा काम आ पड़ा था ।"

वह शब्द बोलते-बोलते सुलेमान लोहार बहुत सावधान हो गया था ।

चौकन्ना !

और, सावधान मैं भी हो चुका था ।

यह सोचकर मेरे शरीर में कंपकंपी दौड़ गयी कि कहीं वह दुष्ट आदमी हमारी योजना न भांप जाये।

"काम कैसा भी हो बाबा, आप बेहिचक कहो।" हरिमोहन चौरसिया बोला- "यह हरिमोहन चौरसिया आपका हर काम खुशी-खुशी करेगा, दौड़कर करेगा।"

"मैं इस बात को अच्छी तरह जानता हूँ।" सुलेमान लोहार ने कहा- "इसीलिए मैंने तुम्हें याद किया।"

"काम क्या है ?"

"दरअसल कल से मेरे पेट में गड़बड़ चल रही है।" सुलेमान लोहार शुष्क स्वर में बोला- "पेट में मरोड़ भी है और थोड़ी पेचिश की शिकायत भी मैं महसूस कर रहा हूँ।"

"फिर ?"

हरिमोहन चौरसिया की आवाज में सस्पैंस झलका।

वह अपलक सुलेमान लोहार को देखने लगा।

"अगर हो सके तो मुझे बस 'मेट्रोजिल' की कुछेक टेबलेट्स ला दो, जिससे मेरे पेट की हालत सुधर जाये।"

सुलेमान लोहार के मुँह से वह शब्द निकलने की देर थी और तुरन्त हरिमोहन चौरसिया के हलक से ऐसा जोरदार कहकहा उबल पड़ा, जैसे उसने कोई बहुत बेहतरीन जोक सुन लिया हो।

"आपने भी कमाल कर दिया बाबा ! कमाल कर दिया ! कसम डंडे महाराज की, यह हरिमोहन चौरसिया तो ये समझ रहा था कि आज बाबा मेरे से सिगरेट लाने को बोलेंगे, दारू लाने को बोलेंगे, स्मैक लाने को बोलेंगे, लेकिन आपने बोला भी तो क्या बोला ? मेट्रोजिल टेबलेट ! पेट की गड़बड़ ठीक करने वाली टेबलेट।"

हरिमोहन चौरसिया ने पहले से भी ज्यादा बहुत बुलंद आवाज़ में कहकहा लगाया ।

और मैं !

मैं, जो योजना खुलने के डर से भयभीत था ।

मेरे होठों पर भी अब मुस्कुराहट आ गयी ।

"य... यानी तुम मुझे वह टेबलेट लाकर दोगे हरिमोहन ?"

"आपके लिए तो यह हरिमोहन चौरसिया अंग्रेजों के जमाने के तोप भी ला सकता था बाबा, मेट्रोजिल टेबलेट क्या चीज है ? दो घंटे के अंदर-अंदर मेट्रोजिल टेबलेट आपके सामने हाजिर होगी ।"

"कितने रुपये दूं ?"

"रुपयों की कोई जरूरत नहीं, वह टेबलेट्स हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला की तरफ से आपके लिए फ्री होगी ।"

"नहीं, नहीं ।" सुलेमान लोहार ने तुरंत अपनी जेब से सौ का एक नोट निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया- "तुम इसे अपने पास रख लो, मैं जानता हूँ कि हरिमोहन चौरसिया एक धंधे वाला आदमी है, वो कभी भी कोई काम फ्री नहीं करता ।"

सौ का नोट देखकर हरिमोहन चौरसिया की आंखों में चमक आ गयी और वह खीं-खीं करके अपने दांत चमकाने लगा ।

"आप मुझे धंधे वाला कहकर शर्मिंदा कर रहे हैं बाबा !"

"ऐसी कोई बात नहीं ।"

"ल... लेकिन... !"

"तुम इसे अपने पास रख लो ।"

सुलेमान लोहार ने वह सौ का नोट जबरदस्ती उसकी जेब में ठूंस दिया।

हरिमोहन चौरसिया खीं-खीं करता हुआ फिर भी इंकार करता रहा, लेकिन उसने अपनी जेब से सौ का नोट निकालकर वापस सुलेमान लोहार को न दिया।

□□□

सुलेमान लोहार की आँखें उस समय हजार-हजार वाट के बल्ब की मानिंद जगमगा रही थीं, जैसे उसे दुनिया की कोई बहुत बेशकीमती चीज मिल गयी हो।

वजह, अभी थोड़ी देर पहले हरिमोहन चौरासिया ने उसे मेट्रोजिल की दस टेबलेट्स लाकर दे दी थीं और अब वो टेबलेट्स उसके हाथों में थीं।

"अब तुम्हें जेल से फरार होने से कोई नहीं रोक सकता बेटा!" सुलेमान लोहार हर्षनाद-सा करता हुआ बोला- "इस दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। अब तुम इस टेबलेट का कमाल देखते जाओ।"

मैं!

सुलेमान लोहार के पास अभी भी बहुत स्तब्ध-सी मुद्रा में खड़ा था।

आश्चर्यचकित-सा।

"लेकिन आप इस मेट्रोजिल टेबलेट का क्या करोगे बाबा?"

"यह टेबलेट हमारे लिए जादू की टेबलेट साबित होगी बेटा! इस टेबलेट की जहाँ एक खासियत ये है कि यह पेट की बहुत सारी बीमारियों को ठीक करने के काम आती है, वहीं इसकी एक बुराई भी है। अगर इस मेट्रोजिल टेबलेट

मैं चुप हो गया ।

लेकिन घबराहट मुझे लगातर हो रही थी ।

मेरा दिल खूब डरा हुआ था ।

□□□

बहरहाल सब कुछ आसानी से निपट गया और योजनाबद्ध अंदाज में निपट गया ।

शाम को खाना खाने के बाद हम दोनों ने मेट्रोजिल की चार-चार टेबलेट्स खा लीं ।

वह हाईडोज बहुत थी, बल्कि बहुत से भी ज्यादा थी । यह अहसास हमें बाद में हुआ ।

टेबलेट खाने के मुश्किल से आधा घंटे के अंदर-ही-अंदर हम दोनों की तबीयत खराब होनी शुरू हो गयी । पहले तो हमारा सिर भारी-भारी होने लगा । फिर चक्कर आने लगे । उसके बाद दो-तीन बड़ी-बड़ी उल्टियाँ हुईं ।

उल्टियाँ इतनी जबरदस्त थीं कि हमारा दिल-दिमाग पूरी तरह हिलकर रह गया ।

थोड़ी देर पहले हमने जो खाना खाया था, ख़ासतौर पर उस खाने की वजह से हमें और भी जबरदस्त उल्टियाँ हुईं । तुरंत जेल के कांस्टेबल और वार्डन दौड़े-दौड़े वहाँ आये ।

पूरी जेल में हड़कंप मच गया ।

फ़ौरन डॉक्टर को भी वहाँ बुलाया गया ।

उस समय हम दोनों की हालत सचमुच बहुत नाजुक थी ।

सुलेमान लोहार का तो मुझे मालूम नहीं, अलबत्ता एक-के-बाद-एक हुई उन कई सारी उल्टियों ने मेरे छक्के जरूर छुटा डाले थे ।

मेरी आँखों के सामने मौत नाचने लगी ।

अंतड़ियाँ दु:खने लगीं ।

मैंने कल्पना भी नहीं की थी, उल्टियाँ होने से मेरी इतनी बुरी हालत हो जायेगी ।

डॉक्टर ने आते ही हम दोनों का चेकअप किया ।

“तुम दोनों ने खाना कितनी देर पहले खाया था ?” डॉक्टर बोला ।

“बस...बस थोड़ी देर पहले ही खाया था डॉक्टर !” सुलेमान लोहार के साँस भी उल्टे-सीधे चल रहे थे ।

उसकी भी बुरी हालत थी ।

“ओह !” डॉक्टर के चेहरे पर चिंता के भाव दौड़े- “लगता है, तुम दोनों की यह हालत फ़ूड-पॉइजनिंग के कारण हुई है । इन्हें फ़ौरन मेडिकल-एड सेंटर में पहुँचाने की व्यवस्था करो वार्डन !”

डॉक्टर के आदेश की देर थी, फ़ौरन हम दोनों को स्ट्रेचर पर लिटाकर जेल के मेडिकल-एड सेंटर में पहुँचा दिया गया ।

इस प्रकार हमारी योजना का पहला चरण आसानी से पूरा हो गया ।

बिना किसी विघ्न-बाधा के पूरा हो गया ।

□□□

मेडिकल-एड सेंटर जेल के विशालकाय प्रांगण में बना हुआ था और चार नंबर बैरक के बिल्कुल बराबर में था ।

मेडिकल-एड सेंटर में पहुँचते ही पंप के द्वारा हम दोनों के पेट में जितना भी खाद्य पदार्थ था, सबसे पहले वह

सब बाहर निकाला गया और फिर हमें ग्लूकोज की बोतल लगाई गयी ।

रात के बारह बजे तक भी हमारी हालत पूरी तरह नॉर्मल नहीं हुई ।

हमारा पेट हल्का-हल्का अभी भी दुःख रहा था ।

तभी मेडिकल-एड सेंटर में ही हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला हमारे पास आया । वो अर्ध्दरात्रि का समय था और उस वक्त हमारे आसपास सेंटर में कोई न था । सिर्फ मेडिकल सेंटर के बाहर ही पहरे की व्यवस्था थी ।

"अस्सैलाम अलेकुम बाबा !" हरिमोहन चौरसिया सेंटर में घुसते ही बड़ी गरमजोशी के साथ बोला ।

हम दोनों की निगाह हरिमोहन चौरसिया पर पड़ी ।

"अस्सैलाम अलेकुम !" सुलेमान लोहार ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही धीरे से कहा ।

हरिमोहन चौरसिया के हाथ में उस समय भी अपना डंडा था और रिवॉल्वर का दस्ता उसकी जेब से बाहर झांक रहा था ।

"कसम डंडे महाराज की बाबा !" हरिमोहन चौरसिया, सुलेमान लोहार के नजदीक पहुँचकर अपनी ही ट्यून में बोला- "अगर इस हरिमोहन चौरसिया को किसी ने बेवकूफ बनाया, तो तुमने बनाया और इतना ठोंककर बनाया कि इस हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला की भी हवा संट हो गयी ।"

हम दोनों हड़बड़ाये ।

एकाएक हरिमोहन चौरसिया ने वहाँ आकर जिस अंदाज में बात शुरु की थी, वह हमारे छक्के छुड़ा डालने के लिए पर्याप्त थी ।

"यह तुम क्या कह रहे हो हरिमोहन ?" सुलेमान लोहार विचलित मुद्रा में बोला ।

"मैं कुछ कहने नहीं आया हूँ बाबा !" हरिमोहन चौरसिया बोला- "बल्कि तुम्हें कुछ बताने आया हूँ ।"

"क्या बताने आये हो ?"

तब हरिमोहन चौरसिया ने बड़ी स्टाइल के साथ अपनी जेब से सौ का नोट निकाला और उसे सुलेमान लोहार की आंखों के सामने नचाया ।

"इसको पहचानते हो बाबा ?"

सुलेमान के चेहरे पर असमंजसपूर्ण भाव नजर आने लगे ।

वैसे ही भाव मेरे चेहरे पर भी थे ।

"यह वही नोट है बाबा, जिसे आज सुबह तुमने मेरे को दिया, टेबलेट्स लाने के वास्ते दिया ।" हरिमोहन चौरसिया अपनी तोंद हिलाता हुआ बोला- "जानते हो बाबा, तुमसे इस नोट को लेकर मैं क्या सोच रहा था ?"

"क्या सोच रहे थे ?"

"मैं सोच रहा था कि यह सौदा बढ़िया, बहुत बढ़िया रहा । सिर्फ दस टेबलेट्स के बदले में मैंने तुमसे सौ का पत्ता झटक लिया । लेकिन मैं कहाँ जानता था बाबा, तुमने मेरे को बेवकूफ बना दिया है । और इतना बड़ा बेवकूफ बना दिया है, जो यह हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला अपनी जिंदगी में पहले कभी नहीं बना । दाता रे दाता, तुमने तो सौ के पत्ते में मुझसे तोप का भी बाप मंगा लिया ।"

"तोप का बाप ?" सुलेमान लोहार चौंका- "मैं कुछ समझा नहीं ।"

"बाबा, तुम तो जेल तोड़कर भागने की योजना बना रहे थे।"

मैं एकदम यूं उछलकर बिस्तर पर बैठा, जैसे मुझे मिर्गी आ गयी हो।

सुलेमान लोहार भी झटके से उठा।

दोनों के होश गुम।

"य...यह तुम क्या कह रहे हो हरिमोहन ?" सुलेमान लोहार भयभीत मुद्रा में बोला- "हम जेल तोड़कर भागने की योजना बना रहे थे ?"

"क्यों ?" हरिमोहन चौरसिया अपनी गुच्छेदार मूंछ में उमेठी देता हुआ बोला- "अपनी पोल-पट्टी खुलती देखकर हवा संट हो गयी बाबा, सांसों का धड़नतख्ता बन गया।"

"लगता है तुम्हें वहम हो गया है हरिमोहन चौरसिया।"

हरिमोहन चौरसिया हंसा।

"कसम डंडे महाराज की बाबा ! इस हरिमोहन चौरसिया की उम्र पैंतीस साल है और पिछले पैंतीस साल में हरिमोहन चौरसिया को कभी भी कोई वहम नहीं हुआ। यह हरिमोहन चौरसिया जब-जब जो बात सोचता है, तब-तब वही बात सच होती है। अभी थोड़ी देर पहले जब मेरे को यह पता चला कि तुम दोनों को जबरदस्त उल्टियां हुई हैं और फिलहाल तुम्हें काल-कोठरी से निकालकर मेडिकल-एड सेंटर में शिफ्ट किया गया है, तो मैं तभी समझ गया था कि यह मेट्रोजिल टेबलेट का कमाल है। और जरूर तुम दोनों जेल से भाग निकलने का कोई प्रोपेगेंडा कर रहे हो। बाबा, अगर यह बात मैंने अभी तक जेल के जेलर को नहीं बताई, तो सिर्फ इसलिये नहीं बताई, क्योंकि वह टेबलेट मैंने ही

तुम्हें लाकर दी थी और मैं भी इस पूरे प्रोपेगंडे में कहीं-न-कहीं दोषी था।"

सुलेमान लोहार जैसे दुर्दांत अपराधी के चेहरे पर भी अब मैंने साफ-साफ हवाइयाँ उड़ते देखीं।

जबकि मेरा दहशत से कितना बुरा हाल था, इसका तो आप आसानी से अनुमान लगा ही सकते हैं।

हम दोनों के चेहरे फक्क थे।

सफेद झक्क़!

आखिर हम रंगे हाथों पकड़े गये थे।

"एक बात बोलूं बाबा?" हरिमोहन चौरसिया अपनी जांघ पर डंडा फटकारते हुए सुलेमान लोहार के थोड़ा नजदीक पहुँचा।

उसकी आवाज उस समय धीमी थी।

"क... क्या बात?" सुलेमान लोहार की आवाज भी उसके बात करने के स्टाइल को देखकर रहस्यमयी हो उठी।

"बाबा, अगर तुम जेल तोड़कर भागना चाहते हो, तो भाग सकते हो।"

सुलेमान लोहार के शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी।

"यह तुम क्या कह रहे हो?"

"कसम डंडे महाराज की बाबा, मैंने ऐसी किसी लैंग्वेज में बात नहीं की, जो आपकी समझ में न आये। मैंने बहुत सिंपल और साधारण-सी हिंदी भाषा में आपसे यह बात बोली है।"

"लेकिन... लेकिन...।"

हरिमोहन चौरसिया के रवैए ने हम दोनों की खोपड़ी उलटकर रख दी थी।

"बाबा, आप खामखाह चौंक रहे हो। आखिर हिंदुस्तान में रोज जेलें टूटती हैं, रोज जेल से कैदी भागते हैं। तुम दोनों भी यहाँ से भाग जाओ, तो कौन-सी आफत आ जायेगी, कौन सा मुश्किलों का पहाड़ टूट पड़ेगा।"

"ल...लगता है।" सुलेमान लोहार खिसियानी हंसी हंसता हुआ बोला- "तुम मजाक कर रहे हो हरिमोहन।"

"नहीं।" हरिमोहन चौरसिया ने बड़ी संजीदगी के साथ इंकार में गर्दन हिलाई- "नहीं, यह हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला कम-से-कम धंधे के वक्त कभी मजाक नहीं करता बाबा!"

"धंधे के वक्त?"

"बिल्कुल, यह अपना धंधे का टाइम है। तुम इधर जेल से भागोगे बाबा, तो अपुन किसी से नहीं बोलेगा, बल्कि अपुन चूं भी नहीं करेगा। अपनी आँखें बंद करके बैठ जायेगा, एकदम से अंधा बनकर। जानते हो बाबा, इसका क्या मतलब है?"

"क्या मतलब है?"

"इसका सीधा-सीधा मतलब है, अपुन तुम्हारा स्पेशल ख्याल रहता है। बस ऐसा ही थोड़ा-सा ख्याल तुमने भी मेरा रखना होगा।"

"तुम्हारा ख्याल कैसे रखा जायेगा?"

"बाबा, रोकड़ा है न ख्याल रखने के वास्ते। रोकड़ा से बढ़िया क्या चीज है। तुम जेल तोड़कर भागो, चिंता नहीं। बस इधर मेरे को पचास हजार का चढ़ावा दे दो।"

"प...पचास हजार का चढ़ावा?"

"हाँ।"

"लेकिन...।"

"नहीं बाबा, मोल-भाव नहीं । हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला धंधे में मोल-भाव कभी नहीं करता । एक बार बोल दिया, सो बोल दिया । एक रेट की दुकानदारी बाबा, या तो बोलो पचास हजार दिए, या बोलो नहीं । नहीं दिए, तो मैं अभी जेलर के सामने जाकर तुम दोनों का भांडा फोड़ता हूँ कि तुम इधर क्या प्रोपेगेंडा कर रहे हो ।" वह शब्द कहते हुए हरिमोहन चौरसिया डंडेवाला खी-खी करके हंसा- "आखिर किसी-न-किसी का तो ख्याल रखना पड़ता बाबा ! तुम्हारा नहीं तो नौकरी का, कानून का ।"

सुलेमान लोहार ने अब मेरी तरफ देखा ।

हरिमोहन चौरसिया डंडे वाला ने खुद ही अपनी नियत का भांडा फोड़ दिया था ।

एकाएक हमारा सारा डर दूर हो गया ।

हमारे चेहरे पर विश्वास की चमक आ गयी ।

□□□

और !

सुलेमान लोहार तो अब बिस्तर छोड़कर खड़ा हो गया ।

इतना ही नहीं, वह हरिमोहन चौरसिया के नजदीक पहुँचा ।

एकदम सामने ।

"तुम बिल्कुल एक नंबर के गधे हो हरिमोहन !"

"क्या मतलब ?" हरिमोहन चौरसिया चौंका ।

उसकी सारी श्यानपंती हवा हो गयी ।

"तुम्हें इतना भी नहीं मालूम ।" सुलेमान लोहार फुसफुसाया- "कि इस तरह की बातें कभी खुले में नहीं करनी चाहिये ।"

"फिर कहाँ करनी चाहिये ?"

"अकेले में, तन्हाई में ।"

"जैसे ?"

"जैसे मेरे साथ आओ ।"

हरिमोहन चौरसिया अब मूर्खों की तरह अपनी पलकें झपकाने लगा ।

जबकि सुलेमान लोहार, हरिमोहन चौरसिया को लेकर वहीं थोड़े फासले से बने एक टॉयलट की तरफ बढ़ गया ।

न जाने क्यों, मुझे उस वक्त सुलेमान लोहार के चेहरे पर कोई बहुत अच्छे भाव न दिखाई पड़े ।

मुझे लगा, वह कोई बहुत खतरनाक कदम उठाने जा रहा है ।

क्या ?

यह एकाएक मुझे भी न सूझा ।

शीघ्र ही वह दोनों मेरी आंखों के सामने ही टॉयलेट में जाकर बंद हो गये ।

मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा, जैसे कोई उस पर बुरी तरह हथौड़े बरसा रहा हो ।

फिर वही हुआ, जिसकी मुझे आशंका थी ।

एकाएक मुझे उस बंद टॉयलेट के अंदर से किसी की बहुत घुटी-घुटी सी कर्कश चीख की आवाज सुनाई पड़ी । फिर ऐसा लगा, जैसे एक झटके के साथ वह चीख बंद हो गयी हो । उसके बाद शांति, गहरी शांति ।

मेरे शरीर का एक-एक रोआं खड़ा हो गया । मैं भी झपटकर बिस्तर से उठा और बन्दूक से छूटी गोली की तरह टॉयलेट की तरफ भागा ।

"क्या हो रहा है अंदर ?" मैंने बहुत आंदोलित मुद्रा में दरवाजा खटखटाया- "क...क्या हो रहा है ?"

कोई कुछ न बोला ।

अंदर से बस किसी के धड़ाम से नीचे फर्श पर गिरने की आवाज मेरे कानों में पड़ी ।

मैं और भयभीत हो उठा ।

"दरवाजा खोलो ।" मैंने दरवाजा पहले से भी ज्यादा जोर-जोर से थपथपाया- "द...दरवाजा खोलो ।"

अब टॉयलेट में किसी की पदचापों का स्वर उभरा ।

मेरी सांसें थम गयीं ।

फिर सिटकनी नीचे गिरने की आवाज हुई और दरवाजा खुल गया ।

दरवाजा खुलने के बाद मैंने टॉयलेट का जो मंजर देखा, उसने मेरी रीढ़ की हड्डी तक में खौफ की सिहरन पैदा कर दी । नीचे फर्श पर डस्टबिन के बिल्कुल पास में हरिमोहन चौरसिया की खून से लथपथ लाश पड़ी थी । जिस डंडे को हरिमोहन चौरसिया अपने साथ चिपकाए-चिपकाए फिरता था और जिसकी वह कसमें खाता था, वही डंडा बेदर्दी के साथ उसके हलक में अंदर तक ठोंक दिया गया था और फिर उसकी गर्दन तोड़ डाली गयी थी । फिलहाल उसकी नाक और मुँह से थुलथुल करके खून बह रहा था, जबकि शरीर ठंडा पड़ा था ।

सुलेमान लोहार धीरे-धीरे कदमों से चलता हुआ टॉयलेट से बाहर निकला ।

एक रिवॉल्वर उस समय सुलेमान लोहार के हाथ में थी ।

वो वही रिवॉल्वर थी, जिसका दस्ता हरिमोहन चौरसिया की जेब से बाहर झांक रहा था।

"य...यह आपने क्या किया बाबा ?" मेरी आवाज सूखे पत्ते की तरह कंपकंपायी- "आपने... आपने उसे मार डाला ?"

"हाँ, मार डाला मैंने उसे।" सुलेमान लोहार बहुत सख्ती के साथ बोला- "क्योंकि वह एक नीच आदमी था। रिश्वत का खून उसके मुँह लग गया था। अगर वह जिंदा रहता, तो हमारी योजना के रास्ते में रुकावट पैदा करता। इसलिये उसका मर जाना ही बेहतर था।"

मैं विस्मय से सुलेमान लोहार को देखता रह गया।

कितनी आसानी से उसने एक आदमी को मार डाला था और उसके माथे पर हल्की सी शिकन तक नहीं थी।

उस पल मुझे सुलेमान लोहार से भी डर लगने लगा।

"अब क्या करना है ?"

"अब जितनी जल्द-से-जल्द हो सके।" सुलेमान लोहार बोला- "हमें यहाँ से भागना चाहिये।"

"लेकिन मेडिकल सेंटर के बाहर पहरा है बाबा !" मैं धीरे से फुसफुसाया।

"उसकी चिंता मत करो। फिलहाल हमें ऐसे ही झंझटों का सामना करते हुए आगे बढ़ना है। और सबसे बड़ी बात ये है, अब हमारे पास रिवॉल्वर भी है।"

रिवॉल्वर !

मेरी निगाह रिवॉल्वर पर जाकर ठहर गयी।

मेरे दिल का डर और बढ़ गया।

□□□

ईश्वर की एक मामले में हमारे ऊपर बड़ी कृपा रही ।

मेडिकल-एड सेंटर के बाहर जो कॉन्स्टेबल तैनात था, वह थोड़ा लापरवाह किस्म का आदमी था । खासतौर पर एक जगह टिककर ड्यूटी देना तो जैसे वह जानता ही नहीं था । वह उसके लिए एक बहुत बोरियत भरा काम होता । जिस समय हम दबे पांव मेडिकल-एड सेंटर के दरवाजे पर पहुंचे, उस समय भी वह सीटी बजाता और किसी फिल्मी गाने की धुन गुनगुनाता हुआ सेंटर से काफी आगे अंधेरे में मटरगश्ती कर रहा था ।

हमारे लिए रास्ता साफ था ।

हम कमान से छूटे तीर की तरह सेंटर से निकलकर जेल के प्रांगण में भागे ।

जेल के प्रांगण में सुरक्षा का व्यापक इंतजाम था । वहाँ जगह-जगह हथियारबंद गार्ड, जो पहरेदारी कर रहे थे, उनके कंधों पर ऑटोलोडर राइफलें थीं और कुछेक के पास वॉकीटॉकी सेट थे । वहीं जेल के प्रांगण में बीचों-बीच एक सिक्योरिटी टावर भी बना हुआ था, जैसा अमूमन ज्यादातर जेलों में होता है । उस सिक्योरिटी टावर के ऊपर एक बहुत हाई पावर वाली फ्लड लाइट लगी हुई थी, जो चारों तरफ घूम-घूमकर जेल में अपना प्रकाश बिखेर रही थी । सिक्योरिटी टावर पर ही दो गार्ड भी बड़ी मुस्तैदी के साथ तैनात थे और वह थोड़ा रुक-रुककर दूरबीन से जेल का निरीक्षण करते । इसके अलावा उस जेल की बाउंड्री वाल भी बहुत ऊंची थी और उसके ऊपर बिजली के करण्टयुक्त तार लगे थे । कुल मिलाकर जेल में सुरक्षा का अच्छा-खासा इंतजाम था और वहाँ से भाग निकलना आसान न था ।

जेल के मेन गेट पर भी तगड़ी सिक्योरिटी थी ।

लेकिन सुलेमान लोहार उस पूरे सिक्योरिटी सिस्टम को देखकर हताश नहीं हुआ था और उसने फिर भी जेल से भाग निकलने की एक फुलप्रुफ प्लानिंग तैयार कर ही ली थी ।

दरअसल रात के ठीक एक बजे जेल के उस सिक्योरिटी स्टाफ को लेकर, जिसकी ड्यूटी ऑफ हो जाती थी, एक स्टेशन वैगन वहाँ से जाती थी ।

सुलेमान लोहार की प्लानिंग थी कि उसी स्टेशन वैगन के नीचे चिपककर जेल से फरार हुआ जाये ।

वह एक आसान तरीका था ।

उस तरीके से जेल के मेन गेट से भी बाहर निकलने में कोई प्रॉब्लम नहीं होनी थी ।

कुल मिलाकर सुलेमान लोहार ने एक अच्छी प्लानिंग तैयार की थी ।

उस समय सुलेमान लोहार और मैं सिक्योरिटी टावर के ऊपर घूमती फ्लड लाइट के प्रकाश से बचते हुए बहुत धीरे-धीरे स्टेशन वैगन की तरफ बढ़ रहे थे ।

हम दोनों बहुत सावधान थे ।

चौकन्ने ।

हमारी निगाह पहरा देते गार्डों पर भी थी ।

हम जानते थे, अगर किसी एक की निगाह में भी हम आ गये, तो उसी पल हमारी पूरी योजना फेल हो जानी थी ।

मेरा दिल बहुत जोर-जोर से धड़क रहा था ।

न जाने क्यों किसी अनिष्ट की आशंका मुझे बार-बार सता रही थी ।

मुझे लग रहा था, कुछ होगा ।

और हुआ ।

मेरी आशंका से भी बढ़कर हुआ ।

अभी हम दोनों प्रांगण में खड़ी स्टेशन वैगन से काफी फासले पर थे कि तभी एकाएक जेल में जोर-जोर से खतरे का सायरन बज उठा ।

सायरन की आवाज ऐसा भीषण क्रन्दन पैदा करने वाली थी, जैसे नीले आकाश में गिध्द का विशाल झुंड चीख-पुकार मचाने लगा हो ।

"सायरन !" मैं एक चौबारे के नीचे छिपकर भागते-भागते दहल उठा- "यह सायरन क्यों बजने लगा बाबा ?"

"लगता है, किसी की निगाह टॉयलेट में पड़ी हरिमोहन चौरसिया की लाश पर पड़ गयी है और यह बात भी फैल चुकी है कि हम लोग मेडिकल-एड सेंटर से भाग निकले हैं ।"

सायरन की आवाज सुनकर सुलेमान लोहार के चेहरे पर भी आतंक की छाया दौड़ गयी ।

तभी चारों तरफ घूमती फ्लड लाइट का प्रकाश बड़ी तेजी से हमारी तरफ बढ़ा ।

इससे पहले कि वह प्रकाश हमारे सिर के ऊपर से गुजरता, हम दोनों वहीं चौबारे के पास बनी एक छोटी सी दुबारी में छिप गये ।

तीक्ष्ण प्रकाश हमारे बिल्कुल सामने से गुजर गया ।

सायरन अभी भी जोर-जोर से चीख रहा था ।

इतना ही नहीं, सायरन बजते ही पूरी जेल में भी जबरदस्त हड़कंप मच चुका था ।

हथियारबंद गार्ड के इधर-से-उधर दौड़ने की आवाजें अब साफ सुनाई पड़ रही थीं ।

जगह-जगह हम दोनों को ढूंढा जा रहा था ।

हंगामे का माहौल था ।

"अब हम क्या करें ?" मैंने सुलेमान लोहार की तरफ देखा ।

सुलेमान लोहार !

जिसके हाथ में रिवॉल्वर थी ।

और रिवॉल्वर का रुख जेल के प्रांगण की तरफ था, वो किसी भी क्षण गोली चलाने के लिए तत्पर था ।

"हमारे पास एक ही तरीका है ।" सुलेमान लोहार बोला- "कि हम जल्द-से-जल्द सामने खड़ी उस स्टेशन वैगन के नीचे पहुंचे ।"

"ल... लेकिन अब इस दुबारी से बाहर निकलने में हमारे लिए बहुत खतरा है बाबा !"

"मैं भी जानता हूँ, मगर यह खतरा हमें उठाना होगा ।"

मेरा दिल पहले से भी ज्यादा जोर-जोर से धड़कने लगा ।

फिर हम दोनों चुपचाप दुबारी से बाहर निकल आये और अंधेरे का ही एक हिस्सा बने हुए दबे पांव स्टेशन वैगन की तरफ बढ़े ।

□□□

उस जबरदस्त हंगामे के बीच भी हम स्टेशन वैगन के नीचे तक कुशलतापूर्वक पहुँच गये ।

इसका सारा श्रेय मैं सुलेमान लोहार को ही दूंगा । वह एक बहुत हौसलामंद और दिलेर आदमी था, उस अफरातफरी के माहौल में अगर मैं अकेला होता, तो दुबारी से एक कदम बाहर निकलने की भी हिम्मत न दिखा पाता

और अगर हिम्मत दिखाता, तो तत्काल गार्डों के फंदे में होता ।

सायरन की आवाज अब बंद हो चुकी थी, लेकिन जेल में हंगामा पहले से भी बहुत ज्यादा बढ़ गया था ।

"वह दोनों भागने न पायें ।" जेलर की बहुत कर्कश आवाज उस समय पूरी जेल में गूंज रही थी ।

वह शायद पब्लिक एड्रेस सिस्टम पर चिल्ला रहा था ।

"उन दोनों को चारों तरफ ढूंढो, चारों तरफ । मेन गेट पर भी निगाह रखो ।"

जेलर के चिल्लाने की आवाज लगातार गूंज रही थी ।

वह गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा था ।

उसके चिल्लाने ने माहौल में और गर्मी पैदा कर दी थी ।

"यह सब कुछ ठीक नहीं हुआ है ।" सुलेमान लोहार बेचैनीपूर्वक बोला- "यह हंगामा हमारे लिए मुश्किल पैदा कर सकता है ।"

मैंने भी बेचैनी के साथ पहलू बदला ।

उस समय हम दोनों स्टेशन वैगन के नीचे छिपे हुए थे ।

हमारे इधर-उधर सब तरफ से जेल के प्रांगण में गार्डों के दौड़ने की आवाजें आ रही थीं ।

हम दोनों सांस रोके वहाँ बैठे रहे ।

तभी एक घटना और घटी ।

हंगामाखेज घटना ।

न जाने कैसे एक गार्ड की निगाह हम दोनों के ऊपर पड़ गयी और वो हमारे पीछे से बहुत दबे पांव वैगन की तरफ बढ़ा ।

बहुत चुपचाप ।

फ़ौरन गार्ड अपने-अपने हथियार लेकर उस वैगन को चारों तरफ से घेरने लगे थे ।

"यह दोनों बचकर नहीं जाने चाहिये ।" जेलर लगातार पब्लिक एड्रेस सिस्टम पर गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा था- "बचने नहीं चाहियें ।"

मैंने अपने शुष्क अधरों पर जबान फेरी ।

"फ्लड लाइट का फोकस भी ठीक स्टेशन वैगन के एकदम ऊपर करो, जल्दी करो ।"

जेलर के आदेश की देर थी, तुरंत चारों तरफ घूमती फ्लड लाइट एक ही जगह रुक गयी और फिर धीरे-धीरे स्टेशन वैगन के ऊपर फोकस बनाने लगी ।

कुछ ही क्षण बाद उसका सारा प्रकाश स्टेशन वैगन के ऊपर ही पड़ रहा था ।

"यह और खतरनाक काम हुआ है ।" सुलेमान लोहार बड़बड़ाया ।

और !

खतरे का अहसास मुझे भी हो रहा था ।

वहीं वैगन के नजदीक गार्ड की ऑटोलोडर राइफल पड़ी थी, जिसे सुलेमान लोहार ने उठा लिया और रिवॉल्वर मुझे दे दी ।

दाता !

वह पहला मौक़ा था, जब मैंने अपने इन हाथों में कोई वैपन पकड़ा ।

रिवॉल्वर को पकड़ते ही मेरे शरीर में दहशत की एक अजीबो-गरीब सी लहर दौड़ गयी ।

वैगन के चारों तरफ अब बड़ी तादात में गार्ड जमा होने लगे थे ।

मुझे यह कबूल करने में कोई हिचक नहीं, उस समय हम फंस चुके थे ।

बहुत बुरी तरह फंस चुके थे ।

मुझे साफ़-साफ़ दिखाई पड़ रहा था कि सुलेमान लोहार की जेल से फरार होने वाली योजना फ्लॉप हो चुकी है ।

मगर एक बात का आश्चर्य मुझे जरूर था । सुलेमान लोहार के चेहरे पर उस भीषण संकट के समय भी हताशा के चिह्न नहीं थे । वह बड़ा ही जीवट वाला आदमी था ।

फिर उसने एक खतरनाक कदम और उठाया ।

उसने वैगन के नीचे छुपे-छुपे ऑटोलोडर राइफल से चारों तरफ जमा होते गार्डों पर धुआंधार गोलियां चलानी शुरु कर दीं ।

चीख-पुकार मच गयी ।

गार्ड भागने लगे ।

"बेटा !" सुलेमान लोहार जबरदस्त फायरिंग करता हुआ चिल्लाया- "तुम भी गोली चलाओ । इन हरामजादों के कदम एक जगह टिकने नहीं चाहियें ।"

गोली चलाने के नाम पर मेरे छक्के छूट पड़े ।

"ल... लेकिन !" मैं हकला उठा- "लेकिन मैंने आज तक गोली नहीं चलाई बाबा !"

"हर काम, जिन्दगी में कभी-न-कभी पहली बार करना पड़ता है बेटा ! रिवॉल्वर को अपने हाथ में कसकर पकड़ लो और कंधे की मांसपेशियाँ तानकर जिधर भी दुश्मन दिखाई दे, बस ट्रेगर दबा दो ।"

सुलेमान लोहार गोली चलाने में सांस नहीं ले रहा था ।

मैंने भी हिम्मत दिखाई ।

मैंने रिवॉल्वर को अपने दोनों हाथों में कसकर पकड़ा और फिर ट्रेगर दबा दिया।

धांय से गोली चली।

बैकलेश की वजह से मुझे जोरदार झटका लगा, परन्तु मुझे संतोष इस बात का था कि मेरी गोली एक भागते हुए गार्ड की टांग में जाकर लगी थी और वो चीखता हुआ वहीं गिर पड़ा।

"गुड !" सुलेमान लोहार ने गोली चलाते हुए प्रशंसनीय नज़रों से मेरी तरफ देखा- "शाबाश बेटा !"

मेरा हौसला बढ़ा !

मैंने दो गोलियां और चलायीं।

गार्डों के पैर अब पूरी तरह उखड़ चुके थे और प्रांगण में इस समय कोई सात-आठ गार्डों की लाशें पड़ी थीं।

जबकि हम दोनों अभी तक इसलिये सुरक्षित थे, क्योंकि स्टेशन वैगन के नीचे थे। स्टेशन वैगन हमारे लिए कवर का काम कर रही थी।

□□□

फिर कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया।

गहरा सन्नाटा !

हथियारबंद गार्ड अब स्टेशन वैगन से काफी दूर-दूर भाग खड़े हुए थे। जबकि फ्लड लाइट का प्रकाश अभी भी ठीक स्टेशन वैगन के ऊपर पड़ रहा था और उसने वहाँ दिन जैसा उजाला कर रखा था।

"बाबा, मैं एक बात पूछूं ?" मेरी आवाज में गहरा सस्पेंस था।

"पूछो।"

"अब हम जेल से बाहर कैसे निकलेंगे ?"

"फिलहाल मैं वही बात सोच रहा हूँ। जेल से बाहर निकलने का बस एक ही तरीका है।"

"क्या ?"

"अगर जेल का कोई बड़ा अधिकारी हमारे कब्जे में आ जाये, तो फिर हमारा काम बन जायेगा।"

"बड़ा अधिकारी ?"

"हाँ !"

"ल... लेकिन कोई बड़ा अधिकारी भला हमारे कब्जे में कैसे आयेगा ?" मैं हैरानीपूर्वक बोला।

"वो भी देखते जाओ। फिलहाल हमें किसी तरह इस स्टेशन के नीचे से निकलकर इसके ड्राइविंग पोर्शन तक पहुँचना है।"

"उससे क्या होगा ?"

"उसी से सब कुछ होगा।"

वो एक खतरनाक काम था।

सुलेमान लोहार ने नीचे झुककर वैगन के आसपास का निरिक्षण किया।

प्रांगण में वैगन के दायीं तरफ कुछ कम गार्ड थे और वो काफी दूर भी थे।

"हम दोनों इस तरफ से बाहर निकलेंगे।" सुलेमान लोहार दायीं तरफ इशारा करता हुआ बोला- "और नीचे से बाहर निकलते ही हमने बड़ी तेजी के साथ दौड़कर स्टेशन वैगन के ड्राइविंग पोर्शन में घुसना है। ध्यान रहे, सब कुछ सेकेंडों के हिसाब में होना चाहिये। अगर ज़रा भी देर हुई, तो ऑटोलोडर राइफलों का निशाना बनने से हमें कोई नहीं रोक सकेगा। अंडरस्टैंड ?"

"आई अंडरस्टैंड !"

फिर जान पर खेलकर वो काम भी किया गया ।

हम दोनों लगभग साथ-साथ तोप से छूटे गोले की तरह वैगन के नीचे से बाहर निकले और अद्वितीय फुर्ती के साथ वैगन के ड्राइविंग डोर पर झपटे ।

हम दोनों के बाहर निकलते ही गार्डों के बीच हड़कंप मच गया ।

उन्होंने आनन-फानन अपनी रायफलें संभालीं, परंतु इस मामले में सुलेमान लोहार कहीं ज्यादा फुर्तीला साबित हुआ । गार्ड अपनी राइफलों के ट्रेगर दबा पाते, उससे पहले ही सुलेमान लोहार ने झपटकर स्टेशन वैगन का ड्राइविंग डोर खोल डाला और चीते जैसी जंप लगाकर उसके अंदर घुस गया ।

सुलेमान लोहार के पीछे-पीछे मैं भी उसी जैसी फुर्ती के साथ ड्राइविंग पोर्शन में घुसा ।

धांय ! धांय ! ! धांय ! ! !

तभी जैसे गोलियों की बाढ़-सी हमारे ऊपर झपट पड़ी, परंतु सुलेमान लोहार तब तक दरवाजा बंद कर चुका था ।

असंख्य गोलियां धड़ाधड़ ड्राइविंग डोर में छेद करती चली गयीं ।

अंदर घुसते ही सुलेमान लोहार ने ड्राइविंग सीट संभाल ली । उसने आनन-फानन वैगन स्टार्ट की और वैगन स्टार्ट होते ही द्रुतगति के साथ वहाँ से भागी ।

गार्डों में हड़कंप मच गया ।

सब धुआंधार स्पीड से गोलियां चलाते हुए वैगन के पीछे-पीछे झपटे ।

जबकि सुलेमान लोहार अब स्टेशन वैगन को जेलर के ऑफिस की तरफ दौड़ाये लिए जा रहा था ।

□□□

जेलर की उम्र पचास-पचपन साल थी ।

वह एक मजबूत कद-काठी वाला और साधारण कद का आदमी था ।

जेलर उस वक्त नाइट गाउन पहने हुए था और अपने ऑफिस में ही लगे क्लोज सर्किट टेलीविजन पर जेल की सारी गतिविधियाँ देख रहा था, वहीं से वो चीख-चीखकर आदेश भी जारी कर रहा था ।

दरअसल ऑफिस के पीछे ही एक बड़ा ख़ूबसूरत फ्लैट था, जिसमें जेलर अपने परिवार के साथ रहता था । उस वक्त वो गहरी नींद में था, जब जेल में वह जबरदस्त हंगामा मचा और जोर-जोर से सायरन बजा । सायरन की आवाज सुनते ही उसकी आँख भक्क से खुल गयी और वह भागा-भागा ऑफिस में पहुँचा ।

"यह दोनों बचने नहीं चाहियें ।" जेलर निरंतर पब्लिक एड्रेस सिस्टम पर चिल्ला रहा था- "बचने नहीं चाहिये ।"

एकाएक जेलर के होश उड़ गये ।

उसने सुलेमान लोहार और मुझे स्टेशन वैगन के ड्राइविंग पोर्शन में घुसते देखा, फिर वैगन द्रुतगति के साथ उसी के ऑफिस की तरफ झपटी ।

"माई गॉड !" जेलर के चेहरे पर आतंक की छाया दौड़ी- "यह मेरे पास क्यों आ रहे हैं ?"

जेलर तेजी से अपनी टेबल की तरफ दौड़ा और उसने ड्रायर खोलकर उसमें से 38 कैलीबर की अपनी रिवॉल्वर निकाली ।

उसने फिर क्लोज सर्किट टेलीविजन की तरफ देखा, स्टेशन वैगन तब तक ऑफिस के काफी नजदीक पहुँच चुकी थी। जेलर कोई और फैसला ले पाता, तब तक स्टेशन वैगन धुंआधार स्पीड से दौड़ती हुई सीधे ऑफिस के दरवाजे से टकराई।

स्पीड इतनी तेज थी कि वैगन के टकराते ही दरवाजा चौखट सहित उखड़ गया और उसकी धज्जियां बिखर गयीं। ईंटें उखड़-उखड़कर अंदर ऑफिस में जा गिरीं।

जेलर की चीख निकल गयी।

सुलेमान लोहार और मैं अब वैगन से नीचे कूदे और जेलर की तरफ झपटे।

परन्तु जेलर सावधान था।

मुस्तैद।

हम दोनों उसके नजदीक भी फटक पाते, उससे पहले ही उसने रिवॉल्वर तानकर ट्रेगर दबा दिया।

निशाना मैं था।

मेरी खोपड़ी।

उसकी रिवॉल्वर ने शोले उगल दिये।

मैं हड़बड़ा उठा।

मेरी आंखों के सामने मौत नाची।

परन्तु कोई भी गोली मुझे छू पाती, उससे पहले ही सुलेमान लोहार मेरे सामने आ गया था।

सुलेमान लोहार की वीभत्स चीख गूंज उठी।

“ब... बाबा !” मैं चिल्लाया।

“नहीं।” सुलेमान लोहार भी चीखा- “मेरे करीब मत आना बेटा, मेरे करीब मत आना।”

गोलियां उसके सीने में लगी थीं।

लेकिन फिर भी सुलेमान लोहार मदमस्त हाथी की तरह झूमता हुआ ऑटोलोडर राइफल हाथ में लेकर जेलर की तरफ बढ़ता रहा ।

गार्डों का मुकाबला करने में उसकी ऑटोलोडर राइफल खाली हो चुकी थी, इसलिये वह गोली नहीं चला रहा था ।

"म...मेरे पास मत आओ ।" जेलर, सुलेमान लोहार को अपनी तरफ बढ़ते देखकर भयभीत हो उठा- "मेरे पास मत आओ ।"

"क्यों, मरने से डर लगता है जेलर ?" सुलेमान लोहार हंसा । सुलेमान लोहार के सीने से खून के फव्वारे छूट रहे थे । वह दरिन्दा नजर आ रहा था ।

वहशी दरिन्दा ।

"नहीं !"

जेलर ने धुआंधार गोलियां और चला दीं ।

वह सारी गोलियां भी सुलेमान लोहार के सीने में ही जाकर लगीं ।

परन्तु सुलेमान लोहार की हिम्मत नहीं टूटी थी, वह सचमुच जीवट वाला आदमी था । लोहा था, लोहा ।

उसने शेर की तरह आगे बढ़ते हुए ऑटोलोडर राइफल छोड़ दी और एकदम जेलर को अपने फौलाद जैसे शिकंजे में जकड़ लिया ।

"छोड़ो मुझे ।" जेलर उसकी गिरफ्त में बुरी तरह छटपटाया- "छोड़ो ।"

"अब इस फंदे से बाहर निकलना आसान नहीं है जेलर !" जेलर के शरीर का उस समय एक-एक रोआं खड़ा था ।

उसने एकाएक रिवॉल्वर सुलेमान लोहार की खोपड़ी पर रख दी।

“दे...देखो !” वो अर्द्धविक्षिप्तों की भांति बोला- “देखो मुझे छोड़ दो, वरना मैं गोली चला दूंगा, तुम्हारी खोपड़ी तरबूज की तरह फट पड़ेगी।”

“मुझे अब किसी बात की परवाह नहीं है जेलर ! मेरे सिर पर कफन बंध चुका है।”

और !

उस समय मेरे शरीर का भी एक-एक रोआं खड़ा था।

मैं जानता था, जेलर गोली चलाने में नहीं हिचकिचायेगा।

इससे पहले कि जेलर गोली चलाता, मैंने फ़ौरन अपनी रिवॉल्वर का ट्रेगर दबा दिया।

जेलर की हृदयविदारक चीख निकल गयी।

□□□

पत्ते पलट चुके थे, एक ही झटके में पलट चुके थे।

मेरे द्वारा चलाई गयी गोली ठीक जेलर के दिल में जाकर लगी और गोली लगते ही वह एक लाश में तब्दील हो गया। इस समय खून से लथपथ हालत में वो सुलेमान लोहार की बाहों में झूल रहा था।

इसके अलावा जो दूसरा बड़ा हंगामा हुआ, वो ये था कि हमारे पास गोलियां भी खत्म हो गयीं।

ऑटोलोडर राइफल तो पहले ही खाली हो चुकी थी, जबकि अब जेलर और मेरी रिवॉल्वर में भी गोलियां नहीं थीं।

"इ...इसे मारकर ठीक नहीं किया बेटा !" सुलेमान लोहार लाश को अपनी बाहों में भरे-भरे हाँफता-सा बोला- "यह आदमी हमारे लिए जैकपॉट था, यही हमें जेल से बाहर निकाल सकता था।"

"अ...अब क्या होगा ? और...और फिर हमारे पास गोलियां भी खत्म हो चुकी हैं बाबा।"

मेरे चेहरे पर गहन चिंता की लकीरें उभर आयीं।

जबकि अब परेशान सुलेमान लोहार भी दिखाई पड़ रहा था।

बहुत परेशान।

उसने क्लोज सर्किट टेलीविजन की तरफ देखा। हथियारबंद गार्ड दौड़ते हुए ऑफिस के काफी नजदीक आ चुके थे।

"बाबा जल्दी फैसला करो, हमने क्या करना है ?"

"मुझे सोचने दो।" सुलेमान लोहार के चेहरे पर विचारपूर्ण भाव उभर आये।

गार्ड अब और भी नजदीक आ चुके थे। वह बस किसी भी पल अंदर आने वाले थे।

"बाबा, जल्दी कुछ सोचो।"

"एक ही तरीका है बेटा, बस एक ही तरीका।"

"क्या ?"

"अब भी यही मरा हुआ जेलर हमें यहाँ से बाहर निकालेगा, बस इसके लिए हमें थोड़ा नाटक करना होगा।"

"नाटक, कैसा नाटक ?" मेरे मुँह से तीव्र सिसकारी छूटी।

“वह भी बताता हूँ ।” जेलर की लाश को अपनी बांहों के दायरे में भरे-भरे सुलेमान लोहार ने उसकी गर्दन अब कुछ इस तरह जकड़ ली कि वह तन गयी और ऐसा लगने लगा, जैसे वह जिंदा हो । सुलेमान लोहार की हथेली उसके गोली के निशान पर जाकर ढक चुकी थी । फिर उसने जेलर की रिवॉल्वर अपने हाथ में ले ली और उसे जेलर की कनपटी के ऊपर रख दिया ।

उसके बाद सुलेमान लोहार ने मेरी तरफ देखा ।

“अब बोलो ।” सुलेमान लोहार ने कहा- “यह पोज कैसा है ?”

“लेकिन यह रिवॉल्वर तो खाली है बाबा !”

“यह बात सिर्फ मैं या तुम जानते हैं कि यह रिवॉल्वर खाली है ।” सुलेमान लोहार बोला- “बाहर मौजूद गार्डों को क्या पता कि यह रिवॉल्वर खाली है और उन्हें यह भी क्या पता कि इस वक्त यह जेलर जिंदा है या नहीं ।”

मेरी आंखों में विलक्षण चमक कौंध उठी ।

“गुड आइडिया बाबा, वेरी गुड आइडिया ।”

“चलो अब बाहर निकलते हैं । तुम जाकर स्टेशन वैगन की ड्राइविंग सीट संभालो, तब तक मैं गार्डों को देखता हूँ ।”

मैं वैगन की तरफ बढ़ गया ।

□□□

हथियारबंद गार्ड अब सचमुच वहाँ बड़ी संख्या में पहुँच चुके थे ।

मगर इससे पहले कि वह सब दनदनाते हुए ऑफिस में दाखिल होते, सुलेमान लोहार जेलर की लाश को घसीटता हुआ ऑफिस से बाहर निकल गया ।

"जो जहाँ है, वहीं रुक जाये ।" सुलेमान लोहार, जेलर की खोपड़ी पर रिवॉल्वर रखे-रखे बुलंद आवाज में चिंघाड़ा- "वरना मैं इसे शूट कर दूंगा ।"

हथियारबंद गार्डों को जैसे कोई सांप सूंघ गया ।

वह ऑफिस से पच्चीस-तीस गज के फासले पर ही ठिठक गये ।

सुलेमान लोहार से उस समय खड़ा रहना मुहाल हो रहा था । उसके शरीर से खून बड़ी तादाद में निकल चुका था । कदम लड़खड़ा रहे थे और आंखों के सामने अंधेरा घिरना शुरु हो गया था ।

"हम दोनों तुम्हारे इस जेलर को लेकर यहाँ से बाहर जा रहे हैं, लेकिन ध्यान रहे, हमारा पीछा करने की कोशिश न की जाये और न ही कोई हमें रोके, वरना तुम्हारे इस जेलर की खैर नहीं होगी ।"

तब तक मैंने स्टेशन वैगन ऑफिस से बाहर निकाल ली थी और फिर उसे दौड़ाता हुआ सुलेमान लोहार के बिल्कुल बराबर में ले गया ।

"हम जा रहे हैं ।" वो फिर जोर से चिल्लाया ।

उसके बाद सुलेमान लोहार लपककर जेलर के साथ स्टेशन वैगन में चढ़ गया और फ़ौरन स्टेशन वैगन तोप से छूटे गोले की तरह वहाँ से भाग खड़ी हुई ।

हम सकुशल जेल से बाहर निकल गये ।

फिर हमें किसी ने नहीं रोका-टोका ।

अंत तक किसी को इस बात की भनक नहीं मिली कि जेलर मर चुका है और हमारी रिवॉल्वर खाली है ।

□□□

स्टेशन वैगन तूफानी स्पीड से सड़क पर दौड़ी जा रही थी ।

ड्राइविंग सीट पर अभी भी मैं बैठा था ।

हालांकि हम जेल तोड़कर भाग निकलने में कामयाब रहे थे, लेकिन फिर भी मेरी दहशत से इतनी बुरी हालत थी कि कोई सोच भी नहीं सकता ।

हाथ पांव सुन्न थे ।

होंठ शुष्क पड़े हुए ।

उधर सुलेमान लोहार की तो और भी ज्यादा बुरी हालत थी । खून उसके शरीर से वाकई बहुत निकल गया था और उसके ऊपर मुर्च्छा छा रही थी ।

जेल से बाहर निकलते ही सुलेमान लोहार की गिरफ्त से जेलर की लाश छूट गयी और वो धड़ाम से नीचे पायदान पर जा गिरी ।

फिर सुलेमान लोहार भी आहिस्ता से ड्राइविंग पोर्शन वाली सीट पर लेट गया था ।

उसके सांस उल्टे-सीधे चल रहे थे ।

"ब...बाबा !" सुलेमान लोहार की हालत देखकर मैं भयभीत हो उठा- "यह आपको क्या हो रहा है बाबा ?"

"क...कुछ नहीं !" सुलेमान लोहार की आवाज लड़खड़ाई- "लगता है, म...मेरा अन्त समय आ चुका है बेटा ! म...मैं अब नहीं बचूंगा ।"

"नहीं बाबा ! प्लीज, ऐसा मत बोलो, प्लीज !"

मेरे हाथ भी वैगन ड्राइव करते हुए कांपने लगे । वो एक निर्जन सड़क थी, मैंने वहीं एक किनारे पर स्टेशन वैगन रोक ली ।

"म...मेरे जीवन का मोह तो तुम अब छोड़ ही दो बेटा !" सुलेमान लोहार की सांसें और जोर-जोर से चलने लगीं- "अपनी इस पापी जिन्दगी में बस एक नेक काम करने की मेरी बड़ी ख....ख्वाहिश थी और वो नेक काम मैं कर चुका हूँ । अ...अब मैं अपने पाक-परवरदिगार को, अपने र...रब्बुल आलामीन को अपना यह चेहरा दिखा सकूंगा । हाँ, अ...अगर मैं तुम्हारे जैसे न....निर्दोष लड़के की जान न बचा पाता, त...तो मुझे बड़ा दुःख रहता ।"

"बाबा !"

मैं सुलेमान लोहार से कसकर चिपट गया ।

मेरी रुलाई फूट पड़ी ।

"ह... हिम्मत से काम लो बेटा, हिम्मत से ।" सुलेमान लोहार ने मेरी पीठ थपथपाई- "अ...अपने इन आंसुओं को यूं जाया न जाने दो । तुमने इनको तेजाब बनाना होगा, तेजाब ! यह दुनिया बहुत बेरहम है बेटे । त... तुमने अगर इस दुनिया में जिन्दा रहना है, तो हिम्मतवर बनना होगा । त... तुमने अर्जुन मेहता, विजय पटेल, नागेन्द्र पाल और शशि मुखर्जी जैसे उन दरिन्दों को मुँहतोड़ जवाब देना होगा ।"

"हाँ, बाबा !" मैं फफक-फफककर रोने लगा- "हाँ, मैं उन चारों दरिंदों को मुँहतोड़ जवाब दूंगा । मैं उनसे अपनी प्रिया की मौत का बदला लूंगा ।"

"ग... गुड, वेरी गुड बेटे ! तुम्हारे अंदर यह तेजाब इसी तरह बरकरार रखना चाहिये ।"

मैं फफकता रहा।

"अ...अब मेरी एक बात बहुत ध्यान से सुनो बेटा !" सुलेमान लोहार की आँखें मुंद-मुंद जा रही थीं।

"क्या ?"

"इ...इस दुनिया में अब त...तुम्हारा आगे का सफर कुछ आसान नहीं होगा। ह...हिंदुस्तान की पुलिस भूखे कुत्ते की तरह त...तुम्हारे पीछे पड़ जायेगी। ज...जेल तोड़कर भाग निकलने के जुर्म में तुम्हें और भी ज्यादा बड़ा अपराधी मान लिया जायेगा। त...तुम्हारी तस्वीरें अखबारों में छपेंगी, ट...टीवी पर दिखाई जायेंगी। इतना...इतना बड़ा हिंदुस्तान तुम्हारे वास्ते छिपने के लिए कम पड़ जायेगा।"

"फिर !" मैं डर गया- "फिर मैं क्या करूंगा बाबा ?"

"इ...इसका बस एक ही तरीका है।"

"क्या ?"

"जब तक यह मामला ठंडा नहीं पड़ जाता, तब तक के लिए तुम ह...हिंदुस्तान छोड़कर कहीं बाहर भाग जाओ।"

"लेकिन कहाँ ?"

"इ...इधर दिल्ली में मेरी प...पहचान वाली एक औरत है।" सुलेमान लोहार की सांसें और भी ज्यादा उल्टी-सीधी चलने लगी थीं- "श...शान्ता बाई ! शान्ता बाई नाम है उसका। व... वो भजनपुरा में रहती है। त... तुम शान्ता बाई से जाकर मिलना। म... मेरा नाम लोगे त...तो हिन्दुस्तान से बाहर निकलने का स... सारा इंतजाम वो खुद कर देगी।"

"ओह बाबा !" मैं सुलेमान लोहार से पहले से भी ज्यादा कसकर चिपट गया- "मैं तुम्हारा यह अहसान आखिर किस तरह चुकाऊंगा ? किस तरह ?"

हंसा सुलेमान लोहार ।

उसकी हंसी में दर्द था, पीड़ा थी ।

"पगले !" उसने बड़े स्नेहसिक्त अंदाज में मेरे गाल पर हल्की-सी चपत लगाई- "ब....बाबा भी कहता है मुझे और...और फिर अहसान की बात भी करता है ।"

मैं रो पड़ा ।

और जोर से रो पड़ा ।

"ज... जानता है बाबा किसे कहते हैं ? बाबा ज... जन्म देने वाले को कहते हैं रे ! क...क्या मुझे बाबा कहकर तू...तूने मेरे ऊपर क...कुछ कम बड़ा अहसान किया है ?"

"ब... बाबा !" मैंने सुलेमान लोहार का चेहरा अब अपनी दोनों हथेलियों में भर लिया । मैं उस फरिश्ते को गौर से देखने लगा । फरिश्ता, जो मर रहा था ।

"फ...फिर भी मेरे लिए अ... अगर कुछ करना चाहता है बेटा !" सुलेमान लोहार की आँखें शून्य में कहीं टिकी हुई थीं- "त...तो एक काम करना ।"

"बोलो बाबा !" मैंने शीघ्रतापूर्वक कहा- "तुम जो कहोगे, उसे यह अविनाश करेगा । अपने बाबा का हुक्म मानकर करेगा ।"

"ब...बेटा हिंदुस्तान के ल...लोगों तक किसी तरह यह संदेश पहुँचाना कि स...सबूत हमेशा सच नहीं बोलते हैं । जो अ...अदालतों में चीख-चीखकर कहा जाता है, व...वो हमेशा सच नहीं होता । कभी-कभी एक ब...बेहद बुद्धिमान और च...चालाक अपराधी भी कानून को बड़ी कुशलता से नचा डालता है । अ...अपने हाथों की कठपुतली बना लेता है । ज...जैसा तुम्हारे मामले में क...कानून को कठपुतली बनाया गया था या फिर मेरे म...मामले में भी कानून को

धोखा ही हुआ, क...क्योंकि जिस हत्या के इल्जाम में मुझे फ...फांसी की सजा हुई, व... वह हत्या भी मैंने नहीं की थी ।”

“ठीक है बाबा ! मैं तुम्हारा यह संदेश हिन्दुस्तानियों तक पहुँचाऊंगा, एक दिन जरूर पहुँचाऊंगा ।”

सुलेमान लोहार की आँखें बंद हो गयीं ।

“बाबा !” मैंने सुलेमान लोहार के कंधे पकड़कर बुरी तरह झंझोड़े ।

उसकी गर्दन एक तरफ जा गिरी ।

सुलेमान लोहार मर चुका था ।

मैं उसकी लाश से चिपटा फूट-फूटकर रो पड़ा ।

□□□

अविनाश लोहार की आंखों में उस समय आंसुओं की बहुत नन्हीं-नन्हीं बूंदें झिलमिला रही थीं ।

अपने अतीत के पन्ने खोलते हुए वो बहुत भावुक हो उठा था, बहुत ज्यादा जज्बाती ।

कमाण्डर करण सक्सेना और अविनाश लोहार, वह दोनों अभी भी जेल के उसी चबूतरे पर बैठे थे । अलबत्ता कमाण्डर करण सक्सेना ने अब एक ‘डनहील’ सुलगा ली थी । फिर वो चबूतरा छोड़कर खड़ा हो गया और डनहील के छोटे-छोटे कश लगाता हुआ इधर से उधर टहलने लगा ।

“यह मेरी वो कहानी है कमाण्डर !” अविनाश लोहार खोए-खोए स्वर में बोला- “जो दुःखों में डूबी हुई है, अहसासों में डूबी हुई है । यह वो दास्तान है, जहाँ से एक सीधे-सादे बबलू के दरिंदा बनने की शुरूआत हुई,

अविनाश बनने की शुरुआत हुई। उस दिन मुझे ऐसा लगा कमाण्डर, जैसे मेरा कोई अपना मुझसे बिछड़ गया है। मैं अनाथ हूँ। मैंने अपनी जिंदगी में बाप का प्यार नहीं देखा था, लेकिन सुलेमान लोहार के साथ गुजारे उन चंद दिनों में मुझे जो बाप का प्यार मिला, उसे मैं आज तक नहीं भुला पाया हूँ। मैंने सुना है, अपने बच्चे का नाम बाप बड़े प्यार से रखता है। सुलेमान लोहार ने मेरा नाम भी इतने ही प्यार से रखा था। उसने बाप के हर फर्ज को पूरा किया।"

"लेकिन सुलेमान लोहार ने तुम्हारा सिर्फ 'अविनाश' नाम रखा था।"

"हाँ, यही नाम रखा था।"

"फिर तुम अविनाश से अविनाश लोहार कैसे बन गये ?" कमाण्डर करण सक्सेना टहलता-टहलता उसके सामने जाकर ठिठका।

वह सवाल सुनकर अविनाश लोहार के होठों पर दर्द से भीगी मुस्कान उभर आयी।

"हैरानी है। आप जैसा आदमी इतनी मामूली बात भी नहीं समझ सका कमाण्डर !"

"क्यों ?"

"सुलेमान लोहार ने एक बाप के हर फर्ज को पूरा किया था, ऐसी परिस्थिति में क्या मेरा यह कर्तव्य नहीं बन जाता था कि मैं भी उसे अपने बाप का दर्जा दूं ? लोहार, यह उसका सरनेम था और बाप का सरनेम ही बेटे का भी तो सरनेम होता है कमाण्डर !"

"ओह !"

कमाण्डर करण सक्सेना एकाएक सब कुछ समझ गया
।

"फिर क्या हुआ ?"

"काठमांडू में मेरा सुलेमान लोहार के कुछ साथियों से परिचय हुआ। तब मुझे पता चला, अपराध की दुनिया में सुलेमान लोहार के हाथ बहुत लंबे थे। उसका कई बड़े-बड़े आतंकवादी गिरोहों से वास्ता था, जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवादी कार्यवाही अंजाम देते थे। वह बहुत दुर्दांत लोग थे कमाण्डर ! अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनका बड़ा दबदबा था। बड़े-बड़े राजनेताओं और उद्योगपतियों के साथ उनकी उठ-बैठ थी, जो दुनिया में राजनीतिक समीकरण अपने अनुरूप कराने के लिए बड़े-बड़े शासनाध्यक्षों की हत्याएं कराते थे। अलग-अलग शहरों में बम विस्फोट कराते थे और अलगाववाद को जन्म देने के लिए आतंकवादी कार्यवाही करते थे। सच तो ये है कमाण्डर, मैंने तब भी नहीं चाहा था कि मैं अपराध की डगर पर चलूं। मैंने ऐसे शैतान लोगों के बीच रहते हुए भी कई सलीके वाले और इज्जतदार शहरियों की तरह सीधे-सच्चे काम करने चाहे थे। मैं सिर्फ मेहनत-मजदूरी करके दो वक़्त की रोटी कमाना चाहता था। मेरी कोई बहुत बड़ा बिजनेस एम्पायर खड़ा करने की तमन्ना नहीं थी और न ही ऐसी कोई इच्छा थी कि मेरे कार हो, कोठी हो, बंगला हो। मैं तो एक टूटा हुआ, बिखरा हुआ आदमी था, जो अपना सब कुछ लुटा चुका था, सब कुछ।" बोलते-बोलते अविनाश लोहार एकाएक बहुत ज्यादा भावुक हो उठा- "मैंने कई काम करने के प्रयास किए, परंतु जल्द ही मुझे एक बात का बड़ी शिद्दत के साथ एहसास हो गया।"

"किस बात का ?"

"यही कि जिस व्यक्ति के माथे पर एक बार अपराधी का लेबल लग चुका हो, जो जेल से फरार मुजरिम हो और जिसके पीछे पुलिस हाथ धोकर पड़ी हो, फिर उसके लिए एक सीधे-सच्चे आम शहरी की जिंदगी बसर करना मुश्किल ही नहीं होता, बल्कि नामुमकिन है, बिल्कुल नामुमकिन ।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने 'डनहील' का एक छोटा सा कश और लगाया ।

वह अविनाश लोहार की एक-एक बात बहुत गौर से सुन रहा था ।

"उसके बाद ?"

"उसके बाद इस अविनाश लोहार के आतंकवादी बनने की शुरुआत हुई ।" अविनाश लोहार ने गहरी सांस छोड़ी- "शीघ्र ही मैंने विवश होकर परिस्थितियों के सामने हथियार डाल दिए थे और फिर आतंकवादियों का ही साथी बन गया । काठमांडू से कोई नब्बे किलोमीटर दूर नागपुड़ा नाम के उस छोटे-से गांव में आतंकवादियों का ठिकाना था, जिसे हम प्रशिक्षण शिविर भी कह सकते हैं । उसके बाद नागपुड़ा के उसी प्रशिक्षण शिविर में मुझे ले जाया गया और वहीं मुझे हथियार चलाने से लेकर जुड़ो-कराटे तक की तमाम ट्रेनिंग दी गई । छः महीने की वो ट्रेनिंग, फौजी ट्रेनिंग से भी ज्यादा जबरदस्त थी और उसने मुझे क्राइम के लगभग हर मामले में एक्सपर्ट बना दिया और फिर अविनाश लोहार को इस दुनिया ने जिस रूप में जाना, वो सब कुछ एक खुली किताब की तरह आपके सामने है ही कमाण्डर ! लीबीया में चाहे अमेरिकन दूतावास के अंदर बम विस्फोट हो, भूटान में रक्षा मंत्री का अपहरण कांड हो,

ईरान से यूरोप की तरफ जाती तेल की कई पाइपलाइनों में भीषण बम विस्फोट हो, लेबनान फौजी कैंपों पर चाहे रात के समय राकेट लांचरों से हमला हो या फिर अल्जीरिया में अमेरिकी राष्ट्रपति के ऊपर हेलीकॉप्टर से बमबारी वाली घटना हो, फिर तो दुनिया में शायद ही ऐसी कोई जगह बची, जहाँ इस अविनाश लोहार ने आतंकवादी कार्यवाही अंजाम न दी हो । अविनाश लोहार एकाएक दुनिया का सबसे बड़ा आतंकवादी बन गया । अविनाश लोहार के नाम से पूरी दुनिया थरथरा उठी ।"

जेल के चबूतरे पर बैठा अविनाश लोहार भी अब उठकर खड़ा हो गया और बड़ी उदासी के साथ कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ देखने लगा ।

इस समय अविनाश लोहार के चेहरे पर बड़े दार्शनिकों जैसे भाव थे ।

"सच तो ये है कमाण्डर, मैं पूरी दुनिया में जरुर आतंकवादी कार्यवाही करता रहा ।" अविनाश लोहार बोला- "मेरे नाम का डंका जरुर पूरी दुनिया में बजता रहा, लेकिन फिर भी मैंने अर्जुन मेहता, विजय पटेल, नागेंद्र पाल और शशि मुखर्जी के बारे में बहुत गंभीरता से नहीं सोचा । अगर मैं चाहता, तो उन चारों को कब का इस दुनिया से फना कर चुका होता, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया । और ऐसा इसलिये नहीं किया, क्योंकि उनके प्रति भी अब मेरे दिल में कोई बहुत ज्यादा गिला-शिकवा नहीं रहा था । ऐसा नहीं था कि मैं अपनी प्रिया की मौत को भूल चुका था या उन जालिमों के जुल्म को भूल गया था ।"

"फिर ?"

कमाण्डर करण सक्सेना के नेत्र सिकुड़े ।

उसने ‘डनहील’ का टोटा फर्श पर फेंककर उसे जूते से मसला ।

“हुआ यह कमाण्डर, मैंने अपनी इस जिंदगी में इतना खून बहाया, इतनी हिंसा की कि इतनी हिंसा करने के बाद मेरे अंदर प्रतिशोध का जो जज्बा था, वह खुद-ब-खुद पूरी तरह खत्म हो गया । इतना खून बहाने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि अर्जुन मेहता, विजय पटेल, नागेंद्र पाल तथा शशि मुखर्जी जैसे चार दरिंदों को मार डालने से भी कुछ भला */नहीं होगा, क्योंकि ऐसे शैतान तो सोसाइटी में कदम-कदम पर मौजूद हैं, जगह-जगह मौजूद हैं । सिर्फ इन चार लोगों के मरने से सोसाइटी की गंदगी साफ नहीं होगी, क्योंकि अगर वह चारों मर भी गये तब भी कहीं कोई और, किसी और प्रिया के साथ वही सब कुछ कर रहा होगा । यह प्रक्रिया रुकने वाली नहीं है । इट टेक्स ऑल सॉर्ट ऑफ़ ह्यूमंस टू मेक द वर्ल्ड । इस संसार में हर तरह के लोग होते हैं और उन्हें खत्म भी नहीं किया जा सकता । यह बात अगर मैंने समझी, तो एक आतंकवादी बनकर समझी, एक दरिंदा बनकर समझी और बेपनाह खून बहाने के बाद समझी ।”

कमाण्डर अब अविनाश लोहार से साफ-साफ प्रभावित दिखाई पड़ने लगा ।

“फिर तुमने उन चारों की हत्याएं क्यों की ?” कमाण्डर ने बेहद उत्सुकतापूर्वक पूछा ।

“कम-से-कम प्रतिशोध लेने के लिए तो वह हत्याएं नहीं की, बल्कि बाबा को जो वचन दिया था कि मैं एक दिन हिंदुस्तान की जनता तक उनका यह संदेश जरूर पहुँचाऊंगा कि अदालतों में जो चीख-चीखकर कहा जाता है, वह

हमेशा सच नहीं होता । सबूत हमेशा सच नहीं बोलते । एक बुद्धिमान और अत्यंत चालाक आदमी भी कानून को कठपुतली बनाकर अपनी उंगलियों पर नचा सकता है और इस तरह हत्याएं कर सकता है, जो कानून उसका कुछ न बिगाड़ सके । इसलिये मैंने उन चारों की हत्याएं देश के अलग-अलग महानगरों में जाकर महज एक-एक घंटे के अंतराल से कीं और मैंने की, डंके की चोट पर मैंने ही कीं । यह बात मैं सीना ठोंककर इसलिये कह रहा हूँ कि अब कानून इस बात को साबित करके दिखाए, मैं हत्यारा हूँ । मैंने सारे सबूत आपके सामने पेश कर दिए हैं कमाण्डर, चांदी की तश्तरी में सजाकर पेश कर दिए हैं । मैं खुद चीख-चीखकर कह रहा हूँ कि यह हत्याएं मैंने की हैं, लेकिन आप यह साबित करें कि मैंने देश के अलग-अलग महानगर में जाकर यह चारों हत्याएं कीं, तो कैसे कीं ? यह संभव कैसे हुआ ? कमाण्डर, मैंने हत्या का यह मायाजाल सिर्फ कानून को परेशान करने के लिए नहीं रचा है, आपको परेशान करने के लिए नहीं रचा है । अगर मैं चाहता तो उन चारों को बहुत सहज मौत भी दे सकता था, लेकिन मैंने जानबूझकर उनकी हत्या में यह पेंच इसलिये पैदा किया, क्योंकि मेरा मकसद उनकी हत्या करने से ज्यादा बाबा को दिए वचन को पूरा करना था । तमाम हिंदुस्तान के लोगों को यह बताना था कि अगर एक अपराधी चाहे तो किस-किस तरह कानून के साथ खेल सकता है । मुझे 25 मार्च को फांसी होने वाली है, लेकिन मुझे अपनी मौत का कतई कोई अफसोस नहीं, बस एक ख्वाहिश जरूर है ।”

“क्या ?”

"मरने से पहले मैं साबित करना चाहता हूँ, मुझे प्रिया की हत्या के इल्जाम में जो फंसाया गया, वह गलत था । बाबा को जिस हत्या के इल्जाम में फांसी की सजा दी जा रही थी, वह भी गलत थी और इस तरह न जाने कितने निर्दोष आदमियों को सजाएं दी जाती हैं । न जाने कितने निर्दोष फांसी पर चढ़ते हैं या वर्षों तक जेल में पड़े अपनी एड़ियां रगड़ते रहते हैं । कमाण्डर, नाटकीय ढंग से की गई वह चारों हत्याएं मेरा एक मिशन है । ऐसा मिशन, जो ऐसे तमाम लोगों के लिए है, जो निर्दोष होते हुए भी कानून के शिकंजे में फंस गये और जेलों में पड़े हुए बदतर जिंदगी जीने पर विवश हैं । यह लड़ाई मेरे अकेले की लड़ाई नहीं है । यह तमाम निर्दोष लोगों की लड़ाई है । जिस प्रकार बाबा मरने से पहले एक अच्छा काम करना चाहते थे ताकि अपने पाक परवरदिगार को मुँह दिखा सकें, उसी प्रकार मैं भी फांसी पर चढ़ने से पहले एक अच्छा काम करना चाहता हूँ कमाण्डर ! और मेरा काम मेरा यह मिशन है । मैं इन चारों हत्याओं की मार्फत लोगों तक यह संदेश पहुँचाना चाहता हूँ कि एक बुध्दिमान अपराधी किस-किस तरह से हत्याएं कर सकता है और कानून को धोखा दे सकता है ।"

कमाण्डर करण सक्सेना के सामने सारी तस्वीर साफ होती चली गई ।

वह समझ गया, अविनाश लोहार ने वह चारों हत्याएं इतने नाटकीय अंदाज में क्यों की थी ?

क्यों इतना लंबा चौड़ा ड्रामा रचा ?

अब एक बात पर कमाण्डर करण सक्सेना का विश्वास और भी ज्यादा दृढ़ हो गया कि वह चारों हत्याएं अलग-अलग महानगर में जाकर अविनाश लोहार ने ही की थीं ।

गारंटिड उसी ने की थीं ।

क्योंकि वह उस मिशन के प्रति दिल से बहुत ज्यादा समर्पित दिखाई पड़ रहा था ।

"अब एक सवाल और ?"

"पूछो ।"

"एक बार जब तुम ऑल इंडिया मेडिकल हॉस्पिटल से कमांडोज को धोखा देकर भागे थे अविनाश, तो फिर तुम हत्याएं करने के बाद हॉस्पिटल में वापस क्यों आ गये ? तुमने जानबूझकर अपने आपको मौत के मुँह में क्यों धकेला ?"

"अच्छा सवाल है, लेकिन इसका जवाब बहुत साधारण है ।"

"क्या ?"

"मेरा अब इस जीवन के प्रति कोई मोह बाकी नहीं रहा है । वैसे भी इस दुनिया में अब ऐसा कोई शख्स नहीं है, जिसके लिए मैं जिंदा रहने की सोचूं । मेरी प्रिया यहाँ नहीं है । बाबा यहाँ नहीं है । इसके अलावा प्रिया की मौत का बदला लेने के लिए ही सही, उन चारों की जो हत्याएं मैंने करनी थीं, वह वजह भी अब खत्म हो चुकी है । अब तो मैं बड़ी बेसब्री से 25 मार्च का इंतजार कर रहा हूँ ।" अविनाश लोहार शुष्क स्वर में बोला- "25 मार्च, जिस दिन मुझे इस पापी शरीर से मुक्ति मिलेगी । इस दुनिया से मुक्ति मिलेगी ।"

25 मार्च !

वह तारीख भी कमाण्डर करण सक्सेना के दिल-दिमाग पर हथौड़े की तरह पड़ने लगी ।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना जब अविनाश लोहार से बात करके सेन्ट्रल जेल से बाहर निकला, तो वहाँ अच्छा-खासा हंगामा मचा हुआ था ।

वहाँ ढेरों रिपोर्टर, कैमरामैन और टीवी चैनलों के प्रतिनिधि मौजूद थे । उन सबको न जाने कैसे इस बात की भनक लग गई थी कि कमाण्डर, अविनाश लोहार से पूछताछ करने वहाँ आया हुआ है ।

कमाण्डर करण सक्सेना के बाहर निकलते ही सबने उसे चारों तरफ से घेर लिया ।

"अविनाश लोहार ने आपसे क्या कहा ?"

"क्या कहता है अविनाश लोहार ?"

चारों तरफ से चीख-पुकार मचने लगी ।

"क्या उसने हत्याओं के बारे में कुछ बताया ?"

"आखिर उसने यह चारों हत्याएं इतने नाटकीय अंदाज में क्यों की ?"

कमाण्डर ने रिपोर्टरों के सवालों को टालने की काफी कोशिश की, परंतु वह हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गये । तब कमाण्डर को मजबूरन उन्हें सब कुछ बताना पड़ा, सब कुछ ।

अगले दिन उस खबर ने हंगामा मचा दिया ।

हर अखबार, हर टीवी चैनल ने उस न्यूज़ को बहुत सेंसेशनल अंदाज में प्रसारित किया वह न्यूज़ थीः

अविनाश लोहार ने वह चारों हत्याएं सिर्फ प्रतिशोध लेने के लिए नहीं कीं ।

वो हत्याएं अविनाश लोहार का मिशन हैं ।

उसे नाटकीयपूर्ण ढंग से हत्याएं इसलिये कीं, ताकि वह आम जनता को बता सके कि एक चालाक

अपराधी कानून को किस हद तक जाकर अपने हाथों की कठपुतली बना सकता है । अर्जुन मेहता, विजय पटेल, नागेंद्र पाल और शशि मुखर्जी भी निर्दोष नहीं थे ।

उन चारों ने भी प्रिया नाम की एक बहुत मासूम लड़की की हत्या की थी और उसके इल्जाम में अविनाश लोहार को फंसा दिया था ।

अविनाश लोहार ने कमाण्डर करण सक्सेना को अपने बबलू से अविनाश लोहार बनने तक की जो कहानी सुनाई थी, वह पूरी कहानी अखबारों और टीवी चैनलों पर रिलीज की गई ।

और उस कहानी ने हंगामा मचा दिया ।

पहले से भी ज्यादा जबरदस्त हंगामा ।

अविनाश लोहार के प्रति हिंदुस्तान की आम जनता के दिल में स्नेह की भावना उमड़ पड़ी ।

प्यार की भावना ।

वह रातों-रात सबका हीरो बन गया ।

बच्चा-बच्चा अविनाश लोहार की मिसालें देने लगा ।

किसी टीवी चैनल पर अगर थोड़ी देर के लिए भी अविनाश लोहार की तस्वीर दिखा दी जाती, तो परिवार के सारे सदस्य टीवी के सामने चिपक जाते ।

अविनाश लोकप्रियता प्राप्त करता जा रहा था, जबरदस्त लोकप्रियता ।

उसी दिन इण्डिया टीवी टीवी पर एक ऐसी घोषणा और की गई, जिसने सबसे बड़ा हंगामा खड़ा कर दिया ।

इण्डिया टीवी पर की जाने वाली वो घोषणा थीः

रविवार को सुबह ठीक दस बजे इण्डिया टीवी पर अविनाश लोहार का एक एक्सक्लूयसिव इंटरव्यू प्रसारित किया जायेगा ।

रविवार की सुबह ।

दस बजे ।

पब्लिक के बीच हंगामा मच गया ।

□□□

प्रिय पाठकों ! अब मैं यानी **अमित खान** आपसे संबोधित हूँ ।

मैं जानता हूँ कि इस समय आप सब लोग बड़ी दिलचस्पी से यह कथानक पढ़ रहे होंगे ।

इतना ही नहीं, कथानक से संबंधित ढेरों सवाल भी आपके दिमाग में होंगे ।

क्या यह चारों हत्याएं खुद अविनाश लोहार ने ही की थीं ?

खुद अपने हाथों से ?

या फिर उसने कुछ और षड्यंत्र रचा था ?

अगर कुछ और षड़यंत्र रचा गया, तो वह क्या षड़यंत्र था ?

एक ही आदमी देश के अलग-अलग महानगरों में जाकर वह चारों हत्याएं कैसे कर सका ? जबकि एक महानगर से दूसरे महानगर हवाई जहाज से जाने के लिए भी दो घंटे का टाइम चाहिये

क्या अविनाश लोहार को 25 मार्च को फांसी की सजा दी गई ?

कमाण्डर करण सक्सेना चार हत्याओं की इस पेचीदा गुत्थी को सुलझा सका या नहीं ?

आम जनता की उस केस के प्रति जो उत्सुकता बढ़ रही थी, जो दीवानगी बढ़ रही थी, उसका क्या हुआ ?

क्या आम जनता ने भी उस केस में अपना कोई फैसला सुनाया ?

क्या अविनाश लोहार ने सुलेमान लोहार को मरते-मरते जो वचन दिया था, वह उस वचन को पूरा कर सका ?

क्या आम जनता तक वो यह संदेश पहुँचा सका कि अदालतों में जो कुछ चीख-चीखकर कहा जाता है, वो हमेशा सच नहीं होता ?

इस मिशन का हीरो आखिर कौन बना ?

कमाण्डर करण सक्सेना या अविनाश लोहार ?

आखिर कौन जीता ?

कौन हारा ?

ऐसे और ऐसे ही अनेक सवालों के जवाब जानने के लिए पढ़ें मेरा यानी 'अमित खान' का आगामी सनसनीखेज़ उपन्यास 'कौन जीता कौन हारा' ।

'कौन जीता कौन हारा' यह उपन्यास नहीं एक जलजला है ।

भावनाओं की आंधी है ।

यह वो उपन्यास है, जो कमाण्डर करण सक्सेना के आम उपन्यासों से बिल्कुल अलग हटकर लिखा गया है ।

तो अब विदा, बहुत जल्द 'कौन जीता कौन हारा' उपन्यास के साथ आपसे फिर मुलाकात होगी ।

प्रस्तुत है, अब **आतंकवादी** उपन्यास का अंतिम दृश्य ।

□□□

रविवार की सुबह दस बजे पूरे देश में कर्फ्यू जैसी स्थिति थी ।

हालांकि वो छुट्टी का दिन था । सभी ऑफिस और बाजार बंद थे, लेकिन जो ऑफिस और बाजार रविवार के दिन भी खुलते थे, वो भी आज बंद थे ।

पूरे देश के हर शहर में, हर कस्बे में, हर गांव में, सड़क पर सन्नाटे जैसा माहौल था ।

सभी लोग सुबह से ही अपने-अपने टीवी सेट के सामने चिपक गये थे । स्त्री-पुरुष, बड़े-बूढ़े या फिर बच्चे, सब बड़ी उत्सुकता से अविनाश लोहार के इंटरव्यू का इंतजार कर रहे थे ।

सभी के टीवी सेट पर बस एक ही चैनल दिखाई पड़ रहा था- इण्डिया टीवी । इण्डिया टीवी की मानो लॉटरी निकल आई थी । उसी इंटरव्यू के कारण उसे भारी-भरकम दामों में खूब विज्ञापन मिले थे । इण्डिया टीवी अविनाश लोहार को जमकर कैश कर रहा था । सुबह से ही उस चैनल पर अविनाश लोहार के जीवन से संबंधित झलकियां दिखाई जा रही थीं, उसके बारे में बताया जा रहा था ।

ठीक दस बजे इण्डिया टीवी के पर्दे पर रजत शर्मा प्रकट हुआ । प्रसिद्ध टीवी प्रोग्राम 'आप की अदालत' का प्रस्तुतकर्ता- रजत शर्मा ।

"आप सब लोगों का स्वागत है ।" रजत शर्मा अपना ऐनक दुरुस्त करता हुआ गर्मजोशी के साथ बोला- "हम जानते हैं, आप लोग इस समय बड़ी बेसब्री से अविनाश लोहार का इंतजार कर रहे हैं । आप अविनाश लोहार को देखना चाहते हैं । आप अविनाश लोहार को सुनना चाहते हैं । बिना शक, हिंदुस्तान के इतिहास में आज तक कोई

रविवार की सुबह दस बजे पूरे देश में कर्फ्यू जैसी स्थिति थी।

हालांकि वो छुट्टी का दिन था। सभी ऑफिस और बाजार बंद थे, लेकिन जो ऑफिस और बाजार रविवार के दिन भी खुलते थे, वो भी आज बंद थे।

पूरे देश के हर शहर में, हर कस्बे में, हर गांव में, सड़क पर सन्नाटे जैसा माहौल था।

सभी लोग सुबह से ही अपने-अपने टीवी सेट के सामने चिपक गये थे। स्त्री-पुरुष, बड़े-बूढ़े या फिर बच्चे, सब बड़ी उत्सुकता से अविनाश लोहार के इंटरव्यू का इंतजार कर रहे थे।

सभी के टीवी सेट पर बस एक ही चैनल दिखाई पड़ रहा था- इण्डिया टीवी। इण्डिया टीवी की मानो लॉटरी निकल आई थी। उसी इंटरव्यू के कारण उसे भारी-भरकम दामों में खूब विज्ञापन मिले थे। इण्डिया टीवी अविनाश लोहार को जमकर कैश कर रहा था। सुबह से ही उस चैनल पर अविनाश लोहार के जीवन से संबंधित झलकियां दिखाई जा रही थीं, उसके बारे में बताया जा रहा था।

ठीक दस बजे इण्डिया टीवी के पर्दे पर रजत शर्मा प्रकट हुआ। प्रसिद्ध टीवी प्रोग्राम 'आप की अदालत' का प्रस्तुतकर्ता- रजत शर्मा।

"आप सब लोगों का स्वागत है।" रजत शर्मा अपना ऐनक दुरुस्त करता हुआ गर्मजोशी के साथ बोला- "हम जानते हैं, आप लोग इस समय बड़ी बेसब्री से अविनाश लोहार का इंतजार कर रहे हैं। आप अविनाश लोहार को देखना चाहते हैं। आप अविनाश लोहार को सुनना चाहते हैं। बिना शक, हिंदुस्तान के इतिहास में आज तक कोई

भी अपराधी इतना लोकप्रिय नहीं हुआ, जितना अविनाश लोहार हुआ है। उसकी लोकप्रियता, डाकू सुल्ताना, फूलन देवी या सुंदर डाकू से भी कहीं ज्यादा है। बस आपने थोड़ा इंतजार और करना है। अभी आपके सामने अविनाश लोहार प्रकट होगा।"

फिर इण्डिया टीवी पर विज्ञापन दिखाए गये।

दर्शक झुंझला उठे।

इस समय एक-एक सेकंड उन्हें बड़ा भारी गुजर रहा था।

और आखिरकार वह क्षण भी आ पहुँचा, जब टीवी सेट के परदे पर अविनाश लोहार नमूदार हुआ। वह उसी सेल का दृश्य था, जहाँ अविनाश लोहार को बंद करके रखा गया था। इस समय उस सेल में भरपूर प्रकाश व्यवस्था थी। वहाँ दो कुर्सियां डाली गई थीं। एक कुर्सी पर अविनाश लोहार बैठा था, जबकि दूसरी कुर्सी पर बैठा था, इंटरव्यू लेने में दक्ष-रजत शर्मा !

"अविनाश जी !" कोट पैंट और टाई लगाए रजत शर्मा अपनी चिर-परिचित ब्लेड की धार से भी पैनी मुस्कान बिखेरते हुए बोला- "आज तमाम हिंदुस्तान के लोग अपने-अपने टीवी सेट खोले तुम्हें सुनने के लिए बैठे हैं, तो यह देखकर तुम्हें कैसा लग रहा है ?"

"ठीक लग रहा है।" अविनाश लोहार के चेहरे पर उस समय भी किसी दार्शनिक जैसे भाव थे और गंभीरता पुती थी- "मैं खुद यही चाहता था कि मेरी बात जन-जन तक पहुंचे और लोग मुझे समझने की कोशिश करें, लेकिन प्लीज एक विनती मैं आप लोगों से जरूर करना चाहूँगा।"

"क्या ?"

“आप लोग मेरी दुःख भरी कहानी का व्यवसायीकरण करने की कोशिश न करें। मैं बिकने वाली चीज नहीं हूँ, बल्कि सबक लेने वाली चीज हूँ, समझने वाली चीज हूँ।”

रजत शर्मा जैसा आदमी भी अविनाश लोहार की बात सुनकर सकपकाया।

उसकी मुस्कान हवा हो गई।

“सॉरी, आई बैग योअर पार्डन ! मुझे दुख है अविनाश जी, मैं तुम्हारी भावनाओं को न समझ सका।

“डोंट अपोलोजाइज, इट डज़ नॉट मैटर।”

रजत शर्मा के नेत्र और भी ज्यादा फैल गये। वह पहली बार समझा, उसके सामने बैठा वो आतंकवादी पढ़ा लिखा भी है।

“सबसे पहले मैं तुमसे एक बहुत निजी प्रश्न पूछना चाहता हूँ।” रजत शर्मा ने अब बड़ी गंभीरता के साथ अपना ऐनक दुरुस्त किया।

“पूछिए।”

“क्या तुम सचमुच प्रिया से बहुत प्यार करते थे ?”

“प्रिया।” प्रिया का नाम सुनते ही अविनाश लोहार भावुक हो उठा, जज्बाती हो उठा- “वह मेरी जिंदगी थी। प्यार क्या होता है, यह सबसे पहले मैंने उसी से तो जाना। वरना मेरे जैसा अनाथ प्यार के बारे में जानता ही क्या था ? मैंने तो बचपन से सिर्फ झिड़कियां सही थीं, नफरत देखी थी और लोगों के ताने सुने थे। टूटना और टूटकर बिखर जाना ही मेरे लिए जिंदगी थी। लेकिन बिखरने के बाद वापस सिमटा भी जाता है, इकट्ठा भी हुआ जाता है, यह मैंने अपनी प्रिया से सीखा।”

"उसकी मौत से तो तुम्हें काफी गहरा सदमा पहुँचा होगा ।"

"आप खुद सोच सकते हैं, किसी के शरीर से उसके प्राण निकाल लिए जाएं, तो उसे कैसा लगेगा । बस वैसा ही लगा था मुझे, एकदम निष्प्राण होकर रह गया था मैं । जैसे प्रिया के साथ-साथ मेरा भी इस दुनिया से पूरा अस्तित्व खत्म हो गया हो ।"

"फिर तुम्हारे अंदर इतनी हिम्मत कहाँ से आई, जो तुम आतंकवादी बने और इतने बड़े आतंकवादी बने कि बड़े-बड़े राष्ट्र तुम्हारे नाम से थर्रा उठे ?"

"शायद वो हिम्मत मुझे अपने बाबा से मिली ।"

"बाबा ?"

"हाँ, बाबा ! सुलेमान लोहार ।" अविनाश लोहार अब और भी ज्यादा संजीदा हो उठा- "प्रिया से जहाँ मुझे प्यार मिला, वहीं बाबा से मुझे हौसला मिला, हिम्मत मिली । बाबा ने मेरे अंदर जिंदगी जीने की आग पैदा की और शायद वो आग ही थी, जिसने मुझे आज तक जिंदा रखा ।"

"क्या बाबा की कभी याद आती है ?"

"बहुत याद आती है । बाबा मेरे नाम के साथ जुड़े हैं । जब भी मुझे कोई अविनाश लोहार कहकर पुकारता है, मुझे बाबा याद हो आते हैं । बाबा से मेरा वही रिश्ता है, जो एक पिता का पुत्र के साथ होता है, जो किसी का अपने जन्मदाता के साथ होता है ।"

"बाबा क्या संदेश देना चाहते थे ?" रजत शर्मा बोला ।

"बाबा कानून की मौजूदा व्यवस्था के सख्त खिलाफ थे । उनका मानना था, कानून की कार्यप्रणाली, उसका पूरा सिस्टम बहुत लचर है । मौजूदा कानून व्यवस्था में

ऐसे ढेरों छेद हैं, जिनका बुद्धिमान अपराधी फायदा उठाते हैं और कानून उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता, कभी कुछ नहीं बिगाड़ पाता । सब जानते हैं, दुनियाभर में ऐसे ढेरों अपराध हुए हैं, जिनके अपराधी कभी नहीं पकड़े गये और आखिरकार पुलिस को वह केस फाइलें दबा देनी पड़ीं । इसके अलावा ऐसा भी अनेक बार होता है कि सबूतों की रौ में निर्दोष को सजा हो जाती है और दोषी छूट जाता है । जबकि कभी-कभी तो सजा सुनाने वाला जज भी अच्छी तरह जानता होता है कि वह एक निर्दोष को सजा सुना रहा है, लेकिन वह मजबूर होता है । कानून के हाथों मजबूर होता है, क्योंकि सारे सबूत उस आदमी के खिलाफ होते हैं । यह कानून की कमजोरी नहीं तो और क्या है ? जिस कानून व्यवस्था का निर्माण कभी इसलिये किया गया था कि वह समाज से अपराध का विनाश करें, वही कानून व्यवस्था आज बुद्धिमान अपराधियों के हाथों की कठपुतली बनकर रह गई है । बुद्धिमान और दौलत से समर्थ अपराधी जैसा-जैसा चाहते हैं, कानून को नचाते हैं, जबकि इस चक्की में अगर कोई पिसता है, तो एक सीधा-सच्चा आदमी पिसता है, निर्दोष आदमी पिसता है । बाबा कानून व्यवस्था की यही कमजोरी दुनिया के सामने लाना चाहते थे, सब देशवासियों के सामने लाना चाहते थे । वह सबको चीख-चीखकर बताना चाहते थे कि अदालतों में जो कुछ साबित होता है, वो हमेशा सच नहीं होता, सबूत हमेशा सच नहीं बोलते ।”

“क्या अर्जुन मेहता, विजय पटेल, नागेंद्र पाल और शशि मुखर्जी की तुमने जो इतने नाटकीय अंदाज में हत्याएं की ।” रजत शर्मा ने अपना कोट दुरुस्त किया- “वह भी कानून

लाना चाहता हूँ । जरा सोचिए, आज इन चारों हत्याओं से संबंधित सारे सबूत मेरे खिलाफ हैं ।

कानून को कलकत्ता के फार्म हाउस से पैग के ऊपर से मेरे फिंगरप्रिंट बरामद हुए । नागेंद्र पाल के घर में मेरी आवाज में ऑडियो कैसेट मिली । अर्जुन मेहता की नंगी पीठ पर मेरे हस्ताक्षर मिले । शशि मुखर्जी के पेट से सिम कार्ड बरामद हुआ । यह वो सारे सबूत हैं शर्मा जी, जो चीख-चीखकर इस बात को कह रहे हैं कि मैं हत्यारा हूँ । और सबसे बड़ी बात ये है कि मैं खुद चीख-चीखकर कह रहा हूँ कि यह चारों हत्याएं मैंने की हैं लेकिन फिर भी कानून कितना कमजोर है, कितना विवश है । वो फिर भी मुझे हत्यारा साबित नहीं कर सकता और सिर्फ इसलिये नहीं कर सकता, क्योंकि कानून के पास यह साबित करने का कोई जरिया नहीं है कि मैं एक-एक घंटे के अंतराल से चारों महानगरों में पहुँचा, तो कैसे पहुँचा ? कितनी हास्यास्पद बात है ।" अविनाश लोहार की पुरजोर आवाज टीवी पर गूंज रही थी- "अगर कानून इसी का नाम है, तो सोचो इस कानून की बुनियाद कितनी कमजोर है । यह किसी चालक अपराधी को तो सजा दे ही नहीं सकता । यह तो सिर्फ और सिर्फ निर्दोष और भोले-भाले लोगों को सजा देने के लिए बना है ।"

स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े सब बहुत स्तब्ध-सी मुद्रा में अविनाश लोहार की बातें सुन रहे थे ।

एक-एक बात उनके दिमाग पर चोट पहुँचा रही थी ।

एक-एक शब्द उनके ऊपर गाज बनकर गिर रहा था ।

वह शायद अब तक का सबसे धमाकाखेज इंटरव्यू था, जो किसी टीवी चैनल पर दिखाया जा रहा था ।

वह इंटरव्यू इसी तरह चलता रहा ।

काफी देर तक चलता रहा ।

समाप्त